कि वह कमरे के दृश्य को ग्रहण कर दूसरी तरफ प्रसारित कर सकता था और दूसरी ओर से प्रसारित ध्वनि और दृश्य को कमरे मे देखा-सुना जा सकता था। विन्स्टन फुसफुसाहट की ध्वनि से जरा भी ऊचा बोला कि टेलीस्क्रीन के पीछे 'माइक' उसकी आवाज पकडकर दूसरी तरफ भेज सकता था। ऐसा उस समय तक हो सकता था जब तक वह उस धातु के पर्दे की दृष्टि-सीमा मे रहता था। यह जानने का कोई साधन नही था कि दूसरी तरफ किसी समय उसे देखा जा रहा है या नही। विचार नियत्रक पुलिस कब किसको देख रही होगी—इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती थी। यह भी सभव था कि वह हर समय सभी को देख रही हो। परन्तु इसमे तो सदेह ही नही था कि वे जिस समय जिसे चाहे उसे देख सकते थे। लोगो को जीना है, जीते भी है, क्योकि जीवन का अभ्यास पड गया है, परन्तु उनकी हर आवाज़ को सुना जाता है, अधेरे के अलावा हर समय वे क्या करते है, यह बराबर देखा जाता है।

विन्स्टन टेलीस्क्रीन की तरफ बराबर पीठ किए था। ऐसा करना अधिक सुरक्षित था, किन्तु बिलकुल सुरक्षित नही क्योकि कभी-कभी पीठ देखकर भी यह अनुमान किया जा सकता है कि आदमी क्या कर रहा है। कोई एक किलोमीटर (लगभग ३२८० गज) की दूरी पर विन्स्टन के कार्यालय की इमारत थी—जिसे 'सत्य का मत्रालय' (मिनिस्ट्री आव ट्रुथ) कहते थे। इमारत काफी ऊची और बिलकुल सफेद थी। कुछ विरक्तिपूर्वक विन्स्टन सोच रहा था, यह लन्दन है, हवाई पट्टी नम्बर एक का मुख्य नगर। हवाई पट्टी नम्बर एक ओशनिया का सबसे घनी आबादी वाला प्रान्त था। वह अपने बचपन की याद कर रहा था और सोच रहा था कि क्या लन्दन पहले भी ऐसा ही था? सदैव ऐसा था? क्या पहले भी उन्नीसवी शताब्दी के ढग के इसी तरह के मकान थे? दीवारो पर लकडी चढी हुई, खिडकियो मे पट्ठा लगा हुआ और छतों मे लोहे की नालीदार चादरे लगी हुई और बागो की चहार दीवारी चारों तरफ फैली हुई? इधर-उधर बमवर्षा के कारण बने खडहर और मलवे पर उडती हुई धूल। जहा बम ने पुराने मकानो को बिलकुल साफ कर दिया था वहा नए मकान बन गए थे। ये लकडी के थे और ऐसा लगता था कि मुर्गियो के दरबे हो। क्या पहले भी ऐसा ही था? लेकिन कोई लाभ नही—सोचने से कोई लाभ नही, उसे कुछ भी याद नही आ रहा था। कभी उसे कोई दृश्य याद आ जाता था, जो बिल-

कुल एक दूसरे से असबद्ध था और उसकी समझ मे कुछ भी नही आता था।

जो दृश्य दिखलाई पड रहा था उसमे सत्य मत्रालय, जिसे नई भाषा मे 'सत्मंत्र' कहते थे, की इमारत बिलकुल भिन्न थी। सफ़ेद ककरीट की वह पिरामिडनुमा इमारत थी। वह मज़िल पर मजिल चढती चली गई थी और यह क्रम तीन सौ मीटर तक ऊपर चला गया था। विन्स्टन को पार्टी के तीन नारे स्पष्ट लिखे दिखलाई पड रहे थे। ये नारे इमारत पर मोटे-मोटे अक्षरो मे लिखे थे .

युद्ध ही शान्ति है!

दासता ही स्वतत्रता है!

अज्ञान ही शक्ति है!

सत्य मत्रालय की ऊपर की सारी मज़िलो मे लगभग तीन हज़ार कमरे थे। इतने ही कमरे ज़मीन के नीचे भी थे। लन्दन भर मे ऐसी तीन इमारते और थी। इनके सामने अन्य सारे मकान बौनो की तरह छोटे और साधारण प्रतीत होते थे। विजय भवन की छत से ये सारी बडी-बडी इमारते एक साथ दिखलाई पडती थी। इन इमारतो मे चार सरकारी मत्रालयो के दफ्तर थे और इन्ही मत्रालयो मे सारा सरकारी कामकाज बँटा था। इनमे पहला मत्रालय था सत्य का। इस मत्रालय का सबध समाचार, मनोरजन, शिक्षा और ललितकलाओ आदि से था। इसके बाद था शाति मत्रालय। इसका काम युद्ध व्यवस्था करना था। तीसरा मत्रालय था प्रेम का। इसका काम शाति तथा व्यवस्था कायम रखना था। इसके बाद समृद्धि मत्रालय था। इसका सबध आर्थिक मामलो से था। नई भाषा में इनको—'सत्मत्र' 'शान्तमत्र', 'प्रेममत्र' और 'सम्मत्र' कहते थे।

प्रेम मत्रालय वाकई भयानक था। उसमे कही कोई खिडकी नही थी। विन्स्टन इस मत्रालय के भीतर कभी नही गया था। भीतर जाना तो दूर, उसके डेढ हज़ार गज के आसपास के दायरे तक मे कभी नही गया था। इसमे केवल सरकारी काम से ही अन्दर जाना हो सकता था, अन्यथा प्रवेश असभव था। अन्दर घुसने के लिए काटेवाले तारो का घेरा, लोहे के दरवाजो, छिपी मशीनगन की बुर्जियो को पार करना पड़ता था। जो गलिया इस इमारत के पास जाती थी, उन तक में काली वर्दी पहने, गुरिल्लो जैसी शक्लो के सैनिक बराबर पहरा देते रहते थे।

विन्स्टन अकस्मात् घूम पड़ा। उसने अपने चेहरे पर अत्यन्त आशावादी मुद्रा

अंकित कर ली। टेलीस्क्रीन के सामने इस तरह की मुद्रा होना जरूरी था। उसके बाद वह बगल के रसोईघर मे चला गया। इस वक्त सरकारी दफ्तर को छोडकर उसे कैन्टीन मे मिलने वाले भोजन से वचित रहना पडा था। उसे यह मालूम था कि रसोई मे इस वक्त काली रोटी के टुकडे के अलावा और कुछ भी न होगा और वह भी कल सुबह के नाश्ते के लिए बचाकर रखना जरूरी है। उसने आलमारी मे से एक बोतल उतारी। इस पर विक्टरी जिन (विजय-मद्य) का लेबिल चिपका था। वह रगहीन तरल नशीला पेय था। बोतल चाय के प्याले मे उडेलकर खाली की। इससे तेल जैसी गध आ रही थी। गध नाक मे पहुचते ही उबकाई आने लगती थी। उसे चीनी शराब की, जो चावल से बनती है, याद आ गई। वह भी ऐसी ही होती थी। थोडी देर वह उसे देखता रहा, इसके बाद नाक बद कर प्याले को चढा गया, ठीक उस तरह जैसे वह कोई दवा हो।

शराब का प्याला पीते ही उसका मुह नीला पड गया और आखो से पानी बहने लगा। शराब क्या थी, तेजाब था। इसे गले से नीचे उतारते ही ऐसा लगता था कि किसी ने रबड के हटर से जोर से गर्दन के पीछे प्रहार किया हो। दूसरे ही क्षण पेट मे होनेवाली जलन शान्त हो गई और दुनिया कुछ बदली-सी दिखलाई पडने लगी। परिवर्तन प्रसन्नतादायी था। उसने जेब से सिगरेट का दबा हुआ पैकेट निकाला। इस पर भी विक्टरी सिगरेट (विजय-सिगरेट) लिखा था। एक सिगरेट निकालकर उसे सीधा किया। सिगरेट सीधा खडा करते ही उसका तम्बाकू जमीन पर नीचे आ गिरा। उसने एक और सिगरेट निकाली। दूसरी सिगरेट का तम्बाकू नही गिरा। इसके बाद वह कमरे के एक कोने मे रखी मेज के पास चला गया। यह मेज टेलीस्क्रीन से बाई तरफ थी। कुर्सी पर बैठकर उसने दराज से कलम, दवात और बढिया जिल्द चढी एक कापी निकाली।

इस कमरे मे पता नही क्यो टेलीस्क्रीन असाधारण स्थान पर लगा था। सामान्यत इसे दीवार के ऐसे स्थान पर लगा होना चाहिए था जहा से कमरे का पूरा दृश्य दिखलाई पडे। इस स्थान के बजाय टेलीस्क्रीन ऐसी जगह लगा था, जहा से उसकी नजर मे वह भाग नही आता था जहा मेज-कुर्सी रखी थी और जिस पर विन्स्टन अब बैठा था। जब वह कमरा बना था तो ख्याल था कि इस कोने मे, जहा मेज थी, किताबो की आलमारी रहेगी। लेकिन इस जगह दबकर बैठने से विन्स्टन टेलीस्क्रीन की आख से बचा रहता था। उसकी आवाज जरूर स्क्रीन के माइक तक

पहुंच सकती थी किन्तु यदि वह चुप रहता तो उसकी उपस्थिति का किसी को ज्ञान नही हो सकता था। विन्स्टन जो कार्य अब करने जा रहा था, उसका एक कारण कमरे का यह गुप्त कोना भी था।

विन्स्टन ने दराज़ से जो कापी निकाली थी, उस कापी ने भी उसे ऐसा कार्य करने पर बाध्य किया था। यह कापी बडी खूबसूरत थी। उसका कागज़ बडा चिकना था। अधिक समय बीत जाने के कारण कापी का कागज कुछ पीला अवश्य पड गया था। ऐसा कागज़ पिछले चालीस वर्षो से नही बना था। इसके पूर्व बना हो तो भले ही बना हो। लेकिन विन्स्टन का ख्याल था कि कापी इससे भी अधिक पुरानी थी। उसने इस कापी को शहर की गन्दी बस्ती की एक कबाडी की दुकान की खिडकी मे पडा देखा था। देखते ही उसकी यह इच्छा हो उठी थी कि वह उसे खरीद ले। (उसे अब कबाडी की दुकान कहा है, यह याद नही था।) पार्टी के सदस्यों को साधारण दुकानो पर जाने की इजाजत नही थी। (इन दुकानो को खुला बाज़ार कहा जाता था।) लेकिन इस नियम का कठोरता से पालन नही किया जाता था। क्योकि बहुत-सी चीजे जैसे जूतो के फीते और रेज़र-ब्लेड खुले बाज़ार के अलावा अन्य कही से भी मिलने की सम्भावना नही थी। उसने सडक पर पहले आगे-पीछे नज़र डाली थी और जैसे ही यह जान लिया कि कोई उसे देख नही रहा, वह लपककर कबाडी की दुकान मे घुस गया और ढाई डालर में कापी खरीद ली थी। उस समय विन्स्टन के दिमाग मे यह बात नही थी कि वह उस कापी का क्या करेगा। अपने छोटे थैले में छिपाकर अपने को दोषी अनुभव करता हुआ वह कापी घर ले आया था। उसमे कुछ नही लिखा था फिर भी कापी का पास पाया जाना कुछ कम खतरनाक नही था।

अब वह डायरी लिखना चाहता था। यह गैरकानूनी नही था (कोई कानून ही नही था, इसलिए किसी बात के गैरकानूनी होने का प्रश्न ही नही उत्पन्न होता था।) किन्तु यदि वह इस कापी समेत पकड लिया जाता तो यह निश्चित था कि उसे मृत्युदण्ड मिलता और कुछ नही तो कम से कम पचीस वर्ष बेगार शिविर मे बिताने पडते। विन्स्टन ने कलम मे निब लगाई और उसे चूसा जिससे स्याही की धार रुके नही। कलम का उपयोग इन दिनो बन्द था। कोई दस्तखतो तक के लिए उसको काम मे नही लाता था। उसे यह कलम बडी कठिनाई से मिला था। वह चाहता था कि स्याही वाली पेंसिल के बजाय इस सुन्दर कापी मे कलम से

लिखे। वस्तुत अब उसे हाथ से लिखने की आदत ही नही रही थी। छोटे-मोटे नोट लिखने के अतिरिक्त बडी-बडी चीजे तो लेखन यन्त्र पर बोल दी जाती थी जो अपने आप बोली गई चीजो को लिख लेता था। परन्तु इस समय उस यन्त्र का तो प्रयोग सभव ही नही था। उसने कलम को स्याही मे डुबोया। इसके बाद क्षण भर उसका हाथ कापा। उसके पेट मे अजीब-सी खलबली मच गई थी। कागज पर कुछ लिखना सुनिश्चित कार्य था। उसने जैसे-तैसे लिखा :

'४ अप्रैल, १९८४'

इसके बाद वह कुर्सी से पीठ लगाकर बैठ गया। सबसे पहली बात तो यह थी कि उसे यही मालूम नही था कि यह सन् १९८४ ही है। उसका ख्याल था कि साल करीब-करीब ठीक ही होगा। उसकी आयु कोई उन्तालिस वर्ष की थी। वह सन् १९४४ या १९४५ में पैदा हुआ था। लेकिन पिछले एक-दो वर्षों की ठीक-ठीक तारीखे बताना भी कठिन था।

लेकिन वह यह डायरी किसके लिए लिख रहा है? इसे कौन पढेगा? भविष्य के लिए? भावी सन्तति के लिए? उसके दिमाग मे कुछ देर कापी पर लिखी तारीख के बारे मे ही विचार आते-जाते रहे। फिर उसे नई भाषा के शब्द 'द्वैध विचार' का ख्याल आया। पहली बार उसे अपने कार्य की गभीरता का आभास हुआ। भविष्य से आप अपना सबध ही किस प्रकार स्थापित कर सकते है? जो स्थिति अब थी, उसमे यह असम्भव था। या तो भविष्य वर्तमान की भाति ही होगा और ऐसी अवस्था मे वह उसकी बात ही नही सुनेगा, या वह भिन्न होगा और उसका आज का असमजस निरर्थक होगा।

कुछ देर वह कागज पर दृष्टि गडाए बुद्धू की तरह घूरता रहा। टेलीस्क्रीन अब सैनिक धुन बजा रहा था। अजब हालत थी उसकी। वह न केवल अपने आपको अभिव्यक्त कर पाने मे असमर्थ पा रहा था, बल्कि अब उसे यह भी याद नही पड रहा था कि वह क्या लिखना चाहता था। उसके दिमाग मे यह बात कभी नही आई थी कि लिखना आरम करने के साहस के अलावा अन्य किसी बात की भी आवश्यकता पडेगी। लिखना आसान होगा। जो बाते वर्षों से उसके दिमाग मे घुमड रही थी, उनका उसे अनुमान था। उसका ख्याल था, उन्हे वह उचित अवसर और सामग्री मिलते ही लिखना आरम्भ कर देगा। परन्तु अब वे स्वगत भी दिमाग से गायब हो गए थे। उसके टखने वाले फोडे मे बडी खुजली हो रही थी।

वह उसे खुजला भी नही सकता था क्योकि खुजलाने से उसकी सूजन बढ जाने का खतरा था। उसे अपने सामने कापी के खुले पृष्ठ, कर्णकटु मैनिक धुन, फोडे की खुजली और शराब से उत्पन्न थोडे-से नशे के अलावा और किसी बात का ज्ञान नही था।

और अकस्मात्, अकस्मात् उसने लिखना शुरू कर दिया। उसे ठीक-ठीक यह मालूम भी नही था कि वह क्या लिख रहा है। बच्चो की तरह वह कापी पर टेढ़े-मेढे ढग से लिख रहा था। वह वाक्यो मे विराम भी नही लगा रहा था।

'४ अप्रैल, १९८४। कल सिनेमा गया था। सारी फिल्म लडाई की थी। दिखलाया गया था कि भूमध्यसागर मे कही एक बहुत अच्छा और बडा जहाज़ चला जा रहा है। इसमे शरणार्थी भरे है। जहाज़ पर बमवर्षा की जा रही है। जहाज डूब रहा था और दर्शको को यह देखने मे बड़ा मज़ा आ रहा था कि एक मोटा आदमी तैर रहा है। उसके पीछे हैलीकॉप्टर था। पहले तो दिखलाया गया कि वह लहरो मे ऊपर-नीचे जाते हुए हाथ-पैर पीट रहा है। इसके बाद उस आदमी को हैलीकॉप्टर की उस जगह से दिखलाया गया जहा मशीनगन थी। उसके शरीर भर मे छेद हो गए। आसपास का पानी गुलाबी हो गया और ज्यो ही इन छेदो मे पानी भरा त्योही वह आदमी डूब गया। दर्शक उसको डूबता देख खूब जोर-जोर से हस रहे थे। इसके बाद एक लाइफबोट दिखलाई गई। इसमे बहुत-से बच्चे भरे थे। ऊपर एक हैलीकॉप्टर उड रहा था। नाव के एक कोने मे एक यहूदी अधेड महिला बैठी थी। उसकी गोद मे तीन वर्ष का बच्चा था। बच्चा भय के मारे चीख रहा था और महिला की छाती से चिपका जा रहा था। यहूदिन ने भी उसे अपनी बाहो मे लपेट रखा था और उसे चुप करा रही थी। हालाकि भय के मारे वह स्वय नीली पडी जा रही थी। वह बार-बार बच्चे को अपनी गोद में छिपा रही थी जैसे उसे गोलियो की बौछार से अपने शरीर द्वारा बचा लेगी। हैलीकॉप्टर ने नौका के बीचोबीच एक छोटा-सा बम फेक दिया। एक साथ बिजली-सी चमकी और नाव ऐसे उड गई जैसे दियासलाई की तीलियो से बना मकान। इसके बाद एक डूबते बच्चे का पानी से ऊपर निकला हाथ दिखलाया गया। हैलीकॉप्टर मे लगे कैमरे ने यह शाट लिया होगा। पार्टी सदस्यो की सीटो पर बैठे लोगो ने खूब तालिया पीटी लेकिन मजदूरो वाले हिस्से में बैठी एक औरत ने शोर मचाना शुरू कर दिया। वह कह रही थी, "बच्चो के सामने यह

दृश्य नही दिखलाना चाहिए, बच्चो के सामने यह दृश्य दिखलाकर अच्छा नही किया गया।" वह तब तक चिल्लाती रही जब तक पुलिस ने आकर उसे बाहर नही निकाल दिया। उस औरत का क्या हुआ, नही मालूम। कोई परवाह नही करता कि मजदूर क्या करते है।

'मजदूरो की प्रतिक्रिया—'

विन्स्टन ने लिखना बन्द कर दिया। इसका आशिक कारण यह था कि उसका शरीर अकड गया था। वह नही जानता—किस धुन मे वह यह सब लिख गया था। लेकिन लिखते-लिखते उसे एक ऐसी बात का ध्यान आ गया था, जिसे वह लिपिबद्ध कर डालना चाहता था। वह घटना ऐसी थी जिसके कारण वह दफ्तर से चला आया था और उसने निश्चय किया था कि वह आज ही से डायरी लिखना शुरू कर देगा।

यह घटना आज मत्रालय मे हुई थी, यदि उसे घटना मान लिया जाए तो।

करीब ग्यारह बजे थे। रिकार्ड विभाग मे, जहा विन्स्टन काम करता था, कमरो से कुर्सिया ला-लाकर सेट्रल हाल मे जमा की जा रही थी। इस हाल मे बडा-सा टेलीस्क्रीन लगा था। घृणा उत्पन्न करने वाली दो मिनट की प्रचार-फिल्म दिखलाई जाने वाली थी। विन्स्टन बीच की पक्ति वाली कुर्सियो मे से एक पर बैठा, तभी दो व्यक्ति हाल मे घुसे। इनकी शकलो से तो वह परिचित था लेकिन उसे उनसे बात करने का अवसर कभी नही मिला था। इनमे से एक लडकी थी। इस लडकी से बरामदे मे आते-जाते उसकी अकसर मुलाकात हो जाती थी। वह उसका नाम नही जानता था, परन्तु उसे यह मालूम था कि वह लडकी कथा-उपन्यास विभाग मे काम करती है। कभी-कभी उसके हाथ मशीन के काले तेल में रगे होते थे और स्क्रू कसनेवाला औजार भी होता था, इससे विन्स्टन ने अन्दाज कर लिया था कि वह उपन्यास लिखनेवाली मशीन पर काम करती होगी। लडकी की उमर सत्ताइस साल की होगी। चेहरे से वीरता टपकती थी। उसके बाल घने और गहरे काले थे। उसके हर क्रिया-कलाप से चुस्ती जाहिर होती थी। उसकी कमर मे नीली पट्टी कई घेरो मे बधी रहती थी और साथ ही वह सेक्स विरोधी लीग का बैज भी लगाए रहती थी। नीली पट्टी से उसकी कमर कसी और अपेक्षाकृत पतली नजर आती थी और कूल्हे पीछे की ओर अधिक आकर्षक ढग से उभरे नजर आते थे। विन्स्टन ने जब पहली बार उसे देखा था, तभी से वह

उससे घृणा करने लगा था। वह इसका कारण भी जानता था। उसको देखते ही विन्स्टन को हॉकी के मैदानो, शीत स्नानो और सामुदायिक यात्राओ की याद हो जाती थी, जिन्हे वह पसन्द नही करता था। उसे औरतो से घृणा थी और खूबसूरत तथा तरुण स्त्रिया तो उसे फूटी आखो नही सुहाती थी। ऐसी लडकियो मे ही आवश्यकता से अधिक पार्टी-शक्ति होती थी। वे हर नारा लगाती थी, जासूसी करती थी और हमेशा यह देखती रहती थी कि कौन पार्टी के विश्वासो और सिद्धान्तो पर दृढ नही है। उसका ख्याल था कि वह लडकी विशेष रूप से खतरनाक है। एक बार गलियारे से गुजरते हुए उसने ऐसी तिरछी नजर से विन्स्टन को घूरा था कि विन्स्टन सिर से पैर तक भय के मारे काप गया था। विन्स्टन को ध्यान आया कि हो न हो यह लडकी विचार नियत्रक पुलिस की एजेट हो। यह सच था कि ऐसा होना सम्भव नही, परन्तु फिर भी उसे एक प्रकार की अजीब-सी बेचैनी बराबर बनी रही। जब भी वह आसपास कही होती विन्स्टन के मन मे बेचैनी, भय और उसके विरुद्ध घृणा का भाव बराबर बना रहता।

दूसरा आदमी ओ' ब्रायन था। वह अन्तरग पार्टी का सदस्य था। वह किसी महत्वपूर्ण पद पर था जिसका उसे तनिक-सा आभास ही था। काली पोशाक मे अन्तरग पार्टी के सदस्य को आते देख चारो तरफ सन्नाटा छा गया। ओ' ब्रायन मोटा और लम्बे कद का था। उसकी गर्दन बडी मोटी थी। चेहरे से क्रूरता, परिहास और रूखापन-सा टपकता था। इस तरह की भाव-भगिमा होते हुए भी उसके आचार मे कुछ आकर्षण था। वह अपनी नाक पर चश्मा इस प्रकार रखता था जो सामने बैठे आदमी को सकपका देने के लिए काफी होता था। पिछले बारह वर्षो मे लगभग दर्जन बार ही विन्स्टन ने ओ' ब्रायन को देखा था। विन्स्टन को ओ' ब्रायन का व्यक्तित्व बडा आकर्षक लगता था। इसका कारण केवल ओ' ब्रायन की परिष्कृत शिष्टता और पहलवानो जैसा शरीर ही नही था। उसे कुछ-कुछ यह भी आभास था कि ओ' ब्रायन राजनीतिक दृष्टि से अन्य पार्टी-उच्चाधिकारियो की भाति कट्टर नही है। उसकी मुखमुद्रा पर कुछ-कुछ उक्ताशय का भाव बराबर बना रहता था। और शायद यह भाव राजनीतिक विश्वासो की निश्चलता का न होकर बौद्धिकता का था। लेकिन कुछ भी हो, उसके मुख की चेष्टा ऐसी थी जिसे देखकर ओ' ब्रायन से बात करने को जी चाहता था। कठिनाई यही थी

कि टेलीस्क्रीन से कैसे बचा जाए और उसके साथ एकान्त मे किस प्रकार बैठा जाए । यदि टेलीस्क्रीन को धोखा दिया जा सकता और ओ' ब्रायन एकान्त मे होता तो उससे आसानी से बातचीत की जा सकती थी । विन्स्टन ने अपने इस अनुमान की सत्यता परखने के लिए जरा भी प्रयत्न नही किया था। तभी ओ' ब्रायन ने कलाई में बधी घडी की ओर देखा। दिन के ग्यारह बजने को थे । इसलिए उसने सोचा कि अब वह दो मिनट चलने वाली पार्टी-प्रचार की फिल्म देखने के बाद ही रेकार्ड-विभाग से जाएगा । वह विन्स्टन वाली कुर्सी की पक्ति मे ही कुछ दूरी पर दूसरी कुर्सी पर बैठ गया । दोनो के बीच एक स्त्री थी । यह भी विन्स्टन के विभाग मे ही काम करती थी । घने और गहरे काले बालो वाली यह लडकी विन्स्टन के पीछे बैठी थी ।

दूसरे ही क्षण टेलीस्क्रीन के पीछे से एक ऐसी मशीन चलने की आवाज़ आई जैसे वह बहुत पुरानी हो और बिना तेल के चल रही हो। यह आवाज़ इतनी कर्कश थी कि उसे सुनते ही आदमी के दात भिच जाते थे और पीठ तथा गर्दन के पीछे के रोम तक खडे हो जाते थे । घृणा प्रचार आरम्भ हो गया था ।

हमेशा की भाति, जनता के दुश्मन, गोल्डस्टीन की शकल टेलीस्क्रीन पर सबसे पहले आती । सबके मुह से धिक्कार की आवाज निकलने लगी। विन्स्टन की पक्ति वाली कुरसियो मे से एक पर बैठी स्त्री के मुह से भय और निराशा मिश्रित आह निकल गई । गोल्डस्टीन कायर और भगोडा था । बहुत समय पहले वह भी पार्टी में था और बडे भाई की बराबरी का नेता था । परन्तु बाद मे वह क्रान्ति-विरोधी कार्य करने लगा, जिससे उसे मौत की सजा दी गई, लेकिन वह भाग गया और लापता हो गया । उसका भागना और लापता हो जाना अब भी रहस्य था। घृणा प्रचार का कार्यक्रम प्रतिदिन दो मिनट के लिए होता था । हर बार फिल्म का कथानक भिन्न होता था किन्तु ऐसी कोई फिल्म नही होती थी जिसमे गोल्डस्टीन मुख्य पात्र न होता हो । वह आदि विद्रोही था । वह पार्टी की पवित्रता को नष्ट करने वाला आदि अपराधी था । पार्टी के विरुद्ध किया जाने वाला प्रत्येक अपराध, विद्रोह, विध्वसात्मक कार्य, पथभ्रष्टता आदि सब कुछ गोल्डस्टीन की शिक्षाओ के ही फलस्वरूप होते थे। वह कही न कही छिपा था और बराबर साजिशे करता रहता था । सम्भवत वह समुद्र पार किसी देश मे था और अपने विदेशी स्वामियो से धन लेकर तरह-तरह के षड्यत्र रचा करता था । कभी-कभी

यह भी अफवाह सुनाई पडती थी कि वह ओशनिया मे ही छिपा है।

विन्स्टन का सारा बदन अकड गया था। वह गोल्डस्टीन की शकल की ओर बिना कष्टपूर्ण भावो के नही देख पा रहा था। गोल्डस्टीन की शकल लम्बी, दुबली, यहूदियो की-सी थी। सफेद बाल थे और बकरे जैसी छोटी दाढी। शकल से होशियारी टपकी पडती थी। फिर भी यह शकल देखते ही मन मे घृणा के भाव उभर उठते थे। गोल्डस्टीन पार्टी की हमेशा की तरह विषैली आलोचना कर रहा था। उसकी आवाज भेडो जैसी थी। नाक पर चश्मा टिका था। ऐसा लगता था जैसे कोई पागल बोल रहा हो। आलोचना इतनी अतिशयोक्तिपूर्ण थी कि उसे सुनकर बच्चा भी यह समझ जाए कि वह गलत है, लेकिन साथ ही मन मे यह भ्रम उत्पन्न करती थी कि अन्य कम बुद्धि के लोग इस आलोचना के प्रभाव मे आ सकते है। गोल्डस्टीन बडे भाई को गालिया दे रहा था। वह पार्टी के नेताओ की निन्दा कर रहा था। वह कह रहा था कि यूरेशिया के साथ तत्काल शाति-सधि की जाए। वह भाषण की, समाचारपत्रो की, सभा करने की, और विचारो की स्वतत्रता की माग कर रहा था। वह पागलो की तरह चिल्लाकर कह रहा था कि क्रान्ति जिन उद्देश्यो से की गई थी, वे पूरे नही हुए। और यह सब इस ढग से कह रहा था जिसे सुनकर हसी आती थी। उसके बोलने का ढग पार्टी-नेताओ का था। भाषण मे नई भाषा के भी शब्द थे—बल्कि अन्य पार्टी-नेताओ के भाषणो मे आने वाले नई भाषाओ के शब्दो से भी अधिक। इसके साथ ही उसके सिर के पीछे युरेशियन सेनाओ के अनगिनत सैनिक मार्च करते हुए दिखलाए जा रहे थे। एक के बाद एक सैनिक-पक्ति स्क्रीन पर आती और लुप्त हो जाती। एक के गायब होते ही भावहीन मुखमुद्रा वाले एशियाई सैनिक पर्दे पर आ जाते। उनके बूटो की आवाज गोल्डस्टीन के भाषण के साथ बराबर मिश्रित थी।

अभी फिल्म को आरंभ हुए कठिनाई से तीस सेकेड भी नही हुए थे कि कमरे के आधे से अधिक व्यक्ति क्रोध से चिल्लाने लगे थे। गोल्डस्टीन का भेडो जैसा सन्तुष्ट चेहरा और यूरेशियन सैनिको का आना दर्शको की सहनशक्ति के बाहर था। इसके अलावा गोल्डस्टीन का चेहरा सामने आते ही लोगो मे भय और क्रोध के भाव अपने आप उभर आते थे। वह यूरेशिया और ईस्ट एशिया दोनो से कही अधिक निरतर घृणा का पात्र था। ओशनिया बराबर युद्ध करता रहता था। कभी यूरेशिया से तो कभी ईस्ट एशिया से। जब वह यूरेशिया से युद्ध करता तो ईस्ट

एशिया से उसकी मैत्री होती और जब ईस्ट एशिया से युद्ध करता तो यूरेशिया से। लेकिन गोल्डस्टीन के सबंध मे एक अजीब बात थी। उससे हर आदमी घृणा करता था। हर रोज़ और दिन मे हज़ार बार सभाओ मे, टेलीस्क्रीन पर, अखबारो मे और पुस्तको मे उसकी निन्दा की जाती थी, उसके सिद्धान्तो का खण्डन किया जाता था, उसके तर्क काटे जाते थे, उसकी हसी उडाई जाती थी और सब उसके भाषणो को हेय दृष्टि से देखते थे, परन्तु फिर भी गोल्डस्टीन का प्रभाव कम होता नजर नही आता था। हमेशा कोई न कोई उसके फन्दे मे फसता ही रहता था। एक दिन भी ऐसा नही गुज़रता था जब कि विचार नियत्रक पुलिस उसके जासूसो और तोड-फोड करने वाले आदमियो को पकडती न हो। उसके पास बहुत बडी गुप्त सेना थी, असख्य षड्यत्रकारी थे और वे सब राज्य को उलटने की सतत चेष्टा करते रहते थे। उसके आदमियो को 'ब्रदरहुड' की सज्ञा दी गई थी। यह भी अफवाह थी कि एक बड़ी भयकर पुस्तक है जिसे गोल्डस्टीन ने लिखा है और वह पुस्तक गुप्त रूप से प्रचारित की जाती है। इसका कोई नाम नही है। उसे केवल 'पुस्तक' के नाम से ही लोग जानते थे। परन्तु यह अफवाह ही अफवाह थी। ब्रदरहुड या पुस्तक के सबध मे पार्टी का हरेक सदस्य जहा तक संभव होता था, चर्चा करने से बचने का प्रयत्न करता।

दूसरे मिनट फिल्म चरम सीमा पर पहुच गई थी। लोग अपनी-अपनी कुर्सियो पर उछल रहे थे, चिल्ला रहे थे और शोर मचाकर गोल्डस्टीन की आवाज़ को अपनी आवाज मे डुबा देने का प्रयत्न कर रहे थे। बगल मे बैठी स्त्री का चेहरा सुर्ख हो गया और उसका मुह इस प्रकार बार-बार खुल और बद हो रहा था जैसे पानी से बाहर लाकर छोडी गई किसी मछली का। ओ'ब्रायन का भारी चेहरा भी लाल हो गया था। पीछे बैठी घने और गहरे काले बालो वाली लडकी चिल्ला रही थी, 'सुअर! सुअर!! सुअर!!!' अकस्मात् उसने नई भाषा वाली मोटी डिक्शनरी उठाकर स्क्रीन पर दे मारी। वह गोल्डस्टीन की नाक पर लगकर नीचे गिर गई। टेलीस्क्रीन के पीछे से आवाज़ बराबर आती रही। एकाएक विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह भी अन्य लोगो के साथ चिल्ला रहा है और अपने जूते से कुर्सी को बार-बार ठोकर मार रहा है। दो मिनट वाली उस घृणा प्रचार फिल्म की विशेष बात यह नही थी कि उसमे चिल्लाने वालो के साथ आप भी शोर मचाए, अपितु विशेषता यह थी कि आप बिना चीखे रह ही नही सकते थे। तीस सेकेंड

बाद ही गभीरता समाप्त हो जाती थी। भय और क्रोध का भाव आप पर हावी हो जाता था। ऐसी इच्छा होती थी कि किसी को मार डाला जाए, तकलीफ दी जाए, हथौडे से उसका मुह कूट दिया जाए। ये भावनाए बिजली की तरह उभर आती थी और पागलो जैसे काम न करने की इच्छा होते हुए भी लोग विक्षिप्तो की तरह चिल्लाने लगते थे। यह घृणा और विध्वस की इच्छा काल्पनिक थी और इसे किसी भी विषय या व्यक्ति की ओर मोडा जा सकता था। अस्तु, एक बार विन्स्टन की इस घृणा और क्रोध का भाव गोल्डस्टीन के बजाय कभी पार्टी, तो कभी बडे भाई और कभी विचार नियत्रक पुलिस पर केन्द्रित होता दिखाई दिया। वह स्वभावत गोल्डस्टीन से सहानुभूति करने लगता था, जो अकेला था और जिसे सबने बदनाम कर रखा था। किन्तु दूसरे ही क्षण वह अनुभव करता कि वह अन्य दर्शको के साथ मिल गया है और उसे लगता कि गोल्डस्टीन के विरुद्ध जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह सत्य है। ऐसे अवसरो पर उसके मन मे बडे भाई के विरुद्ध जो घृणा का भाव होता था, वह बडे भाई के प्रति प्रशसा के रूप मे बदल जाता। बडे भाई उसे अजेय, निर्भीक रक्षक, एशियाई डाकुओ के विरुद्ध खडी चट्टान-से लगते और गोल्डस्टीन अकेला एव असहाय होते हुए भी तथा उसका अस्तित्व सदिग्ध होते हुए भी दुष्ट जादूगर-सा लगता। ऐसा प्रतीत होता कि उसमे केवल अपनी आवाज़ से सारे सभ्य ससार को खत्म कर देने की शक्ति है।

कभी-कभी तो यह भी सभव होता है कि अपनी इच्छा से ही आप घृणा के पात्र को भी बदल दे। जिस प्रकार घोर दु स्वप्न मे आदमी प्रयत्न करके अपना सिर बलपूर्वक तकिए से हटा लेता है उसी प्रकार विन्स्टन ने अपनी घृणा का पात्र गोल्डस्टीन को न बनाकर अपने पीछे बैठी गहरे काले बालो वाली लडकी को बना लिया। उसके सामने स्पष्ट काल्पनिक दृश्य नाचने लगे। वह इस लडकी को रबड के कोडे से इतना मारेगा कि वह मर जाएगी। वह उसे नगा कर लकडी की सूली पर कस देगा और उसके सारे शरीर को तीरो से वेध देगा। वह उसके साथ बलात्कार करेगा और फिर उसका गला काट डालेगा। अब पहले से भी अधिक उसकी समझ मे आ गया था कि वह इस लडकी से क्यो घृणा करता था। वह उससे घृणा करता था क्योकि वह सुन्दर थी, तरुण थी और काम की भावनाओ से रहित थी, क्योकि वह उसे अपनी पर्यंकशायिनी बनाना चाहता, लेकिन वह ऐसा कभी नही कर सकेगा। उसकी पतली कमर, उसे ऐसा लगता था, अपनी बाहो मे लपेटने के

लिए विन्स्टन को आमन्त्रित करती थी, परन्तु वहा बंधी सुर्ख पेटी उसके को
का क्रोध दिलाने वाली प्रतीक थी।

अब घृणा प्रचार की उस फिल्म का चरम दृश्य दिखलाया जा रहा है। गोल्डस्टीन की आवाज बिलकुल भेड़ के मिमियाने जैसो हो गई थी और क्षण भर बाद ही शकल भी भेड जैसी हो गई। इसके बाद भेड की शकल यूरेशियन सैनिक की शकल मे खो गई। वह आगे बढ रहा था। उसकी मशीनगन आग उगल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह दर्शको पर चला रहा है और सामने की सीट में बैठे कुछ दर्शक सचमुच पीछे की तरफ झुक गए। तभी लोगो ने चैन की सास ली जब दुश्मन की शकल बडे भाई के चित्र मे खो गई। काले बालो, काली मूछो और शक्तिशाली चेहरे से रहस्यपूर्ण शान्ति की आभा फूट पडती थी। पूरे पर्दे पर यह शकल छा गई थी। बडे भाई क्या कह रहे थे यह कोई सुन नही पाया। शायद ढाढस बधाने वाले कुछ शब्द थे। ऐसे शब्द जो रणक्षेत्र के शोर में कहे जाते है, जो सुनाई तो नही पडते लेकिन जिनसे खोया साहस फिर लौट आता है। फिर बडे भाई का चेहरा भी लुप्त हो गया और उसकी जगह ये तीन नारे पर्दे पर सामने आ गये

युद्ध ही शान्ति है!

दासता ही स्वतत्रता है!

अज्ञानता ही शक्ति है!

परन्तु कई सेकेडो तक पृष्ठभूमि में बडे भाई का चेहरा बराबर बना रहा, जैसे दर्शको की आखो मे वह चेहरा अब भी बसा हो। विन्स्टन की पक्ति की कुरसियो पर बैठी औरत अब सामने वाली कुरसियो मे से एक की पीठ पर झुक गई थी। इसके बाद उसने दोनो हाथ परदे की तरफ करके बुदबुदाते हुए कहा "हे मेरे रक्षक!" यह कहने के बाद उसने अपने दोनो हाथो मे मुह छिपा लिया। स्पष्ट था कि वह कोई प्रार्थना कर रही थी।

इसी मौके पर सब लोग समवेत स्वर से एक प्रकार की सैनिक धुन मे 'बडे भाई, बडे भाई' गाने लगे। आवाज काफी भारी थी। कोई तीस सेकेंड यह क्रम चला। यह धुन भावातिरेक की अवस्था मे अक्सर गाई जाती थी। यह एक प्रकार से बडे भाई की बुद्धिमानी और शान का कीर्तन-सा था। परन्तु इससे भी अधिक सम्भवत यह आत्मसम्मोह की क्रिया थी जिसमे धुन के साथ कीर्तन करके मान-

सिक चेतना को भुला दिया जाता था। लेकिन विन्स्टन का उत्साह ठडा पड गया था। फिल्म देखते समय तो वह अपने आपको रोक नही पाता था और गुल मचाने मे शामिल हो जाता था। किन्तु इस कीर्तन की तो ध्वनि मात्र से वह घबडा जाता था। फिर भी अन्य लोगो के साथ बोलता ही रहा था। अपनी भावनाओ का शमन, अपनी मुद्रा पर सयम और अन्य लोगो का अनुकरण करने की उसकी स्वाभाविक आदत हो गई थी। परन्तु सभवत कुछ क्षणो के लिए उसकी आखो मे चमक-सी आ गई थी, उससे अन्दाज किया जा सकता था कि वह क्या सोच रहा है। और उसी समय वह बात हुई—यदि उस घटना की सत्यता पर अब भी विश्वास कर लिया जाए तो।

सहसा उसकी आखे ओ' ब्रायन से मिल गई। ओ' ब्रायन खडा हो गया था। उसने चश्मा उतार लिया और उस समय वह उसे नाक पर रख कानो पर चढा रहा था। क्षण से भी अल्प समय के लिए विन्स्टन की आखे ओ' ब्रायन से मिली और विन्स्टन ने जान लिया कि ओ' ब्रायन की मनस्थिति भी वही है जो उसकी थी। एक दूसरे ने एक दूसरे को आखो ही आखो मे सदेश दे दिया था और उसके बारे में कोई गलती होने की सभावना नही थी। ऐसा लगा कि दोनो के दिमाग खुल गए है और आखो के जरिए एक दूसरे की मन की बाते दोनो के पास आ-जा रही है। उसे लगा ओ' ब्रायन कह रहा है, 'मै तुम्हारे हृदय की घृणा, तिरस्कार तथा क्षोभ की भावनाओ को समझता हू। मै तुमसे सहमत हू और तुम्हारे साथ हू।' इसके बाद वह चमक गायब हो गई तथा अन्य सबकी भाति ओ' ब्रायन का चेहरा भी भावहीन हो गया।

बात बस इतनी-सी थी। उसे स्वय अपने आप पर सदेह होने लगा था कि वस्तुत यह घटना हुई भी थी या नही। इस प्रकार की घटना का कोई फल तो होना ही नही था। इससे केवल यही लाभ हुआ कि वह जान गया कि जिस प्रकार वह अन्दर ही अन्दर पार्टी का विरोधी है ठीक उसी प्रकार अन्य लोग भी है। गुप्त षड्यन्त्र की अफवाह शायद ठीक है। सभवत गोल्डस्टीन की सचमुच कोई पार्टी है। परन्तु असख्य गिरफ्तारियो, इकबाली बयानो और फासियो के बाद भी इस प्रकार का दल बना रहेगा—ऐसा असम्भव ही जान पडता था। कभी उसे विश्वास होता था और कभी नही होता था। कोई प्रमाण नही था। हलकी-सी झलक मिलती थी जिसका कुछ अर्थ हो भी सकता था और नही भी हो सकता था। कभी दो

आदमियो की बातचीत सुनाई दे जाती थी, कभी पाखानो की दीवारो पर कुछ लिखा दिखलाई पड जाता था, कभी दो अजनबी मिलकर इस प्रकार हाथ उठाते थे जिससे पता लग जाता था कि वे एक दूसरे से सम्बद्ध है । परन्तु यह सब अनुमान मात्र ही था । बहुत सम्भव है, सब कपोलकल्पना ही हो । इसके बाद उसने ओ'ब्रायन की ओर नही देखा और वह चुपचाप अपनी कोठरी मे आकर बैठ गया । जो सम्पर्क क्षण भर से भी कम समय के लिए स्थापित हुआ था, उसे आगे बढाने की बात भी विन्स्टन के दिमाग मे नही आई । यदि वह सोच भी लेता कि सम्पर्क किस प्रकार बढाया जाए तो भी ऐसा करना बहुत ही खतरनाक होता । एक या दो सेकेंड के लिए उनकी नज़रें सदिग्धावस्था में एक हुई थी और बस बात खत्म हो गई थी । परन्तु जैसी तालाबन्द कोठरी मे उनको रहना पड रहा था उसमे यह भी महत्वपूर्ण बात थी ।

विन्स्टन ने अगडाई ली और फिर कुर्सी पर सीधा बैठ गया । उसे डकार आई । शराब उसके पेट से ऊपर की तरफ आ रही थी ।

उसकी आखे कापी के पृष्ठ पर फिर से जम गईं । उसने देखा कि जितने समय वह दफ्तर की बाते सोच रहा था, उस समय मे भी उसने कुछ लिखा है । पहले जैसी कापती हस्तलिपि उसकी नही थी । उसने कई बार बडे-बडे अक्षरो मे लिखा था

बडा भाई, मुर्दाबाद !
बडा भाई, मुर्दाबाद !
बडा भाई, मुर्दाबाद !
बडा भाई, मुर्दाबाद !
बडा भाई, मुर्दाबाद !

यह नारा उसने कोई आधे पेज मे बराबर कई बार लिखा था ।

वह अब बडा भय अनुभव कर रहा था । परन्तु डर बेकार था, क्योकि यह लिखना कापी खोलने से बडा अपराध नही था । एकबारगी उसकी तबियत आई कि वह पृष्ठ फाड दे और डायरी लिखने का प्रयत्न सदैव के लिए छोड दे ।

परन्तु उसने ऐसा कुछ भी नही किया । वह जानता था, ऐसा करना बेकार होगा । चाहे वह 'बडा भाई मुर्दाबाद' लिखे या न लिखे, इससे कोई फर्क नही

पड सकता था । विचार नियत्रक पुलिस उसे अवश्य पकड लेगी । उसके मन मे पार्टी-विरोधी भाव तो थे ही, चाहे उन्हे लिखे या न लिखे । अब तो यह कर ही चुका था और यही अपराध था । इसे वे विचार-अपराध कहते थे । विचार-अपराध को सदैव छिपाया नही जा सकता था । आप कुछ समय के लिए, या कुछ वर्षों के लिए भले ही छिप-छिपकर यह अपराध करले परन्तु एक न एक दिन आपका गिरफ्त मे आ जाना निश्चित था ।

हमेशा रात को—हमेशा रात को ही ऐसी गिरफ्तारिया होती थी । अकस्मात् आपके कधे झकझोरकर आपको कोई सोते से जगा देता, आप आख खोलते ही देखते कि आपकी आखो पर तेज रोशनी पड रही है और आप चौधिया जाते । बिस्तर के चारों तरफ यमदूतो-से कठोर चेहरे वाले व्यक्ति घेरे खडे होते । अधिकाश मामलो में न तो कोई मुकद्दमा चलाया जाता था और न किसी गिरफ्तारी की कोई सूचना ही मिलती । लोग गायब हो जाते थे । वे हमेशा रात को ही लापता होते थे । गायब आदमी का नाम हर रजिस्टर से मिटा दिया जाता था । ऐसा हर कागज़ मिटा दिया जाता जिसमे नाम मात्र के लिए भी गायब आदमी का उल्लेख होता था । गायब आदमी के अस्तित्व से ही इन्कार कर दिया जाता था और फिर उसे भुला दिया जाता था । आप मार दिए जाते, कत्ल कर दिए जाते और इस सबके लिए एक ही वाक्य था, 'भाप बनाकर उडा दिया जाना' ।

कुछ समय के लिए उसे दौरा-सा आ गया और वह उसी झोक मे लिखता चला गया .

'वे मुझे गोली मार देंगे, मुझे इसकी चिन्ता नही । वे मेरी गर्दन के पिछले हिस्से में गोली मारगे मुझे इसकी भी परवाह नही । बडे भाई का नाश हो । वे हमेशा गर्दन के पिछले भाग मे ही गोली मारते है, मुझे फिक्र नही, बडे भाई का सत्यानाश हो•••'

वह कुर्सी पर निढाल होकर गिर गया । उसे अपने आप पर लज्जा आ रही थी । उसने कलम रख दी । इसके एक क्षण बाद ही वह ज़ोर से चौक पडा । तभी दरवाजे पर थपथपाने की आवाज सुनाई दी ।

आ गए ! वह चूहे की भाति चुप होकर बैठ गया । वह सोच रहा था कि कोई होगा, शायद एक बार थपथपा कर ही चला जाए। परन्तु ऐसा सोचना दुराशामात्र थी । फिर थपथपाहट हुई । देर करना और भी खतरनाक होगा,

उसने सोचा । उसका हृदय जोरो से धक्-धक् कर रहा था । परन्तु मुह पर आदतन कोई भाव नही था । वह उठा और भारी कदमो से दरवाजे की ओर चला ।

(२)

जैसे ही विन्स्टन ने दरवाजा खोलने के लिए हत्थे को छुआ उसे मुडकर देखने पर कापी खुली दिखलाई पडी । उसमे पूरे पृष्ठ पर 'बडा भाई मुर्दाबाद' लिखा था । ये अक्षर इतने बडे-बडे थे कि दरवाज़े से भी लिखे दिखलाई पडते थे । यह बडी ही बेवकूफी का काम हुआ था । परन्तु भय की अवस्था मे भी विन्स्टन यह नही चाहता था कि कापी बन्द कर दी जाए और चिकना पन्ना खराब कर दिया जाए क्योकि स्याही अभी तक सूखी नही थी ।

उसने लम्बी सास ली और दरवाजा खोल दिया । दरवाजा खोलते ही उसका दम मे दम आ गया । उसके सामने सफेद चेहरे की, उडते बालो वाली औरत खडी थी । उसके चेहरे पर झुरिया थी ।

'ओह कामरेड !' उसने सूखी और खरखरी आवाज मे कहा, 'मुझे कुछ ऐसा लगा कि आप कमरे मे लौट आए है । क्या आप मेरी रसोई मे चलकर जरा नाली देख लेगे ? वह रुक गई है, शायद कुछ फस गया है उसमे...'

यह श्रीमती पारसन्स थी—विन्स्टन के पडोसी की पत्नी । (पार्टी मे श्रीमती कहना ठीक नही समझा जाता था—आशा की जाती थी कि एक दूसरे को सबोधित करने में 'कामरेड' शब्द का प्रयोग किया जाएगा । परन्तु कुछ औरतो के नाम के साथ अपने आप ही श्रीमती शब्द लग जाता था ।) उनकी उमर कोई तीस वर्ष की होगी । लेकिन वह अपनी उमर से अधिक लगती थी । उन्हें देखकर ऐसा लगता था कि उनके चेहरे की झुरियो मे धूल भर गई है । विन्स्टन उनके पीछे-पीछे चला गया । इस प्रकार की झुझला देनेवाली छोटी-मोटी मरम्मतो की रोज़ ही आवश्यकता हुआ करती थी । विजय भवन काफी पुराना था । ये फ्लैट १९३० के लगभग बने थे और अब प्राय. गिरने जैसे हो गए थे । छतो और दीवारो से पलस्तर बराबर गिरता रहता था । जब भी बरफ जमती तो नलके फट जाते थे । मितव्ययिता के कारण अधिकतर मकान को गरम तो किया ही नही जाता था और जब ऐसा होता भी था तो गरम रखने वाले नलो को आधा ही खोला जाता था । मरम्मत

वही होती थी जो आप अपने हाथ से कर ले। सरकारी मरम्मत की मजूरी मुश्किल से मिलती थी। एक खिडकी मे शीशा लगवाने की स्वीकृति आते-आते दो साल लग जाते थे।

'टॉम घर पर नही है, इसलिए आपको बुलाना पडा', श्रीमती पारसन्स ने कहा।

पारसन्स का हिस्सा विन्स्टन से बडा था। उसमे अधेरा भी अधिक था। घर के अन्दर हर चीज़ टूटी-फूटी और रौंदी हुई दिखाई देती थी। ऐसा लगता था, कोई बहुत बडा जानवर कमरे भर मे दौडा हो। हॉकी, घूसेबाजी के दस्ताने, फुटबाल के अन्दर की रबड़ वाली गेद, पसीने से गन्दे मोजे फर्श पर बिखरे पडे थे। यूथ लीग और जासूसो के बडे-बडे नारे कागजो पर लिखे रखे थे। बडे भाई का आदम कद पोस्टर चित्र लगा था। उबली बन्दगोभी की बदबू यहा भी आ रही थी, यह तो सभी जगह आती थी परन्तु इसके साथ किसीके पसीने की तेज गध थी। स्पष्ट था कि वह आदमी इस समय कमरे मे नही था। दूसरे कमरे मे कोई कघे और कागज को टेलीस्क्रीन मे बज रही सैनिक धुन के साथ बजा रहा था।

'बच्चे है,' श्रीमती पारसन्स ने कुछ भयातुर दृष्टि से दरवाजे की ओर देखते हुए कहा, 'आज वे गए नही है और बेशक···'

श्रीमती पारसन्स की आदत थी कि वह अपने वाक्यो को अधूरा ही छोड दिया करती थी। रसोईघर की नाली ऊपर तक हरे पानी से भरी हुई थी। इसमे से बदगोभी की बदबू और भी बुरी तरह आने लगी थी। विन्स्टन ने झुककर पाइप के जोड को देखा। वह हाथ नही डालना चाहता था। उसे झुकना भी पसन्द नही था क्योकि ऐसा करने मे उसे खासी आने लगती थी। श्रीमती पारसन्स उसकी ओर असहाय भाव से देख रही थी।

'यदि टॉम होता तो वह एक मिनट मे वह नाली साफ कर देता।' उन्होने कहा, 'उसे तो ऐसा काम करना बडा भाता है। अपने हाथ से ऐसे काम करने मे वह बडा चतुर है।' सत्य मत्रालय मे पारसन्स विन्स्टन के साथ ही काम करता था। वह देखने मे मोटा था, परन्तु बहुत ही चचल था। विचार नियत्रक पुलिस से भी अधिक पार्टी की स्थिरता पारसन्स जैसे व्यक्तियो पर ही निर्भर थी। पैंतीस वर्ष की अवस्था में भी वह यूथलीग नही छोडना चाहता था। वह जासूसी का काम भी कानूनी अवधि से एक वर्ष अधिक करता रहा था। मन्त्रालय में उसे ऐसे काम

पर लगाया गया था जिसमे उसे किसी के अधीन काम करना पडता था और अकल की बहुत कम जरूरत पडती थी। खेल-कूद की समितियो, सामुदायिक भ्रमणो, प्रदर्शनो, बचत अभियानो तथा अन्य स्वयसेवा के कार्यो मे वह सबसे आगे रहता था। वह बडी शान से मुह मे पाइप दबाए हुए बताता था कि पिछले चार वर्षो से एक भी साझ ऐसी नही गुजरी है जब वह सामुदायिक केन्द्र पर न गया हो। उसके शरीर से पसीने की बदबू बराबर आती रहती थी जिससे उसके श्रमपूर्ण जीवन का आभास मिल जाता था। यह बदबू उसके चले जाने के बाद भी वातावरण मे छाई रहती थी।

'आपके यहा पेचकस है ?' विन्स्टन ने पूछा।

'शायद हो' श्रीमती पारसन्स एकदम निराश-सी हो गई, 'बच्चो ने इधर-उधर...।'

कमरे मे बच्चो के घुसते ही जूतो की और सैनिक धुन पर कघा और कागज बजाने की आवाज फिर से आई। श्रीमती पारसन्स जिस औजार की आवश्यकता थी वह ले आई। विन्स्टन ने बोल्ट खोलकर पानी निकल जाने दिया। इसके बाद पाइप मे से बालो की गूथ निकाल कर फेक दी जिसकी वजह से पानी रुक गया था। उसने अपने हाथ धोए और फिर बगल के कमरे मे चला गया।

'अपने हाथ ऊपर उठाओ !' जगलियो की तरह चिल्लाते हुए किसी ने कहा।

एक खूबसूरत बच्चा खिलौने की पिस्तौल हाथ मे लिए मेज के नीचे से निकल आया था और उसे धमका रहा था। उससे दो साल छोटी उसकी बहन भी हाथ मे लकडी लिए वैसा ही इशारा कर रही थी जैसा उसका भाई। दोनो नीले निकर, भूरी कमीजे पहने थे और लाल रूमाल बाधे थे। यह जासूसो की पोशाक थी। विन्स्टन ने हाथ ऊपर कर दिए लेकिन बच्चो के रग-ढग मे कुछ ऐसी बात थी जिससे लगता था कि यह सब खेल ही नही है।

'तुम राजद्रोही हो।' लडका चीखा, 'तुम्हारे विचार अपराधियो जैसे है। तुम यूरेशियन जासूस हो। मै तुम्हे भाप बनवा के उडवा दूगा। मै तुम्हे नमक की खानो मे भिजवा दूगा।'

अकस्मात् लड़का उसके चारो तरफ 'राजद्रोही' कहता हुआ, इधर-उधर कूदने लगा और लडकी भी वैसा ही करने लगी। विन्स्टन को डर लग रहा था। लड़के

की आखो से क्रूरता-सी झलकती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह विन्स्टन को मारना चाहता है। वह समझता था कि वह यह काम करने के लिए काफी बडा हो गया है। कुशल ही समझिए कि उसके हाथ मे असली पिस्तौल नही थी।

श्रीमती पारसन्स घबडाई-सी कभी बच्चो को, तो कभी विन्स्टन को देख रही थी। यहा रोशनी में विन्स्टन ने देखा कि श्रीमती पारसन्स की झुर्रियो मे सचमुच धूल भरी हुई थी।

'कभी-कभी तो ये बच्चे इतना शोर मचाते ह कि कुछ न पूछिए,' श्रीमती पारसन्स कह रही थी, 'ये लोग आज इसलिए भी नाराज है कि फासी का दृश्य देखने नही जा सके। मै व्यस्त हू और टॉम के जल्दी वापस लौटने की आशा नही है।'

'हम फासी का दृश्य देखने क्यो नही जाएगे ?' लडके ने चीखते हुए पूछा।

'हम देखेगे ! हम देखेंगे !' लडकी ने कहा।

उस दिन शाम को कुछ यूरेशियन युद्ध-अपराधियो को पार्क मे फासी दी जाने वाली थी, विन्स्टन को याद आया। यह कार्य महीने मे एक बार अवश्य होता था और लोग बडे चाव से यह दृश्य देखने जाते थे। बच्चे हमेशा इसे देखने के लिए जिद्द करते थे। उसने श्रीमती पारसन्स से बिदा ली और दरवाजे की ओर बढा। वह मुश्किल से छ कदम भी नही गया होगा कि उसकी गर्दन के पिछले हिस्से मे कोई चीज़ इतने जोरो से आकर लगी कि वह पीडा से छटपटा गया। उसने मुडकर देखा कि श्रीमती पारसन्स लडके को दरवाज़े की ओर खीच रही है और वह ज़मीन मे लोट लगा गया है।

'गोल्डस्टीन !' अपने पीछे दरवाज़ा बद होते ही विन्स्टन को आवाज सुनाई पडी। यह लडके का कण्ठस्वर था। विन्स्टन ने देखा कि मा का मुह सफेद पड गया। वह डर गई थी।

अपने कमरे मे वापस आकर वह तेज़ी से टेलीस्क्रीन के आगे निकल गया और कुर्सी पर जाकर बैठ गया। वह अपनी गर्दन का पिछला भाग अब भी सहला रहा था। टेलीस्क्रीन से सगीत बद हो गया था। इसके विपरीत एक व्यक्ति फौजी ढग से एक नए जहाज के शस्त्रास्त्रो के बारे मे विस्तार से बतला रहा था। यह तैरता किलानुमा जहाज़ आइसलैड और फेरो द्वीप के बीच कही लगर डाले था।

वह सोच रहा था, ऐसे बच्चो के साथ मा गहरे आतक मे ही दिन काटती होगी।

साल-दो साल बाद यही बच्चे अपनी मा मे ऐसा दोष खोज निकालने का प्रयत्न करेगे जिससे उसे पार्टी विरोधी घोषित किया जा सके। आजकल सभी बच्चे बडे खतर-नाक थे। उन्हे जो सस्था जासूसी सिखलाती थी, वह ऐसी शिक्षा देती थी कि घर-वालो का कोई भी अनुशासन वे मानते ही नही थे। परन्तु वे पार्टी के विरुद्ध कोई बात नही सोचते थे। इसके विपरीत वे पार्टी की ईश्वर की तरह पूजा करते थे और उन्हे पार्टी से सबधित हर चीज़ प्रिय थी। गाने, जुलूस, नारे, भ्रमण, ड्रिल, नकली राइफल के साथ सैनिक अभ्यास, बडे भाई की स्तुति—यह सब उन्हे शान-दार खेल-सा लगता था। उनकी सारी भावनाएं, उग्रता राजद्रोहियो, विदेशियो, तोडफोड करने वालो, अपराधी विचार रखने वालो के विरुद्ध होती थी। शायद ही कोई ऐसा सप्ताह व्यतीत होता हो जब टाइम्स मे इस आशय की एक न एक खबर न छपती हो कि किस प्रकार कुछ पार्टी-विरोधी बाते सुनकर किसी बच्चे ने अपने मा-बाप को पुलिस के हवाले कर दिया। ऐसे बच्चो को 'वीर बालक' की उपाधि दी जाती थी।

उसकी गरदन का दर्द धीरे-धीरे दूर हो गया। उसने अपनी कलम उठा ली और सोचने लगा कि क्या वह कुछ और भी लिख सकता है। अकस्मात् उसे ओ'ब्रायन का फिर ध्यान आ गया।

वर्षो पूर्व—सभवत सात साल पहले उसने सपने मे देखा था कि वह एक बिलकुल अधेरे कमरे मे चल रहा है और उसके बगल मे बैठे किसी आदमी ने कहा था, 'अब हम लोग दुबारा ऐसी जगह मिलेगे, जहा अधेरा न होगा।' यह बात बडी शातिपूर्वक कही गई थी। आज्ञा जैसा उसमे कोई भाव नही था। वह रुका नही था और चलता चला गया था। सबसे अजीब बात तो यह थी कि उस सपने मे उन शब्दो का उस पर कोई असर नही हुआ था। परन्तु बाद मे उसने अनुभव किया था, वे शब्द उसने ओ'ब्रायन के कण्ठस्वर मे सुने थे।

विन्स्टन ने आज सवेरे ओ'ब्रायन की आखो मे जो चमक देखी थी उसके बाद भी वह निश्चय नही कर पा रहा था कि वह आदमी उसका मित्र है या शत्रु। उसे यह बात कुछ महत्वपूर्ण भी नही जच रही थी। उन दोनो के बीच पार्टी के सबधो या स्नेह सबधो को छोड भी दिया जाए तो भी एक ऐसी कडी थी जिससे प्रकट होता था कि दोनो के विचारो मे समानता है। उसने कहा था, 'विन्स्टन इसका मतलब नही जानता।' परन्तु वह यह समझता था कि किसी न किसी रूप

मे यह बात सत्य अवश्य होगी ।

टेलीस्क्रीन से आने वाली आवाज अकस्मात् रुक गई । बिगुल बजने की स्पष्ट ध्वनि वातावरण मे गूज गई । इसके बाद टेलीस्क्रीन पर कोई कह रहा था ·

'सुनिए, कृपया ध्यान से सुनिए ! ! मलाबार से यह समाचार अभी-अभी मिला है । दक्षिण भारत मे हमारी सेनाओ ने विजय प्राप्त कर ली है । मैं सरकारी तौर पर यह बात कह रहा हू कि अब युद्ध समाप्त होने में अधिक विलम्ब नही है । यह समाचार अभी-अभी मिला है ।'

विन्स्टन ने मन ही मन कहा, अब कोई खराब समाचार मिलने वाला है । इसके बाद हुआ भी वही । पहले तो यूरेशियन सेना के हताहतो की लम्बी-चौडी सख्या बतलाई गई फिर घोषणा की गई कि आगामी सप्ताह से चॉकलेट का राशन तीस ग्राम से घटाकर बीस ग्राम कर दिया जाएगा ।

विन्स्टन को फिर डकार आई । शराब का नशा उतर रहा था । उस पर खुमारी-सी छा रही थी । टेलीस्क्रीन शायद विजयोल्लास मे या फिर चॉकलेट के राशन के कम होने के गम को गलत करने के लिए 'ओशनिया—यह सब तेरे लिए!' की राष्ट्रीय धुन बजा रहा था । वह धुन बजते ही उसे खडा हो जाना चाहिए था । लेकिन टेलीस्क्रीन से वह छिपा था इसलिए उसे सावधान (अटेशन) की मुद्रा में खडे होने की जरूरत नही थी ।

'ओशनिया—यह सब तेरे लिए !' की धुन के बाद सुगम सगीत बजने लगा था । विन्स्टन खिडकी की ओर चला गया । अब फिर उसकी पीठ टेलीस्क्रीन की ओर थी । बाहर अब भी ठडक थी । मौसम साफ था । कही दूरी पर राकेट गिरने की गूजती हुई आवाज सुनाई पडी । हर सप्ताह आजकल लन्दन मे बीस या तीस राकेट गिर रहे थे ।

नीचे सडक पर ब्रिटिश समाजवाद के पोस्टर फट जाने के कारण हवा मे फटफटा रहे थे । ब्रिटिश समाजवाद के पवित्र सिद्धात, नई भाषा, द्वैध विचार, अतीत की परिवर्तनशीलता । वह यह सब सोच रहा था । उसे ऐसा लग रहा था कि वह समुद्र की तलहटी के किसी जगल मे घूम रहा है । वह दानवो की दुनिया मे है और स्वय भी दानव बन गया है । इस बात का क्या प्रमाण था कि एक भी जीवित मनुष्य उसकी ओर था ? यह जानने का उसके पास क्या साधन था कि पार्टी की सत्ता सदैव नही बनी रहेगी ? उत्तरस्वरूप उसको मत्रालय की इमारत पर ये तीन

नारे फिर दिखलाई पड गए

युद्ध ही शान्ति है !

स्वतन्त्रता ही दासता है !

अज्ञान ही शक्ति है !

उसने पचीस सेंट का एक सिक्का जेब से निकाला। सिक्के पर भी वे ही नारे छोटे-छोटे अक्षरो मे लिखे थे। दूसरी तरफ बडे भाई की शकल थी। सिक्के से भी वे आखे घूरती नजर आ रही थी। आप कही जाइए, सिक्को से, टिकटो से, किताबो की जिल्दो से, पोस्टरो और सिगरेट पैकेटो के कागजो से—हर जगह से बडे भाई की शकल आपको घूरनी नज़र आती थी। सोते-जागते, खाते-पीते, काम करते, घर-बाहर, स्नानागार मे या पलग पर हर जगह वे ही आखे थी। उनसे पीछा नही छूटता था। आपका अपना कुछ भी नही था—केवल मस्तिष्क के नन्हे-से आन्तरिक क्षेत्र को छोडकर।

सूरज झुक गया था। सत्य-मत्रालय की खिडकिया अधेरे मे छेद जैसी लग रही थी। उसका दिल इस बडी इमारत के सामने दबा जा रहा था। यह बडी मजबूत थी। वह सोच रहा था—उस पर हमला नही किया जा सकता था। हजार राकेट बम भी उसे नष्ट नही कर सकते थे। यह डायरी आखिर वह किसके लिए लिख रहा है। भविष्य के लिए—अतीत के लिए, ऐसे युग के लिए, जो कल्पना मात्र ही है। उसके सामने मौत नही—अस्तित्व का ही जडमूल से उन्मूलन है। डायरी को जलाकर राख कर दिया जाएगा और उसे भाप बना कर उडा दिया जाएगा। जो कुछ उसने लिखा है उसे केवल विचार नियत्रक पुलिस डायरी नष्ट करने के पूर्व पढेगी। इसके बाद उसे नष्ट कर दिया जाएगा तथा उसकी स्मृति तक शेष नही रहेगी। आप भविष्य के लिए क्या कर सकते है? विशेप कर उस समय जब आपका नामोनिशान तक नही छोडा जाए, आपका अनामी सन्देश तक न लिखा रहने दिया जाए?

टेलीस्क्रीन ने चौदह (दिन के दो) बजाए। अब दस मिनट के अन्दर उसे वापस लौट जाना है। ढाई बजे उसे दफ्तर मे काम पर होना चाहिए।

घडी के घटे सुन उसे फिर साहस हो आया था। एकात मे वह भूत की तरह सत्य बात कह रहा था पर उसकी वह बात सुनने वाला कोई न था, लेकिन उसे लग रहा था जब तक वह अपनी बात कहता जाएगा, वह कडी, अतीत से

भविष्य की ओर ले जाने वाली कडी, टूटेगी नही। मानवीय परम्परा की प्रगति इस बात पर निर्भर नही है कि कोई किसी की बात सुनना है या नही बल्कि इस बात पर निर्भर होती है कि कहने वाले का मन एव मस्तिष्क स्वस्थ है या नही। वह मेज पर गया। उसने दवात मे कलम डुबोया और लिखा

'भविष्य या अतीत को—उस वक्त को जब विचारो की स्वतत्रता होगी, जब मनुष्य मनुष्य से भिन्न मत भी रख सकेगा—जब सत्य का अस्तित्व बना रह सकेगा और जो कर दिया जाएगा उसे मिटाया न जा सकेगा।

'एकरूपता के युग से, एकान्त के युग से, बडे भाई के युग से और द्वैध-विचारो के युग से—सबका अभिनन्दन।'

वह सोच रहा था कि वह मर चुका है। वह सोच रहा था अब उसके विचार व्यवस्थित रूप से दिमाग मे आ रहे है। अब उसने निर्णयात्मक कदम उठा लिया है। हर कार्य का परिणाम उस कार्य ही से सन्निहित होता है। उसने लिखा

'विचारो सम्बधी अपराधो का परिणाम मृत्यु नही है; इस प्रकार का अपराध स्वय ही मृत्यु है।'

अब चूकि उसने अपने आपको मृत मान लिया था, इसलिए अब उसके लिए यह ज़रूरी था कि वह जितने दिन सभव हो जिए। उसकी दो उगलियो मे स्याही लग गई थी। स्याही के ये दाग फसा सकते थे। मत्रालय मे कोई भी उसकी उगलियो मे से ये दाग देखकर सोच सकता था कि वह भोजन-मध्यान्तर मे क्या लिखता रहा था और क्यो लिख रहा था? लिखने के लिए उसने पुराने किस्म के कलम का उपयोग क्यो किया? और फिर वह शकालु व्यक्ति सबधित अधि-कारियो को सूचित कर सकता था। (उसे अपने बगल मे बैठी स्त्री तथा अपने पीछे बैठी काले गहरे बालो वाली लडकी का ध्यान हो आया जिन्होने सवेरे उसके साथ घृणा प्रचार की फिल्म देखी थी।) उसने बाथरूम मे जाकर साबुन से मल-कर उगलिया धोई। साबुन क्या था—रेतने वाला कागज था। उसके लगाने से स्याही तो स्याही, खाल तक उधड जाती थी। इस काम के लिए यह उपयुक्त ही था।

उसने डायरी को दराज मे रख दिया। उसे छिपाने की चेष्टा करना अब व्यर्थ था। परन्तु वह यह बात अवश्य जान सकता था कि डायरी को किसी ने देखा है या नही। उसके पन्ने के एक कोने मे लगा बाल तो सबको दिखाई पड़

जाएगा। उसने धूल का एक सफेद कण उठाकर डायरी के कवर के एक कोने पर रख दिया। उसका खयाल था कि यदि किसी ने डायरी को उठाया तो यह कण वहा से अवश्य गिर जाएगा।

(३)

विन्स्टन अपनी मा का स्मरण कर रहा था।

उसकी उमर कोई दस-ग्यारह वर्ष की होगी, जब उसकी मा अकस्मात् लापता हो गई थी। मा का कद लम्बा था। मूर्तियो जैसा कलात्मक चेहरा था। अधिकतर वह चुप ही रहती थी। वह बहुत धीरे-धीरे चलती थी। मा के केश बहुत ही सुन्दर थे। पिता की शकल उसे स्पष्ट याद नही थी। लेकिन जो कुछ धुधली-सी याद थी, वह यह थी—वह दुबले-पतले, अपेक्षाकृत श्यामवर्ण के थे। हमेशा गहरे रग के कपडे पहनते थे। (विन्स्टन को यह भी याद था कि उसके पिता पतले सोल वाले जूते पहनते थे।) चश्मा लगाते थे। सन् १९५० और ६० के बीच जो 'शुद्धि' हुई थी, उसमे विन्स्टन के माता-पिता का भी सफाया हो गया था।

उस समय उसकी मा जमीन की गहराई मे उसकी छोटी बहन को गोदी मे लिपटाए बैठी थी। उसे अपनी बहन की याद ही नही थी। जो कुछ उसे याद था वह इतना ही कि उसकी बहन बहुत दुबली, शान्त लडकी थी। उसकी आखे बडी-बड़ी थी। दोनो उसे लग रहा था उसे नीचे से ऊपर की ओर देख रही है। वे भूमि के गर्भ मे थी, शायद किसी कुए मे, या किसी गहरी कब्र मे। परन्तु यह जगह ऐसी थी जो नीची होती हुई भी और नीचे होती जा रही थी। वे शायद किसी डूबते जहाज़ की कोठरी मे थी और गहरे पानी से होती हुई उनकी निगाहे विन्स्टन तक पहुच रही थी। जहाज की कोठरी मे अब भी कुछ हवा थी। वे उसे देख सकती थी और वह उन्हे। वे पानी मे, हरे पानी मे बराबर नीचे डूबती जा रही थी और किसी भी क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो सकती थी। वह हवा और प्रकाश मे बाहर था और वे मौत की ओर नीचे की तरफ खिची जा रही थी। वह भी जानता था और वे भी जानती थी। उनके चेहरे या हृदय मे कोई दुर्भाव नही था। वे इतना जानती थी कि विन्स्टन को जिन्दा रखना है तो उन्हें मरना है। और यह ऐसी बात थी जिसको टाला नही जा सकता था।

वह नही जानता कि क्या हुआ लेकिन वह अनुभव करता था कि उसकी मा और बहन केवल इसलिए बलिदान हो गई कि वह जी सके । यह वह सपना था, जिसमे स्वप्न की सारी विशेषताए थी और वह उसके बौद्धिक जीवन का अग बन गया था । जागने पर नए-नए विचार उसके दिमाग मे आते थे । विन्स्टन जानता था कि तीस वर्ष पूर्व उसकी मा और बहन का देहान्त अत्यन्त दुखान्त परिस्थितियो मे हुआ । अब वैसी मौत नही हो सकती । उसका खयाल था कि दुखान्त घटनाए अतीत की वस्तु है । उस युग की जब व्यक्ति का कुछ अपना निजी जीवन था, प्रेम था, मित्रता थी और परिवार का एक सदस्य दूसरे सदस्य की मदद के लिए कारण जाने बिना सहायता करने के लिए तैयार रहता था । मा की याद आते ही उसका हृदय फटने लगता था क्योकि उसकी मा उसे प्यार करते हुए मरी थी । वह उस समय बहुत छोटा था और स्वार्थी भी तथा बदले मे मा को उतना प्यार नही कर सकता था । उसे पता नही कि वह किस प्रकार मरी । परन्तु उसे लग रहा था कि आज वह बात सभव नही है । आज भय था, घृणा थी, पीडा थी परन्तु मानवीय भावनाओ की गरिमा नही थी, किसी को किसी के लिए गहरा क्लेश नही होता था । परन्तु अपनी मा और बहन की आखो मे उसे वह बात दिखलाई पडती थी । वे बाते उसे नीचे गहरे हरे पानी मे डूबती हुई मा और बहन की बड़ी-बडी आखो मे दिखलाई पडती थी ।

सहसा उसे लगा कि वह ग्रीष्म की सध्या को हरी घास के मैदान पर खडा है । उस पर डूबते सूरज की किरणे पड रही है । उसने इस दृश्य की कल्पना इतनी बार की थी कि अब उसे यह सदेह होने लगा था कि यथार्थत. उसने उक्त दृश्य देखा भी था या नही ! वह जाग्रत अवस्था मे उसे सोने का देश कहता था । जहा खरगोश मुलायम घास चुगते दिखलाई पड जाते थे । सडक पर दोनो ओर दूर तक फलो के वृक्ष थे । इधर-उधर छोटे-मोटे टीले थे । हलकी हवा मे पेडो की टहनिया ऐसी हिलती नज़र आती थी जैसे किसी रमणी की केशराशि वायु के झोके से उड रही थी । कुछ दूरी पर हालाकि दिखलाई नही पड रहा था, कलकल करती हुई मथर गति से कोई नदी बहती जा रही थी । इसके आसपास झीलो मे बत्तखे तैरती दिखती थी ।

गहरे काले बालो वाली युवती उसकी ओर आती-सी लगती थी । क्षण भर ही मे उसे लगना कि उस युवती ने अपने कपडे फाड डाले है और उन्हे उपे-

क्षित भाव से एक ओर फेक दिया है। युवती की त्वचा कोमल, चिकनी और शुभ्र है। परन्तु उसके हृदय मे कोई भावना ही उत्पन्न नही हो रही। शायद उसने युवती की ओर देखा भी नही। उसे केवल एक ही बात कुछ अच्छी लगी और वह थी उसके कपडे उतार फेकने का ढग। उसके ढग से लगता था कि उसने बडी शिष्टता और लापरवाही से वर्तमान सस्कृति और सभ्यता की सारी परम्पराओ को नष्ट कर डाला है। उसे लगता था कि सारी वर्तमान विचार-व्यवस्था, बडे भाई और पार्टी को इसी प्रकार की साधारण क्रिया से बिलकुल नष्ट-अस्तित्वहीन किया जा सकता था। हाथ के एक इशारे से सारा काम हो जाएगा। परन्तु यह सकेत भी अतीत युग का था। विन्स्टन जागा तो उसके मुह पर शेक्सपियर का नाम था।

टेलीस्क्रीन से सीटी बज रही थी। यह सीटी इसी प्रकार तीस सेकेंड तक बजती रही। सवा सात बजे थे। दफ्तर जाने वाले लोगो के लिए उठने का समय था। विन्स्टन बिस्तर से उठा। वह नगा था। पार्टी के साधारण सदस्यो को वर्ष मे तीन हजार वस्त्र-कूपन मिलते थे। पाजामे लेने मे छ सौ कूपन खर्च हो जाते थे। उसने निकर और बनियान उठा ली। ये कपडे कुरसी पर पडे थे। तीन मिनट बाद व्यायाम का कार्यक्रम शुरू होने वाला था। दूसरे ही क्षण उसे खासी का दौरा उठ आया। उसे सुबह उठते ही खासी का यह दौरा प्राय प्रतिदिन उठ आता था। खासी से उसका दम इतना घुट गया कि उसे लेट जाना पडा। कई बार गहरी सास लेने पर उसका दम वापस लौट सका। खासी से उसकी नसे फूल गई थी। टखने की नस वाला फोडा खुजला रहा था।

'तीस से चालीस की आयु वाले लोग', एक जनानी आवाज टेलीस्क्रीन से चीखती-सी आई, 'तीस से चालीस की आयुवाले लोग अपनी-अपनी जगह पर खडे हो जाए।'

विन्स्टन उछलकर टेलीस्क्रीन के सामने आ खडा हुआ। टेलीस्क्रीन मे एक तरुण युवती पहलवानी पोशाक और खिलाडियो के जूते पहने खडी थी।

'हाथ झुकाइए और फैलाइए।' वह बोली, 'सब लोग मेरा अनुकरण करे। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार! कामरेड आइए, आइए मेरा साथ दीजिए। जरा तेजी से। एक, दो, तीन, चार! एक, दो, तीन, चार!'

अभी खासी के दौरे का दर्द विन्स्टन भुला नही पाया था। वह सपने भी पूरी

तरह नही भूला था किन्तु व्यायाम की तालमय गति के कारण उसका ध्यान उस तरफ से हटा। वह मशीन की तरह अपने हाथ आगे-पीछे फेक रहा था। और अपने मुह पर ऐसा भाव बनाए था जैसे उसे व्यायाम मे आनन्द आ रहा हो, क्योकि ऐसा भाव रखने मे ही खैर थी। परन्तु वह अपने बचपन की याद भी करता जा रहा था। यह बडा कठिन था। उसे सन् १९५० के पहले की कोई बात साफ-साफ याद नही थी। अपने जीवन की रूपरेखा तक दिमाग से गायब थी। बडी-बडी घटनाए उसे याद थी लेकिन उनका एक दूसरे से कोई सबध नही था। बीते जीवन के वातावरण का ध्यान अवश्य आ जाता था। बीच-बीच मे ऐसा अधकाल आ जाता था जिसके बारे में उसे कुछ भी याद नही पडता था। उस समय हर चीज़ भिन्न थी। देशो के नाम और उसके नक्शे भी भिन्न थे। उदाहरण के लिए पुराने जमाने मे जिस देश का नाम इगलैण्ड या ब्रिटेन था उसे अब एयरस्ट्रिप नबर एक कहा जाता था। परन्तु प्राचीन काल मे भी शायद लन्दन को लन्दन ही कहा जाता।

विन्स्टन को यह याद था कि पुराने काल मे उसका देश अकसर युद्ध करता था लेकिन शाति काल भी होता था और काफी लम्बा होता था। उसके बचपन मे, जब एक हवाई हमला हुआ तो उसके कारण सभी लोग आश्चर्य मे पड गए थे। सभवत यह उस समय की बात है जब कॉलचेस्टर पर अणुबम गिरा था। उसे हवाई हमले की बात तो याद नही थी लेकिन उसे यह अवश्य खयाल था कि उसके पिता उसका हाथ पकडकर उसे नीचे, और नीचे, और नीचे ले गए थे। जमीन के नीचे वे घुमावदार सीढियो से उतरे थे। उतरते-उतरते वह इतना थक गया था कि रोने लगा था और उसकी वजह से सबको रुककर थोडा सुस्ताना पडा था। उसकी मा उनके पीछे, बहुत पीछे चली आ रही थी, कुछ सोती-सी, ऐसी जैसे सपने मे चल रही हो। शायद वह अपनी गोद मे विन्स्टन की बहन को लिए थी, या शायद उसके हाथो मे कम्बल थे। उसे ठीक याद नही है कि उसकी छोटी बहन उस समय तक पैदा भी हुई थी या नही। अन्त मे वे भूगर्भ रेलवे के प्लेटफार्म आ गए थे, जहा बडा शोर मच रहा था।

पत्थर के फर्श पर चारो तरफ लोग जमीन मे ही बैठे थे। कुछ लोग लोहे की बेचो पर बैठे थे। विन्स्टन और उसके माता-पिता को जमीन पर ही बैठने की जगह मिली थी। उनके पास ही, बेच पर एक बुड्ढा और उसकी बुढिया पत्नी

भी बैठे थे। बुड्ढा गहरे रंग का काला सूट पहने था। सिर पर काली टोपी थी जो काफी पीछे की ओर खिसकी थी। इसका चेहरा सुर्ख था। आखे नीली थी और उनमे आसू भरे थे। शराब की गध आ रही थी। ऐसा लग रहा था, उसके शरीर मे पसीने के बजाय शराब ही हो। बुड्ढा उस समय भी कुछ-कुछ शराब के नशे मे था। विन्स्टन अपनी शैशव सुलभ सूझ से यह जान गया कि वह किसी असहनीय पीडा का भार हृदय मे छिपाए है जो बार-बार उभरी पडती है। विन्स्टन ने अनुभव किया था कि कुछ ही देर पूर्व उसपर कोई ऐसी भयकर बात बीती है जिसे न तो क्षमा किया जा सकता है और न भुलाया ही जा सकता है और न जिसका कोई इलाज ही हो सकता है। विन्स्टन को लगा था कि बूढा जानता था कि बात क्या है। उस आदमी को किसी से बडा स्नेह था—सभवत उसकी नातिन मारी गई थी। थोडी-थोडी देर बाद वह यह वाक्य दोहरा रहा था :

'हमे उनका विश्वास ही नही करना चाहिए था। मैने नही कहा था, मा! विश्वास का क्या परिणाम हुआ ? मै बराबर यही कहा करता था। हमें उन बेईमानो का विश्वास ही नही करना चाहिए था।'

किन 'बेईमानो' का विश्वास नही करना चाहिए था, यह विन्स्टन नही समझ पाया था। उसे याद भी नही था।

लगभग उसी समय से युद्ध बराबर चलता रहा था। युद्ध का एक ही रूप रहा हो, सो बात नही थी। उसके बचपन मे, कई महीनो तक सडको पर लडाई चलती रही थी। कुछ लडाइयो के दृश्य तो उसे अब तक याद थे। परन्तु सपूर्ण काल का इतिहास लिखना असभव था। कारण, किसी भी तरह का कोई लिखित शब्द इस विषय पर उपलब्ध ही नही था—जो कुछ सामग्री उपलब्ध थी वह सब वर्तमान राजनीतिक स्थिति के संबध मे ही थी। इस समय अर्थात् सन् १९८४ मे (यदि वह सन् १९८४ ही था तो) ओशनिया की लडाई यूरेशिया से हो रही थी। ईस्ट एशिया से मैत्री थी। किसी भी सार्वजनिक सभा या निजी बातचीत मे कभी कोई इससे भिन्न बात कहता ही नही था। लेकिन विन्स्टन जानता था कि अभी पिछले चार वर्षो से ओशनिया यूरेशिया से युद्ध कर रहा था। परन्तु इसके पूर्व ईस्ट एशिया से लडाई थी और यूरेशिया से मित्रता थी। परन्तु यह ऐसी बात थी जो उसे अब तक याद थी क्योकि उसकी स्मृतिशक्ति पूर्ण रूप से उसके काबू मे नही थी। सरकारी तौर से स्थिति मे कभी कोई परि-

वर्तन नही हुआ। ओशनिया इस समय यूरेशिया से युद्ध कर रहा था, इसलिए ओशनिया और यूरेशिया की आदिकाल से लडाई रही है। जो दुश्मन है, वह सदा सम्पूर्ण बुराइयो का केन्द्र है। और इससे यह नतीजा निकाला जाता था कि अतीत या भविष्य मे उससे कभी कोई मैत्री हो ही नही सकती।

उसने दस हजारवी बार सोचा कि सबसे भयावह बात तो यह है कि जो कुछ उसे याद है, वह सच हो सकता है। वह उस समय अपने कधे पीछे झुका रहा था और उसे ऐसा करने मे कष्ट हो रहा था। उसके हाथ कूल्हो पर थे। (वह व्यायाम पीठ की मासपेशियो के लिए लाभदायी समझा जाता था।) वह सोच रहा था कि यदि पार्टी भूतकालीन किसी भी घटना के विषय मे यह कह देती है कि ऐसा कभी नही हुआ था तो यह मात्र यातना और मृत्यु से कही अधिक भयानक बात थी।

पार्टी का कहना था कि यूरेशिया से ओशनिया की कभी दोस्ती नही रही। परन्तु वह, विन्स्टन स्मिथ, जानता था कि अभी चार वर्ष पूर्व यूरेशिया मित्र था। परन्तु उसके ज्ञान को पुष्ट करने का कोई प्रमाण था कहा? केवल उसे उसकी स्मृति थी और उससे यह आशा की जानी थी कि वह ऐसी याददाश्त का गला घोट देगा। और यदि अन्य सब इस झूठ को सच मान लेते है और सारे लिखित कागजो में भी यही कहा जाता है तो वही इतिहास बन जाता है और सत्य बन जाता है। पार्टी का नारा था, 'जो भूतकाल का नियत्रक है, वही भविष्य का नियत्रण करता है।' अतीत, स्वभावत- परिवर्तनीय है, परन्तु फिर भी कभी परिवर्तित नही किया गया। जो कुछ आज सच है वही आदि से अन्त तक सच है। यह बिलकुल सच है। केवल आपको अपनी याददाश्त (स्मृतिशक्ति) पर नियत्रण करना था और उस पर विजय पानी थी। 'द्वैध विचारो' को वे नई भाषा मे 'यथार्थ नियत्रण' कहते थे।

'आराम से खडे हो जाइए।' व्यायाम-शिक्षिका ने जरा मुस्कुराते हुए कहा।

विस्टन ने अपने हाथ यथास्थान कर लिए और धीरे-धीरे गहरी सास ली। उसका दिमाग द्वैध विचारो के जगत में चक्कर काट रहा था। जानना और न जानना, वास्तविकता को जानते हुए गढी और झूठी बातो को कहना, एक साथ दो मत रखना, उनके बारे मे यह भी जानना कि वे परस्पर विरोधी हैं, तर्क को तर्क के विरुद्ध प्रयुक्त करना, नैतिकता की बाते करना परन्तु व्यवहार मे उनके विरुद्ध कार्य करना, यह विश्वास करना कि प्रजातत्र असभव है और फिर भी

कहना कि पार्टी लोकतत्र की रक्षक है, जो बात जिस समय आवश्यक न हो उसे भूल जाना, जब आवश्यक हो तो उसे फिर याद कर लेना और फिर जिसे अब तक याद रखा था उसे भूल जाना, इस प्रक्रिया का इसी ढग से उपयोग करना, यही अतिम लक्ष्य था। जानते हुए उपचेतन को गलत बात मानने के लिए बाध्य करना और एक बार पुन इस बात को भूल जाना कि आपने आत्मसम्मोहन की कोई क्रिया भी सम्पन्न की है या नही। 'द्वैध विचार' शब्द का अर्थ समझने के लिए भी दोहरा विचार करना आवश्यक था।

शिक्षिका ने फिर सावधान होने के लिए कहा, 'और हम अब देखेगे कि हममे से कौन अपने पैर के अगूठे छू सकता है।' शिक्षिका ने उत्साहपूर्वक कहा, 'अपने कूल्हो के ऊपर से मुडिए कॉमरेड! एक, दो! एक, दो!'

विन्स्टन इस व्यायाम को मन ही मन कोस रहा था। पैरो से कमर तक उसके तेज दर्द हो रहा था। ऐसा हमेशा होता था। उसे इस व्यायाम के बाद बहुधा तेज खासी का दौरा आ जाता था। मन ही मन विचार करने मे जो आनन्द आ रहा था, वह गायब हो चुका था। फिर भी वह सोच रहा था कि अतीत को बदला ही नही गया, उसे बिलकुल नष्ट कर दिया गया है। आप किसी सत्य को भी बिना किसी बाह्य प्रमाण के किस प्रकार सिद्ध कर सकते है? वह याद करने की कोशिश कर रहा था कि किस वर्ष उसने बडे भाई का नाम सबसे पहले सुना था। उसका ख्याल था कि सबसे पहले सन् १९६० और १९७० के बीच बडे भाई का नाम उसने सुना था। परन्तु निश्चय से कुछ कहना असम्भव था। पार्टी के इतिहास मे उनको क्रान्ति का नेता और द्रष्टा कहा गया था और कहा गया था कि शुरू से ही बडे भाई पार्टी के इतने बडे नेता थे जितने आज है। परन्तु अब धीरे-धीरे उनका नाम सन् १९०० के उन वर्षो तक ले जाया गया था जब लन्दन मे पूजीपति अपनी मोटरो या शीशे लगी घोडा-गाडियो मे घूमा करते थे। इस कथा की सत्यता या असत्यता कोई नही जानता था और न सत्यासत्य का अनुपात ही स्थिर कर सकता था। विन्स्टन को यह भी नही मालूम था पार्टी का जन्म कब हुआ था। उसने सन् १९६० के पूर्व 'इंगसोश' का नाम भी नही सुना था। पुरानी भाषा मे ब्रिटिश समाजवाद का नाम उसने अवश्य सुना था। इसके बाद उसे कुछ याद नही था। एक तरह के धुधलके मे सब कुछ छिप गया था। परन्तु कभी-कभी कोई झूठ फिर भी आप पकड सकते थे। उदाहरण के लिए पार्टी की

किताबो मे लिखा था, ह्वाई जहाज का आविष्कार पार्टी ने किया । परन्तु यह झूठ था । उसे याद था कि हवाई जहाज उसके बचपन मे भी थे । परन्तु आप कुछ भी प्रमाणित नही कर सकते । कोई लिखित सबूत नही था । अपने जीवन मे केवल एक ऐतिहासिक तथ्य को सिद्ध करने का प्रमाण उसके पास था । पार्टी ने उसे झूठा सिद्ध किया था । यह अवसर···

'स्मिथ !' टेलीस्क्रीन से एक कर्कशा की जैसी आवाज चीखी । '६०७६ स्मिथ डब्लू ! हा आप ! जरा नीचे झुकिए, कृपा कर । आप इससे कही अच्छी तरह व्यायाम कर सकते है । आप कोशिश नही कर रहे है । और नीचे । अब ठीक है कामरेड । अब आराम से खडे हो जाइए । सब लोग आराम से खडे हो जाए । अब मुझे देखिए ।'

विन्स्टन के सारे शरीर से गरम-गरम पसीना निकल रहा था । चेहरे पर अब भी कोई भाव नही था । हताश कभी मत दिखलाई पडिए । कभी भुनभुनाइए मत । आखों से प्रकट हुआ एक भाव मौत को निमंत्रण दे सकता था । वह देख रहा था । शिक्षिका ने अपने हाथ सिर के ऊपर उठा लिए थे । इसके बाद वह झुकी और उसने पैरो का अगूठा छू लिया । इस व्यायाम को उसने बडी दक्षता और सफाई से किया ।

'इस तरह कामरेड ! मै चाहती हूं आप इस तरह यह व्यायाम करे । फिर मुझे देखिए । मै उनतालीस वर्ष की हूं और मेरे चार बच्चे है । अब देखिए ।' वह फिर झुकी । 'देखिए, कैसे मेरे घुटने झुक रहे है । आप सब चाहे तो इसी तरह कर सकते है ।' उसने सीधे खड़े होते हुए कहा, 'पैतालीस वर्ष से कम आयु वाला हर आदमी अपने पैर के अगूठे छू सकता है । हम सबको मोर्चो पर जाकर लड़ने का मौका तो नही मिल सकता, परन्तु हम सब शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तो रह सकते है । देश के उन सैनिको को याद करिए जो मलाबार मोर्चे पर लड रहे है ! तैरते हुए किलो के नाविको का स्मरण करिए । उन्हे किन मुसीबतो का सामना करना पड़ रहा है । अब फिर कोशिश करिए । अब पहले से बहुत अच्छे, कामरेड ! बहुत अच्छे !' शिक्षिका ने विन्स्टन को बिना घुटने झुकाए पैर के अगूठे छू लेने पर उत्साहित करते हुए कहा । वह ऐसा कई वर्षो मे पहली बार कर पाया था ।

विन्स्टन ने धीरे से, इतने धीरे से कि पास लगी टेलीस्क्रीन तक भी उसकी आवाज न पहुच सके, ठंडी आह भरते हुए दिन का काम शुरू किया। उसने सामने रखा लेखन यत्र (स्पीकराइट) अपने पास खीच लिया। चश्मा लगा लिया और लेखनयत्र को रूमाल से झाडकर साफ किया। उसकी मेज के दाहिनी ओर ट्यूब से निकले हुए गोले पडे थे। उन्हे खोलकर उसने उनमें रखे कागज निकाले।

दफ्तर के जिस कमरे मे वह बैठता था उस कमरे मे तीन छेद थे। लेखन-यत्र की दाहिनी ओर लिखित सदेशो का छिद्र था। बाईं ओर अखबारो के लिए कुछ बडे मुह वाला छेद था। बगल की दीवार मे विन्स्टन से एक हाथ से भी कम दूरी पर एक और छेद था जिसमे तार लगे थे। आखिरी छेद रद्दी कागजों को नष्ट करने के लिए था। ऐसे हजारो छेद पूरी इमारत के हजारो कमरो में थे। कमरो से बाहर बरामदो मे भी थे। हर रद्दी कागज इसमे डाल दिया जाता था। डालते ही कागज उडता हुआ उन जलती भट्ठियो मे पहुच जाता था जो इमारत मे नीचे कही थीं।

विन्स्टन ने गोले मे से निकले कागजो को देखा। हरएक मे दो पक्तिया थी। इनको नई भाषा मे लिखा तो नही जा सकता था, किन्तु संक्षिप्त भाषा अवश्य कह सकते थे। इसमे नई भाषा के अनेक शब्द थे। मत्रालय के नोटो में इसी तरह की भाषा चलती थी। (सदेश) इस प्रकार थे

टाइम्स १७ ३ ८४ ब भा भाषण अशुद्ध रिपोर्ट अफ्रीका ठीक करो

टाइम्स १९ १२ ८३ भविष्योक्ति वाई पी चौथा क्वार्टर ८३ अशुद्ध मुद्रण नए अक से ठीक करो

टाइम्स १४.२ ८४ सम्मत्र अशुद्ध उद्धरण चॉकलेट ठीक करो

टाइम्स ३ १२ ८३ ब भा दिवसादेश ठीक नही अस्तित्वहीन व्यक्ति, पूरा लिखो, ऊपर दिखलाओ।

कुछ सन्तुष्ट हो विन्स्टन ने चौथा आदेश अलग रख दिया। यह काम कुछ कठिन और उत्तरदायित्वपूर्ण था। इसलिए इसमे सबसे अन्त मे ही हाथ डालना ठीक था। बाकी तीन साधारण काम थे। हालाकि दूसरे काम मे थोडा अधिक श्रम करना पड़ेगा—ऐसा लग रहा था। क्योकि पुराने आकड़े देखने थे।

विन्स्टन ने टेलीस्क्रीन मे लगे डायल मे वे नम्बर घुमाए। टाइम्स के जिन अंको की उसे आवश्यकता थी, कुछ ही मिनट बाद वे अक नल द्वारा उसकी मेज़ पर आ गए। जो सदेश विन्स्टन को मिले थे वे उन लेखो या समाचारो के संबध मे थे जिनमे किन्ही कारणो से परिवर्तन की आवश्यकता थी या सरकारी सदेश के शब्दो मे ठीक करना जरूरी था। उदाहरण के लिए १७ मार्च के टाइम्स मे मुद्रित एक दिन पूर्व के बडे भाई के भाषण से ऐसा लगता था, दक्षिण भारत का मोर्चा शान्त रहेगा और उत्तरी अफ्रीका मे यूरेशियन आक्रमण करेंगे। परन्तु हुआ यह कि यूरेशियनो ने दक्षिण भारत मे हमला शुरू कर दिया और उत्तरी अफ्रीका में कुछ भी नही हुआ। इसलिए बडे भाई के भाषण के उस अनुच्छेद को इस प्रकार लिखना था कि पढने वाले को जो बात वस्तुत: हुई उसी की भविष्योक्ति प्रतीत हो। या उन्नीस दिसम्बर के टाइम्स मे १९८३ की चौथी तिमाही मे होने वाले उत्पादन का अनुमान छपा था। यह नवी तीन वर्षीय योजना का छठा चरण भी था। आज के अक मे वास्तविक उत्पादन के आकडे थे। उनको देखने से लगता था जो अनुमान किए गए थे वे गलत थे। विन्स्टन का काम था कि वह अनुमानित आकडो मे इस प्रकार का परिवर्तन करे जिससे वास्तविक आकडो और अनुमानित आकड़ो मे विरोध या विशेष अन्तर न दिखलाई पडे। तीसरे संदेश मे बहुत मामूली-सी गलती की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया था। इसे कुछ ही मिनटो में ठीक किया जा सकता था। कुछ समय पूर्व यानी फरवरी मे समृद्धि मत्रालय ने स्पष्ट रूप से वचन दिया था कि सन् १९८४ में चॉकलेट का राशन नही घटाया जाएगा। परन्तु वस्तुत वर्तमान सप्ताह के बाद से चॉकलेट का राशन तीस से घटकर बीस ग्राम होने वाला था। विन्स्टन को करना यह था कि जो वचन दिया गया था उसके स्थान पर यह चेतावनी दे देनी थी कि चॉकलेट का साप्ताहिक राशन निकट भविष्य मे ही घटने वाला है। बल्कि यह भी लिख देना था कि ऐसा अप्रैल में होगा।

प्रत्येक सदेश के अनुसार जैसे ही विन्स्टन ने कार्य समाप्त कर लिया वैसे ही उसने लिखित शुद्धिपत्रो को संबधित टाइम्स के अको मे नत्थी कर दिया और उनको नल मे खिसका दिया। इसके बाद सदेश के कागजो तथा अन्य रद्दी कागजो को मोड़-तोडकर उस छेद मे डाल दिया जो गरम हवा के जोर से उडाकर उन रद्दी कागजो को जलती भट्ठियो की ओर भेज देता था। जो नल थे उनमे होकर

टाइम्स की जो प्रनिया भेजी जाती थी, उनका क्या होता था यह वह ठीक-ठीक नही जानता था। परन्तु उनका अनुमान था कि जैसे ही टाइम्स के किसी अक विशेप मे अपेक्षित शुद्धिया हो जाती थी, उसे दुबारा मुद्रित कर दिया जाता था और पुराने अको की सारी प्रनिया जला दी जाती थी। नई प्रतियो को फाइल मे सर्वत्र रख दिया जाता था। परिवर्तन की वह प्रक्रिया समाचारपत्रो पर ही नही, पुस्तको, मासिक पत्रो, सरकारी पुस्तिकाओ, पोस्टरो, फिल्मो, कार्टूनो, फोटोग्राफो आदि सभी पर, जिनका राजनीति से जरा भी सबध था, लागू होती थी। प्रतिदिन, नही प्रतिक्षण, भूत को वर्तमान के उपयुक्त बनाने की सतत चेष्टा जारी रहती थी। इस कार पार्टी की प्रत्येक भविष्यवाणी को लिखित प्रमाण द्वारा सत्य सिद्ध किया जा सकता था। कोई समाचार, कोई पत्र या कोई ऐसी भी चीज लिखित नही रह सकती थी जो समय की आवश्यकताओ के अनुकूल न हो। इतिहास को भी इसी प्रकार जितनी बार आवश्यक हो लिखा जाता था। एक बार ठीक हो जाने के बाद यह सिद्ध करना नितान्त असभव था कि कोई जालसाज़ी की गई है। रिकर्ड विभाग का एक बहुत बडा हिस्सा, उस हिस्से से भी बडा जिसमे विन्स्टन काम करता था, अपने सारे कर्मचारियो सहित ऐसी लिखित सामग्री को इकट्ठा करने मे जुटा रहता था जिसमे अशुद्धिया होती थी। वह उनको जलाने के लिए जमा करता था। पिछले हर अक की प्रति फाइलो मे हर जगह मिल जानी थी परन्तु उसमे कभी कोई अशुद्धि नही रहती थी। पचीसों बार ऐसा होता था कि बडे भाई की भविष्यवाणी गलत सिद्ध होती किन्तु उसे पुनः लिखकर समयानुकूल कर दिया जाता और अन्य कोई भी ऐसा अंक न मिलता जिससे किसी चीज़ का खण्डन होता था। लिखित आदेशो को विन्स्टन तुरन्त जला देता था किन्तु उनसे भी यह प्रकट नही होता था कि कोई जालसाज़ी की जा रही है। उन आदेशो मे हमेशा अशुद्धि, भूल, मुद्रण की गलती बताई जाती थी, जिनका शुद्धता की दृष्टि से दूर किया जाना आवश्यक था।

वह समृद्धि मत्रालय के आकडो को ठीक करता हुआ सोच रहा था, यह जालसाज़ी नही है। वस्तुत यह तो एक झूठ की जगह, दूसरा झूठ लिखना ही है। सीधे झूठ का भी वास्तविकता से कुछ सबध होता है किन्तु इस झूठ का यथार्थ स्थिति से कोई सबध नही था। आकडे पहले भी उतने ही सफेद झूठ थे, जितने अब। बहुधा आकडे अपने मन से सोच-समझकर लिखने पडते थे। उदाहरण के

लिए समृद्धि मत्रालय का अनुमान था कि सबधित तिमाही मे १४।। करोड जूते तैयार होगे, जिससे यह कहा जा सके कि लक्ष्य से अधिक निर्माण कार्य हुआ। लेकिन जो आकडे अब दिए गए थे उनमे लिखा गया था कि ६ करोड ६२ लाख जूते ही बने थे। अनुमानित आकडे लिखते समय मूल अको को विन्स्टन ने घटाकर पाच करोड सत्तर लाख कर दिया जिससे जब पढने वाला यह देखे कि छ करोड बीस लाख जूतो के जोडे हुए है तो वह यह मान ले कि मूल लक्ष्य से अधिक कार्य हुआ है। न तो छ करोड बीस लाख ही सत्य था और न पाच करोड सत्तर लाख। संभवत. एक जोडा भी तैयार ही न हुआ हो या किसी को शायद ज्ञात ही न हो कि किसी ने कोई जूते सचमुच तैयार भी किए है। हर आदमी जानता था कि जूतो के जोडे केवल बडे-बडे आकडो मे ही तैयार होते थे क्योकि इतने जोडे जूतो के बनने के बाद ओशनिया की आधे से ज्यादा जनसख्या नगे पैर रहती थी। हर प्रकार के उत्पादन की यही हालत थी। हर वस्तु काली छाया मे खो गई थी जिसमें वर्ष तक ठीक-ठीक नही बताया जा सकता था।

विन्स्टन ने हॉल के पार देखा। ठीक उसके सामने दुबला-पतला, श्यामवर्ण का युवक, जिसका नाम टिलोटसन था, बडी तेजी से लेखन यत्र के माइक मे अपने घुटनो पर कोई अखबार रखे कुछ बोलता चला जा रहा था। वह चाह रहा था कि जो कुछ वह बोल रहा है उसकी आवाज टेलीस्क्रीन तक न जाए। उसने ऊपर मुह उठाकर विन्स्टन की ओर कुछ नाराज़गी से देखा।

विन्स्टन का टिलोटसन से साधारण परिचय भी नही था। उसे यह भी नही ज्ञात था कि टिलोटसन क्या काम करता है। रिकर्ड विभाग के कर्मचारी अपने काम के सबध में चाहे जिससे बाते नही करते थे। इस लम्बे हॉल मे एक भी खिडकी नही थी। हॉल मे बैठने के लिए कमरो की दो पक्तिया थी। लेखन यत्र मे बोलने की तथा कागज़ो की आवाज़ बराबर आ रही थी। हॉल मे बैठने वाले लोगो मे से दर्जन से भी अधिक ऐसे व्यक्ति थे जिनके नाम तक विन्स्टन को नही ज्ञात थे। हालाकि वह उनको प्रतिदिन बरामदे मे आता-जाता देखता और दो मिनट वाली प्रचार-फिल्म में उनको हाथ-पैर फेकते तथा तरह-तरह की मुद्राए बनाते भी देखता था। हल्के बालो वाली अधेड आयु की स्त्री समाचारपत्रो से केवल उन लोगो के नाम प्रतिदिन छाटती रहती थी जिनको भाप बनाकर उड़ा दिया गया था। प्रति-दिन उसका यही काम था। जो आदमी इस प्रकार गायब हो जाते थे उनका कोई

भौतिक अस्तित्व भी शेप नही रखा जाता था। उस औरत का पति भी कुछ वर्ष पूर्व इसी प्रकार समाप्त कर दिया गया था। कुछ दूर एम्पिलफोर्थ नाम का आदमी कविताओ मे सशोधन किया करता था। रिकर्ड विभाग का यह हॉल छोटा-सा भाग था। ऊपर, नीचे, आगे, पीछे असख्य कर्मचारी तरह-तरह के कामो में लगे थे। बडे-बडे प्रेस थे, उपसपादक थे, टाइप विशेषज्ञ थे। इनके पास बड़े-बडे स्टूडियो थे जिनमे नकली चित्र भी तैयार किए जाते थे। आवाज की नकल करने वाले लोग थे, इजीनियर थे, प्रोड्यूसर थे और विशेष ढग का अभिनय करने वाले अभिनेता भी थे। सदर्भ क्लर्कों की पूरी फौज थी जो केवल इसकी सूची बनाते थे कि कौन-सी पत्र-पत्रिकाए जलाई जाएगी। गोदाम थे जहा शुद्ध पत्र-पत्रिकाए जमा की जाती थी और गुप्त भट्ठिया थी जहा पुरानी पत्र-पत्रिकाए जलाई जाती थी। इसके अलावा ऐसे निर्देशक अफसर भी थे जो यह नीति निश्चित करते थे कि अमुक झूठ को सच और अमुक सच को झूठ बतलाया जाए। अमुक चीजे नष्ट कर दी जाए। उनके सारे प्रयत्नो को इसी प्रकार सयुक्त करने की भी व्यवस्था थी।

और रिकर्ड विभाग अन्तत सत्य मन्त्रालय का एक विभाग ही मात्र तो था। इस विभाग का मुख्य कार्य भूतकाल का इतिहास तैयार करना नही अपितु ओशनिया के नागरिको को समाचारपत्र, फिल्मे, पाठ्यपुस्तके, टेलीस्क्रीन के प्रोग्राम, नाटक, उपन्यास तथा हर प्रकार की सूचनाए और निर्देश देना और मनोरजन आदि की व्यवस्था करना था। मूर्ति से लेकर नाटको तक, गीत से लेकर जीवशास्त्र के निबन्ध तक, और आरम्भ की पाठ्यपुस्तक से नई भापा की डिक्शनरी तक की व्यवस्था करना इसी मन्त्रालय का काम था। पार्टी की आवश्यकताओ की पूर्ति करना ही मन्त्रालय का काम नही था बल्कि सर्वहारा वर्ग या मजदूर वर्ग के लिए भी प्रकार-प्रकार की सामग्री जुटाना उसी का काम था। सर्वहारा वर्ग के लिए साहित्य, सगीत, नाटक तथा मनोरजन आदि की सामग्री के लिए अलग-अलग विभाग थे। यहा अश्लील अखबार छपते थे। इन विभागो मे खेलकूद, अपराध, ज्योतिप, सनसनीखेज उपन्यास, सेक्स विकृतियो से भरी फिल्मो और गन्दे गीतो को छापा या तैयार किया जाता था। यह सब यन्त्रो से होता था। सब कामो के लिए अलग-अलग मशीने थी। इनको सम्बन्धित पार्टी-सदस्यो के अलावा या जो लोग काम करते थे, अन्य कोई देख भी नही सकता था। तैयार होते ही इनको पैकेटो मे बाधकर निर्दिष्ट स्थानो पर भेज दिया जाता था।

विन्स्टन अभी काम मे ही लगा था कि तीन और सन्देश नल से उसके पास आ गए। परन्तु उनमे बतलाए गए कार्य सरल थे और दो मिनट की प्रचार-फिल्म के कार्यक्रम के पूर्व ही विन्स्टन ने उनको भी निपटा दिया। फिल्म देख आने के बाद जब विन्स्टन काम पर वापस लौटा तो उसने नई भाषा की डिक्शनरी उठा ली और अपना चश्मा पोछने के बाद दिन का मुख्य कार्य करने जुट गया।

विन्स्टन के जीवन का सबसे बडा सुख उसका कार्य था। दफ्तर का अधिकाश कार्य अशत- जटिल दिनचर्या का अग था, किन्तु कुछ कार्य ऐसे भी थे जो इतने नाजुक होते थे कि उनके करने मे वह ऐसा डूब जाता था जैसे कोई किसी गणित की समस्या को हल करने मे अपना आपा खो देता है। इन कार्यो मे 'इग-सोश' के सिद्धान्तो का गहरा ज्ञान तो आवश्यक होता ही था, साथ ही इसकी जानकारी भी जरूरी होती थी कि पार्टी आपसे क्या कहलवाना चाहती है, यह आप समझे। विन्स्टन इस प्रकार का काम करने मे बडा चतुर था। बहुधा उससे टाइम्स के सम्पादकीय तक को शुद्ध कराया जाता था। ये सम्पादकीय नई भाषा में ही लिखे जाते थे। पहले जो सन्देश उसने अलग उठाकर रख दिया था, अब विन्स्टन ने उसे खोला। वह इस प्रकार था

टाइम्स ३ १२ ८३ ब भा. दिवसादेश ठीक नही अस्तित्वहीन व्यक्तियो की चर्चा, पूरी लिखो, ऊपर भेजो।'

पुरानी या स्पष्ट भाषा मे इसी सन्देश को इस तरह लिखा जाता :

'बड़े भाई के दिवसादेश की रिपोर्ट ३ दिसम्बर, १९८३ के टाइम्स के अक में ठीक नही छपी है। इसमे अस्तित्वहीन व्यक्ति की चर्चा है। इसे दुबारा लिखो और अपने ऊपर के अधिकारियो के पास देखने के लिए भेजो।'

विन्स्टन ने सम्बन्धित लेख पढा। इसमें एफ एफ. सी सी. नाम की सस्था के कार्यो की तारीफ की गई थी। यह सस्था तैरते किलो के नाविको को सिगरेट तथा अन्य प्रकार की सामग्री सप्लाई करती थी। अन्तरग पार्टी के कामरेड विदर्स की इस लेख मे विशेष प्रशसा की गई थी। इनको द्वितीय वर्ष का विशेष सेवा-सम्मान-चक्र प्रदान किया गया था।

तीन मास बाद एफ एफ सी सी का विघटन कर दिया गया। कारण बतलाया नही गया। यह अनुमान था कि विदर्स और उसके साथियो की सरकार की निगाह मे कोई इज्जत नही रह गई थी। परन्तु पत्रों पर टेलीस्क्रीन मे इसकी कोई चर्चा

नही थी। यह स्वाभाविक था। राजनीतिक अपराधियो पर मुकद्दमा नही चलाया जाता था और सार्वजनिक रूप से उनकी कोई चर्चा नही की जाती थी। शुद्धीकरण का महायज्ञ, जिसमे हजारो व्यक्ति फसे होते थे, कई सालो मे एकाध बार होता था। इन पर राजद्रोह का विचार-अपराध का मामला सार्वजनिक रूप से चलाया जाता था और उनसे स्त्रीकारोक्ति कराके उन्हे मार डाला जाता था। परन्तु जैसा कहा जा चुका है ऐसा कभी-कभी होता था—वर्षो मे एक बार। सामान्यत पार्टी जिनसे रुष्ट होती थी, वे लोग बस गायब हो जाते थे और फिर उनके बारे में कुछ भी सुनाई नही पडता था। लोगो को आभास तक नही हो पाता था कि उनका हुआ क्या। कुछ मामलो मे सम्भवत लोगो को मार नही डाला जाता था। माता-पिता के अलावा विन्स्टन की अपनी जान-पहचान के तीस एक आदमी समय-समय पर गायब हो चुके थे।

विन्स्टन ने क्लिप से अपनी नाक धीरे से थपथपाई। सामने के कमरे में कामरेड टिलोटसन अभी भी अपने माइक मे बोलता चला जा रहा था। उसने फिर आख उठाई और उसकी गुर्राहट भरी निगाह फिर विन्स्टन पर पडी। विन्स्टन सोच रहा था शायद टिलोटसन भी इसी काम मे जुटा था। उसका अनुमान सभवत ठीक ही था क्योकि ऐसा कठिन और महत्वपूर्ण कार्य एक ही व्यक्ति को सौपा जा सकता था। यदि किसी कमेटी को सौपा जाता तो स्पष्ट हो जाता था कि जालसाज़ी की जा रही है। बहुत सभव था, इस मसौदे को तैयार करने में एक दर्जन से भी अधिक आदमी जुटे हो। इसके बाद फिर पार्टी का एक उच्च अधिकारी सब मसौदो को पढकर उनमे से एक छाट लेगा या चुने मसौदो से अपना विवरण तैयार कर लेगा और फिर इस प्रकार जाल से तैयार किया गया झूठा विवरण छापकर सत्य बना दिया जाएगा।

विन्स्टन को पता नही था कि विदर्स को क्यो पदच्युत किया गया था। सभवतः भ्रष्टाचार या दक्षता के अभाव की शिकायत रही हो। या बडे भाई ने किसी लोकप्रिय नेता से पिण्ड छुडाया हो। विदर्स या उसके किसी निकटतम साथी मे द्रोहात्मक प्रवृत्तिया देखी गई हो। या उसे केवल इसलिए मार दिया गया हो कि इस प्रकार निरन्तर शुद्धीकरण करते रहना पार्टी की व्यवस्था का अग है। सदेश मे विदर्स के बारे मे एक ही सकेत था। वह था, लेख मे अस्तित्वहीन व्यक्तियो की चर्चा है, अर्थात् विदर्स मारा जा चुका है, जीवित नही है। परन्तु

गिरफ्तार हो जाने के बाद आप सामान्यत इस नतीजे पर नही पहुच सकते थे कि आदमी अपनी जान से हाथ धो चुका है। कभी-कभी उनको छोड दिया जाता था। वे साल-दो साल जिन्दा भी रहते थे और इसके बाद उन्हे मार दिया जाता था। कभी-कभी कोई आदमी सहसा किसी सार्वजनिक मुकद्दमे मे दिखलाई पड जाता और अपने बयान मे बहुत-से व्यक्तियो को लपेट कर स्वय गायब हो जाता था—उस बार हमेशा के लिए। विदर्स मर चुका था। वह अस्तित्वहीन था—वह कभी नही था। विन्स्टन ने सोचा कि बडे भाई के भाषण की बाते उलट देने से ही काम नही चलेगा। ज्यादा अच्छा होगा—इसमे बिलकुल भिन्न विषय की चर्चा की जाए।

वह भाषण को इस प्रकार भी लिख सकता था जिसमे राजद्रोहियो और विचार-अपराधियो की निन्दा ही निन्दा हो। परन्तु यह बहुत खुली बात हो जाती। इसके विपरीत किसी मोर्चे पर विजय की बात या नवी तीन वर्षीय योजना में किसी सफलता की चर्चा से पिछले रिकार्डो मे बहुत अधिक परिवर्तन करने की आवश्यकता पड सकती थी। इस समय विशुद्ध कल्पना की आवश्यकता थी। सहसा उसके दिमाग मे कामरेड ओगिलवी नाम का एक पात्र आया। विन्स्टन ने सोचा कॉमरेड ओगिलवी के सबध मे वह लिखेगा कि अभी हाल ही की लडाई मे वह किस प्रकार वीरतापूर्वक लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। कभी-कभी भाषणो मे बडे भाई पार्टी के किसी तुच्छ सदस्य की चर्चा कर बैठते और पूरे भाषण मे उसी की प्रशसा करते और बतलाते कि अपने जीवन-काल मे तथा मौत के बाद वह कामरेड किस प्रकार सभी पार्टी सदस्यो का आदर्श बना हुआ है। आज वह कामरेड ओगिलवी को याद करेगे। यह सच था कि इस नाम का कोई आदमी न था। परन्तु कुछ छपी पक्तिया और कुछ जाली चित्र उसे ऐसा आदमी बना देंगे जो कभी·था।

विन्स्टन ने लेखन यत्र अपनी ओर खीचा और बडे भाई की शैली मे बोलना शुरू किया। यह शैली सैनिक तथा अध्यापक की—दोनो शैलियो का मिश्रण था। इसमे पहले सवाल किया जाता था और फिर तुरन्त उसका जवाब दिया जाता था। (हम इस तथ्य से भाइयो, क्या शिक्षा ग्रहण करते है ?—हम ये शिक्षाए लेते है—जो 'इगसोश' का मौलिक सिद्धात भी है, आदि आदि।)

कामरेड ओगिलवी ने तीन वर्ष की आयु में तीन को छोड़कर सारे खिलौने

छोड दिए । जो खिलौने उन्होने चुने थे—वे थे, ढोल, छोटी मशीन गन और हैली-कॉप्टर का नमूना। ६ वर्ष की आयु मे (उनके लिए एक वर्ष आयु घटा दी गई थी) वह बाल जासूसो के सरदार बन गए । नौ वर्ष की अवस्था मे वह छोटे जासूस दल के नेता थे । ग्यारह वर्ष की आयु मे उन्होने अपने चचा को राजद्रोहात्मक बाते बनाते सुनकर उन्हे विचार पुलिस के हवाले कर दिया था । सत्रह वर्ष की आयु मे वह सेक्स विरोधी लीग के जिला सयोजक बन गए । उन्नीस साल की आयु मे उन्होने ऐसा हथगोला बनाया जिसे शान्ति मत्रालय ने उपयोग के लिए स्वीकार कर लिया । जब इसका पहली बार प्रयोग किया तो एक ही हथगोले से इकतीस यूरेशियन बदी सैनिक मारे गए थे । तेईस वर्ष की आयु मे वह वीरगति को प्राप्त हुए। वह तब भारतीय महासागर पर हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे तो शत्रु के जेट-विमानो ने उनका पीछा किया । उनके पास महत्वपूर्ण कागज थे । वह एक मशीनगन सहित कागजो को जेब में रखे हैलीकॉप्टर से समुद्र मे कूद पडे । उनकी मौत सबके लिए ईर्ष्या की वस्तु है । वडे भाई ने कामरेड ओगिलवी की एकाग्र सेवाओ की प्रशसा की । वह शराब नही पीते थे । सिगरेट छूते नही थे । एक घण्टा व्यायाम के अति-रिक्त उनका कोई मनोरजन नही था । चिरकुमार रहने का उन्होने व्रत ले रखा था । उनका विश्वास था कि परिवार के साथ पार्टी की चौबीसो घटे सेवा नही की जा सकती । बातचीत का एक ही विषय उनके पास था और वह थे 'इगसोश' के सिद्धांत । जीवन का एक ही लक्ष्य था—यूरेशियन सेना की पराजय, शत्रु के गुप्त-चरो, विध्वसको, विचार-अपराधियो और राजद्रोहियो की तलाश तथा उनको सजा दिलवाना ।

पहले विन्स्टन ने सोचा कि विशेष सेवा का चक्र कामरेड ओगिलवी को दिला दिया जाए । परन्तु बाद मे यह सोचकर कि इससे आगे कुछ अको मे बहुत-से आवश्यक परिवर्तन करने पड सकते है, उसने ऐसा नही किया ।

सामने कमरे मे बैठे उसने अपने प्रतिद्वद्वी को देखा । उसे ऐसा विश्वास हो गया था कि टिलोटसन भी उसी काम मे लगा था जिसमे वह व्यस्त था । यह जानने का कोई साधन नही था कि किसका मसौदा स्वीकृत होगा । परन्तु उसे विश्वास था कि उसका भाषण ही छपेगा । जिस कामरेड ओगिलवी की एक घटे पूर्व किसी ने कल्पना भी नही की थी वह अब वहा साकार धरा था । उसे लगा कि मृत को आप जिन्दा कर सकते है लेकिन जीवितो को जीवन नही दे सकते । कामरेड

ओगिलवी का कभी कोई अस्तित्व नही था, परन्तु अब वह जालसाजी का काम भुला दिए जाने के बाद चार्लमैन या जूलियस सीजर की भाति ही जिन्दा रहेगा।

(५)

यह कैण्टीन का हॉल था। इसकी छत बडी नीची थी। यह हाल जमीन के नीचे था—तहखानेनुमा। लच के लिए लोग लाइन मे खडे थे। धीरे-धीरे 'क्यू' खिसक रहा था। कमरा भरा था। बडा शोर हो रहा था। शोरबे की गंध पर फिर भी विजय-मदिरा की भाप का अनुभव हो रहा था। कमरे में दूसरी ओर 'बार' था। 'बार' क्या था, दीवार मे छेद था। दस सेण्ट का सिक्का डाल देने से एक मग भरकर शराब मिल जाती थी।

विन्स्टन के पीछे से किसी ने कहा, 'ओ, मै तुम्हे ही तो देख रहा था।'

विन्स्टन ने घूमकर देखा। उसका दोस्त था—साइम। वह रिसर्च विभाग में था। दोस्त कहना तो ठीक नही होगा। आजकल दोस्त नही होते थे। कामरेड होते थे। कुछ कामरेड ऐसे होते थे जिनका साथ अन्य कामरेडो की अपेक्षा आप अधिक पसन्द करते थे। साइम भाषा-विज्ञान का ज्ञाता था। वह नई भाषा की डिक्शनरी के ग्यारहवे सस्करण का सम्पादन करने वाली टीम का सदस्य था। कद और आकार मे वह विन्स्टन से भी छोटा था। उसके बाल काले और लम्बे थे। आखो से दु ख और विक्षोभ भी कभी-कभी चमक उठता था। वैसे उसकी दृष्टि बडी तीक्ष्ण लगती थी। यह आखो से प्रकट था। वह देखता तो लगता था कि चेहरे से मन के भाव पढ रहा है।

'मै पूछ रहा था, तुम्हारे पास फालतू ब्लेड है कोई ?' उसने प्रश्न किया।

'एक भी नही।' विन्स्टन ने जल्दी से उत्तर दिया। इसमे अपराध की भावना छिपी थी, 'मै चारो तरफ तलाश कर आया। एक भी नही मिलता।'

हर आदमी को ब्लेडो की तलाश ही रहती थी। उसके पास दो नए ब्लेड थे, लेकिन वह उन्हे छिपाए था। कई महीनो से ब्लेडो का अकाल पडा हुआ था। कोई न कोई आवश्यक वस्तु बहुधा पार्टी की दुकान पर नही मिलती थी। कभी बटन नही मिलता था, तो कभी रफू करने के लिए ऊनी तागा। कभी जूतो के फीते नही मिलते थे तो कभी कोई और चीज़। आजकल रेज़र ब्लेडो का अभाव

था। खुले बाजार मे बहुत दौडधूप और पूछताछ के बाद एकाध ब्लेड कही मिल जाता था।

झूठ बोलते हुए उसने कहा, 'मै एक ही ब्लेड से पिछले छ हफ्तो से दाढी घिस रहा हू।'

लाइन हल्के से धक्के के साथ आगे बढी। जैसे ही वे लोग रुके, वह मुडा और उसने साइम को देखा। काउण्टर के किनारे पर रखे ढेर से दोनो ने एक-एक 'ट्रे' उठा ली। यह धातु की थी और ऐसी गदी थी कि उसकी चिकनाहट तक दूर नही हुई थी।

'कल बंदियो को जो फासी दी गई थी, क्या वह देखने गए थे तुम ?' साइम ने पूछा।

विन्स्टन न कुछ उदासीन भाव से कहा, 'मै कार्यव्यस्त था। अब फिल्म देख लूगा।'

'फिल्म देखने मे तो उतना मजा नही आ सकता।' साइम ने कहा।

साइम की आखे बराबर विन्स्टन के चेहरे की पडताल कर रही थी। विन्स्टन को ऐसा प्रतीत हुआ कि साइम कह रहा हो, मै तुम्हे जानता हू। मै जानता हू, तुम फासी का दृश्य देखने क्यो नही गए। बौद्धिक स्तर पर साइम भी बडा पार्टी-भक्त था। वह बड सन्तोष से शत्रु के गावो पर हैलीकॉप्टरो द्वारा किए गए हमलो का विवरण बतलाता था। विचार-अपराधियो के मुकद्दमो तथा उनके इकबाली बयानो की चर्चा करता था। वह यह भी बतलाता कि प्रेम मत्रालय के तहखानो में अपराधियो को किस प्रकार मौत के घाट उतारा जाता था। इन विषयो पर विन्स्टन साइम से इसलिए बात करता था जिससे नई भाषा की प्राविधिकताओ पर वह अपना भाषण न शुरू कर दे जिसे सुनने मे विन्स्टन की ज़रा भी तबीयत नही लगती। विन्स्टन ने अपना सिर ज़रा मोड लिया जिससे साइम उसकी आखो मे आखे डालकर मन की बात निकालने की कोशिश न करे।

साइम ने दृश्य की याद करते हुए कहा, 'फासी का दृश्य देखने मे इस बार बडा मज़ा आया। मेरा खयाल है अपराधियो के पैर नही बाधने चाहिए। इससे मजा नही आता। मुझे उनका पैर फटकारना बडा अच्छा लगता है। अन्त मे उनकी जीभ नीली होकर बाहर निकल आती है। यह भी मुझे अच्छा लगता है।'

'अगला आदमी!' सफेद कपडे का 'एप्रन' पहने हुए तथा हाथ मे चमचा

लिए हुए काउण्टर के दूसरी तरफ खडे मजदूर ने चिल्लाकर कहा।

विन्स्टन और साइम ने अपनी-अपनी ट्रे आगे कर दी। लच की नियमित वस्तुए 'ट्रे' पर गिरने लगी। रोटी का सख्त टुकडा, गुलाबी और भूरा-सा 'स्टू', पनीर का टुकड़ा, बिना दूध की काली काफी और सैकरीन की एक टिकिया।

'वह, वहा टेलीस्क्रीन के नीचे एक मेज खाली पडी है,' साइम ने कहा, 'रास्ते मे शराब भी ले लेगे।'

शराब बिना हैण्डल के प्यालो मे मिली। भीड़ चीरते वे मेज तक पहुचे। इसके बाद 'ट्रे' खाली करके उन्होने उसकी चीज़े मेज पर रख ली। मेज़ पर एक कोने में कोई 'स्टू' का प्याला छोड गया था। सारा हाल इतना गन्दा था कि देखकर मतली आती थी। विन्स्टन ने अपनी शराब का मग उठाया। एक क्षण उसे देख अपने आपको तैयार किया। इसके बाद पूरी शराब एक सास मे पी गया। तेल जैसी शराब पीने के बाद हमेशा की तरह इस बार भी उसकी आखो से आसू बह निकले। कुछ देर बाद उसने अनुभव किया, वह भूखा है। अब उसने 'स्टू' चम्मच से पीना शुरू किया। बीच-बीच मे गोश्त के टुकडे भी आते जा रहे थे। कुछ देर दोनो मे कोई नही बोला। विन्स्टन की बाई तरफ की मेज़ पर कोई बडे ज़ोर और तेजी से बोलता चला जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई बत्तख कूकूं ही किए जा रही हो। यह आवाज कमरे के शोर मे भी साफ सुनाई पड रही थी।

'डिक्शनरी का काम कैसा चल रहा है ?' विन्स्टन ने अपनी आवाज उठाते हुए कहा।

'चल रहा है, धीरे-धीरे।' साइम ने उत्तर दिया। 'मै आजकल विशेषणो पर हू।' उसने 'स्टू' खत्म कर पात्र एक ओर खिसका दिया। इसके बाद रोटी का टुकडा और पनीर उठाकर मेज़ पर विन्स्टन की ओर झुक गया और बोला, 'काम मजेदार है।' वह इस तरह बोल रहा था कि उसे ज़ोर से न बोलना पडे।

'डिक्शनरी का ग्यारहवा सस्करण निश्चयात्मक है।' साइम ने कहा, 'यह अतिम सस्करण है। अब नई भाषा का वास्तविक स्वरूप निखर रहा है। हमारा काम समाप्त होने पर तुम जैसे आदमियो को यह नई भाषा पुन सीखनी होगी। पर तुम सोचते होगे, हमारा काम नए शब्द बनाना है। परन्तु वस्तुत. बात ऐसी नही है। हम शब्दो को नष्ट कर रहे है। बीसियो सैकड़ो शब्द रोज़ काटे जा रहे है। हम भाषा के शब्द भडार को न्यूनतम कर देगे। ग्यारहवे संस्करण मे एक भी

ऐसा शब्द नही होगा जो सन् २०५० के पूर्व बेकार हो सकेगा।'

उसने जल्दी-जल्दी रोटी के कई ग्रास खाए और उनको गले से नीचे उतार लेने के बाद अध्यापको के ढग से फिर बोलना शुरू किया। उसके काले चेहरे पर चमक आ गई थी। आखो में मज़ाक उडाने का जो भाव पहले था वह गायब हो गया था। वह ऐसा हो गया था जैसे सपने मे बोल रहा हो।

'शब्दो को नष्ट करना अच्छी बात है। क्रिया और विशेषणो मे बडी शक्ति नष्ट होती है। वे तो काटे ही जा रहे है। हम अब सज्ञाओ को भी घटा रहे है। पर्यायवाची शब्दो को ही नही, हम उन शब्दो को भी काट रहे है, जो विपरीत अर्थ देते है। ऐसे शब्द का क्या लाभ है जो दूसरे शब्द का बिलकुल उलटा अर्थ देता हो। प्रत्येक शब्द का उलटा शब्द उसी शब्द मे निहित होता है। उदाहरण के लिए अच्छा या भला शब्द ले लो। अब बुरे की क्या आवश्यकता है ? अच्छा या भला कह देने से काम चल सकता है। यदि आपको बहुत अच्छा, या शानदार कहना है तो इसके लिए उत्तरोत्तर अच्छे पर्यायो की क्या आवश्यकता है। धन अच्छा कह देने से काम चल सकता है। अन्त मे अच्छे या बुरे के सैकडो पर्यायो की जगह केवल ६ शब्द रह जाएगे। और वस्तुत एक शब्द। इस काटछाट का लाभ तुम समझ रहे हो न ?—बेशक यह 'आइडिया' बड़े भाई का ही था।' कुछ देर सोचने के बाद साइम ने कहा।

बडे भाई का नाम सुनते ही विन्स्टन को हरारत-सी हो आई। परन्तु इसके साथ ही साइम ने यह भी देख लिया कि उसकी बातो मे विन्स्टन उत्साहपूर्वक भाग नही ले रहा है।

'विन्स्टन, तुम नई भाषा की पृष्ठभूमि भली भाति समझ नही पाए हो।' उसने उदास होकर कहा, 'आजकल नई भाषा मे लिखते हुए तुम तथा अन्य सब पुरानी भाषा मे ही सोचते है। 'टाइम्स' मे छपी तुम्हारी चीजो को मैने पढा है। वे अच्छी है लेकिन वे सब पुरानी भाषा मे सोची गई बातो के नई भाषा मे अनुवाद है। अभी तुम मन ही मन पुरानी भाषा से ही लिपटे हो। पुरानी भाषा बिलकुल अनिश्चित है और उसमे तरह-तरह के अर्थ देने वाले शब्द है जिनका प्रयोग अर्थ की दृष्टि से सदिग्ध होता है। तुम अभी शब्द-सहार का सौन्दर्य नही अनुभव कर पाए हो। क्या तुम यह नही जानते हो कि नई भाषा ही एकमात्र ससार की ऐसी भाषा है जिसके शब्द प्रतिवर्ष घटते जा रहे है ?'

निस्सदेह, विन्स्टन यह नही जानता था। वह केवल मुस्करा दिया था। वह बोलना नही चाहता था। साइम ने अपनी रोटी का एक कौर और दात से काट लिया और उसे चबाता हुआ बोला, 'क्या तुम्हारी समझ मे यह बात नही आती कि नई भाषा का उद्देश्य ही विचार-शक्ति को सीमित कर देना है? अन्तत हम विचार-अपराध या मानसिक अपराध को शब्दश असभव कर देगे। जब शब्द ही नही होगे तो कोई विचार कैसे करेगा और जब विचार-शक्ति ही नष्ट हो जाएगी तो मानसिक अपराधो का होना भी असभव हो जाएगा। हर शब्द का एक ही अर्थ होगा। यह अर्थ निश्चित कर दिया जाएगा और उसके व्यजनात्मक अर्थों को बिलकुल नष्ट कर दिया जाएगा और भुला दिया जाएगा। डिक्शनरी के ग्यारहवे सस्करण मे भी हम अपने लक्ष्य से बहुत दूर नही है। परन्तु यह प्रक्रिया हमारे और तुम्हारे मर जाने के बाद भी चलती रहेगी। हर वर्ष शब्दो की सख्या घटती जाएगी और इसी तरह विचार-शक्ति भी क्षीण होती जाएगी। बेशक, मानसिक अपराध करने का आज भी कोई औचित्य नही है। यह केवल आत्मसयम, यथार्थ नियत्रण की बात है। परन्तु अन्त मे इसकी भी कोई जरूरत नही रह जाएगी। क्रान्ति तभी पूर्ण होगी जब नई भाषा पूर्ण हो जाएगी। 'इगसोश' नई भाषा है और नई भाषा ही 'इगसोश'। उसने कुछ रहस्यवादियो जैसे सतोष से कहा, 'क्या तुम्हारे दिमाग मे कभी भी यह बात आई है कि सन् २०५० तक एक भी ऐसा आदमी जीवित होगा जो हमारे इस सवाद की भाषा को समझ सकेगा?'

'केवल'—विन्स्टन कहते-कहते एकदम रुक गया।

वह कहने जा रहा था, 'केवल मजदूरों को छोडकर।' परन्तु यह सोचकर चुप हो गया कि कही उसका यह कथन पार्टी विरोधी न समझ लिया जाए। फिर भी साइम ने जान लिया कि वह क्या कहने जा रहा था।

'मजदूर पेशा लोग आदमी थोडे ही है,' उसने लापरवाही से कहा, 'सन् २०५० तक पुरानी भाषा का सारा ज्ञान लुप्त हो चुकेगा। भूतकाल का सारा साहित्य नष्ट कर दिया जाएगा। चौसर, शेक्सपियर, मिल्टन, बायरन आदि की कविताएं केवल नई भाषा ही मे मिल सकेगी। उनकी कविताओ का तत्व भी बदल जाएगा। पार्टी साहित्य भी बदल जाएगा। नारे भी बदल जाएंगे। 'दासता ही स्वतन्त्रता है!'—इस तरह का नारा आप कैसे लगा सकते है, जब आप जानते ही नही कि स्वतन्त्रता किस चिड़िया को कहते है? विचारो का सारा वातावरण

ही भिन्न होगा। वस्तुत. आज जिसे हम विचार कहते है, वैसी कोई चीज ही नहीं होगी, पार्टी-भक्ति का अर्थ है सोचना बन्द कर दिया जाए—सोचने की कोई आवश्यकता ही नही है।'

तभी विन्स्टन के मन मे यह भाव आया कि अब साइम की सासे भी इनी-गिनी ही रह गई है। वह जल्दी ही मारा जाएगा। साइम जरूरत से ज्यादा अकल काम मे लाता है। जरूरत से ज्यादा सुलझे ढग से सोचता है और जरूरत से ज्यादा स्पष्ट बोलता है। पार्टी ऐसे आदमियो को पसन्द नही करती। एक दिन वह गायब हो जाएगा। यह उसके मुह पर ही लिखा है।

विन्स्टन ने अपनी रोटी और पनीर को खत्म कर दिया था। इसके बाद वह खिसककर कॉफी पीने लगा। उसके बगल मे बैठा आदमी अब भी बोलता जा रहा था। एक औरत जो शायद उस आदमी की सेक्रेटरी थी, चुपचाप उस आदमी की बकवास सुन रही थी। आदमी जो भी कहता, वह उससे उत्साहपूर्वक सहमत होती दिखाई देती थी। विन्स्टन के कानो में ये शब्द पड रहे थे, 'मेरा ख्याल है आप ठीक कहते है।' 'बिलकुल ठीक है।' परन्तु आदमी बीच मे जरा भी नही रुकता था। विन्स्टन आदमी को शकल से जानता था। वह गल्प-विभाग मे किसी अन्य पद पर था। उसकी आयु तीस वर्ष की होगी। उसकी गर्दन मासल परन्तु गठी थी और उसका मुह चचल था। विन्स्टन को उसकी आखो की बजाय केवल चश्मा ही दिखलाई पड रहा था। वह इतनी तेजी से बोल रहा था कि उसकी कोई भी बात समझना कठिन था। उसको एक वाक्य अवश्य समझ मे आता सुनाई पडा . 'गोल्डस्टीन की पूर्ण और अन्तिम रूप से समाप्ति।' ये शब्द उसे ऐसे लगे जैसे टाइप की कोई बिलकुल ठोस पक्ति ढलीढलाई उसके सामने रख दी गई हो। बाकी सब उसकी समझ मे कुछ नही आया—शोर ही शोर लगा। न समझ पाने पर भी कि वह क्या कह रहा है, उसकी बातो के सार के सम्बन्ध में कोई सन्देह उत्पन्न नही हो सकता था। वह शायद गोल्डस्टीन की निन्दा कर रहा था और शायद माग कर रहा था कि विचार-अपराधियो तथा तोडफोड करने वालो के विरुद्ध और अधिक कार्रवाई होनी चाहिए। वह शायद यूरेशियन फौजो के अत्याचारो के विरुद्ध बोल रहा था। शायद बडे भाई की प्रशसा कर रहा था या मलाबार के वीरो की तारीफ कर रहा था। फर्क ही क्या था? परन्तु आप यह समझ लीजिए कि उसका हर शब्द पार्टी-भक्ति से ओत-प्रोत था—विशुद्ध 'इगसोश' था।

विन्स्टन को उस आदमी की आखे तो चश्मे के काच पर पडने वाली रोशनी के कारण दिखलाई नही पड रही थी, केवल उसके भारी-भरकम शकल के जबडो का ऊपर-नीचे चलना दिखलाई पड रहा था। उसे ऐसा लगा कि कोई आदमी नही बोल रहा, बल्कि आदमी की कोई मूर्ति बोल रही है। जो कुछ वह बोल रहा था वह शब्दो मे तो अवश्य था लेकिन वह भाषण नही था। यह बडबडाना था—बत्तख का कुकुट-कुकुट जैसा बोलना।

साइम कुछ क्षणो के लिए चुप हो गया था। चम्मच से 'स्टू' में गोश्त की कोई बोटी तलाश कर रहा था। बगल की मेज से आदमी के बोलने की आवाज कमरे के शोर के बावजूद सुनाई पड रही थी।

साइम ने कहा, 'नई भाषा मे एक शब्द है, बत्तख बोली। माने बत्तखो की भाति बोलना। वह ऐसा अजीब शब्द है, जिसके दो अर्थ है। यदि आप अपने विरोधी के लिए उसका उपयोग करे तो वह गाली होगा और मित्र के लिए करे तो प्रशसा।'

निस्सन्देह, साइम मौत के घाट उतार दिया जाएगा। विन्स्टन के दिमाग मे फिर यह ख्याल आया। उसे यह ख्याल आते ही बडा दु ख हुआ। वह जानता था कि साइम उसे पसन्द नही करता और वह कारण मिलते ही उसे निस्सन्देह विचार-अपराधी किसी भी समय घोषित कर सकता था, फिर भी साइम के लिए उसे दु ख हो रहा था। साइम मे कुछ न कुछ खराबी अवश्य थी। शायद विवेक का अभाव था, एकाकीपन की आदत का न होना या ऐसी मूर्खता न होना जो रक्षा-कवच का काम करती है। आप यह नही कह सकते थे कि वह पार्टी-भक्त नही था या उनमें कट्टरता नहीं थी। वह 'इगसोश' के सिद्धान्तो मे विश्वास करता था। बडे भाई का वह भक्त था, वह विजय पर हर्षित होता था, वह पार्टी से दगा करने वालो से घोर घृणा करता था, हमेशा नई से नई खबर उसे मालूम होती थी, ऐसी सूचनाए भी जो साधारण पार्टी के सदस्यो को नही मिलती। परन्तु फिर भी ऐसा लगता था कि वह कुछ बदनाम है। वह ऐसी बाते कह देता था जिनका मुह से न निकलना ही बेहतर होता। उसने बहुत-सी किताबे पढ रखी थी। वह चेस्टनट कैफे जाता था। यह चित्रकार और सगीतज्ञो के बैठने-उठने की जगह थी। चेस्टनट कैफे जाना कोई गैर कानूनी नही था परन्तु वहा जाना अपशकुन समझा जाता था। वृद्ध, निन्दित पार्टी-नेता मारे जाने के पूर्व उसी कैफे में जाया

करते थे। कभी-कभी गोल्डस्टीन भी देखा गया था। वह वर्षो—शायद दशको पूर्व की बात थी। साइम का दुर्भाग्य उसे स्पष्ट दीख रहा था। इतने पर भी यदि साइम को विन्स्टन के विचार-अपराधो के बारे मे ज़रा भी पता लग जाए, या वह किसी तरह सूघ ले तो तत्क्षण उसे पुलिस के हवाले कर देगा—विन्स्टन को इस बात मे जरा भी शक नही था। अन्य कोई भी व्यक्ति यही करेगा लेकिन साइम से उसे अन्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक भय था। उत्साह पर्याप्त नही था। कट्टरता थी। पार्टी के सिवा अन्य सारी बाते भूल जाना।

साइम ने सिर उठाकर कहा, 'वह पारसन्स आ रहा है।'

साइम के कण्ठस्वर से ऐसा लगा कि वह उससे यह भी कह रहा है कि पारसन्स महामूर्ख है। विजय भवन मे पारसन्स विन्स्टन का पडोसी था। वह भीड़ काटकर उनकी ही तरफ आ रहा था। मध्यम कद का वह मोटा आदमी था। उसके बाल श्वेत थे और चेहरा मेढको जैसा था। पैंतीस वर्ष की उम्र मे भी उसकी गर्दन और कमर पर मास बढता जा रहा था। परन्तु वह चलता तेजी से था और उसके चलने से कुछ लडकपन भी प्रकट होता था। उसको देखकर ऐसा लगता था कि छोटा लडका बड़ा हो गया है। वह नियमित पोशाक पहने था फिर भी विश्वास नही होता था कि वह बाल गुप्तचरो की पोशाक मे नही है। उसका ध्यान करते ही लगता कि ऐसा आदमी साथ मे खडा है जिसकी कोहनिया और घुटने कमीज तथा पैर तो बाहर निकले पड रहे है। वह अक्सर निकर तथा कमीज पहनता था, विशेष रूप से सामुदायिक भ्रमण या ऐसे ही किसी अन्य शारीरिक व्यायाम के अवसर पर। उसने दोनो व्यक्तियो से 'हलो हलो' किया और मेज पर बैठ गया। उसके मेज़ पर बैठते ही पसीने की तेज बदबू विन्स्टन की नाक मे घुस गई। उसके लालिमापूर्ण चेहरे पर पसीने की बूदे झलक रही थी। पारसन्स के शरीर से असाधारण रूप से पसीना निकलता था। आप समाज-केन्द्र में बैट का हत्था देखकर हमेशा बतला सकते थे कि पारसन्स टेबिल टेनिस खेल रहा था या नही क्योकि जब वह खेलता तो बैट का हत्था पसीने से भीगा रहता था। साइम ने एक कागज़ निकाल लिया था। इसमे एक लम्बी शब्द-सूची थी। हाथ मे स्याहीदार पैंसिल लिए वह इसी शब्द-सूची पर विचार कर रहा था।

पारसन्स ने विन्स्टन को चिकोटी काटते हुए कहा, 'ज़रा देखो भाई को, भोजन के समय भी काम मे जुटे है। अरे भई, क्या पढ़ रहे हो, क्या मेरे दिमाग

से परे की बात है ? स्मिथ, भाई मुझे तुमसे एक चन्दा वसूल करना है, इसीलिए मैं तुम्हारे पीछे पडा हू ।'

'कौन-सा चन्दा', विन्स्टन ने पर्स निकालने के लिए अपनी जेब मे हाथ डाला। हर मास वेतन का चौथाई हिस्सा चन्दो मे निकल जाता था। वे इतने अधिक थे कि उनको याद रखना भी मुश्किल था।

'घृणा सप्ताह के लिए घर-घर जाकर यह चन्दा इकट्ठा किया जा रहा है। हम शानदार प्रदर्शन की पूरी तैयारी कर रहे हैं। यदि विजय भवन मे सडक के अन्य सब भवनो की अपेक्षा सबसे अधिक झडे न लगे तो मुझे दोष न देना। तुमने दो डालर देने का वादा किया था।'

विन्स्टन ने पर्स निकालकर दो डालर के गन्दे नोट पारसन्स के हवाले किए। पारसन्स ने उनको रखकर अपनी नोट बुक मे लिख लिया।

'मैंने सुना,' पारसन्स ने कहा, 'मेरे लडके ने उस दिन तुम्हारे गुलेल मार दी। मैंने उसकी अच्छी तरह पिटाई की है। मैंने उससे कह दिया है कि यदि फिर उसने ऐसी हरकत की तो मैं उससे गुलेल छीन लूगा।'

'मेरा ख्याल है, वह फासी देखने न जा सकने के कारण नाराज था।' विन्स्टन ने कहा।

'ठीक है। ऐसा तो होना ही चाहिए। दोनो बच्चे बडे ही शरारती हैं। वे हमेशा जासूसो और युद्ध की बाते करते रहते हैं। पिछले शनिवार को मेरी लडकी ने, जानते हो क्या किया ? वह बर्कहैम्पस्टीड अपने दल के साथ घूमने गई थी। उसने दो अन्य लडकियो के साथ एक अजनबी का पीछा किया। दो घण्टो तक वह जंगलो मे उसके पीछे घूमती रही। ऐमरशम पहुचकर तीनो ने उस आदमी को पुलिस के हवाले कर दिया।'

'ऐसा उन्होने क्यो किया ?' विन्स्टन ने हैरान और परेशान होकर पूछा। पारसन्स ने विजय गर्व से कहा, 'मेरी बच्ची ने यह जान लिया था कि वह शत्रु का गुप्तचर है। शायद उसे पैराशूट से गिरा दिया गया था। वह आदमी अजीब ढग के जूते पहने था। ऐसे जूते पहने उसने पहले किसी को नही देखा था इसलिए लडकी के मन मे शक पैदा हो गया। हो न हो यह विदेशी हो, यह सोचकर लडकी ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। सात साल की लडकी के लिए इतना बहुत है, क्यो ?'

'आदमी का क्या हुआ ?' विन्स्टन ने पूछा ।

'मुझे नही मालूम । लेकिन मुझे आश्चर्य न होगा यदि अब तक वह…' राइफल तानने का इशारा करते हुए पारसन्स ने मुह से गोली चलाने और घोडा दबाने की आवाज़ की ।

'बहुत ठीक ।' साइम ने कागज़ से बिना अपनी आखे उठाए हुए कहा ।

'ठीक है, हम लोग खतरा नही मोल ले सकते,' विन्स्टन ने सहमत होते हुए कर्तव्य का पालन किया ।

'आजकल लडाई चल रही है ।' पारसन्स ने कहा ।

बात की पुष्टि के रूप में, ऐसा लगा, टेलीस्क्रीन पर जोर से बिगुल बजने की आवाज़ हुई । टेलीस्क्रीन सिर पर ही था । फिर भी इस बार कोई सैनिक घोषणा नही की गई । इस बार समृद्धि मत्रालय की तरफ से कोई सूचना नही दी जा रही थी ।

'कामरेड' किसी तरुण कण्ठ ने कहा, 'ध्यान से सुनिए ! बडी शानदार खबर है । हमने उत्पादन की लडाई जीत ली है । पिछले साल उपभोग्य वस्तुओ का जो उत्पादन हुआ उससे प्रकट होता है कि जीवनयापन का स्तर बीस प्रतिशत बढ गया है । आज ओशनिया भर मे कारखानो और दफ्तरो से निकलकर सडको पर मज़दूरो ने प्रदर्शन किए । इनमे नए तथा सुखमय जीवन के लिए बडे भाई के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई थी । ये कुछ आकडे है । खाद्य सामग्री—'

'हमारा नया सुखमय जीवन' ये शब्द घोषणा में बार-बार दोहराए गए । इधर इन शब्दो का प्रयोग समृद्धि मत्रालय बहुत करता रहा था । पारसन्स घोषणा को आख बन्दकर मूर्तिवत् सुन रहा था । ऐसा लगता था कि नीरसता की साक्षात् प्रतिमा है । वह आकडो को तो समझ नही पाता था, परन्तु उन्हे सुनकर ही सन्तोष कर लेता था । अब उसने आखे खोल ली और अपनी जेब से एक गन्दा पाइप निकाल लिया । इसमें आधी से भी अधिक जली तम्बाकू पहले से ही भरी हुई थी । तम्बाकू सप्ताह मे केवल सौ ग्राम मिलती थी, इसलिए कभी भी पाइप को ऊपर तक तो भरना सभव ही नही था । विन्स्टन विक्टरी सिगरेट पी रहा था । सिगरेट को वह बडी सावधानी से सीधा पकडे था । अन्यथा तम्बाकू के नीचे गिर जाने का खतरा था । राशन कल से पहले मिलने वाला नही था और उसके पास अब केवल चार सिगरेटे ही बची थी । कुछ देखने के लिए उसने आसपास के शोर

से अपना ध्यान खीचकर वे आकडे सुनने का प्रयत्न किया जो टेलीस्क्रीन पर सुनाए जा रहे थे। ऐसा लगता था कि बडे भाई को चाकलेट का राशन बीस ग्राम कर देने के लिए प्रदर्शनो मे धन्यवाद दिया गया था। अभी कल ही घोषणा की गई थी कि चाकलेट का राशन घटाकर बीस ग्राम किया जा रहा है। चौबीस घटो में ही लोगो ने यह मान लिया कि राशन घटा नही बल्कि बढा है। हा, लोगो ने मान लिया था। आजकल हर बात को लोग जानवरो की तरह मान लेते थे। यदि कोई कहता कि राशन घटाया गया है तो उसे तुरन्त मार दिया जाता। साइम ने भी बात मान ली थी। तो क्या वही ऐसा अकेला आदमी है जिसे ये बाते याद रहती है?

लम्बे-चौडे आकडे टेलीस्क्रीन से अब भी झर रहे थे। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष अधिक खाद्य सामग्री, अधिक कपडा, अधिक फर्नीचर, अधिक बर्तन, अधिक ईंधन, अधिक जहाज और अधिक हैलीकॉप्टर निर्मित हुए थे। अधिक पुस्तके छपी थी और अधिक बच्चे हुए थे। केवल बीमारिया, अपराध और पागलपन का रोग नही बढा था। वर्ष प्रति वर्ष, मिनट प्रति मिनट, हर व्यक्ति और हर चीज ऊपर की तरफ जा रही थी। वह जीवनयापन के ढग के बारे मे सोच रहा था। क्या हमेशा ऐसा ही था? क्या खाना हमेशा ऐसा ही था। उसने कैण्टीन में चारो ओर दृष्टि डाली। नीची छत का, भीडभाड से भरा कमरा या तहखाना था यह। सैकडो आदमियो के कधे से कधे भिड रहे थे, जिसने यहा के वातावरण को उदास बना दिया था। मेजे धातु की थी, टूटी हुई वैसी ही कुर्सिया, मुडी चम्मचे, गन्दी ट्रे, खुरदरे सफेद मग, हरेक की सतह चिकनी, हर दरार मे मैल भरा हुआ, तेल जैसी गन्धाने वाली शराब का खट्टा स्वाद, खराब कॉफी, पितलाया हुआ 'स्टू' और गन्दे कपडे। इनको देखकर हमेशा पेट मे खलबली मची रहती थी। ऐसा लगता था कि आपसे धोखा किया गया। आपसे कोई ऐसी चीज ले ली गई है, जिसे रखने का आपको अधिकार था। इसमे कोई सदेह नही कि जो बाते उसे याद थी वे कोई बहुत गलत या भिन्न नही थी। उसे जहा तक याद था, खाद्य-सामग्री का सदैव अभाव रहा, मोजे और बनियान सबके सब ऐसे पहनने पडे, जिनमे पचासो छेद थे। फर्नीचर हर जगह टूटा-फूटा देखा। कमरे कभी भी पूरी तरह गर्म नही हो पाते थे, भूगर्भ ट्रेनो मे बडी भीड चलती थी। मरम्मत न हो सकने के कारण मकान बराबर गिरते जाते थे। काले रग की रोटी ही राशन मे मिलती थी। चाय

तो आख से देखने को नही मिलती थी। काफी मे कोई स्वाद नही आता था। कृत्रिम शराब की अवश्य अधिकता थी। वह जितनी चाहो उतनी मिल जाती थी। ज्यो-ज्यो आदमी की आयु बढती जाती थी, हालत बद से बदतर होती जाती थी। इससे दिमाग मे बार-बार यह ख्याल आता था कि व्यवस्था सामान्य नही है। उसमे अवश्य ही कोई असाधारण बात है। जाडो का अन्त ही नही था। मोजें मैल की वजह से चिकने और सख्त हो जाते थे। लिफ्टे काम ही नही करती थी। पानी बहुत ही ठडा होता था। साबुन लगाते ही हाथ काटने लगता था। सिगरेट हाथ मे आते ही टूट जाती थी। खाने का स्वाद बडा ही भद्दा होता था। यह सब आदमी को क्यो असह्य प्रतीत हो यदि वह यह न जानता हो, या उसे यह याद न हो कि कोई ऐसा भी समय था जब ऐसी दशा नही थी ?

उसने एक बार कैण्टीन में चारो तरफ फिर नज़र घुमाई। हर आदमी बदसूरत नजर आ रहा था। यदि लोग नीली वर्दी न पहने होते तो शायद और भी बदसूरत लगते। दूर, एक कोने मे छोटी-सी मेज़ पर बैठा एक आदमी कॉफी पी रहा था। उसकी छोटी-छोटी आखे बार-बार कैण्टीन के हर कोने मे जा रही थी। वह हरेक को सदेह की निगाहो से देख रहा था। पार्टी ने शारीरिक स्वास्थ्य को बहुत महत्व दिया था किन्तु लगभग हर आदमी का कद छोटा, रग काला और स्वभाव चिडचिडा होता जा रहा था। सुपारी जैसी शकल के लोगो की चादी थी। वे ही हर मत्रालय मे मौज करते थे। वे बचपन मे ही खूब मोटे हो जाते थे। उनके पैर छोटे होते थे। वे तेज़ी से, हर काम जल्दी-जल्दी करते थे। उनके मुह पर इतना मास होता था कि उस पर भावो का आना-जाना दिखलाई ही नही पडता था। पार्टी-राज मे यही लोग बढ रहे थे।

समृद्धि मत्रालय की घोषणा बिगुल बजकर समाप्त हो गई। अब हलका सगीत बज रहा था। पारसन्स ने आकडो की वर्षा के बाद उत्साहपूर्वक अपनी आखे खोली और मुह से पाइप बाहर निकाल लिया।

जानकारो की भाति सिर हिलाते हुए उसने कहा, 'इस वर्ष समृद्धि मत्रालय ने निश्चय ही अच्छा काम किया है।—क्यो कामरेड स्मिथ, तुम्हारे पास एकाध ब्लेड तो फालतू नही होगा ?'

'मेरे पास एक भी ब्लेड नही है। मै पुराने ब्लेड से ही पिछले छ सप्ताह से काम चला रहा हू।'

'अच्छा-अच्छा। कोई बात नही। मैंन सोचा, पूछ लेने में क्या हर्ज है ?'
'सॉरी !' विन्स्टन ने कहा।

बगल की मेज पर बैठा जो आदमी बत्तखो की तरह बोल रहा था, वह समृद्धि मत्रालय की घोषणा के दौरान चुप हो गया था। घोषणा समाप्त होते ही उसने पहले की तरह फिर जोर-शोर से बोलना आरभ कर दिया था। पता नही क्यो विन्स्टन को श्रीमती पारसन्स की याद आ गई। उनके उडते हुए बाल तथा झुर्रियो मे भरी धूल वाला चेहरा फिर उसके सामने आ गया। दो साल के भीतर ही वे बच्चे अपनी मां को विचार-पुलिस के हवाले कर देगे। और श्रीमती पारसन्स को समाप्त कर दिया जाएगा। साइम को भी समाप्त कर दिया जाएगा। विन्स्टन का भी यही हाल होगा। ओ' ब्रायन भी मार डाला जाएगा। इसके विपरीत पारसन्स जैसे आदमी कभी नही मारे जाएगे। बिना आखो वाला यह जीव जो सामने बैठा बडबडा रहा है, कभी नही मारा जाएगा। सुपारी जैसे छोटे और मोटे आदमी कभी नही मारे जाएगे। वह गहरे काले घने बालो वाली लडकी भी नही मारी जाएगी। ऐसा लगता था कि उसे तुरन्त ज्ञात हो जाता था कि कौन मारा जाएगा और कौन नही।

तभी वह अपने विचार-स्वप्न से जाग उठा। दूसरी मेज वाली लडकी थोड़ी-सी घूम गई थी और उसकी तरफ देख रही थी। यह वही काले बालो वाली लड़की थी। वह बगल से कटाक्षपात् कर रही थी। जिस क्षण दोनो की आखे मिली लडकी तुरन्त दूसरी ओर देखने लगी।

विन्स्टन की पीठ पर पसीना आ गया। उसके हृदय मे भयानक डर समा गया। थोडी ही देर मे वह भय दूर भी हो गया। परन्तु वह अपने पीछे थोडी-सी बेचैनी भी छोड गया था। वह उसे क्यो देख रही है ? वह उसके पीछे क्यो पडी है ? अब उसे याद नही था कि जब वह मेज पर आकर बैठा तो वह आ गई थी या नही। लेकिन कल वह लडकी उसके पीछे बैठी थी, जब कि ऐसा करने का कोई कारण नही था। सभवत वह यह सुनना चाहती है कि मै सोचते-सोचते जोर से बोलता हू या नही।

फिर विन्स्टन को खयाल आया कि वह सभवत विचार-पुलिस की एजेण्ट न हो। शायद शौकिया जासूसी करती हो। परन्तु असली खतरा तो उन्ही शौकिया जासूसो से था। उसे याद नही वह लडकी कितनी देर उसकी तरफ देखती रही, शायद

पाच मिनट तक देखती रही हो। वह विन्स्टन की शकल याद नही कर पा रही होगी। सार्वजनिक स्थानो मे या टेलीस्क्रीन के सामने बैठकर इधर-उधर की बातें सोचना बहुत ही खतरनाक है। विन्स्टन मन ही मन कह रहा था, छोटी से छोटी बात भी जान की ग्राहक बन सकती है। घबरा जाना, चेहरे पर चिन्ता का भाव, बुदबुदाना, कोई भी अस्वाभाविक बात जिसमे ऐसा लगे कि कुछ छिपाया जा रहा है, खतरनाक थी। किसी सफलता की घोषणा के समय अविश्वास की भावना का चेहरे पर होना ही दण्डनीय अपराध था। नई भाषा मे इसके लिए शब्द भी था। इस शब्द का अर्थ था—चेहरे पर भावो का अपराध।

लडकी ने अब फिर उसकी तरफ पीठ कर ली थी। शायद वह सचमुच उसका पीछा नही कर रही थी। शायद वह सयोग ही था कि वह लगातार दो दिनो तक उसके पास ही बैठ रही थी। विन्स्टन का सिगरेट बुझ चुका था। उसने सभाल-कर सिगरेट मेज पर रख दिया। वह उसे दफ्तर के बाद पीना चाहता था बशर्ते कि सिगरेट का तम्बाकू जमीन मे न गिरे। बहुत सभव है कि सामने वाला आदमी विचार-पुलिस का सदस्य हो और वह तीन दिन के भीतर ही प्रेम मत्रालय के तहखानो मे भेज दिया जाए। परन्तु सिगरेट का अतिम भाग भी नष्ट तो नही किया जाना चाहिए। साइम ने अपना कागज मोडकर जेब मे रख लिया था। पारसन्स ने बातचीत करना फिर शुरू कर दिया था।

'मैने तुम्हे कभी बताया था स्मिथ,' उसने हसते हुए कहा, 'कि मेरे दोनों शरारती बच्चो ने एक बुढिया को पोस्टर मे कुछ खाने का सामान बाधते देख लिया था। वे लोग उसके पीछे पहुच गए और दियासलाई से उसे जला दिया। मै समझता हू वह काफी जल गई थी। बडे ही शरारती बच्चे है। घोर दुष्ट! आजकल इतनी अच्छी प्रशिक्षा बाल गुप्तचरो को दी जा रही है। हम लोगो से भी अच्छी ट्रेनिंग उन्हे मिल रही है। अभी इन्ही बच्चो को ऐसा भोपा दिया गया है जिसकी सहायता से वे ताले के छेद से कमरे के अन्दर हो रही बाते सुन सकते है। मेरी लडकी ने कल रात यह प्रयोग मेरे कमरे पर किया और कहा कि वह कानो की अपेक्षा इस यत्र की सहायता से दूना सुन सकती है। अभी तो वह खिलौना ही है, लेकिन काम करने का अभ्यास तो बढता ही है।'

तभी टेलीस्क्रीन से एक तेज सीटी जैसी आवाज निकलने लगी। यह काम पर वापस लौटने के लिए सिगनल था। तीनो आदमी खडे हो गए। सबके साथ

वे भी लिफ्ट से चढने का प्रयत्न करने लगे। इस प्रयत्न मे विन्स्टन के सिगरेट का तम्बाकू झडकर नीचे गिर गया।

(६)

विन्स्टन अपनी डायरी मे लिख रहा था

'तीन वर्ष पहले की बात है। घनी काली शाम थी। बडे स्टेशन के पास की तग गली में, वह एक बिजली के खभे के नीचे खडी थी। बहुत मन्द रोशनी थी। उसके चेहरे से तरुणाई झलकती थी। शायद उसने पाउडर बहुत लगा रखा था। यह पाउडर मुझे पसन्द आ गया था। सफेद था न। उस पर लाल रग की लिपस्टिक थी। अन्य कोई सडक पर था नही। टेलीस्क्रीन भी नही। उसने कहा, 'दो डालर। मैं···।'

अब एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि आगे लिखना बडा कठिन है। उसने आखें बन्द कर ली और वह दृश्य याद करने का प्रयत्न करने लगा। वह बडे ज़ोर से कुछ गन्दी बात कह डालना चाहता था। वह दीवार से अपना सिर फोड लेना चाहता था। मेज को लात से ठोकर मार देना चाहता था। उसकी तबीयत हो रही थी, कि दवात खिडकी से नीचे फेक दे। वह ऐसा कोई भी काम करना चाहता जिससे वह बात भूल जाए जो बार-बार उसके दिमाग मे आकर उसे तग कर रही थी, तकलीफ दे रही थी।

उसने सोचा, मेरे सबसे बडे दुश्मन मेरे स्नायु हैं। अन्दर की हलचल कभी भी बाहर आ सकती है। उसे एक आदमी का खयाल हो आया जिसे उसने कुछ दिन पहले सड़क पर देखा था। देखने से बिलकुल सामान्य लग रहा था। पार्टी का सदस्य था। आयु होगी कोई पैंतीस या चालीस वर्ष की। कद लम्बा और आकार दुबला-पतला। उसके हाथ मे छोटा बैग था। वे कुछ दूर थे कि अकस्मात् उस आदमी का चेहरा अकड गया। जैसे कोई भयानक दर्द उठ खडा हुआ हो। ऐसा कुछ ही देर के लिए हुआ था, कैमरे की क्लिक की तरह। परन्तु ऐसा करने की उसकी आदत हो गई थी। सबसे भयानक बात यह थी कि उसका यह कार्य बिलकुल इस ढग से हुआ कि स्वय उस आदमी को भी पता नही लगा कि क्या हो गया। परन्तु इससे भी अधिक खतरा था, सोते-सोते बोलने का। इस

खतरे का कोई इलाज नही था।

उसने एक गहरी सास लेकर फिर लिखना शुरू किया :

'मै उसके साथ दरवाजे से होता हुआ मकान के पिछले हिस्से मे बने मैदान मे पहुचा और उसके साथ जमीन के नीचे बनी रसोई मे घुस गया। दीवार के साथ लगा एक बिस्तर था। मेज पर एक लैम्प था। वह बडा मन्द जल रहा था। उसने' '।'

अब दात से दात भिंच गए थे। उसकी इच्छा हो रही थी वह थूक दे। उस औरत के साथ जब वह रसोईघर मे था तो उसे अपनी पत्नी कैथराइन की याद आ गई। विन्स्टन का विवाह हुआ था—या हो चुका था और अभी तक उसकी पत्नी की मृत्यु भी नही हुई थी। उसे ऐसा लग रहा था कि उस दम घुटने वाली रसोई मे खडा वह फिर सास लेने की कोशिश कर रहा है। रसोई में खटमलो, गन्दे कपडो और सस्ते सेण्ट की खुशबू-बदबू मिली थी। परन्तु सेण्ट का प्रयोग आकर्षक था क्योकि पार्टी के किसी भी सदस्य को सेण्ट लगाने की अनुमति नही थी। केवल मजदूर ही इसका उपयोग कर सकते थे।

जब वह उस औरत के साथ लेटा तो शायद दो वर्षो बाद उससे यह गलती हुई थी। नियमानुसार वेश्याओ के पास जाना वर्जित था, परन्तु कभी-कभी साहस करके यह नियम तोड भी लिया जाता था। खतरा जरूर था लेकिन इसमें जीवन और मृत्यु का सवाल नही था। वेश्या के साथ पकडे जाने पर बेगार शिविर मे पाच साल बिताने पड सकते थे। उससे अधिक नही। शर्त यही थी कि आपने अन्य कोई अपराध न किया हो। वैसे यह काम बडा आसान भी था। शर्त यही थी कि आप वेश्या के पास पकडे न जाए। गरीबो की बस्तियो मे ऐसी स्त्रिया भरी पडी थी जो अपने शरीर को हमेशा बेचने को तैयार रहती थी। कुछ लोगो को तो एक बोतल शराब देकर ही खरीदा जा सकता था। मजदूरो से आशा की जाती थी कि वे शराब नही पिएगे। अप्रत्यक्षत पार्टी वेश्यागमन को प्रोत्साहित भी करती थी क्योकि अधिकारी समझते थे कि जो भावनाए दबाई नही जा सकती उनको दिमाग से बाहर निकालने का यह अपेक्षाकृत सरल साधन है। शर्त यही है कि इसका कोई दीर्घकालीन फल न हो और इसमे लोगो को कोई आनन्द न आवे। दूसरे इस कार्य मे निम्न वर्ग की मजदूर औरते ही हो। पार्टी-सदस्यो के बीच कोई यौन सबध नही होने चाहिए। यह अक्षम्य अपराध था।

बडे-बडे शुद्धिकरण के अभियानो मे अभियुक्त अपनी स्वीकारोक्तियो मे यह स्वीकार भी करते थे कि उन्होने यह काम किया है लेकिन वास्तविक जीवन मे ऐसी बात होती है, इसकी कल्पना करना भी कठिन था।

पार्टी का यही लक्ष्य नही था कि स्त्री-पुरुषो के बीच ऐसे सबध स्थापित न हो पाए जिससे वे एक दूसरे पर जान देने के लिए तैयार हो जाए, बल्कि यथार्थ उद्देश्य यह था कि सभोग कर्म मे कोई आनन्द ही न रह जाए। इसकी घोषणा कभी नही की गई थी। विवाह मे प्रेम को नही, अपितु आत्मप्रेम को अधिक बडा शत्रु समझा जाता था। विवाह के प्रत्येक प्रस्ताव को पहले एक कमेटी से स्वीकृत कराना पडता था। यदि इस कमेटी को जरा भी यह पता लग जाता था कि जोडा एक दूसरे के सौन्दर्य से प्रभावित है तो विवाह की अनुमति नही दी जाती थी। एक ही आधार पर अनुमति मिलती थी और वह था पार्टी की सेवा के लिए हम सन्तति उत्पन्न करना चाहते है। सभोग को हेय दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे ही जैसे एनिमा से पेट साफ करने के कर्म को। परन्तु स्पष्ट रूप से यह सब नही कहा जाता था। यह बात बचपन से हर पार्टी-सदस्य के दिमाग मे बार-बार अपरोक्ष रूप से घुमाई जाती थी। तरुणो की सेक्स विरोधी लीग भी थी। यह बच्चो को ब्रह्मचर्य तथा आजीवन कौमार्य व्रत ग्रहण करने का व्रत दिलाती थी और इसी का प्रचार करती थी। उनका कहना था कि सभी बच्चे कृत्रिम गर्भाधान प्रक्रिया से उत्पन्न होने चाहिए। विंस्टन जानता था कि पार्टी इस मामले मे बहुत गभीर नही थी। परन्तु पार्टी की विचारधारा मे यह बात खप जाती थी। पार्टी पहले तो यौन भावना को ही समाप्त करा देना चाहती थी और यदि ऐसा नही तो कम से कम यौन कर्म को बडा तुच्छ, गन्दा और हेय बना देना चाहती थी। ऐसा क्यो किया जा रहा है, इसका कारण वह नही जानता था, लेकिन उसे लगता था कि ऐसा होना स्वाभाविक है। जहा तक औरतो का सबध था—पार्टी के प्रयत्न काफी सफल भी हुए।

वह फिर कैथराइन की बात सोचने लगा। उन लोगो को अलग हुए नौ-दस नही, शायद ग्यारह वर्ष हो गए थे। यह अजब बात थी कि उसे कैथराइन की बहुत कम याद आती थी। वह कभी-कभी भूल जाता था कि उसकी शादी भी हुई थी। उनका वैवाहिक जीवन केवल पन्द्रह मास का रहा। पार्टी तलाक की मजूरी नही देती थी। लेकिन जहा बच्चे नही होते थे वहा अलग हो जाने को अवश्य

प्रोत्साहन देती थी।

कैथराइन लम्बे कद की सुन्दरी थी। उसके बाल चमकीले थे। चाल-ढाल अत्यत शानदार थी। चेहरे पर सज्जनता का भाव था। परन्तु इस सबके होते हुए अकल के नाम पर वह कोरी थी। शादी के बाद यह बात बहुत जल्दी विन्स्टन ने समझ ली थी। नारो के सिवाय उसके दिमाग मे कुछ भी नही था। पार्टी की कोई भी बात वह मानने को तैयार हो जाती थी, वह चाहे कितनी ही मूर्खतापूर्ण क्यो न हो। इतना सब होते हुए भी वह उसके साथ ही रहता, यदि उसमे एक खराबी न होती, वह थी—सेक्स।

जैसे ही वह उसे स्पर्श करता था, वह एकदम कठोर हो जाती थी। उसे आलिगन करने पर ऐसा लगता था जैसे किसी लकडी की गुडिया को छाती से लगा लिया हो। वह जब उसे अपने आलिगनपाश मे बाध भी लेती थी, तो भी विन्स्टन को ऐसा लगता था कि वह दोनो हाथो से उसे अपने पास से हटा रही थी। उसकी मास पेशिया बहुत सख्त हो जाती थी। इसी से उपरोक्त धारणा हो जाती थी। वह चुपचाप पड रहती। न सहयोग करती और न विरोध। समर्पण कर निष्क्रिय हो जाती थी। यह स्थिति बहुत ही अजब थी और कभी-कभी तो भयानक प्रतीत होती थी। लेकिन वह उस समय भी कैथराइन के साथ रहने को तैयार था, यदि यह तय हो जाता कि दोनो के बीच यौन सबध नही रहेगे। हैरानी की बात यह थी कि कैथराइन ही इसके लिए राजी नही थी। उसका कहना था कि सन्तान अवश्य होनी चाहिए। इसलिए जब भी असभव नही होता, यह क्रिया सप्ताह मे एक बार नियमित रूप से होती थी। निश्चित दिन वह इस कार्य की प्रात ही याद दिला देती थी। उसका याद कराना इस ढग का होता, जैसे यह कोई बडा ही आवश्यक कार्य हो और उस रात होना बहुत ही आवश्यक हो, जिसे भुलाया न जा सकता हो। दो नाम रखे थे, उसने इस काम के 'सन्तान उत्पन्न करने का काम' और 'पार्टी के प्रति हमारा कर्तव्य।' (जी हा, वह इन शब्दो का ही प्रयोग करती थी।) परन्तु जब भी वह दिन आने को होता तो विन्स्टन को एक प्रकार का भय आकर घेर लेता। सौभाग्यवश, कोई बच्चा नही हुआ। अन्त मे वह हारकर प्रयत्न न करने के लिए राजी हो गई। शीघ्र ही, उसके बाद वे अलग हो गए।

विन्स्टन ने बहुत धीरे से सास ली। उसने फिर कलम उठाई और लिखा

'वह बिस्तर पर गिर पडो। इसके बाद बिना किसी प्रारभिक औपचारिकता

के उसने अपने कपडे हटा दिए। मैं…”

एकाएक उसे वह दृश्य याद हो आया। मन्द रोशनी, खटमल और सस्ते सेण्ट की बदबू और खुशबू की मिली गध उसकी नाक मे प्रवेश कर गई। उसका हृदय पराजय और पार्टी के विरुद्ध विद्रोह की भावना से अभिभूत हो गया। उसे लगा कि पार्टी ने अपनी सम्मोहन शक्ति से कैथराइन के श्वेत शरीर को बर्फ की तरह जमा दिया है। ऐसा क्यों होता है ? वर्षो बाद ही सही, उसे यहा आने के लिए क्यो मजबूर किया जाता है ? वह अपनी पत्नी को क्यो नही अपने साथ रख सकता ? किसी प्रेम काण्ड के होने की तो कल्पना भी नही की जा सकती थी। पार्टी की सभी स्त्रिया एक समान ही थी। सतीत्व की भावना उनमे इसी तरह कूट-कूटकर भर दी जाती थी, जिस तरह पार्टी के प्रति वफादारी की भावना। बचपन के वातावरण द्वारा, खेलो और शीतल जल द्वारा, स्कूल मे दिए जाने वाली शिक्षा द्वारा सेक्स विरोधी भावनाए लडकियो के दिलो मे भरी जाती थी। ऐसी ही बात की शिक्षा जासूसी की ट्रेनिंग देने वाली सस्थाओ मे यूथ लीग मे भी दी जाती। व्याख्यानो, परेडो, गीतो, नारो, सैनिक धुनो द्वारा भी इस स्वाभाविक भावना का दमन किया जाता। उसका खयाल था कि कुछ स्त्रिया अवश्य ही अपवाद होगी। परन्तु मन नही मानता था। उनमे से एक भी गर्भवती होने योग्य नही थी। पार्टी चाहती भी यही थी। और वह क्या चाहता था, वह चाहता था कि वह इस दीवार को तोड दे। चाहे प्रेम हो या न हो। यदि एक बार भी सभोग सफलतापूर्वक हो जाता तो वह वस्तुत: पार्टी के विरुद्ध विद्रोह के बराबर था। यह इच्छा ही विचारो का अपराध थी। यदि वह कैथराइन के साथ भी ऐसा करता तो उसे राजद्रोह माना जाता—चाहे वह भले ही उसकी पत्नी थी।

लेकिन अभी शेष कथा भी लिखनी थी। उसने लिखा .

‘मैंने जरा लैम्प तेज किया। मैंने उसकी शकल जब रोशनी मे देखी तो—’

अधेरे के बाद, तेल के लैम्प की जरा-सी तेजी मे भी बडो चमक आ गई थी। पहली दफा वह उस औरत को ठीक प्रकार से देख सका था। वह वापस उस औरत की ओर बढा और रुक गया। वासना और भय दोनो ने उसे पागल बना दिया था। उसे मालूम था कि उसने कितना बडा खतरा मोल लिया था। बहुत सभव था कि पुलिस का गश्ती दस्ता उसे बाहर निकलते ही पकड ले। और क्या पता लोग बाहर खडे प्रतीक्षा ही कर रहे हो। यदि वह काम बिना किए ही लौट

जाए तो···।

फिर भी उसे अपना अपराध स्वीकार ही करना पडेगा। उसने लैम्प के प्रकाश मे देखा कि वह औरत बुढिया थी। पेण्ट की वजह से वह वास्तविकता पहले नही देख पाया था। सफेद बाल भी दीख रहे थे। कही-कही। उसका मुह थोडा-सा खुल गया था। उसमे एक भी दात नही था। उसने जल्दी-जल्दी लिखा

'मैने प्रकाश मे देखा कि वह काफी बुढिया थी। कम से कम ५० बरस की। फिर भी मैने अपना उद्देश्य पूरा किया ही।'

उसने अपनी उगलियो से पलकें दबा ली। अन्तत उसने लिख ही डाला था। परन्तु लिखने से भी क्या फर्क पडता है। इस इलाज से काम नही हुआ। वह अब भी जोर-जोर से बकना चाहता था।

(७)

अब कोई आशा है (विन्स्टन ने लिखा) तो वह सर्वहारा वर्ग से ही है।

यदि कोई आशा थी तो मजदूर या सर्वहारा वर्ग से ही थी। ओशनिया की पचासी प्रतिशत आबादी मज़दूरो की थी। यही बहुसख्यक तथा दलित समाज पार्टी को नष्ट कर सकता था। पार्टी की सत्ता को अन्दर से नही उलटा जा सकता था। पार्टी के अन्दर यदि उसके दुश्मन हो, तो भी वे एक नही हो सकते थे, क्योकि वे एक दूसरे को पहचानते भी नही थे। यदि ब्रदरहुड नाम की सस्था जैसी कोई चीज़ हो तो भी उसके सदस्य एक स्थान पर दो या तीन से अधिक सख्या मे एकत्र नही हो सकते थे। आखो से देखने का ढग, जरा तेज आवाज, कभी-कभी मुह से निकला अस्फुट शब्द भी विद्रोह मान लिया जाता था। यदि मज़दूरो को किसी प्रकार जगा दिया जाए तो उन्हे किसी प्रकार का षड्यत्र रचने की आवश्यकता ही नही पडेगी। उन्हे तो केवल उबल पडना है और अपने आपको इस तरह हिलाना है जिस तरह घोडा अपनी पीठ हिलाकर मक्खियो को भगा देता है। देर या सबेर ऐसा होना ही था। और अब तक···?

उसे सहसा याद हो आया—एक बार वह ऐसी सडक से गुजर रहा था जिस पर बडी भीडभाड थी। तभी औरतो के एक समूह के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। यह शोर थोड़ी दूर कही आगे हो रहा था। इस दहाड मे क्रोध और निराशा

की भावना स्पष्ट रूप से प्रकट होती थी। और—'ऊऽऊऽऊऽऽग्रौह !' यह ध्वनि घण्टे की आवाज़ की भाति प्रतिध्वनित हो रही थी। उसका हृदय उछलने लगा। 'क्या शुरू हो गया?' उसने सोचा। दगा! अन्तत मजदूरवर्ग विद्रोह कर ही बैठा। जब वह उस जगह पहुचा तो उसने देखा कि दो सौ, तीन सौ औरते बाज़ार मे एक दूकान को घेरे हुए है। उन सबकी शकले ऐसी थी जैसे वे ऐसे जहाज पर बैठी हो जो निश्चय ही डूब जाने वाला हो। परन्तु तब उनमे आपस मे झगडा होने लगा। दुकानदार शायद टीन के बर्तन बेच रहा था। देखने मे भी वह बर्तन बडा भद्दा और गन्दा था, परन्तु भोजन बनाने के लिए कोई भी बर्तन मिलना बडा ही कठिन था। अकस्मात् दुकानदार ने कह दिया कि उसका स्टाक खत्म हो गया। जिन औरतो को बर्तन मिल गया था वे तो भीड से बाहर निकलना चाहती थी और चाहती थी कि अब वे बर्तन लेकर घर वापस जाए, परन्तु जिनको नही मिला था वे दुकानदार पर यह आरोप लगा रही थी कि उसने पक्षपात किया है और अभी उसके पास कही और भी सुरक्षित स्टाक रखा है। विन्स्टन के भीड के पास पहुचते ही वे फिर चिल्लाई। दो औरते एक बर्तन के लिए आपस में खीचतान कर रही थी। उनके बाल मुह पर आ गए थे। एक ही क्षण वे खीच पाई थी कि बर्तन का हत्था निकल गया। विन्स्टन उनको बडी हिकारत भरी नजरो से देखता था। परन्तु उनके गले से जो चीख निकली थी, वह उसे सुनकर डर गया था। वे अन्य किसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर इतनी जोर से क्यो नही चीखती!

उसने लिखा

'जब तक वे (मज़दूर) परिस्थितियो के प्रति जागरूक न होगे, तब तक वे कभी विद्रोह नही करेगे। और जब तक वे विद्रोह नही करते, वे अपने अधिकारो के प्रति जागरूक नही हो सकते।'

उसे ऐसा लगा कि उसने यह वाक्य पार्टी की किसी पुस्तक से नकल कर लिया है। पार्टी का दावा था कि उसने मजदूर वर्ग का पूजीपतियो से उद्धार किया था। पूजीपति उन्हे भूखा मारते थे, उन्हे चाबुको से पीटते थे, औरतो से कोयले की खानो मे काम लेते थे (सच यह था कि वे अब भी कोयलाखानो मे काम करती थी।) उनके बच्चो को आठ वर्ष की आयु में ही कारखानेदारो को बेच दिया जाता था। द्वैध विचार सिद्धान्तो के अनुसार इसके साथ ही पार्टी मजदूरो को यह भी सिखाती थी कि मज़दूर वर्ग स्वभावत अन्य कुछ लोगो के नीचे है। इसलिए

उनको वर्ग विशेष के नियत्रण मे रहना चाहिए। यह नियत्रण जानवरो की तरह का था और इस बात को वे कुछ नियमो द्वारा सिद्ध भी कर देते थे। सच तो यह था कि मजदूरो के सबध मे कोई वास्तविक जानकारी लोगो को थी ही नही। जानना आवश्यक भी नही था। जब तक वे काम करते है, बच्चे पैदा करते जाते है, तब तक उनकी क्रियाओ का कोई महत्व नही था। वे पैदा होते थे। वे कूडाखानो मे पलते थे। बारह वर्ष की अवस्था से वे काम मे लगा दिए जाते थे। सौन्दर्य और यौवन का सक्षिप्त काल आता। बीस की आयु मे विवाह हो जाता। तीस की आयु मे वे अधेड़ हो जाते थे,साठ के होते न होते मर जाते थे। उन्हे घोर शारीरिक परिश्रम करना पडता था। गृहस्थी और बच्चो की चिन्ता, पडोसियो से छोटे-छोटे झगडे,फिल्म, फुटबाल, बियर (शराब),और जुए जैसी चीजे ही उनके दिमाग पर छाई रहती थी। उनको नियत्रण मे रखना भी कठिन नही था। विचार-पुलिस के कुछ लोग बराबर उनमे घूमते रहते थे। वे झूठी अफवाहे फैलाते रहते थे। वे उन लोगो को भी छाट लेते थे जिनके खतरनाक हो जाने की सभावना रहती थी। लेकिन उनको पार्टी के सिद्धान्त सिखलाने की कोई कोशिश नही की जाती थी। मज़दूरो मे प्रबल राजनीतिक आकाक्षाओ का होना वाछनीय नही समझा जाता था। उनमे राष्ट्रीयता का भाव ही होना पर्याप्त था। इसी के आधार पर उनसे अधिक काम ले लिया जाता था और राशन घटा दिया जाता था। जब कभी उनमे असन्तोष भी होता था तो उससे मज़दूरो का कोई लाभ नही होता था क्योकि उन्हे किसी प्रकार का कोई ज्ञान तो होता नही था। वे छोटी-छोटी बातो पर ही आपस मे लड जाते थे। बडी बुराई की ओर उनका ध्यान ही नही जाता था। बहुत-से मज़दूरो के घरो पर तो टेलीस्क्रीन भी नही था। पुलिस भी उनसे बहुत कम छेडछाड करती थी। लन्दन मे अपराधियो की पूरी बस्ती थी। मज़दूरो की इस दुनिया मे चोर, उठाइगीरो, वेश्याओ, नशीली वस्तुओ के बेचनेवाले व्यापारियो आदि की अलग दुनिया थी। परन्तु यह सब मजदूरो के बीच था। इसलिए उनकी कोई परवाह नही करता था। नैतिकता के मामलो मे जो उनकी पारिवारिक परम्पराए थी, उन पर चलने और मानने के लिए मज़दूरो को पूरी स्वतत्रता थी। सेक्स सबधी पार्टी के ऊचे सिद्धान्तो को उन पर लागू नही किया जाता था। व्यभिचार के लिए उन्हे कोई दण्ड नही दिया जाता था। तलाक की अनुमति थी। धार्मिक पूजापाठ की भी उन्हे अनुमति थी। वे सन्देह के पात्र नही थे। पार्टी का

नारा था 'मजदूर और पशु स्वतत्र है'।

विन्स्टन ने धीरे से अपना हाथ नीचे किया और अपने फोडे को खुजलाया। उसमे फिर खुजली हो रही थी। अब वह फिर यह सोचने लगा था कि क्रान्ति के पूर्व जीवन कैसा था, यह जानना आज कितना असभव है। उसने श्रीमती पारसन्स से बच्चो के इतिहास की पुस्तक पढने के लिए माग ली थी। इसका एक अश उसने कापी मे नकल करना शुरू किया।

प्राचीन काल मे (पुस्तक मे लिखा था), स्वर्णक्रान्ति के पूर्व, लन्दन आज की तरह सुन्दर नही था। लन्दन बडा गन्दा और अधेरी बस्तियो का शहर था। इसमे लोगो को पेट भर भोजन मिलना भी दूभर था। सैकडो, हजारो व्यक्ति नगे पैर—बिना जूतो के घूमते थे। बहुतो को रहने के लिए कोई घर तक न था। तुम्हारे बराबर के बच्चो को दिन मे अपने निर्दयी मालिको के लिए बारह-बारह घटे काम करना पडता था। यदि बच्चे तनिक भी धीरे काम करते थे तो उनकी कोडो से खबर ली जाती थी। खाने को सूखी रोटी के टुकडे और पानी के सिवा कुछ नही मिलता था। ऐसी भयानक दरिद्रता मे कुछ लोगो के पास बडे-बड़े और सुन्दर महलो जैसे मकान थे। इनमे धनिक वर्ग के लोग रहते थे। इनके पास अपने काम के लिए तीस-तीस नौकर होते थे। ये मालिक बहुत मोटे और बदसूरत होते थे। इनके चेहरे से दुष्टता प्रकट होती थी। इनमे से एक की तसवीर सामने के सफे पर छपी है। यह आदमी लम्बा कोट पहने है। इसे फ्रॉक कोट कहा जाता था। यह एक टोपी भी पहने है। इसे टॉप हैट कहते थे। यह पूजीपतियो की वर्दी थी। उनके सिवा इस पोशाक को अन्य कोई नही पहनता था। ससार की सारी जायदाद इन्ही पूजीपतियो के कब्जे मे थी। उनके वर्ग के लोगो को छोड़ दुनिया का हर आदमी उनका गुलाम था। सारी जमीन, सब मकान, सारे कारखाने और सारा रुपया उनके कब्जे मे था। यदि कोई भी उनकी आज्ञा मानने से इन्कार करता तो वे उसे जेलखाने मे बद करा देते थे या वे उसे काम से हटा देते थे और भूखा मार डालते थे। साधारण आदमी को पूजीपति के सामने पहले झुकना पडता था और सलाम करना पडता था। तभी वह बोल सकता था। उसे सामने जाने के पहले अपनी टोपी उतारनी पडती थी और कुछ कह सकने के पूर्व 'श्रीमान' कहना पडता था। पूजीपतियो का सरदार 'राजा' कहलाता था। और...।

आगे जो कुछ था उसे विन्स्टन जानता था। अब लम्बी बाहो का चोगा पहनने वाले पादरियो का जिक्र होगा, इसके बाद जजो की चर्चा होगी। शेयरो तथा अन्य बातो की चर्चा होगी। इसमे उस कानून की चर्चा नही थी जिसके अनुसार पूजीपति किसी भी औरत के साथ सो सकता था। बच्चो की पुस्तक मे शायद ऐसे कानून की चर्चा अपेक्षित नही समझी गई। आप कैसे बतला सकते है कि इसमे से कितना सच और कितना झूठ था। सभवत यही सच हो कि आज औसत आदमी पहले के सर्वसाधारण की अपेक्षा अधिक सुखी हो। इसके विरुद्ध केवल एक ही प्रमाण था और वह यह कि आपका अन्तर इन बातो का विरोध करता था, यह भावना कि जिन अवस्थाओ मे आप रहे है, वे असत्य है। कोई न कोई ऐसा समय अवश्य रहा होगा जब यह अवस्था भिन्न रही होगी। आधुनिक जीवन की वास्तविक विशेषता अरक्षा या क्रूरता नही थी, बल्कि उसकी नग्नता, गन्दगी और निष्क्रियता या उत्साहहीनता थी। टेलीस्क्रीन से जिस जीवन के चित्र खीचे जाते थे या पार्टी के जो लक्ष्य थे, यथार्थ जीवन उनसे बहुत भिन्न था। पार्टी के सदस्यो तक के लिए राजनीति वर्जित थी। वह अपने रोज के आकर्षणहीन काम मे जुटा रहता था। नौकरी पाने की सतत चेष्टा करता रहता था। फटे मोजो को सीता रहता था। सैकरीन की टिकिया और सिगरेट के टुकडे बचाकर रखने मे व्यस्त रहता था। पार्टी का आदर्श बहुत जबरदस्त था। उसका स्मरण कर डर लगने लगता था। आदर्शो की दुनिया बडी चमकीली थी। वह इस्पात और कक्रीट की दुनिया थी। इसमे बडी बडी मशीने और भयकर अस्त्र होगे। योद्धाओ और कट्टर आदमियो का वह राष्ट्र होगा। वे सबके सब एकता के सूत्र मे बधे होगे, सबके विचार एक होगे, नारे एक होगे। वे मिलकर काम करेगे, लडेगे, विजयी होगे। तीन करोड आदमियो पर वे दृढता से शासन करेगे। इसके विपरीत, वास्तविकता यह थी कि शहर अधेरे और गदे थे। इनमे अधभूखे लोग रहते थे। सडको पर चलने वाले लोगो में से अधिकाश के जूते फटे होते थे। वे उन्नीसवी शताब्दी के मकानो मे रहते थे। इन मकानो मे उबले बन्दगोभी और पाखानो की दुर्गंध सदैव भरी रहती थी। उसे अपने सामने लन्दन का वह नजारा दिखाई पड रहा था जिसमे मलबो के ढेर थे, लाखो कूडो के डिब्बे थे और इसमे श्रीमती पारसन्स थी जो अपनी बद नाली को खोलने के लिए प्रयत्नशील थी।

उसने अपना टखना फिर खुजलाया। बार-बार टेलीस्क्रीन यह कहता था

कि आज पहले की अपेक्षा अधिक खाद्य सामग्री है, अधिक कपडा है, अधिक अच्छे मकान है, मनोरजन के अधिक साधन है और आज ओशनिया के लोग पहले से अधिक आयु तक जीते है, काम करते है, कद मे बडे, अधिक स्वस्थ, मजबूत, सुखी, बुद्धिमान और अधिक शिक्षित है। पचास वर्ष पूर्व ऐसा नही था। इस कथन का एक भी शब्द गलत या सही नही कहा जा सकता था। उदाहरण के लिए पार्टी का दावा था, वयस्क मजदूरो मे से ४० प्रतिशत आज साक्षर है। क्रान्ति के पूर्व यह सख्या केवल १५ प्रतिशत थी। पार्टी का यह भी दावा था, क्रान्ति के पूर्व हजार मे से तीन सौ शिशु मर जाते थे—जबकि अब केवल एक सौ साठ ही मरते है, आदि-आदि। यह ऐसी बाते थी जिनका कोई प्रमाण उपलब्ध नही था। न इधर न उधर। बहुत सभव था कि इनिहास की पुस्तको की सारी बाते कपोल कल्पना हो। पूजीपति किसी भी औरत के साथ सो सकता है—ऐसा कोई कानून विन्स्टन को याद नही पडता था। वह 'टॉप हैट' जैसा किसी टोपी के बारे मे भी नही जानता था।

हर बात, हर तथ्य पर कुहासा छाया था। झूठ को मिटा दिया गया था। जो मिटा यिदा गया था उसे भुलाया भी जा चुका था। मिथ्या महासत्य का रूप धारण कर चुकी थी। उसके पास एक ही ऐसा प्रमाण था जिससे जालसाजी सिद्ध की जा सकती थी। वह उस कागज को काफी देर तक अपनी मुट्ठी मे दबाए रहा था। सन् १९७३ मे, हा वह सन् १९७३ ही रहा होगा, और जो भी हो, लगभग इसी समय कैथराइन उससे अलग हुई थी। परन्तु वास्तविक बात सात या आठ वर्ष की पूर्व की थी।

बात सन् १९६५ के आसपास की है। यह वह समय था जव शुद्धीकरण का बड़ा अभियान शुरू हुआ था। इस अभियान मे क्रान्ति के वास्तविक नेताओ को सदैव के लिए समाप्त कर दिया गया। सन १९७० के आसपास उनमे से कोई बाकी नही रहा था। अपवाद यदि कोई था तो वह बडे भाई थे। शेष को या तो क्रान्ति-द्रोही ठहरा दिया गया था या प्रतिक्रान्तिवादी। गोल्डस्टीन भाग गया था और छिपा था। यह कोई नही जानता—कहा। कुछ नेता तो लापता हो गए थे। अधिकाश को सार्वजनिक रूप से मुकद्दमा चला कर फासी दे दी गई थी। इन मुकद्दमो मे सबने अपने बयानो मे अपराध स्वीकार कर लिए थे। अन्त मे जो बचे थे, वे थे, आरोन्सन, जोन्स और रदरफोर्ड। सन् १९६५ के आसपास

गिरफ्तारिया हुई थी। तभी ये तीनो भी पकडे गए थे। जैसा अक्सर होता है, वे अकस्मात् लापता हो गए और पता नही एक, सवा बरस कहा रहे। इस बीच कोई नही जानता वे कहा रहे। इसके बाद अकस्मात् उनको सबके सामने पेश किया गया और सार्वजनिक रूप से उनसे अपना अपराध स्वीकार कराया गया। उन्होने बतलाया कि वे दुश्मनो के एजेण्टो से मिलते थे (उन दिनो भी यूरेशिया से युद्ध चल रहा था)। उन्होने यह भी कहा कि उन्होने सरकारी रुपए का गबन किया है। पार्टी-सदस्यो की हत्याए कराई है। बडे भाई के नेतृत्व के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा और ऐसे विध्वसक कार्य किए है जिनसे हजारो-लाखो आदमी मारे गए। इसके बाद उन्हे माफ कर दिया गया, पार्टी मे फिर रख लिया गया। उन्हे दिखावटी तौर पर महत्वपूर्ण पद दिए गए, परन्तु वे वस्तुत थोथे थे। तीनो ने 'टाइम्स' मे लम्बे-लम्बे लेख लिखे। इन लेखो मे उन्होने अपनी पथ-भ्रष्टता के कारण बतलाए और इसके बाद वादा किया कि वे अपने आपको सुधारेगे।

रिहाई के कुछ दिन बाद उन तीनो को विन्स्टन ने चेस्टनट कैफे मे देखा था। वह कितनी तृष्णा और कितने भय से उनको तिरछी निगाहो से बार-बार देखता था, यह विन्स्टन को याद हो आया। वे तीनो आयु मे उससे कही अधिक थे। वे पुरानी दुनिया की यादगार-सी लगते थे। पार्टी के आरभिक दिनो की शूरवीरता की याद उन्हे देखकर आ जाती थी। गृहयुद्ध और गुप्तवास के सघर्ष की रेखाए भी उनके चेहरे से झलकती थी। जब बडे भाई का नाम भी लोगो ने नही सुना था, ये नेता तबसे प्रसिद्ध थे। तारीखे और सन् उसे याद नही था। परन्तु अब वे राजद्रोही थे, अपराधी थे, शत्रु थे, अछूत थे और निश्चित था कि एक या दो वर्षो के भीतर उनको समाप्त कर दिया जाएगा। एक बार जो आदमी विचार-पुलिस के हाथ पड गया, वह फिर अपनी जान बचा नही पाया। वे उन लाशो की तरह लग रहे थे जिन्हे कब्र वापस भेजा जाना था।

उनके सबसे पास की मेजो पर कोई नही बैठा था। ऐसे आदमियो के आस-पास भी देखा जाना बुद्धिमत्ता नही थी। उनके सामने लौग से सुगधित शराब के गिलास रखे थे। चेस्टनट कैफे मे मिलने वाली शराब की यही विशेषता थी। तीनो में से रदरफोर्ड के व्यक्तित्व से ही विन्स्टन सबसे अधिक प्रभावित हुआ। रदरफोर्ड किसी समय बडा प्रसिद्ध व्यंग चित्रकार था। उसके व्यग चित्रो ने क्रान्ति के पूर्व और उसके दौरान जनमत तैयार करने मे बडी मदद दी थी। अब भी

कभी-कभी 'टाइम्स' मे उसके कार्टून छप जाते थे। वे रगढग से उसके पहले के व्यग चित्रो की नकल प्रतीत होते थे। उन्हे देखकर तबियत फडक नही जाती थी। सन्तोष भी नही होता था। वही पुरानी कथा घुमा-फिरा कर दोहराई जाती थी। गन्दी मजदूर बस्तिया, भूखे मरते बच्चे, सडको पर युद्ध, अपनी विशेष ढग की टोपी लगाए पूजीपति—बाडो पर चढे लडते हुए भी उन्हे अपनी टोपी की अधिक चिन्ता थी, ऐसा लगता था। इन चित्रो से ऐसा लगता था कि भूतकाल मे लौटने की बराबर और सतत चेष्टा की जा रही है, जिसके सफल होने की कोई आशा नही है। लम्बा चौडा, देवो-सा शरीर, चिकने बाल और फूले हुए ओठ। किसी समय वह बडा ही सबल रहा होगा। अब उसकी वह विशाल काया निर्बल हो रही थी, निढाल होती जा रही थी। हर तरफ से गिरी पड रही है, ऐसा लगता था। ऐसा लग रहा था कि जैसे आखो के सामने कोई पहाड टूटकर गिरा जा रहा है।

पन्द्रह बजे (दिन के तीन) का एकान्त वक्त था। विन्स्टन को याद नही आ रहा था कि उस वक्त वह कैसे कैफे मे आ गया था। कैफे करीब-करीब बिलकुल खाली पडा था। टेलीस्क्रीन से कोई धुन बज रही थी। तीनो आदमी, चुपचाप कोने मे अपनी मेज पर बैठे थे। बिना कहे वेटर शराब के ताजे गिलास भर-भरकर ला रहा। उनकी बगल की मेज पर शतरज की बाजी बिछी थी लेकिन खेल शुरू नही हुआ था और तभी, शायद आधे मिनट के लिए टेलीस्क्रीन मे कुछ हो गया। सगीत की धुन बदल गई। कुछ ऐसी आवाज आई जिसका वर्णन करना कठिन है—फटी-सी गधे के रेकने की-सी, जिसमे चिढाने का भाव भी था। विन्स्टन इसे 'पीली धुन' कहता था और इसके बाद किसी ने गाना शुरू किया :

Under the spreading chestnut tree
I sold you and you sold me
There lie they, and here lie we
Under the spreading chestnut tree

(अखरोट के विशाल वृक्ष के नीचे
मैने तुम्हे बेचा और तुमने मुझे
वहा झूठ बोले वे और यहा झूठे बोले हम
अखरोट के विशाल वृक्ष के नीचे।)

परन्तु वे तीनो अपने स्थान से हिले भी नही। लेकिन रदरफोर्ड की तरफ

दुबारा विन्स्टन ने देखा तो उसे पता लगा कि रदरफोर्ड की आखो मे आसू भर आए थे। तभी अत्यन्त भयभीत भाव से, यह बिना जाने कि भय किस कारण हुआ, विन्स्टन ने देखा कि आरोन्सन और रदरफोर्ड दोनो की नाके टूटी हुई है।

कुछ ही दिनो बाद वे फिर पकड लिए गए। कहा गया कि रिहाई के बाद से ही वे नए-नए षड्यंत्र रचने लगे थे। दूसरे मुकद्दमे मे उन्होने अपने सारे नए और पुराने अपराध स्वीकार कर लिए। उनको फासी दी गई और उनके इस तरह मारे जाने के बाद भावी सन्तति की चेतावनी के लिए उनके अन्त की कथा इतिहास मे लिख दी गई। इसके कोई पाच वर्ष बाद सभवत सन् १९७३ मे एक दिन विन्स्टन के पास कुछ कागज़ आए। वह जब उन्हे खोल कर देख रहा था तो उसे एक ऐसा कागज़ मिला जो कुछ कागजो मे मिलाकर रख दिया गया था और उसके बारे मे किसी को कुछ याद नही रहा था। खोलते ही कागज की विशेषता विन्स्टन की समझ मे आ गई। दस वर्ष पहले के टाइम्स का यह अधफटा पृष्ठ था। यह ऊपर का हिस्सा था, जिसमे तारीख भी छपी थी। इसमे न्यूयार्क के एक पार्टी-जलसे का चित्र था। इस सामूहिक चित्र के बीच मे नेताओ की जगह तीन व्यक्ति थे—जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड। इसमे कोई गलती नही हो सकती थी क्योकि चित्र के नीचे उनके नाम भी लिखे थे।

अब मुद्दे की बात यह थी कि तीनो व्यक्तियो ने अपने मुकद्दमो मे यह स्वीकार किया था कि उस तारीख को वे यूरेशिया मे थे। कहा गया था कि वे कनाडा के गुप्त हवाई अड्डे से साइबेरिया आए और वहा उन्होने यूरेशियन प्रधान सेनापति से मिलकर महत्वपूर्ण गुप्त सैनिक रहस्य उनको बता दिए। यह तारीख विन्स्टन के दिमाग मे बनी रही क्योकि यह गर्मियो के मध्य की बात है। परन्तु यह कहानी और बहुत-सी जगह भी रिकर्ड मे होगी। इससे एक ही परिणाम निकलता था और वह यह कि सारे इकबाली बयान झूठे थे।

बेशक यह कोई नई खोज नही थी जब शुद्धिकरण मे लोगो को पकडा गया और मार डाला गया उस समय भी विन्स्टन को यह विश्वास नही हुआ था कि जो अभियोग उन पर लगाए गए है, वे सच्चे है। परन्तु यह सबूत सामने था। अगर उसे दुनिया भर के अखबारो मे किसी प्रकार छपवा दिया जाता और उसका महत्व भी बता दिया जाता तो पार्टी की धज्जिया उड़ाने के लिए इतना काफी था।

वह तुरन्त काम मे जुट गया। जैसे उसने देखा कि फोटोग्राफ क्या है और उसकी विशेषता क्या है। उसने तुरन्त दूसरे कागजो मे उस चित्र को ढक दिया। सौभाग्यवश जब वह कागज उसने खोला था तो वह टेलीस्क्रीन के लिए उलटा पडता था।

उसने अपना पैड घुटनो पर रखा और कुर्सी को पीछे खिसका लिया जिससे टेलीस्क्रीन से अधिक से अधिक दूर हो जाए। अपने चेहरे को भावहीन बनाए रखना कठिन नही था, सास का आना-जाना भी नियत्रित होना चाहिए था, लेकिन ऐसे मौको पर हृदय की गति को नियत्रित करना कठिन था। टेलीस्क्रीन इसे भी ग्रहण कर लेता था। उसने दस मिनट प्रतीक्षा की और इसके बाद बिना खोले उसने चित्र को भट्ठी वाले छेद मे छोड दिया। दूसरे ही मिनट वह जलकर भस्म हो गया।

यह कोई दस या ग्यारह वर्ष पूर्व की बात थी। आज यदि यह चित्र मिला होता तो उसने उसे अपने पास रख ही लिया होता। वह चित्र नष्ट हो गया था लेकिन उसकी याद मात्र से ही उसे सहारा मिलता था। वह सोचता था कि भूतकाल पर क्या पार्टी का नियत्रण उतना सशक्त नही है जितना वह समझता है? इसलिए कि वह सबूत जिसका आज कोई अस्तित्व नही है, कल तक मौजूद था।

लेकिन आज यदि वह चित्र राख मे से उठकर फिर बन जाए तो भी वह सबूत नही माना जाएगा। जब वह चित्र मिला था, तब भी ओशनिया यूरेशिया से लड नही रहा था। इसलिए यही कहा जाता कि उन तीनो नेताओ ने ईस्ट एशिया के एजेण्टो को ही गुप्त रहस्य बतलाए होगे। उस समय से कई बार, दो या तीन बार, स्थिति बदल चुकी है। बहुत सभव है कि इकबाली बयान अब तक इतनी बार लिखे गए हो कि मूल तथ्य और तिथिया बिलकुल ही भूल मे पड गई हो। भूत तो बराबर बदलता रहता था। भूत को क्यो बदला जा रहा है, इसका तात्कालिक कारण तो समझ मे आता था, किन्तु दीर्घकालीन लक्ष्य नही समझ मे आता था। उसने कलम उठाकर लिखा:

'मै जानता हू 'कैसे', परन्तु 'क्यो', यह नही जानता।'

विन्स्टन सोच रहा था, जैसा उसने पहले भी कई बार सोचा था, कही वह पागल तो नही हो गया है? शायद पागल ऐसा अल्पसख्यक होता है, जिसकी सख्या एक ही होती है। एक वक्त था जब यह विश्वास करना पागलपन समझा

जाता था कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है, आज यह कि अतीत अपरिवर्तनीय है। सभवत वह अकेला ऐसा व्यक्ति हो जो इस तरह का विश्वास करता हो, और यदि वह अकेला था तो अवश्य पागल था। परन्तु पागल होने के विचार से उसे कोई परेशानी नही हुई। असल भय तो उसे यह था कि कही वह अकेला तो नही है, जो यह विश्वास करता हो।

उसने बच्चो के इतिहास की पुस्तक उठा ली। उसके मुखपृष्ठ पर बडे भाई का चित्र था। वे सम्मोहनात्मक आखे उसकी आखो मे घूर रही थी। ऐसा लगता था कि कोई जबर्दस्त बोझा आपके सिर पर लदा था। आपकी खोपडी मे वह बोझा घुसा जा रहा है। आपका दिमाग फटा जा रहा है। आपके विश्वासो को वह छिन्न-भिन्न किए दे रहा है। वह आपको अपना सारा विवेक खो देने के लिए बाध्य कर रहा है। अन्त मे पार्टी आपसे कहेगी दो और दो पाच होते है और आपको मानना पडेगा। कभी न कभी वे अवश्य ऐसा करेगे। पार्टी-अधिकारियो की स्थिति ही ऐसी थी। अपने अनुभव को मत मानो। पार्टी का दर्शन था बाह्य यथार्थता कुछ नही है। सामान्य विवेक का होना अपराध है। यदि वे इसलिए आपको मार दे कि आप उनके विरुद्ध सोचते है तो भी ठीक है। बुरा यह लगता था कि कही आप ही तो गलत रास्ते पर नही है। आखिर आप कैसे जानते है कि दो और दो चार होते है। या गुरुत्वाकर्षण शक्ति कार्य करती है ? या अतीत अपरिवर्तनीय है ? यदि अतीत और वर्तमान दोनो ही दिमाग मे है और दिमाग पर नियत्रण किया जा सकता हो, तब ? तब क्या…?

लेकिन नही। अकस्मात् उसने अनुभव किया कि उसका साहस वापस लौट आया। वह कठोर हो गया था। ओ'ब्रायन का चेहरा उसके सामने आकर तैर गया। आज उसे पहले से भी अधिक विश्वास हो गया था कि ओ'ब्रायन उसके पक्ष मे है। वह यह डायरी ओ'ब्रायन के लिए लिख रहा था। वह उसके लिए लिखा गया अन्तहीन पत्र है जो कोई कभी नही पढेगा। परन्तु यह उसके लिए लिखा गया पत्र था तथा वह इससे प्रेरणा ग्रहण कर रहा था।

पार्टी का कहना था कि आखो और कानो का सबूत मत मानो। यह उसकी अतिम आशा थी। सहसा उसका हृदय डूबने लगा। उसने अनुभव किया कि वह पार्टी की अपार शक्ति के आगे कुछ नही कर सकेगा। बहस मे पार्टी के बुद्धिवादी सदस्य ऐसे तर्क देगे जिनका उत्तर देना तो दूर, वह उनको समझ भी नही

सकेगा। फिर भी उसका पक्ष सही है। वे गलत है और वह सही। सत्य की रक्षा करनी ही होगी। भौतिक ससार का अस्तित्व है। उसके कानून नही बदलते। पत्थर कठोर होते है। पानी गीला होता है। जो चीजे किसी सहारे से नही टिकी होती वे नीचे गिर जाती है। यह सोचते हुए विन्स्टन ने अपनी कापी मे लिखा

'दो और दो चार होते है, यह कहने का अधिकार ही स्वतत्रता है। यदि यह अधिकार मिल जाता है तो और सब चीजे मिल जाएगी।'

(८)

विन्स्टन सडक पर जा रहा था, तभी उसके नासापुटो मे कही भुन रही कॉफी की खुशबू—असली कॉफी की, विक्टरी कॉफी की नही, तैरती हुई घुस गई। विन्स्टन अनिच्छापूर्वक ठिठक-सा गया। कुछ क्षणो के लिए वह अपने शैशव के अर्ध विस्मृत ससार मे उडकर पहुच गया। इसके बाद दरवाजा बन्द होने की आवाज आई। इसके साथ ही जिस प्रकार सहसा खूशबू आई थी, उसी प्रकार वह खो भी गई।

वह फुटपाथ पर शायद कई मील टहलता चला गया। टखने का फोडा दर्द से लप-लप करने लगा था। तीन सप्ताह मे दूसरी बार वह सामुदायिक केन्द्र नही गया था। यह बडी ही लापरवाही थी, क्योकि केन्द्र की उपस्थिति पर सरकार की दृष्टि रहती थी। सिद्धान्तत पार्टी के सदस्य का कोई वक्त खाली नही होता था। वह बिस्तर के अलावा अन्यत्र कही एकान्त में नही होता था। यह मान लिया गया था कि जब वह खा-पी नही रहा होगा, या काम पर नही जुटा होगा उस समय वह किसी न किसी सामुदायिक मनोरजन मे भाग ले रहा होगा। कोई भी ऐसा काम जिससे यह प्रकट हो कि आप एकान्त चाहते है, खतरनाक था। नई भाषा मे इसके लिए शब्द था 'निजी जीवन'। इसका अर्थ था व्यक्तिपरकता और सनकी-पन। परन्तु आज जब वह मत्रालय से निकला तो उसे लगा कि अप्रैल की सध्या की यह हवा सारे श्रम हर लेनेवाली है और उसकी तबियत घूमने को हो आई। आकाश आज अधिक स्वच्छ था और मौसम की गरमी विश्रामदायी थी। इतना अच्छा मौसम उसने वर्ष भर अनुभव नही किया था। इस मौके पर सामुदायिक केन्द्र के शोर भरे वातावरण में कई घटे बिताना उसे बडा कठिन लगा। वहा उबा

थी। पुलिस के गश्ती दस्ते रोक सकते थे। 'क्या हम आपके कागज देख सकते है कामरेड ? आप यहा क्या कर हे है ? आपने दफ्तर कब छोडा ? क्या आपके घर जाने का यह *निक मार्ग है ?'—आदि-आदि। ऐसा कोई नियम नही था कि आप असामान्य मार्गो से होकर न गुजरे परन्तु विचार नियन्त्रक पुलिस को पता चल जाए तो वह आप पर निगाह रखने लगेगी।

अकस्मात् सारी सडक मे हलचल मच गई। चारो तरफ से चेतावनी दी जाने लगी। सब लोग मकानो के अन्दर दौडते हुए खरगोशो की भाति घुसने लगे। एक जवान औरत विन्स्टन के सामने कूदकर सडक पर आई और बाहर खेलते हुए बच्चे को घसीटकर फिर दरवाजे के अन्दर घुस गई। उसने अपनी छाती पर पडे कपडे (एप्रन) मे बच्चे को लपेट लिया था। यह सब आख झपकते हो गया। इसी समय काला सूट पहने एक आदमी बगल की गली से दौडता हुआ विन्स्टन की ओर आया और आकाश की ओर सकेत करने लगा।

'स्टीमर!' उसने चिल्लाते हुए कहा, 'देखिए! तुरन्त मुह के बल लेट जाइए।'

राकेट बमो को कुछ लोग स्टीमर कहते थे। विन्स्टन तुरन्त मुह के बल लेट गया। मजदूर जब भी ऐसी चेतावनी देते थे तो उनकी आशका हमेशा सही होती थी। उन्हे पता नही कैसे, राकेट बमो के आने की खबर कुछ सेकेड पहले ही लग जाती थी। कहा यह जाता था कि राकेट आवाज से भी अधिक तेज चलते थे। एकाएक जोरो का शोर हुआ और फुटपाथ तथा सडक कापने लगी। कुछ चूरा-सा बरस कर उसकी पीठ पर गिर पडा। जब वह उठा तो उसे लगा कि पास की खिडकी का शीशा चूर-चूर हो गया और उसी का चूरा उसकी पीठ पर गिरा है। यह शीशा खिडकी मे लगा था।

वह चलता रहा। आगे दो सौ मीटर की दूरी पर सडक के आसपास के मकानो को बम ने नष्ट कर दिया था। आकाश मे काले धुए का बादल-सा बन गया था। और पास मलवा पडा था जिसके चारो ओर आदमी खडे थे। मलवे में दबी उसे रक्त से लथपथ एक कोई लम्बी चीज दिखलाई पडी। ध्यान से देखने पर पता चला कि यह किसी आदमी का हाथ है जो कलाई से कट गया था। हाथ इतना सफेद हो गया था कि उसकी तुलना सफेद प्लास्टर से की जा सकती थी।

उसने लात मारकर उसे कूडेखाने की ओर फेक दिया। इसके बाद भीड से

बचने को वह दाहिनी तरफ की एक गली मे घुस गया। तीन-चार मिनट मे वह उस क्षेत्र से बाहर आ गया जहा बम गिरा था। दूसरी सडक पर सारा काम इस तरह हो रहा था जैसे बगल मे कही कोई दुर्घटना हुई ही न हो। करीब बीस बजे (रात के ८ बजे) थे। मजदूरो की भीड शराबखानो मे जमा थी। उन गन्दे दरवाजो मे से, जो अनगिनत बार खुल और बन्द हो रहे थे, पेशाब, लकडी के बुरादे और शराब की खट्टी महक आ रही थी। बाहर की तरफ निकले मकान के छज्जे पर एक आदमी अखबार पढ रहा था और दो आदमी उसके दोनो कन्धो की तरफ से अखबार पढने की कोशिश कर रहे थे। वे पढने मे व्यस्त थे। शायद कोई बडा गम्भीर समाचार पढ रहे थे। अभी वह उनसे कुछ दूर था कि तीन मे से दो मे झगडा होने लगा। ऐसा लगा कि मार-पीट हो जाएगी।

'क्या तुम नही सुन रहे जो मै कह रहा हू ? मै कह रहा हू जिसके बाद सात का अक होता है ऐसा कोई नम्बर पिछले चौदह महीने से नही जीता है।'

'ठीक है तो!'

'नही ऐसा नही है। मैने पिछले दो वर्षो का ब्योरा रख छोडा है। मै बराबर लिखता रहता हू घडी की तरह। मै कहता हू ऐसा कोई भी अक जिसके अन्त में सात हो…'

'हा, एक सात अक वाला जीता है। मै तुम्हे संख्या भी बता दूगा। चार शून्य सात। फरवरी मे, फरवरी के दूसरे सप्ताह मे।'

'फरवरी मे, क्या बात करते हो ? मैने सब लिख छोडा है। और मै कहता हू कि कोई भी ऐसी सख्या…'

'ओह, बन्द करो यह बकवास!' तीसरे आदमी ने कहा।

वे लाटरी की बात कर रहे थे। कोई तीस मीटर आगे जाकर विन्स्टन ने पीछे देखा। वे अभी तमतमाए मुह से तर्क-वितर्क करते चले जा रहे थे। हर सप्ताह लाटरी मे एक लम्बी रकम दी जाती थी। इसमे मजदूर बहुत रुचि लेते थे। ऐसे करोडो मजदूर थे जिनके लिए जीवन का यदि सारा नही तो प्रमुख आकर्षण लाटरी था। जो लिखना-पढना भी नही जानते थे वे भी इसमे अपनी स्मरण-शक्ति का चमत्कार दिखलाते हुए ऐसा जोड-तोड करते थे कि आदमी आश्चर्य-चकित रह जाता था। बहुत-से लोग केवल भविष्यवाणी करके और लाटरी बेचकर अपनी जीविका कमाते थे। यह काम समृद्धि मन्त्रालय का था और विन्स्टन का

इससे कोई सम्बन्ध नही था। परन्तु वह जानता था कि लाटरी का पुरस्कार कल्पना मात्र था। वही क्या पार्टी का हर आदमी जानता था। केवल छोटी-छोटी रकमे दी जाती थी। बडी रकमो के पाने वाले तो कल्पित व्यक्ति होते थे। ओश-निया के एक भाग से दूसरे भाग के बीच सचार व्यवस्था इतनी अस्तव्यस्त थी कि ऐसी व्यवस्था कर पाना कोई कठिन काम नही था।

फिर भी यदि कही आशा थी तो वह मजदूरो से ही थी। आपको उनका सहारा लेना ही था। शब्दो मे यह बात तर्कसम्मत थी। अब वह जिस गली में था वह मुडकर पहाडी के नीचे चली गई थी। उसे ख्याल आ रहा था कि वह आस-पास कही आ चुका है और अब मुख्य मार्ग दूर नही है। तभी कुछ लोगो के चिल्लाने की आवाज आई। वह सीढियो के करीब-करीब था जिनके नीचे कुछ दुकानदार बासी सब्जी बेच रहे थे। तब बिन्स्टन को याद आया कि वह कहा है। यह गली मुख्य सडक से मिलती थी और मुख्य सडक पर आकर पाच मिनट से भी कम चलने पर उस कबाडी की दुकान आती थी जहा से उसने कापी खरीदी थी। उसी दुकान के कुछ आगे से उसने कलम और स्याही की बोतल खरीदी थी।

वह एक क्षण सीढियो पर ठिठक कर खडा हो गया और सोचने लगा। गली के दूसरी ओर शराब की दुकान थी जिसकी खिडकियो पर धूल जमी थी। एक बुड्ढा जिसकी मूछे फहरा रही थी, दरवाजा खोलकर अन्दर घुस गया। उसे लगा कि वह बुड्ढा अस्सी का तो अवश्य होगा। जिस सयम क्रान्ति हुई थी उस समय उसकी उमर ३०-३२ की जरूर होगी। लुप्त पूजीवादी दुनिया के और इस नए ससार के बीच इस वृद्ध जैसे लोग अतिम कडी थे। पार्टी मे ऐसे बहुत-से व्यक्ति नही थे जिनके वर्तमान विचार क्रान्ति के पहले के हो। वृद्धो की पीढी को सन् १९५० और सन् १९७० के बीच हुए शुद्धिकरण मे समाप्त कर दिया था। जो बच गए थे, वे इतना डर गए थे कि पार्टी की सारी बाते उन्होने आखें बन्द करके मान ली थी। यदि क्रान्ति के पूर्व की वास्तविक दशा कोई बतला सकता था तो ऐसा ही कोई वृद्ध मजदूर बतला सकता था। सहसा उसे इतिहास की पुस्तक का वह अश याद आ गया जो उसने अपनी डायरी मे नकल किया था। उसने सोचा कि वह शराबखाने मे घुस जाएगा और उससे परिचय प्राप्त करके उसके बचपन की बाते पूछेगा। 'आपका बचपन कैसा था? वे दिन कैसे थे? आज की हालत अच्छी है या पहले वाली?'

इसके पूर्व कि वह डर जाए उसने जल्दी-जल्दी गली पार की। यह पागलपन था। शराबखानो मे मजदूरो से बात करना नियम विरुद्ध नही था, किन्तु ऐसा असाधारण अवश्य था, और किसी का ध्यान इस असाधारण बात की ओर न जाए, यह असभव था। यदि इस समय पुलिस का गश्ती दल आ गया तो वह कह देगा कि उसे चक्कर आ गया था। परन्तु वह उसकी बात का विश्वास करेगा इसमे सन्देह था। उसने दरवाजा खोला और शराब की खट्टी-सी महक उसके मुह पर आकर लगी। उसके घुसते ही कमरे का शोर आधा रह गया। उसने अपनी पीठ के पीछे अनुभव किया कि सब लोग उसी की तरफ सदिग्ध दृष्टि से देख रहे है। एक कोने मे कोई खेल चल रहा था। वह लगभग आधे मिनट बद रहा। वह बुड्ढा, जिसके पीछे वह अन्दर आया था, 'बार' के सामने खडा दुकानदार से कुछ झगडा-सा कर रहा था। उसके आसपास खडे लोग उस झगडे के दृश्य देख रहे थे।

'मैने तुमसे काफी सभ्यतापूर्वक बात की थी—नही क्या?' वृद्ध कह रहा था। उसने अपने कधे सीधे कर लिए थे, 'तुम मुझसे कहते हो कि तुम्हारे पास एक पिण्ट (माप) भी शराब नही है।'

'पिण्ट क्या होता है?' दुकानदार ने पूछा।

'धिक्कार है तुम्हे। तुम अपने को ठेकेदार कहते हो और तुम्हे पिण्ट नही मालूम क्या होता है? क्वार्ट का आधा, और एक गैलन मे चार क्वार्ट होते है। क्या तुम्हे, ए, बी, सी, पढाऊ?'

'मैने तो सुना नही' दुकानदार ने कहा, 'मै तो लिटर और आधा लिटर जानता हू। आपके सामने आलमारी मे गिलास रखे है।'

'मैं तो पिण्ट पसन्द करता हू' बुड्ढा हठ कर रहा था, 'तुम मुझे एक पिण्ट शराब दे सकते हो? मेरी जवानी मे ये लिटर-पिटर कुछ नही थे।'

'जब तुम जवान थे,' दुकानदार ने अन्य ग्राहको की ओर देखते हुए कहा, 'उस समय हम सब पेडो पर रहते थे।'

इस बात को सुनकर सब लोग हस पडे और विन्स्टन के अन्दर घुसने से जो बेचैनी-सी लोगो मे पैदा हो गई थी, वह गायब हो गई। बुड्ढे का सफेद चेहरा लाल -लाल हो गया। वह घूम गया और कुछ बडबडाता हुआ विन्स्टन से आकर भिड गया। विन्स्टन ने उसकी बाहे हलके से थाम ली और पूछा, 'मै आपको थोड़ी-

सी शराब पिला सकता हू क्या ?'

वृद्ध ने कहा, 'आप भले आदमी लगते है।' अभी तक वृद्ध ने नीली वर्दी नही देखी थी। विन्स्टन ने दुकानदार से कहा, 'एक पिण्ट शराब दो।'

दुकानदार ने मोटे काच के गिलासो मे दो आधे लिटर बियर डाल कर दे दी। इन मज़दूरो के शराबखानो मे बियर ही एकमात्र शराब थी जो मिलती थी। 'जिन' मजदूरो को नही मिलती थी। परन्तु वे चाहते तो कही न कही से आसानी से पा जाते थे। जुआ फिर तेजी से होने लगा था। लाटरी टिकटो की बाते फिर शुरू हो गई थी। खिडकी के पास एक छोटी-सी मेज थी, उस पर बैठकर विन्स्टन और वृद्ध दोनो आराम से बाते कर सकते थे। यहा से उनकी बाते दूसरा आदमी नही सुन सकता था। यह बडा ही खतरनाक था, किन्तु विन्स्टन ने देख लिया था कमरे मे टेलीस्क्रीन नही था। यह बडी नियामत थी।

वृद्ध ने बैठते ही कहा, 'आधे लिटर से मेरी तबियत नही भरती। मुझे तो एक पिण्ट चाहिए। लिटर बहुत ज्यादा हो जाता है। पैसे की परवाह न भी की जाए तो भी उससे मुझे पेट मे तकलीफ हो जाती है।'

विन्स्टन ने पूछा, 'आपने जवानी से अब तक बहुत-से परिवर्तन देखे होगे ?'

बुड्ढे ने कमरे मे चारो तरफ देखा जैसे उसमे ही कुछ बदल गया हो। अन्त मे उसने कहा, 'उन दिनो बियर अच्छी होती थी और सस्ती भी। चार पेस का पिण्ट मिलता था। यह युद्ध छिडने के पहले की बात है।'

'कौन-सा युद्ध ?' विन्स्टन ने पूछा।

'सब युद्ध ही था।' बुड्ढे ने उत्तर देने के लिए उत्तर देते हुए कहा। इसके बाद गिलास उठाकर बोला, 'आपकी स्वास्थ्य-कामना करते हुए!'

उसके गले की गाठ बडी तेज़ी से ऊपर-नीचे होने लगी। देखते ही देखते गिलास की बियर खत्म हो गई। विन्स्टन 'बार' जाकर दो हाफ लिटर और ले आया। बुड्ढा यह भूल गया था कि एक लिटर शराब पीना उसे नुकसान करेगा।

विन्स्टन ने कहा, 'आप तो मुझसे उमर मे बहुत बडे है। मेरे पैदा होने के पूर्व आप जवान हो गए होगे। आप तो यह भी जानते होगे कि क्रान्ति के पूर्व की दुनिया कैसी थी। मेरी आयु के लोग तो उन दिनो के बारे मे कुछ भी नही जानते। हम तो किताबो को पढकर ही अपना ज्ञान वर्धन कर सकते है। किताबो मे लिखा है कि लन्दन का वह जीवन आज से बिलकुल भिन्न था। उन दिनो भयानक

दमन, निर्धनता और अन्याय था। आजकल तो हम उसकी कल्पना भी नही कर सकते। लाखो या करोडो आदमियो मे से पूजीपति नाम के ही कुछ लोग मजे मे रहते थे। सारी शक्ति भी उन्ही के हाथ मे थी। वे शानदार मकानो मे रहते थे। वे तीस-तीस नौकर रखते थे। मोटरकारो मे या चार घोड़ो की गाडियो मे चलते थे। शैम्पन पीते थे। वे खास टोप लगाते थे।...'

बुड्ढे के चेहरे पर सहसा चमक आ गई।

'खास टोप,' उसने कहा, 'यह कैसी अजब बात है? यही बात कल मेरे भी दिमाग मे आई थी। पता नही क्यो। मैने इधर ऐसे टोप बरसो से नही देखे। मैने पिछली बार अपनी साली के मरने पर यह टोप लगाया था। इस टोप की अन्त्येष्टिक्रिया के समय ही पहनने का रिवाज था। यह बात कोई पचास बरस पहले की है, जब मैने टोप लगाया था।

'इन टोपो की यह खास बात थी कि इनको पूजीपति, कुछ वकील, पादरी तथा कुछ इने-गिने लोग ही लगाते थे। वही सारी जमीन के स्वामी थे। हर चीज़ इन्ही के लाभ के लिए थी। और सब साधारण गुलाम थे। वे आप पर जो चाहे जुल्म ढाते थे। वे आपकी लडकियो के साथ सो सकते थे। वे आपको बेंतो से पिटवा सकते थे। आपको उनके देखते ही अपनी टोपी उतार लेनी पडती थी। हर पूजीपति के अपने गुर्गे होते थे'...।'

बुड्ढे का चेहरा फिर चमक उठा।

'गुर्गे—यह शब्द भी मैने बहुत दिनो बाद सुना है। मुझे यह शब्द सुनकर एक पार्क में आयोजित सभा की याद आ गई। इसमे एक आदमी भाषण दे रहा था। उस सभा मे तरह-तरह के लोग थे। फौजी, रोमन कैथोलिक, यहूदी और भारतीय। एक आदमी बोल रहा था। वह कहता था—मध्य वर्ग के गुर्गे। सत्तावन दल के एजेण्ट। दूसरो के भरोसे जीने वाले। वह मज़दूर दल की चर्चा कर रहा था।'

विन्स्टन को ऐसा लगा कि उसका मतलब पूरा नही हो रहा।

'मै जानना चाहता हू कि क्या आपको आज पहले की अपेक्षा अधिक स्वतत्रता है? क्या आज आपके साथ अधिक मानवोचित व्यवहार होता है? क्या पुराने जमाने मे धनी लोग—टोप वाले—'

'हाउस आव लार्ड्स!' बुड्ढे ने याद करते हुए कहा।

'क्या वे लोग आपसे केवल इसलिए दुर्व्यवहार करते थे कि आप उनके मुकाबिले मे निर्धन हैं ? क्या यह सच है कि आपको अपनी टोपी उतारकर उन्हे 'श्रीमान' कहकर सलाम करना पडता था ?'

बुड्ढे ने थोडी-सी शराब और पीने के बाद कहा—'हा, वे ऐसा पसन्द करते थे। मैंने भी कई बार ऐसा किया था—या आप कह सकते है, मुझे ऐसा करना पडा था।'

'क्या ऐसा हमेशा होता था ? मैंने तो आपको केवल इतिहास की पुस्तको की बाते सुनाई है। क्या वे या उनके नौकर आपको फुटपाथ से कूडेघर मे फेक देते थे ?'

'उनमे से एक ने ऐसा अवश्य किया था। मुझे यह बात ऐसे याद है जैसे कल की हो। नौका-दौड होने वाली थी उस रात। उस रात भीड भी बहुत रहती थी। शेफ्ट्सबरी मे मेरी एक से भिडन्त हो गई। मैंने देखा वह नशे मे था। मैंने उससे कहा, क्या तुमने फुटपाथ खरीद लिया है। उसने मेरी छाती पर ऐसा घूसा मारा कि मै लुढकता हुआ सड़क पर गुजरती बस के पास जाकर गिरा। थोडा और आगे गिरा होता तो दबकर मर जाता। '

विन्स्टन बिलकुल असहाय हो गया। इस बुड्ढे को कुछ भी याद नही था। उसकी याददाश्त से बताई गई बातो का कोई महत्व न था। वे बेकार थी। दिन भर प्रश्न करने पर भी शायद काम की कोई बात वह न बता पाता। पार्टी लिखित इतिहास ही शायद ठीक हो। या बिलकुल ही ठीक हो। उसने अतिम प्रयत्न किया।

उसने कहा, 'शायद मै अपनी बात स्पष्ट नही कर पाया हू। मेरा यह मतलब है। आपकी आय काफी है। आप जब जवान थे तब क्रान्ति हुई थी। उदाहरण के लिए सन् १९२५ मे आप तरुण थे। क्या आप अपने अनुभव से कह सकते है कि उस समय के जीवन की तुलना में आज का जीवन अच्छा है या खराब ? यदि आपके सामने ऐसा अवसर आ उपस्थित हो कि आप आज की परिस्थितियो मे या सन् १९२५ की परिस्थितियो मे से किसी एक मे अपनी इच्छानुसार रह सके तो आप कौन-सा वक्त चुनेगे ?'

वृद्ध कुछ समाधिस्थ भाव से डार्ट्स बोर्ड (जुए के खेल का बोर्ड) देखता रहा। वह अब पहले की अपेक्षा धीरे-धीरे बियर पी रहा था। जब वह बोला तो बडे धीरज के साथ इस तरह बोला जैसे कोई दार्शनिक बात कर रहा हो।

'मै जानता हू आप मुझसे क्या कहलवाना चाहते है। आप चाहते है कि म फिर तरुण हो जाऊगा। पूछने पर बहुत-से लोग ऐसा ही कहते है। परन्तु एक बार जब आप मेरी अवस्था के हो जाएगे तो फिर भूल जाएगे। ऐसी बात नही कहेगे। मेरे पैरो मे कुछ तकलीफ है, मेरा मसाना खराब है, मुझे रात मे इस वजह से पाच-छ बार उठना पडता है। किन्तु वृद्ध होने का एक लाभ भी है। आप कई चिन्ताओ से छूट जाते है। औरतो से आपका कोई वास्ता नही रहता और यह बहुत बडी बात है। मुझे पिछले तीस साल से औरत की कोई जरूरत ही महसूस नही हुई और अब भी महसूस नही करता और आप क्या चाहते है ?'

विन्स्टन खिडकी के सहारे पीठ टिकाकर बैठ गया था। आगे बात करने से कोई फायदा नही था। वह कुछ और बियर लाने की सोच रहा था कि बुड्ढा अकस्मात् उठकर पेशाब-घर मे घुस गया। इसमे से बडी बदबू आ रही थी। बुड्ढे पर आधा लिटर शराब अधिक पी जाने का बुरा असर हुआ था। विन्स्टन दो-एक मिनट एकटक सामने की ओर देखता रहा। उसे पता नही कब वह बाहर सडक पर आ गया। वह सोच रहा था कि अधिक से अधिक अगले बीस वर्षो में इस प्रश्न का उत्तर देने वाला ही कोई नही रह जाएगा कि 'आज का जीवन क्रान्ति के पूर्व के जीवन की तुलना मे अधिक अच्छा है या खराब ?' परन्तु सचाई यह थी कि आज भी इसका उत्तर देने वाला कोई नही था। जो बचे थे वे इस योग्य थे ही नही कि दो युगो के जीवन की तुलना कर सके। उन्हे लाखो बेकार की बाते याद थी। वे यह बता सकते थे कि उनकी साथी मजदूर से कैसे लडाई हुई थी, बाइसिकिल मे हवा भरने वाले पम्प को उन्होने कैसे ढूढा, उनकी मृत बहन के चेहरे पर क्या भाव था जो बहुत पहले मर चुकी थी, सत्तर साल पहले हवा के थपेडे कैसे लगते थे, परन्तु तथ्य की एक बात उन्हे याद नही थी। जब लोगो की याददाश्त खतम हो जाए, लिखित प्रमाण नष्ट हो जाए तो पार्टी का यह दावा मानना ही पडेगा कि पहले की अपेक्षा जीवन की दशा आज सुधरी हुई है क्योकि ऐसा कोई मानदण्ड नही था और रह भी नही सकता था, जिससे आज और बीते कल की तुलना की जा सकती हो।

तभी उसके विचारो का क्रम-भग हो गया। वह रुक गया और इधर-उधर देखने लगा। वह एक तग गली मे था। इधर-उधर कुछ अधेरी दुकाने और मकान थे। उसके सिर पर धातु के तीन गोले टगे थे। उन पर ऐसा लगता था कि

मुलम्मा किया हुआ था । उसे खयाल आया कि वह कहा पर था । यह वही दुकान थी जहा से उसने कापी खरीदी थी ।

उसकी नस-नस मे भय समा गया । उसने कापी खरीदकर ही कोई कम अपराध नही किया था। उसने कसम खाई थी कि अब वह इस दुकान के पास कभी नही जाएगा। परन्तु वह विचारो मे खोया यहा चला आया था। हालाकि इक्कीस (रात के नौ) बजे थे परन्तु दुकान अब भी खुली थी । उसने सोचा कि उसकी तरफ बाहर फुटपाथ पर लोगो का ध्यान दुकान के अन्दर रहने से अधिक आष्कृट होगा । यह सोचते हुए वह अन्दर घुस गया। पूछे जाने पर वह कह सकता था कि रेज़र ब्लेड लेने आया था ।

दुकानदार ने टगा हुआ तेल का लैम्प जला दिया था। रोशनी साफ नही थी । दुकानदार की उमर साठ साल थी । वह दुर्बल था, और उसकी कमर झुक गई थी। नाक लम्बी थी । उसके बाल सफेद हो गए थे लेकिन भौहे अब भी खिचडी थी। उसका चश्मा, चलने का ढंग तथा उसकी मखमल की जैकट से अन्दाज होता था कि वह पढना-लिखना भी जानता है। शायद वह साहित्यिक रहा था या सगीतकार। उसकी आवाज कोमल थी। उसका उच्चारण भी अन्य मजदूरो की अपेक्षा साफ था।

दुकानदार ने घुसते ही कहा, 'मैंने आपको फुटपाथ पर ही पहचान लिया था । आपने ही तो चिकने कागज की वह कापी खरीदी थी। वैसा कागज—ओह, वैसा कागज़ तो अब पिछले पचास वर्ष से नही बना है ।' इसके बाद चश्मे के ऊपर से देखते हुए उसने कहा, 'क्या मै आपकी कोई विशेष सेवा कर सकता हू ? या आप वैसे ही घूमते-घूमते चले आए है ?

विन्स्टन ने टालते हुए कहा, 'मै इधर से गुज़र रहा था । अन्दर चला आया । कोई खास चीज़ तो नही चाहता ।'

'ठीक है।' दुकानदार ने कहा, 'मै नही समझता कि मै आपकी जरूरत पूरी कर पाता। देखिए न ! दुकान खाली पडी है । मै आपको बताता हूं, अब यह व्यापार ही खत्म हो जाने वाला है । कोई माग नही है और स्टाक भी नही है । फर्नीचर और चीनी के बर्तन और काच की चीजे, सब धीरे-धीरे टूट गई है। धातु की चीजे भी गला दी गई ह । बरसो हो गए मैंने पीतल का मोमबत्तीदान नही देखा ।'

वह छोटी दुकान अब भी भरी थी किन्तु एक भी मूल्यवान वस्तु उसमे नही थी।

चलने-फिरने को भी बहुत कम जगह थी। तस्वीरो के काठ के फ्रेम भरे पड़े थे। इन पर बडी धूल जमी थी। इधर-उधर नटो और बोल्टो की ट्रे पड़ी थी। पुराने चाकू तथा कुछ अन्य औजार पडे थे। टूटी घडिया थी। इसी तरह का और भी कूडा-करकट भरा पडा था। एक मेज़ पर कुछ और चीजे थी। सुनहले काम का सुघनीदान, खुले डिब्बे तथा अन्य ऐसी चीजे। विन्स्टन ने उस मेज की तरफ जाते हुए एक गोल, चिकनी तथा चमकनी हुई चीज देखी। उसने उसे उठा लिया।

यह काच का टुकडा था—एक तरफ मुडा हुआ और दूसरी तरफ चौरस, बिलकुल अर्धवृत्ताकार लगता था। इसमे अजीब-सी कोमलता थी। ऐसी कोमलता जैसी वर्षा के जल मे होती है। काच बनाने की विधि और उसके रग दोनो से यही बात प्रकट होती थी। उसके बीच मे अजीब-सा गुलाबी धब्बा था जो काच के अर्धवृत्ताकार होने के कारण बडा-सा दिखलाई पडता था। यह धब्बा देखकर उसे गुलाब के फूल या समुद्री हवा निरीक्षण करने के यत्र की याद आ गई।

'यह क्या है ?' विन्स्टन ने खुश होते हुए पूछा।

'ये मूगा है। भारतीय महासागर मे मिला होगा। मूगो को पहले लोग इसी तरह के काच में रखते थे। ये सौ वर्ष या इससे भी अधिक पुराना होगा।'

'बड़ा सुन्दर है।' विन्स्टन ने कहा।

'बडा सुन्दर है।' दुकानदार ने भी प्रशसा करते हुए कहा, 'लेकिन आजकल ऐसी चीज़ो की तारीफ करने वाले हैं ही कहा ?' उसने खोलते हुए कहा, 'चूकि आपको पसन्द आ गया है और आप इसे खरीदना चाहेगे, इसलिए मैं चार डालर मे ही आपको दे दूगा। एक ज़माना था, जब इसके आठ पौड मिल जाते थे। मैं ठीक-ठीक तो नही बता सकता, किन्तु आठ पौड काफी बडी रकम होती थी। आज-कल ऐसी चीजो की भी परवाह कौन करता है ?'

विस्टन ने तुरन्त चार डालर देकर काच-मूगे को जेब मे रख लिया। विन्स्टन उसके सौन्दर्यसे इतना प्रभावित नही हुआ था जितना इस बातसे कि वह उस बीते युग की यादगार है, जिसके बारे में वह जानने को इतना अधिक उत्सुक है। वह कोमल वर्षा जल-सा झिलमिलाता काच उसने पहले कभी नही देखा था। उसके आकर्षण का एक कारण यह भी था कि उसका कोई उपयोग न था। परन्तु जिस जमाने में यह बनाया गया होगा, उस जमाने मे अवश्य ही यह कागज दबाने के काम आता होगा, यह अनुमान उसने लगा लिया था। वह भारी तो काफी था, किन्तु सौभाग्य-

वश उसकीजेब ज़रूरत से ज्यादा फूली नही दिखलाई पड रही थी। ऐसी चीज का किसी पार्टी-सदस्य के पास मिलना सदेहजनक था। वही चीज क्या, काई भी पुरानी तथा उपयोगिताहीन वस्तु का होना सदेह का कारण बन सकता था। बुड्ढा दुकान-दार चार डालर पाकर बहुत खुश हो गया था। वह तीन या शायद दो डालर भी इस चीज़ के स्वीकार कर लेता।

'ऊपर एक और कमरा है। यदि आप देखना चाहे तो मै रोशनी कर दू।' दुकानदार ने कहा, 'उसमे अधिक सामान तो नही है। कुछ चीजे है।'

उसने दूसरा लैम्प जला लिया और कमर झुकाए सीधी चली गई ऊपर जाने-वाली सीढियो पर चढने लगा। जीना पुराना था। पतले-से रास्ते से होकर विन्स्टन भी दुकानदार के पीछे-पोछे ऊपर चला। कमरे का दरवाज़ा सडक की तरफ न होकर उलटी तरफ एक हाते के सामने था। कमरे मे फर्नीचर लगा था, जैसे कोई अब भी रहता हो। जमीन मे गलीचे का टुकडा बिछा था। दीवार पर एक-दो तस्वीरे टगी थी। आतिशदान के पास एक आरामकुर्सी भी पडी थी। पुराने ढंग की घड़ी, जिसमे १२ तक ही अक लिखे थे, टिक-टिककर रही थी। खिडकी के नीचे गद्देदार पलग था जिस पर उस समय भी बिस्तर बिछा हुआ था। यह पलग कमरे का एक चौथाई हिस्सा घेरे था।

वृद्ध दुकानदार ने कहा, 'पत्नी के मरने तक हमलोग यही रहते थे। अब मै धीरे-धीरे फर्नीचर बेच रहा हू। वह पलग बडा खूबसूरत है, परन्तु शर्त यही है कि आप इसके खटमल पहले नष्ट कर दे। यह भारी भी बहुत है।'

वह लैम्प ऊचा उठाए था, जिससे सारा कमरा प्रकाशमान रहे। उस प्रकाश मे वह कमरा बडा आकर्षक प्रतीत हो रहा था। विन्स्टन के दिमाग मे सहसा यह बात आई कि कमरा कुछ डालर प्रति सप्ताह किराए पर लिया जा सकता है। शर्त यही है कि वह ऐसा खतरा उठाने को तैयार हो जाए। यह बहुत ही खतर-नाक विचार था और इसको दिमाग से तुरन्त ही निकाल दिया जाना ही उचित है। फिर भी उसके मस्तिष्क मे अपने पूर्व सस्कारवश कुछ स्मृतिया जाग उठी। इस कमरे मे बैठने पर उसे ऐसा लगा कि वह बडा आराम अनुभव करेगा। वह सोच रहा था, 'वह आतिशदान के समीप पडी आरामकुर्सी पर बैठा होगा। आग पर चाय का पानी केटली मे उबल रहा होगा। वह बिलकुल एकान्त मे होगा। बिल-कुल सुरक्षित। उसे कोई देख नही रहा होगा। कोई आवाज पीछा नही कर रही

होगी। कोई शोर नही होगा। गुनगुनाती हुई केटली तथा घडी की टिक-टिक के अलावा और कोई आवाज़ नक न होगी।' उसके मुह से निकल गया -

'यहा टेलीस्क्रीन नही है ?'

'आह !' दुकानदार ने कहा, 'मैने ऐसी कोई चीज़ नही लगवाई। बहुत खर्च पडता है। और फिर मुझे इसकी जरूरत भी महसूस नही हुई। एक छोटी मेज है, परन्तु इसका उपयोग करने के लिए आपको कुछ कंकड नीचे लगाने होगे।'

दूसरे कोने में एक छोटी-सी किताबो की आलमारी थी। उसमे रद्दी के अलावा कुछ नही था। मजदूरो के मोहल्लो मे भी किनाबो को खोजकर उसी प्रकार नष्ट किया गया था जिस प्रकार अन्य स्थानो मे। ओशनिया भर मे सन १९६० से पहले प्रकाशित किसी भी पुस्तक की प्रति मिलनी कठिन थी। पलग के सामने तथा आतिशदान के दूसरी ओर गुलाब की लकड़ी के फ्रेम मे जडी हुई तस्वीर के सामने बुड्ढा लैम्प लिए हुए खड़ा था।

'और अब यदि आप पुरानी किस्म की तस्वीरो मे रुचि रखते हो तो—' दुकानदार ने कहा।

विन्स्टन पास आ गया और तसवीर देखने लगा। एक अण्डाकार भवन था जो लोहे से उभारा गया था। इस इमारत की खिडकिया चौकोर थी, इमारत के सामने मीनार थी, इसके चारो ओर रेलिग भी थी। पीछे की तरफ एक मूर्ति भी थी। विन्स्टन कुछ देर इसे देखता रहा। उसे मूर्ति देखकर खयाल आया कि उसने ऐसी कोई चीज़ देखी अवश्य है परन्तु स्पष्ट रूप से कुछ भी याद न आया।

'इस तसवीर का फ्रेम दीवार मे जडा है। लेकिन आप चाहेगे तो मैं इसे निकाल दूगा', बुड्ढे ने कहा।

'मै इस इमारत को पहचानता हू', विन्स्टन ने कहा।

यह इमारत 'न्याय भवन' के सामने की सड़क के बीचोबीच थी। अब तो केवल खडहर मात्र रह गया है।'

'बिलकुल ठीक है। अदालती इमारत के बाहर। इसपर बम गिराए गए थे··· सन्···ओह ! वर्षो पूर्व। यह चर्च था। इस चर्च का नाम सेट क्लीमेट्स डेन था।' वह थोडी क्षमा-सी मागता हुआ मुस्कुराया। उसे लगा कि वह कोई हास्यास्पद-सी बात कह रहा है। और इसके बाद वृद्ध ने कहा

Oranges and lemons, says the bells, of St Clement's

'क्या कहा ?' विन्स्टन ने पूछा ।

'ओह—Oranges and lemons, say the bells of St Clement's यह पद्य है, जो मैंने बचपन मे याद किया था। आगे क्या है, यह तो अब मुझे याद नही रहा । परन्तु इसकी अतिम पक्ति अब भी मुझे याद है । वह इस प्रकार है Here comes a candle to light you to bed, Here comes a chopper to chop off your head ये एक प्रकार का 'नृत्य गीत' था । लोग नाचते-नाचते अपने हाथ फला देते थे और उनके फैले हाथो के नीचे से लोग भागते हुए झुक-झुकर निकल जाते थे । और जब ये शब्द कहे जाते थे कि Here comes a chopper to chop off your head तो वे हाथ नीचा करके नीचे से गुजरने वाले आदमी को पकड लेते थे । इस गीत मे लन्दन के सभी प्रमुख चर्चो का नाम आया था ।'

विन्स्टन सोचने लगा, यह चर्च किस शताब्दी मे निर्मित हुआ होगा । लन्दन की किसी भी इमारत की प्राचीनता का निश्चय करना बडा कठिन होगा । कोई बडी आकर्षक इमारत हो, और वह नई-सी दिखलाई पडती हो, बस उसी के लिए कह दिया जाता था कि यह क्रान्ति के बाद बनाई गई है । पुरानी इमारतो को मध्ययुग की कह दिया जाता है । शताब्दियो के पूजीवाद से कोई भी लाभ नही हुआ था । और न कोई जनोपयोगी चीज ही इस पूजीवादी युग मे बनी थी । वास्तुकला से भी इतिहास का ज्ञान प्राप्त करना उतना ही असभव था जितना इतिहास से । मूर्तिया, शिलालेख, यादगार के पत्थर तथा सड़को के नाम वगैरह सब इस तरह बदल दिए गए थे कि बीते दिनो के बारे मे कुछ भी नही जाना जा सकता था । यह सब काम बहुत ही व्यवस्थित ढग से किया गया था ।

'मुझे यह कभी नही मालूम हो सका कि यह चर्च था,' उसने कहा,

'बहुत-से चर्च अब भी है,' वृद्ध ने कहा, 'परन्तु इनको अब दूसरे कामो मे लाया जा रहा है । ओह, वह गीत इस प्रकार था । मुझे याद आ गया ।

Oranges and lemons, say the bells of St. Clement's,

You owe me three farthings, say the bells of St Martin's.

'बस यहा तक मुझे याद है । आगे नही याद आ रहा । फार्दिंग एक सेट के बराबर का सिक्का होता था ।'

'सेंट मार्टिन चर्च कहा था ?' विन्स्टन ने पूछा ।

'सेट मार्टिन्स ? वह अब भी है। विक्टरी स्क्वायर मे है। तसवीरों की जो गैलरी है, उसी के बराबर है। इस भवन मे प्रवेश-द्वार का बरामदा तिकोना है। इसके सामने खभे है। बडी-बडी सीढिया है।'

विन्स्टन इस जगह को अच्छी तरह जानता था। यह अब अजायबघर था। इसमे अब प्रचार की वस्तुए रखी जाती थी।—राकेट बमो के नमूने, तैरते किलो के नमूने, शत्रु के अत्याचारो के मोम से बनाए गए नमूने आदि।

विन्स्टन ने वह तसवीर नही खरीदी। काच के पेपरवेट से भी अधिक इस तसवीर का पास होना खतरनाक था। घर तो उसे ले ही नही जाया जा सकता था। यह तभी सभव था जब तसवीर को फ्रेम से निकाल लिया जाता। परन्तु वह कुछ मिनट और खडा रहा। इस बीच उसने वृद्ध से और बाते की। उसे पता लगा कि बुड्ढे का नाम वीक्स नही था, जैसा कि दूकान के सामने लगे बोर्ड से प्रतीत होता था। उसका नाम चार्रिगटन था। वह तीस साल से यह दुकान चला रहा था। वह बोर्ड पर लिखे नाम को इस बीच बराबर हटाने की सोच रहा था, लेकिन वह यह कर नही पाया था। इस बीच विन्स्टन के दिमाग मे यह पद्य बराबर चक्कर काटता रहा

Oranges and lemons, say the bells of St Clement's,
You owe me three farthings, say the bells of St Martin's

(इसका भाव है सेट क्लीमेण्ट की घटिया कहती है, नीबू और नारगी; सेट मार्टिन की घटिया कहती है, देने है तुम्हे मुझे तीन फार्दिग।) यह अजीब था। लेकिन मन ही मन इन शब्दो को दोहराते हुए उसे लगा कि 'वे घटिया उसे सचमुच सुनाई पड रही है—वे घटिया जो भूले और बिसरे लन्दन मे अब भी कही बजती है। पता नही उसे किस दुनिया से इन घटियो के बजने की आवाज अब भी सुनाई पड रही थी। जहा तक उसे याद था अपने जीवन मे उसने चर्च की घटियो की आवाजे कभी नही सुनी थी।

वह मि० चार्रिगटन से विदा लेकर चल दिया। सीढियो पर वह अकेला ही उतरा जिससे वृद्ध उसे सडक पर जाने न देख पाए। उसने निश्चय किया था कि उचित समय, लगभग एक महीने बाद वह फिर दुकान पर आएगा। तब फिर एक दिन सामुदायिक केन्द्र न जाने के कारण किसी को सदेह न होगा। सबसे बडी गलती उससे यह हुई थी कि वह डायरी खरीदने के बाद फिर यहा चला आया था

और यह जानने का भी उसने प्रयत्न नही किया कि इस दुकान के मालिक का विश्वास भी किया जा सकता है या नही। फिर भी—।'

हा, उसने फिर सोचा, वह यहा दुबारा आएगा। वह कुछ और चीजे खरीदेगा। वह सेंट क्लीमेंट डेन की उभरी हुई तसवीर लेगा, वह उसे अपनी पोशाक मे छिपाकर घर ले जाएगा। वह बाकी कविता भी चार्रिंगटन से सुनकर याद कर लेगा। ऊपर का कमरा किराए पर ले लेने की पागलपन भरी बात फिर उसके दिमाग मे आई। पाच सेकेंड के लिए वह अपने विचारो मे इतना मगन हो गया कि फुटपाथ से सडक पर उतर आया। वह यह कविता गुनगुनाने भी लगा था

Oranges and lemons, say the bells of St Clement's,

You owe me three farthings say the bells of St. Martin's,

सहसा उसका खून बर्फ की तरह जम गया। उसके पेट मे पानी-पानी हो गया। कोई दस मीटर की दूरी पर एक आदमी नीली वर्दी मे उसके पीछे-पीछे आ रहा था। वह वही कथा-विभाग की लडकी थी जिसके बाल घने और गहरे काले थे। अधेरा हो रहा था। फिर भी उसे पहचानने मे विन्स्टन ने कोई भूल नही की। लडकी ने सीधे उसके मुह की तरफ देखा। इसके बाद वह ऐसे चली गई जैसे उसने विन्स्टन को देखा ही नही।

कुछ क्षण के लिए विन्स्टन को ऐसे खयाल हो आया जैसे उसे पक्षाघात हो गया हो और वह चलने मे बिलकुल असमर्थ हो। इसके बाद वह दाहिनी और मुड गया और भारी कदमो से आगे बढ गया। उसे इस बात का ध्यान भी नही आया कि वह गलत रास्ते पर जा रहा है। अब एक बात स्पष्ट हो गई थी। वह लडकी उसके पीछे लगी जासूसी कर रही है। अवश्य ही उस लडकी ने विन्स्टन का पीछा किया था अन्यथा इतनी दूर, पार्टी-सदस्यो के रहने के स्थान से इतनी दूर, इस अधेरी गली मे सयोगवश ही कोई नही आ सकता था। वह विचार-पुलिस की एजेंट है या शौकिया जासूसी कर रही है, इससे कोई खास मतलब नही था। इतना काफी था कि वह उस पर निगाह रखे है। सभवत: उसने उसे शराबखाने मे घुसते हुए भी देखा हो।

पैदल चलना कठिन हो रहा था। हर कदम पर वह काच का वजनी पेपर-वेट उसकी जाघ से लड रहा था। उसकी तबियत हो रही थी कि वह उसे जेब से निकालकर फेंक दे। सबसे खराब बात यह थी कि उसके पेट मे भी दर्द होने

लगा था। उसे कुछ क्षण के लिए तो ऐसा लगा कि यदि वह पाखाने नही गया तो उसके प्राण ही निकल जाएगे। परन्तु यहा कही बमपुलिस नही थी। इसके बाद दर्द का जोर घट गया लेकिन दर्द पूरी तरह गया नही।

गली मे घटाटोप अधेरा छाया था। विन्स्टन ठहर गया और कई सेकेड खडा सोचता रहा कि क्या करे। इसके बाद मुडकर पीछे की तरफ चल दिया। मुडते ही उसे खयाल आया कि वह लडकी उससे तीन मिनट पहले ही उस रास्ते से गुजरी है और यदि वह दौडे तो उसे पकड सकता है। वह उसके पीछे-पीछे चलना रहेगा और कोई अधेरी जगह आते ही किसी पत्थर से उसका सिर फोड कर हत्या कर देगा। इस काम के लिए काच का पेपरवेट उपयुक्त नही था। लेकिन शीघ्र ही उसे अपने इस विचार का परित्याग कर देना पडा। वह कोई शारीरिक श्रम की बात भी नही सोच सकता था। शारीरिक श्रम का विचार भी असहनीय था। इसके अतिरिक्त वह स्त्री कामुक प्रतीत होती थी, साथ ही तरुणी भी थी। अतएव वह आत्मरक्षा की भरसक चेष्टा करेगी। उसने सोचा कि वह भागता हुआ सामुदायिक केन्द्र चला जाए और जब तक वह बन्द नही हो तब तक वहा रहे जिससे उसे कम से कम आशिक साक्ष्य तो मिल जाएगा। परन्तु यह भी असभव था। एक अजीब निष्क्रियता-सी उस पर छा गई थी। वह जल्द से जल्द घर पहुच जाना चाहता था और एकान्त मे पहुचकर सोचना चाहता था।

जब वह अपने फ्लैट पर पहुचा तो बाईस अर्थात् रात के दस बज चुके थे। रोशनी साढे तेईस अर्थात् साढे ग्यारह बजे बुझा दी जाएगी। वह रसोई मे गया और उसने एक चाय की प्याली भर कर शराब पी। इसके बाद कोने की मेज पर जाकर बैठ गया। उसने डायरी निकाल ली। परन्तु एकदम उसे खोला नही। टेलीस्क्रीन से कोई नारीकठ पतली आवाज़ मे कोई देशभक्ति का गीत गा रहा था। वह सगमरमर की डिज़ाइन के कापी के कवर को एकटक देखता रहा। वह कोशिश कर रहा था कि टेलीस्क्रीन की आवाज़ उसके दिमाग से निकल जाए और उससे वह तग न हो।

वे लोग गिरफ्तार रात को करते थे। उचित यह होता है—वे पकडे, उसके पूर्व ही आत्महत्या कर ली जाए। निस्सदेह कुछ लोग ऐसा ही करते थे। बहुत-से लोग तो आत्महत्या के कारण ही लापता हो जाते थे। परन्तु आत्महत्या करना भी कठिन था। क्योकि किसी भी प्रकार का हथियार या जहर मिलना बिलकुल

असंभव था। दर्द और भय की जीवशास्त्रीय निरर्थकता पर वह आश्चर्यचकित हो सोच रहा था। शरीर का हर अग उसी समय क्यो जवाब दे जाता है जब विशेष रूप से सक्रिय होने की आवश्यकता होती है। वह उस लड़की को हमेशा के लिए चुप कर सकता था। उसे केवल साहस की आवश्यकता थी। परन्तु वह इतना भयातुर हो गया था कि उससे कुछ करते ही नही बन पडा। उसे खयाल आया कि खतरा जब बहुत बढ जाता है तो आदमी बाहर के शत्रु से लडने के बजाय अपने अन्तर के शत्रु से ही लडने लगता है। शराब पीने के बाद भी उसके पेट मे इतना दर्द हो रहा था कि आगे कुछ सोचना भी मुश्किल था। उसे लगा कि दुखान्त या सुखान्त सभी परिस्थितियो मे ऐसा ही होता है। रणक्षेत्र मे, यातना-गृह मे, डूबते जहाज मे, आप जिन उद्देश्यो से लडने जाते है, उनको बिलकुल भूल जाते है, उस समय भी जब आप भय से जकडे नही होते या दर्द से चीख नही रहे होते। जीवन क्षण प्रति क्षण भूख, ठड, अनिद्रा, तीव्र उदरशूल या दात के दर्द के खिलाफ संघर्ष ही तो है।

उसने डायरी खोली, यह जरूरी हो गया था कि कुछ लिखा जाए। टेली-स्क्रीन पर गाने वाली स्त्री अब कोई दूसरा गीत गाने लगी थी। उसकी आवाज़ सिर पर ऐसे लग रही थी जैसे दिमाग मे काच के टुकडे घुसे जा रहे थे। हा उसने ओ'ब्रायन के सबध मे सोचने का प्रयत्न किया, जिसके लिए वह डायरी लिख रहा था। परन्तु कुछ भी लिखने की बजाय वह यह सोचने लगा कि विचार-पुलिस जब उसे पकड़ ले जाएगी, तब उसका क्या होगा ? यदि वे पकडते ही मार डाले तो ज्यादा चिन्ता की बात नही थी। मरना है यह तो गिरफ्तार होते ही आदमी सोच लेता था। लेकिन मरने के पहले (जानते हुए उनके बारे मे कोई अपनी जुबान भी नही खोलता था।) इकबाली बयान का झझट था। जमीन पर लोट-लोट कर दया की भीख मागनी पडती थी। टूटी हड्डिया चटखती थी। टूटे दात दुखते थे और जहा से सिर के बाल उखाड लिए जाते थे वहा खून बहने के बाद जम जाता था और वह हिस्सा बुरी तरह दुखता था। यदि मरना ही है तो यह सब कष्ट क्यो ? अपने जीवन के कुछ दिन या सप्ताह क्यो और कम न कर लिए जाए ? जासूसो की नजर से कोई भी नही बचा था और कोई भी ऐसा नही था जिसने अपने गुनाहो का इकबाल न किया हो। एक बार मानसिक अपराध करने के बाद फिर यह निश्चित हो जाता था कि अमुक तारीख तक आप मार डाले जाएगे।

फिर भी यह भय, आतक, जो कुछ भी नही बदल सकता था, भविष्य के गर्भ मे क्यो छिपा था ?

उसने पहले की अपेक्षा अधिक सफलता से ओ' ब्रायन की कल्पना कर ली। ओ' ब्रायन ने उससे क्या नहीं कहा था 'अब हम वहा मिलेगे जहा बिलकुल अधेरा न होगा।' वह जानता था कि इसका क्या मतलब था या उसका खयाल था कि वह इसका मतलब समझता था। जहा अधकार न होगा वह स्थान कल्पित था। यह भविष्य या कल्पना कोई भौतिक जगत् मे देख नही सकता था किन्तु इतना अवश्य था कि रहस्यपूर्ण ढंग से यह भविष्य सबंधी ज्ञान प्राप्त अवश्य हो सकता था। परन्तु टेलीस्क्रीन से धिक्कार की भाति निकलने वाली आवाज ने उसे आगे नही सोचने दिया। उसने अपने ओठो से सिगरेट लगाई। सिगरेट रखते ही उसका आधा तम्बाकू उसके मुह मे आ गया। बडा कडवा स्वाद था। उसकी आखो के सामने बडे भाई का चेहरा नाच उठा। ओ' ब्रायन के चेहरे का स्थान बडे भाई की शकल ने लिया। जैसा कि उसने पहले भी एक बार किया था, उसने अपनी जेब से सिक्का निकालकर बड़े भाई की शकल देखी। बड भाई का चेहरा लगातार उसकी तरफ घूर रहा था। दृष्टि भारी, गभीर तथा रक्षा करने वाली जैसी थी। परन्तु मूछो के नीचे पता नही कैसे मुस्कुराहट छिपी थी ? सीसे की जैसी आवाज मे ये नारे उसके कानो मे गूजने लगे

युद्ध ही शान्ति है !
दासता ही स्वतत्रता है !
अज्ञानता ही शक्ति है !

सवेरे का वक्त था। कोई दस या ग्यारह बजे होगे। विन्स्टन अपने दफ्तर के कमरे से शौचालय जाने के लिए बाहर निकला।

बरामदा रोशनी से जगमगा रहा था। सामने की ओर से एक व्यक्ति आता हुआ विन्स्टन को दिखलाई दिया। कुछ और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि आने वाला व्यक्ति और कोई नही वही लडकी थी। कबाडी की दुकान के पास रात के अधेरे मे उनकी मुलाकात हुए चार दिन बीत चुके थे। और पास आने पर विन्स्टन ने देखा कि लडकी के हाथ मे पट्टी बधी है और वह पट्टी उसके गले में भी लटकी है। दूर से यह पट्टी इसलिए नही दिखलाई पड रही थी क्योकि पट्टी के कपडे का रग भी वही था जो उसकी वर्दी का। सभवत, उसका हाथ उपन्यासो के कथानक तैयार करने वाली मशीन मे आ गया था। गल्प विभाग मे इस तरह की दुर्घटना बहुधा हो जाया करती थी।

उन दोनो के बीच की दूरी कोई चार मीटर थी, जब सहसा लडकी ठोकर खाकर मुह के बल गिर पडी। उसके मुह से एक दर्द भरी चीख निकल गई। अवश्य ही वह अपने घायल हाथ के बल गिरी होगी। विन्स्टन उसके पास पहुच-कर रुक गया। अब वह घुटनो के सहारे उठ बैठी थी। उसका चेहरा एकदम पीला पड गया था। परन्तु मुह के आसपास का भाग नित्यप्रति की अपेक्षा कही अधिक लाल था। वह एक दृष्टि से उसकी तरफ देख रही थी। लडकी की निगाह मे दर्द से अधिक भय था।

विन्स्टन के हृदय मे अजब-सा भाव उत्पन्न हुआ। उसके सामने वह दुश्मन था जो उसे मार डालना चाहता था। उसके सामने एक मानव था जो पीडाग्रस्त था और जिसके हाथ की हड्डी भी शायद टूट गई थी। वह स्वयमेव उसकी सहायता के लिए आगे बढ चुका था। उसे टूटे हाथ के बल गिर जाने पर विन्स्टन को ऐसा लगा था जैसे स्वय उसका अग दुख उठा है।

'क्या चोट लग गई ?' उसने पूछा।

'कुछ नही ! मेरा हाथ थोडी देर मे ठीक हो जाएगा।'

वह ऐसे बोल रही थी जैसे उसका दिल बडी तेजी से धडक रहा हो।

'कोई हड्डी और तो नही टूट गई ?'

'नही, मै ठीक हू। थोडी देर के लिए बडा तेज दर्द हुआ था।'

जो हाथ ठीक था, वह उसने बढा दिया। विन्स्टन ने उसका हाथ पकडकर खडे होने मे मदद की। वह अब प्रकृतिस्थ हो रही थी और पहले मे ठीक लग रही थी।

'कोई खास बात नही हुई,' उसने बात खत्म करते हुए कहा, 'कलाई मे लग गई है। धन्यवाद कामरेड।' इसके बाद वह उसी दिशा मे बढ गई जिस तरफ उसे जाना था। उसके चलने की गति से कोई यह अन्दाज भी नही लगा सकता था कि अभी-अभी कुछ हुआ भी था। पूरे काण्ड मे कोई आधे मिनट से अधिक समय नही लगा था। अपने हृदय के भावो को चेहरे पर न आने देने की उनकी स्वाभाविक आदत पड गई थी और इस समय तो वे बिलकुल टेलीस्क्रीन के सामने खडे थे। परन्तु इतने पर भी क्षणभर के लिए ही सही, आश्चर्य का भाव उनके चेहरे पर अवश्य आया था, उन दो या तीन सेकेडो मे ही, जितनी देर मे उसने उठने के लिए लडकी को सहारा दिया था उसने विन्स्टन के हाथ मे एक कागज सरका दिया था। उसने यह काम इरादतन किया था, ऐसा विन्स्टन को नही लगा। उसने शौचालय मे घुसते ही उसे अपनी जेब मे डाल लिया। कागज का वह टुकडा बहुत छोटा-सा था। गोल किया हुआ था, पेशाब करते हुए उसने जेब मे ही उगलियो से खोल लिया। उसमे अवश्य ही कोई सदेश होगा। एक क्षण के लिए उसकी इच्छा हुई कि पानी वाली कोठरी मे जाकर कागज़ को जेब से निकाल कर पढ ले। परन्तु यह बहुत बडी बेवकूफी थी, यह उसे मालूम था। कुछ जगहे ऐसी थी जहा कि टेलीस्क्रीनो पर हर वक्त नज़र रखी जाती थी।

वह अपने दफ्तर वाले कमरे मे चला गया। वहा जाकर उस कागज़ के टुकडे को उसने मेज़ पर पडे कागज़ो के ढेर मे डाल दिया। इसके बाद चश्मा लगाकर लेखन यत्र उसने अपने सामने खीच लिया। 'पाच मिनट' उसका दिल धडक रहा था, 'पाच मिनट बाद'। सौभाग्यवश जो काम वह कर रहा था, वह साधारण-सा था। कुछ आकडे ठीक करने थे, जिसमे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नही थी।

कागज़ पर जो भी लिखा हो, उसका कुछ न कुछ राजनीतिक उद्देश्य अवश्य होगा। उसे दो सभावनाए प्रतीत हो रही थी। पहली तो यह कि लडकी अवश्य ही विचार नियत्रक पुलिस की एजेट है, जैसी कि उसे आशका थी और यह कि विचार-पुलिस ने अपना सदेश देने के लिए यह पद्धति क्यो चुनी ? सभवत इसका कोई कारण हो। इस सदेश मे शायद कोई धमकी दी गई हो, बुलाया गया हो, आत्म-हत्या कर लेने का आदेश दिया गया हो या फिर कोई अन्य प्रकार का जाल बिछाया गया हो। दूसरी सभावना यह थी कि यह सदेश किसी गुप्त सस्था से आया हो और इसका विचार-पुलिस से कोई सबध ही न हो। परन्तु वह अपने इस विचार को बराबर दबाने का यत्न कर रहा था। शायद 'ब्रदरहुड' नाम की गुप्तसस्था का कोई न कोई अस्तित्व अवश्य होगा। निस्सदेह यह विचार सर्वथा निर्मूल था, परन्तु जबसे यह कागज़ का टुकडा उसके हाथ मे थमाया गया था, तब से ही बार-बार यह ख्याल उसके दिमाग मे आ रहा था। कुछ मिनट बाद उसे एक और ख्याल आया और वह शायद ज्यादा ठीक था। उसकी बुद्धि कह रही थी, यह मौत का सदेशा है, परन्तु उसे ऐसा नही लग रहा था। उसकी अविवेकपूर्ण आशाए बढ रही थी, दिल जोरो से धडक रहा था और बडी कठिनाई से लेखन यत्र के माइक मे आकडे बोलते हुए वह अपनी आवाज़ को कापने से रोक पा रहा था।

इसके बाद उसने काम करके सारे कागज़ इकट्ठे किए और उनको नल मे डालकर वापस कर दिया। अब तक आठ मिनट गुजर चुके थे। उसने अपनी नाक पर आए चश्मे को ठीक किया। धीरे से ठडी सास भरी और अगला काम हाथ में लिया। इसके ऊपर ही वह चिट रखी थी। चिट पर बडे-बडे अक्षरो मे लिखा था

'मै तुमसे प्रेम करती हू।'

कुछ सेकेंडो के लिए वह उसे पढकर स्तब्ध हो गया। उसे इतना भी ख्याल न आया कि वह उस अपराध के सबूत को रद्दी कागजो वाले छेद मे डालकर जला दे। उसकी इच्छा हुई, वह कागज को दुबारा पढ ले। हालाकि वह उसका खतरा जानता था। उसे विश्वास नही हो रहा था कि वस्तुतः यही शब्द कागज पर लिखे थे।

इसके बाद काम करना कठिन हो गया। काम कर सकने से भी अधिक कठिन टेलीस्क्रीन से अपने मानसिक द्वन्द को छिपाना कठिन था। उसे लगा कि उसके पेट में बडी तेज आग जल रही है। गरम, भीडभाड़ और शोरभरे कमरे मे दोपहर

का भोजन गले से उतारना कठिन हो गया। भोजन के समय उसने सोचा था, वह अकेला बैठेगा परन्तु दुर्भाग्य देखिए, उस मौके पर पारसन्स ने उसे आ घेरा। शोरबेदार मास की गध और पारसन्स के पसीने की दुर्गन्ध एक साथ उसकी नाक मे घुस रही थी और ऊपर से पारसन्स बडबड करके कान चाटे जा रहा था। वह घृणा प्रचार सप्ताह के बारे मे कुछ कह रहा था। वह कागज से बनाए जाने वाले बडे भाई के (रावण जैसे) सिर के बारे मे बहुत खुश होकर बतला रहा था। यह सिर दो मीटर चौडा था और इसे उनकी (बडे भाई की) लडकी के बालक जासूसो का दल तैयार कर रहा था। उस शोर से पारसन्स की बात सुनाई नही पड रही थी और उसे बार-बार बात दोहराने के लिए पारसन्स से कहना पडता था। कमरे के दूसरी ओर अपनी एक सहेली के साथ वह लडकी भी बैठी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि लडकी ने उसे देखा ही नही। इसके बाद विन्स्टन ने उस ओर आख भी नही उठाई।

दोपहर बाद वह अपेक्षाकृत स्वस्थ हो गया था। एक काम ऐसा आ गया, जिसमे सारा ध्यान लगाना जरूरी था और जिसके पूरा करने मे कई घटो का समय लगाना था। उसे पिछले दो वर्षो की उत्पादन-रिपोर्टो को इस प्रकार लिखना था जिससे अतरग पार्टी के एक सदस्य की बदनामी हो। आजकल वह सदस्य सकटग्रस्त था। इन कामो मे विन्स्टन बहुत तेज था। दो घंटे के लिए लडकी की बात उसके दिमाग से बिलकुल उतर गई। इसके बाद फिर विन्स्टन को उसका ख्याल हो आया। उसकी यह इच्छा बडी तीव्र हो उठी कि वह अकेला हो। बिना एकान्त के वह इस घटनाचक्र पर पूरी तरह विचार ही नही कर सकता था। आज की बात सामुदायिक केन्द्र मे विशेष कार्यक्रम था। कैंटीन मे किसी तरह शाम का भोजन भी निगला और केन्द्र मे आयोजित एक वाद-विवाद गोष्ठी मे भाग लिया।, दो गेम टेबिल टेनिस पर खेले, कई गिलास शराब गले के नीचे उतारी। और फिर शतरज और 'इंगसोश' शीर्षक व्याख्यान सुना। उसका जी ऊब गया था, परन्तु वह अब एक और सध्या-केन्द्र मे अपनी गैरहाजिरी नही बढवाना चाहता था। यह शब्द पढते ही 'मै तुम्हे चाहती हू'—उसकी जीवित रहने की आकाक्षा बढ गई थी। उसे लगा कि छोटी-छोटी बातो मे अपने लिए खतरा पैदा करना कोई बुद्धिमानी नही है। साढे तेईस (रात के साढे ग्यारह) बजे वह घर पहुचकर बिस्तर पर लेट पाया। जब तक चुप रहे तब तक वह रात के अधेरे मे टेलीस्क्रीन की पहुच के बाहर था। इस अधेरे मे वह लगातार सोच सकता था।

अब व्यावहारिक समस्या थी। उम लडकी से कैसे सम्पर्क स्थापित किया जाए और कैसे मिला जाए। अब वह इस सम्भावना पर विचार नही करना चाहता था कि वह लड़की किसी प्रकार का जाल बिछा रही है। जब उस लडकी ने वह चिट उसे थमाई थी तो जो मानसिक द्वन्द्व का भाव उसके चेहरे पर था, उससे अन्दाज किया जा सकता था कि कोई षड्यत्र नही था। वह अवश्य ही मन ही मन बहुत डर गई होगी। उसके दिमाग मे यह ख्याल भी नही आया कि वह लडकी के इस तरह आगे बढ़ने का विरोध करे। केवल पाच, पाच रात पूर्व ही वह इसी लडकी का पत्थर से सिर फोड देना चाहता था लेकिन अब उसके दिमाग मे इस बात का ध्यान भी नही आ रहा था। वह उसके तरुण और नग्न यौवन की कल्पना कर रहा था, जो उसने स्वप्न मे देखा था। वह उसे पहले बिलकुल मूर्खा समझता था। वह समझता था कि उसके दिमाग मे घृणा और मिथ्या बातो का गोबर भरा होगा। अकस्मात् उसे ध्यान आया कि वह कही उसके हाथ से न निकल जाए। यह सोचते ही उसे हरारत-सी हो आई। परन्तु मिलने की समस्या बडी ही टेढी थी। यह ठीक इसी प्रकार था, जिस प्रकार शतरज के खेल मे शह पडने के बाद कोई चाल चले। जिधर भी मुह करिए टेलीस्क्रीन सामने था। वह उससे बात-चीत करने के तरह-तरह के उपाय सोच रहा था। वह हर उपाय पर गौर कर रहा था।

आज सवेरे जैसे वे मिले थे, वैसी बात, स्पष्ट था, दुबारा नही हो सकती थी। यदि वह रिकर्ड विभाग मे होती तो उससे मिलना अपेक्षाकृत आसान था। परन्तु कथा विभाग के सम्बन्ध मे उसका ज्ञान बहुत कम था। वह किसी बहाने से भी वहा नही जा सकता था। यदि वह यह जान जाता कि वह कहा रहती है, काम पर कब आती है, तो रास्ते में आते-जाते मिलने की कोई योजना बनाई जा सकती थी। परन्तु घर जाते हुए उसका पीछा करना सुरक्षित नही था। इसका कारण यह था कि उसे प्रतीक्षा करनी पडती, अर्थात मत्रालय के सामने इधर-उधर चक्कर काटन पडते। उससे अन्य लोगो का ध्यान उसकी ओर अवश्य जाता। डाक से पत्र भेजने का तो सवाल ही नही उठता। नियमानुसार डाक के हर पत्र को डाकखाने मे खोलकर पढ़ लिया जाता था। बहुत लोग कम पत्र लिखते थे। साधारण बातो के लिए छपे पोस्टकार्ड थे। उनमे अनेक बाते छपी थी। इनमे से जिन बातो की जानकारी प्राप्त न करनी हो, उनको निशान लगाकर

भेजा जा सकता था। इसके अतिरिक्त घर का पता जानना तो दूर, वह उस लडकी का नाम तक नही जानता था। अन्त मे उसने सोचा, मिलने की सबसे सुरक्षित जगह कैंटीन है। यदि वह किसी मेज पर अकेली मिल जाए, और मेज कमरे के बीच मे हो, टेलीस्क्रीन से दूर, तथा चारो तरफ लोग बातचीत कर रहे हो और ऐसा मौका आधे मिनट के लिए भी मिल जाए तो कुछ शब्द कहे-सुन जा सकते है।

इसके बाद एक सप्ताह, स्वप्न की-सी बेचनी मे बीता। दूसरे दिन वह लड़की उस समय तक कैंटीन मे आई ही नही, जब तक वह चलने के लिए उठ नही खडा हुआ। सीटी बज चुकी थी। लडकी की शिफ्ट शायद बदल गई थी। वे एक दूसरे के पास से बिना नजर डाले गुजर गए। तीसरे दिन वह अन्य सहेलियो के साथ थी। इसके बाद लगातार तीन दिनो तक वह आई ही नहीं। उसका शरीर तथा दिमाग दोनो ही बुरी तरह दुखी थे। उसे उठना, चलना, फिरना, बात करना, मिलना, जुलना सभी कुछ बुरा लग रहा था। सोते मे भी वह उसकी कल्पना से मुक्त नही हो सकता था। उन दिनो डायरी उसने छुई भी नही। काम करते रहने पर उसे ज़रूर आराम मिलता था। कभी-कभी दस मिनट तक वह उसे भूल जाता था। उसे मालूम ही नही था कि उस लडकी का क्या हुआ? शायद उसे मार डाला गया था। या उसने सम्भवत स्वय ही आत्महत्या कर ली थी। या उसे ओशनिया के दूसरे कोने पर भेज दिया गया हो। यह भी सम्भव था कि उसने अपना विचार बदल दिया हो और अब वह उससे आख चुरा रही हो। यदि ऐसा होगा तो महाभयकर बात हो गई थी।

अगले दिन वह दिखलाई पड गई। उसका हाथ गले मे पडी पट्टी से बाहर था। कलाई पर थोडा प्लास्टर अवश्य था। बडी मुश्किल से बात करने की इच्छा पर वह काबू पा सका। इसके बाद वाले दिन उसे बात करने का मौका भी हाथ लगा। जब वह कैंटीन में आया तो उसने देखा कि वह दीवार से दूर एक मेज पर अकेली बैठी है। काफी वक्त था और भीड अधिक नही थी। 'क्यू' धीरे-धीरे आगे बढ रहा था। दो मिनट के लिए वह काउटर पर रुका क्योकि उसके सामने वाला आदमी शिकायत कर रहा था कि उसे सैकरीन की टिकिया नही मिली। परन्तु जब वह ट्रे लेकर मेज की ओर चला तो भी वह अकेली थी। वह बिलकुल सामान्य भाव से उसकी मेज से आगे वाली मेज पर बैठने के लिए आगे बढा। वह उससे कोई तीन मीटर दूर रहा होगा। दो सेकेड बाद वह उसके पास पहुच

जाता, तभी उसके पीछे किसी ने उसे आवाज़ दी, 'स्मिथ!' उसने ऐसी मुद्रा बना ली जैसे उसने सुना ही नही। 'स्मिथ!' इस बार पीछे वाली आवाज जरा जोर से आई। सुनहले बालो वाला, बेवकूफ-सा दीखने वाला विलशर नाम का युवक उसे अपने पास की एक खाली मेज पर बुला रहा था। वह विलशर को अच्छी तरह जानता भी नही था। निमत्रण अस्वीकार कर देना सुरक्षित नही था। एक बार पहचान लिए जाने के बाद अकेली लडकी के समीप जाकर बैठ जाना उसके लिए व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नही था। ऐसा करने पर लोगो का ध्यान उसकी ओर तुरन्त आकृष्ट हो जाता। वह उस युवक के पास वाली मेज पर ही मुस्कुरा कर बैठ गया। वह बेवकूफ भी मुस्कुरा रहा था। उसकी तबियत आ रही थी कि एक घूसा मारकर उसका मुह तोड दे। उस लडकी वाली मेज कुछ ही मिनट बाद अन्य व्यक्तियो से भर गई।

लेकिन उसने अवश्य ही उसे अपनी ओर आते हुए देख लिया होगा। शायद वह इशारा समझ भी जाए। अगले दिन वह जान-बूझकर 'लच रूम' मे जल्दी आ गया। वह आज भी उसी मेज पर बैठी थी और अकेली थी। 'क्यू' मे उसके आगे जो व्यक्ति था वह ठिगने कद का, तेज चलने वाला, सुपारी जैसे मुह का आदमी था। उसका चेहरा छोटा और सपाट था। आखो से ऐसा लगता था कि वह हरेक को सन्देह की नजरो से देखता था। जब अपनी ट्रे लेकर विन्स्टन चला तो उसने देखा, वह आदमी लडकी की मेज की ओर ही सीधा बढा जा रहा है। उसकी आशाओ पर फिर तुषारपात हो गया। कुछ दूर आगे एक मेज बिलकुल खाली पडी थी। लेकिन वह आदमी वहा तक जाएगा, इसमे विन्स्टन को सन्देह था। ठंडे दिल से विन्स्टन लड़की की मेज की ओर चला। लेकिन कोई लाभ न था। जब तक लडकी उसे बिलकुल एकान्त मे न मिलती तब तक कोई फायदा नही था। तभी एक जोर की आवाज हुई। वह ठिगने कद का आदमी चारो खाने चित्त पडा था। उसकी ट्रे हाथ से छिटककर दूर जा पडी थी। कॉफी और शोरबा नीचे जमीन पर बह निकला था। वह विन्स्टन की ओर देखता हुआ उठ खडा हुआ। वह ऐसी सदिग्ध दृष्टि से देख रहा था जैसे विन्स्टन ने ही उसे गिरा दिया हो। लेकिन अच्छा ही हुआ। पाच सेकेंड बाद विन्स्टन उस लडकी के पास अकेला बैठा था। उसका दिल बडे जोरो से धडक रहा था। यह बहुत ज़रूरी था कि वे तुरन्त बातचीत कर ले। परन्तु वह अब बहुत भयग्रस्त था। लडकी को चिट

दिए एक सप्ताह हो चुका था। सम्भव है, उसने अब विचार बदल दिया हो। यह प्रेमकाण्ड सफल होगा, ऐसा सम्भव नही प्रतीत होता था। यथार्थ जीवन मे यह सम्भव नही था। वह शायद बोलता ही नहीं यदि उसकी नज़र ऐम्पिलफोर्थ पर न पड गई होती। वह कवि था। अपनी ट्रे हाथ मे लिए वह उपयुक्त मेज की तलाश मे चारो तरफ निगाह दौडा रहा था। अपने कवित्वपूर्ण ढग से ऐम्फिल-फोर्थ को विन्स्टन से कुछ स्नेह था। यदि वह उसे देख लेता तो अवश्य ही उसके पास आकर बैठ जाता। एक मिनट का वक्त था और इसी बीच काम कर लेना था। विन्स्टन और वह लडकी दोनो ही खा रहे थे। मन्दी आग पर पकी फली की शोरबेदार बनी सब्जी वे खा रहे थे। मन्द स्वर मे विन्स्टन ने बोलना शुरू किया। दोनो मे से किसी ने भी सिर ऊपर नही उठाया। सब्ज़ी का शोरबा वे लगातार चम्मच से पीते जा रहे थे। इसी बीच उन्होने आवश्यक बातचीत कर ली।

'दफ्तर से कब छुट्टी मिलती है?'

'साढे अठारह पर।' (शाम साढे छ: पर)

'हम कहा मिल सकते है?'

'विक्टरी स्क्वायर मे, स्मारक के पास।'

'वहा टेलीस्क्रीन बहुत है।'

'कोई हर्ज नही। भीडभाड खूब होनी चाहिए।'

'कोई सकेत?'

'नही। मेरे पास उस समय तक न आइएगा जब तक मेरे आसपास काफी आदमियो का जमघट न हो।'

'समय?'

'उन्नीस बजे।' (सात बजे सन्ध्या)

'अच्छी बात है।'

ऐम्फिलफोर्थ विन्स्टन को नही देख पाया और दूसरी मेज पर बैठ गया। लडकी ने जल्दी-जल्दी अपना लच समाप्त किया और चल दी। विन्स्टन सिगरेट पीता बैठा रहा। अपनी बात खत्म कर लेने के बाद फिर वे नही बोले। उन्होने एक दूसरे को यथासम्भव देखा भी नही।

विन्स्टन विक्टरी स्क्वायर मे समय के पूर्व ही पहुच गया था। वह उस स्मारक के चारो तरफ घूमता रहा जिसके शीर्ष पर बडे भाई की शकल थी। यह शकल

दक्षिण की ओर देख रही थी। दक्षिण आकाश में हवाई पट्टी संख्या एक के युद्ध मे यूरेशियन हवाई जहाज (जो कुछ वर्ष पूर्व ईस्ट एशियन थे।) खो गए थे। सडक पर उसी स्मारक के सामने घोडे पर एक मूर्ति बैठी थी। यह मूर्ति ओलिवर क्रामवेल की बतलाई जाती थी। सात बजकर पाच मिनट हो गए किन्तु वह लडकी नही आई। विन्स्टन के मन मे फिर वही पुराना डर उभर आया। शायद उसने अपना विचार बदल दिया है और इसीलिए नही आई है। वह धीरे-धीरे उत्तर की तरफ चला गया और सेण्ट मार्टिन चर्च को मन ही मन पहचान कर खुश होने लगा। वह कल्पना करने लगा, किसी समय इसी की घटिया, जब थी, तब बजते हुए वे कहती थी 'You owe me three farthings'। तभी उसने देखा कि लडकी स्मारक के सबसे नीचे वाले हिस्से मे खडी है। वह कोई पोस्टर पढने का बहाना कर रही थी। जब तक और लोग न पहुच जाएं तब तक उसके समीप जाना खतरनाक था। चारो ओर टेलीस्क्रीन लगे थे। तभी लोगो के चिल्लाने और भारी-भरकम ट्रको के चलने की आवाज सुनाई दी। यह आवाज़ बाईं ओर से आ रही थी। अकस्मात् सब लोग स्क्वायर के पार सडक की ओर दौडने लगे। लड़की भी स्मारक के कोने पर बने शेरो के सहारे मुडकर भीड मे मिल गई। विन्स्टन भी पीछे-पीछे भागा। दौडते-भागते हुए उसने किसी के मुह से सुना कि यूरेशियन सैनिक-बदियो का एक जत्था गुजर रहा है।

स्क्वायर के दक्षिणी भाग मे पहले ही भीड जमा थी। सामान्यतः, विन्स्टन भीड़ के एक कोने मे कही खडा हो जाया करता था, लेकिन इस बार धक्के मारता और धक्के खाता वह भीड के बीचोबीच घुस गया। शीघ्र ही वह लडकी के पास पहुंच गया। दोनो के बीच की दूरी मुश्किल से हाथ भर रही होगी। परन्तु दोनो के बीच एक बहुत मोटा मज़दूर खड़ा था। उसके साथ एक मोटी स्त्री भी खडी थी, वह शायद उसकी बीवी थी। इन दोनो ने हाड-मास की दीवार बना रखी थी जिसे पार करना कठिन था। विन्स्टन उनके बीच घुस गया और कोहनिया मारता हुआ और हाफता हुआ आगे बढ़ने का प्रयत्न करने लगा। थोडी देर के लिए ऐसा लगा कि वह दोनो के बीच पिस जाएगा, पर अन्त मे वह निकल ही आया। वह अब लड़की के बराबर खडा था। दोनो एक दूसरे से कधे सटाए खड़े थ और एकटक सामने देख रहे थे।

ट्रको की एक लम्बी पक्ति धीरे-धीरे गुजर रही थी। हर ट्रक के कोने पर

कठोर मुद्रा मे सशस्त्र संतरी खडे थे। उनके पास छोटी मशीनगन थी। भद्दी-सी हरी वर्दी मे पीले वर्ण के बहुत-से सैनिक भरे बैठे थे। वे उदास थे और उनके चेहरे से ऐसा लगता था कि वे मगोलियन ह। वे ट्रको के अदर से लोगो को ताक रहे थे। कभी-कभी कोई ट्रक उछलती तो बदी सैनिको के पैरो मे पडी बेड़िया खनक उठती। एक-एक करके अनेको ट्रक भरे जत्थे निकल गए। विन्स्टन जानता था कि वे सनिक बदी ट्रक मे हैं, लेकिन वह उनको कुछ कुछ देर बाद देख रहा था। लडकी का कधा और कोहनी तक का हाथ उसकी कमर तक चिपका हुआ था। उसके गाल विन्स्टन के इतने निकट थे कि वह उनकी उष्णता तक अनुभव कर रहा था। बहुत जल्दी ही लडकी ने बात शुरू कर दी। पहले की भाति निर्लिप्त स्वर से बिना ओठ हिलाए उसने अपनी बात इस तरह कही कि विंन्स्टन तो सुन लें लेकिन इसके बाद उसकी आवाज भीड तथा ट्रको के आने-जाने के शोर मे डूब जाए।

'क्या तुम मेरी आवाज़ सुन पा रहे हो?'

'हा।'

'रविवार को तीसरे पहर खाली हो?'

'हा।'

'तो ध्यान से सुनो। यह याद रखना। पेडिंगटन स्टेशन जाना...'

सैनिक भाषा मे उसने सक्षेप मे वह रास्ता बतला दिया जहा से उसे जाना था। आधे घटे की रेल-यात्रा के बाद स्टेशन से बाहर आना और बाई तरफ मुड जाना। दो किलोमीटर पैदल चलना, एक फाटक मिलेगा खुला हुआ, मैदान पर एक पगडंडी दिखलाई देगी, फिर घास के बीच से एक पगडडी जाती दिखलाई पड़ेगी, झाडियो के बीच भी यही पगडडी गई है, फिर एक सूखा पेड मिलेगा। इस पर काई जमी है। ऐसे लग रहा था जैसे सारा नकशा उसके दिमाग मे था।

'यह सब याद रहेगा?' उसने अन्त मे पूछा।

'हा!' विन्स्टन ने उत्तर दिया।

'पहले बाए मुडिए, फिर दाहिने और फिर बाए। फाटक पर साकल नही है।'

'ठीक है। वक्त?'

'कोई पन्द्रह (दिन के तीन) बजे। शायद कुछ इन्तजार करना पडे। मै दूसरे

रास्ते से पहुचूगी । अच्छा, आपको यह सब याद रहेगा न ?'

'हा ।'

'तो अब मेरे पास से जितनी जल्दी हो सके हट जाइए ।'

उसे यह कहने की आवश्यकता नही थी । परन्तु एक क्षण के लिए भीड से उनका निकलना, हिलना भी मुश्किल था । ट्रक अभी भी गुजर रहे थे । लोगो का मन अभी तृप्त नही हुआ था । पहले तो कुछ लोगो ने कुछ शोर मचाया, इसमे पार्टी-सदस्य ही अधिक थे, परन्तु बाद मे यह शोर बन्द हो गया । भीड मे उत्सुकता का भाव ही अधिक था । विदेशियो को, चाहे वे यूरेशिया के हो या ईस्ट एशिया के, अजब जानवर समझा जाता था । इन्हे बन्दियो के अलावा अन्य किसी भी रूप मे ओशनिया के लोग देख ही नही पाते थे । केवल उनकी झलक ही मिलती थी। लोगो को यह भी नही ज्ञात होता था कि अन्तत. उनका क्या होता था । हा, इतना जरूर मालूम था कि इनमे से कुछ को युद्धोपराधी घोषित करके फासी दे दी जाती थी । अन्य लापता हो जाते थे । शायद उनसे श्रम-शिविरो मे बेगार ली जाती थी । मगोल चेहरो के बाद अब यूरोपियनो जैसे चेहरे आने लगे थे । ये गन्दे थे, थके थे और सबकी दाढ़िया बढी हुई थी । गालो की हड्डिया उभर आई थी। कभी वे विन्स्टन की आखो मे आखे डालकर देखते थे इसके बाद बाद तुरन्त उनकी आखे हट जाती थी । अन्तिम ट्रक मे एक वृद्ध था । इसके हाथ की कलाइया एक दूसरे पर सामने रखी थी । ऐसा लगता था कि इस प्रकार हाथ पर हाथ रखने का उसे अभ्यास पड गया है । अब समय आ गया था कि विन्स्टन और लडकी एक दूसरे से विदा ले लेते । परन्तु अन्तिम क्षण, जब वे अलग होने वाले ही थे, तभी उसका हाथ विन्स्टन के हाथ के पास आया और विन्स्टन ने महसूस किया कि उसका हाथ थोड़ा-सा दबा ।

हाथ मे हाथ कोई दस सेकेंड रहा होगा । परन्तु उसे लगा कि वे दोनो युगो से एक दूसरे का हाथ पकडे है । उसे लडकी के हाथ की हर उगली का ज्ञान है । उसने उसकी लम्बी उगलियो को स्पर्श किया । श्रम से कठोर हुई हथेलियो को अनुभव किया। कलाई के नीचे के कोमल मास को छुआ। तभी उसे याद आया कि वह यह नही जानता कि उसकी आखे कैसी है ? शायद भूरी थी, परन्तु काले बालो वाले लोगो की आखें बहुधा नीली ही होती है । पीछे मुडकर उसे देखना तो मूर्खता होती । वे हाथ पकडे थे परन्तु भीड़ मे कोई देख नही सकता था । वे धीरे-

धीरे आगे बढ रहे थे। विन्स्टन के दिमाग मे अब लडकी की आखे नही बल्कि उस दुखी बन्दी की आखे घूम रही थीं।

(२)

विन्स्टन धूप-छाया मे होता हुआ गली से गुजर रहा था। जहा पेड नही होते थे, वहा वह धूप मे चल लेता था। पेडो के नीचे उसके बाई तरफ वाला मैदान नीला-सा था, यहा नीले फूलो के पौधे थे। हवा त्वचा का चुम्बन-सा लेती प्रतीत हो रही थी। दो मई थी। जगल के मध्य भाग मे कहीं से कबूतरो के जोडे की गुटरगू की आवाज आई।

वह कुछ जल्दी आ गया था। यात्रा मे कोई कठिनाई नही हुई। प्रकटत वह लडकी इतनी अनुभवी थी कि उसने विन्स्टन को साधारण भय का अनुभव भी नही होने दिया। विन्स्टन ने सोचा कि सुरक्षित स्थान तलाश करने का भार उस पर छोडा जा सकता है। वैसे तो लन्दन और गाव दोनो जगह एक-सा ही खतरा था। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में कम से कम टेलीस्क्रीन नही थे। परन्तु इधर-उधर छिपे माइक्रोफोन अवश्य हो सकते थे। इनसे ध्वनि ग्रहण करके सुनी जा सकती थी और आवाज पहचान कर आपको पकडा जा सकता था। दूसरे अकेले यात्रा करना भी सुरक्षित नही था, क्योकि ऐसा करने पर दूसरो का ध्यान आकृष्ट होता था। सौ किलोमीटर के दायरे मे आने-जाने के लिए पासपोर्ट को तसदीक नही कराना पडता था। परन्तु कभी-कभी पुलिस के गश्ती दस्ते स्टेशन पर मिल जाते थे। यदि वे किसी पार्टी-सदस्य को देख लेते तो उससे पासपोर्ट देखने को मागते और तरह-तरह के सवाल पूछते थे। परन्तु कोई गश्ती पुलिस का आदमी नही दिखलाई पडा और साथ ही उसने यह भी जान लिया कि उसका कोई पीछा भी नही कर रहा। गरमिया थी। ट्रेने मजदूरो से भरी थीं। वे सब छुट्टी मनाने की मुद्रा मे थे। काठ की बनी बेंचो वाले कम्पार्टमेंट मे बैठकर उसने यात्रा की। वह डिब्बा एक मजदूर के परिवार से भरा था। उसमे पोपले मुह वाली दादी से लेकर दूध पीता बच्चा तक शामिल था। वे लोग अपने सम्बन्धी के यहा जा रहे थे। इसके साथ ही, विन्स्टन को उन्होने यह भी बतलाया कि वे लोग वहा काले बाजार मे मक्खन भी खरीदेगे।

यहां कच्ची सडक कुछ और चौडी हो गई थी। जैसा कि उसने बताया था, पगडडी सामने थी। इस पर शायद पशु ही आते-जाते थे। यह पगडडी सीधी झाडियो मे चली गई थी। उसके पास घडी नही थी। लेकिन पन्द्रह अभी नही बजे थे। नीले फूलो के पौधे इतने अधिक थे कि उनको पैरो के नीचे आने से बचाना कठिन हो गया था। वह झुककर कुछ फूल तोडने लगा। उसने सोचा आने पर वह लडकी को फूलो का गुच्छा भेट करेगा। कुछ ही देर मे बडा-सा गुच्छा बन गया। अभी वह ठीक से फूल सूघ भी नही पाया था कि उसकी पीठ के पीछे से एक आवाज़ आई जिसे सुनते ही उसका खून सूख गया। परन्तु वह फूल बटोरता रहा। यही ठीक था। शायद वह लडकी ही हो। या शायद उसका पीछा ही किया जा रहा हो। पीछे देखने का मतलब अपने को दोषी सिद्ध करना था। वह एक के बाद एक फूल तोडता रहा। तभी उसके कधे पर हल्के से किसी ने हाथ रखा।

उसने सिर उठाया। वह लडकी ही थी। उसने सिर हिलाकर चुप रहने का सकेत किया। इसके बाद वे झाडियो से होकर जगल की तरफ बढ गए। स्पष्ट था कि वह उसके पहले भी इस जगह आ चुकी थी। वह गड्ढो से ऐसे बचती चली जा रही थी, जैसे उसका यह अभ्यास ही पड गया हो। विन्स्टन पीछे था। उसके हाथ मे फूलो का गुच्छा था। पहले तो उसे बडा चैन मिला। लेकिन कुछ देर उसके पीछे चलने के बाद विन्स्टन को अत्यधिक मानसिक हीनता की अनुभूति हुई। वह जब कभी मुडकर देखती तो विन्स्टन को लगता कि वह उसे पसन्द नही करेगी। स्टेशन से वहा तक पैदल आने मे मई की धूप की वजह से वह पसीने-पसीने हो गया था। वह स्वय अपने आपको बडा गन्दा लग रहा था। उसे लगता था कि लन्दन की गदी धूल उसकी रग-रग मे भरी है। उसे यह भी लगा कि अभी तक उसने दिन की रोशनी मे उसे नही देखा है। वह कूदती-फादती, झाड़ियो को पार करती जा रही थी क्योकि कही-कही रास्ता भी नही था। विन्स्टन उसके पीछे चलता हुआ अब एक ऐसी जगह आ गया था जो एक छोटा-सा घास का मैदान था और चारो तरफ पेडो से घिरा था।

'लो, आ गए।' उसने कहा।

वह अभी उससे कई कदम की दूरी पर खडा उसे देख रहा था। अभी तक उसका यह साहस नही हो रहा था कि वह उस लडकी के पास जाए।

वह कह रही थी, 'मै सडक पर इसलिए कुछ नही बोलना चाहती थी कि कही

कोई माइक न छिपा हो। मेरा ख्याल तो नही है कि वहा कोई माइक होगा, लेकिन हो सकता है . ऐसी दशा मे वे सुअर हमेशा आवाज़ पहचान सकते है। यहा हम सुरक्षित है।'

'हा, इन पेडो को देखो।' वे छोटे-छोटे थे। उन्हे कभी काट दिया गया था और अब उनके कटे हुए तनो मे से शाखे फूट रही थी। अब बासो का वन फिर तैयार हो रहा था। इनमे से एक भी वृक्ष अभी कलाई से अधिक मोटा नही था। 'यहा ऐसी कोई बडी चीज नही है, जहा माइक छिपाया जा सके। दूसरे मै यहा पहले भी आ चुकी हू।' वे केवल बातचीत कर रहे थे। अब वह पहले से अधिक पास आ गया था। वह बिलकुल सीधी उसके सामने खडी थी। उसके चेहरे पर मुस्कान थी, कुछ व्यगात्मक-सी, जिसमें यह भाव था कि वह इतना सुस्त क्यो है। नीले फूल ज़मीन पर बिखर गए थे। वे अपने ही आप हाथ से छूट गए। विन्स्टन ने उसका हाथ पकड लिया।

'क्या तुम मानोगी ?' उसने कहा, 'मै अभी तक यह भी नही जानता था कि तुम्हारी आखो की पुतलियो का रग कैसा है ?' वे भूरी थी। हल्की-भूरी और उनमे थोडी-सी श्यामलता भी थी। उसने अब यह देख लिया था।

'अब तुमने मुझे भली भाति देख लिया न ? क्या अब भी तुम मुझे पसन्द करती हो ?'

'हा।'

'मै उन्तालीस वर्ष का हू। मेरी एक पत्नी है। मै उससे अलग नही हो सकता। मेरे टखने पर ऐसा फोडा है, जो कभी अच्छा नही होता। मेरे पाच दात नकली है।'

'मुझे इसकी कोई फिक्र नही है।'

अगले क्षण ही, पता नही कैसे, वह उसकी बाहो मे थी। पहले तो उसे विश्वास ही नही हो रहा था कि वह उसके आलिगन-पाश मे सचमुच बधी है। उसका यौवनपूर्ण शरीर उससे बिलकुल चिपका था। उसके घने काले बाल उसके मुह पर छाए थे। और हा, सचमुच उसने अपना मुह ऊपर उठा लिया था और वह उसके लाल ओठो का चुम्बन ले रहा था। उसने अपनी बाहे, विन्स्टन के गले में डाल दी थी। अब विन्स्टन ने उसे नीचे लिटा दिया। उसने इसका कोई विरोध नही किया। वह जो चाहे कर सकता था। परन्तु उसे निकटता के अतिरिक्त अन्य कोई अनु-

भूति ही नही हो रही थी । उसे विश्वास नही हो रहा था। परन्तु निकटता की अनुभूति के साथ उसे कुछ गर्वानुभूति हो रही थी । उसे जो कुछ हो रहा था उसकी खुशी थी, लेकिन कोई शारीरिक इच्छा नही थी। अभी ऐसा करना जरूरत से ज्यादा जल्दबाजी दिखाना था । उसके यौवन और सौन्दर्य से वह भयभीत हो गया था । उसे बिना स्त्री के रहने की आदत पड गई थी। वह इसका कारण नही जानता था । अब लडकी उठ बैठी थी । उसके बालो मे नीले फूल लग गए थे । उनको उसने झाड दिया । वह उसके सहारे से बैठ गई और अपनी बाहे उसने विन्स्टन की कमर मे डाल दी ।

'कोई बात नही प्रियतम ! जल्दी नही है । अभी बहुत वक्त है। परन्तु यह स्थान कितना गुप्त है ? नही क्या ? मै एक बार लडकियो के एक दल के साथ जब भ्रमण के लिए आई तो खो गई । तभी मैने यह स्थान खोजा था । यदि कोई इधर आए तो हम उसके पैरो की आवाज सौ मीटर दूर से सुन सकेगे ।'

'तुम्हारा नाम क्या है ?' विन्स्टन ने पूछा ।

'जूलिया । और मै तुम्हारा नाम जानती हू—विन्स्टन, विन्स्टन स्मिथ ।' उसने जवाब दिया ।

'तुमको मेरा नाम कैसे पता लगा ?'

'मै तुमसे अधिक, और अच्छी तरह बातो का पता लगा सकती हू, प्रियतम ! बताओ मेरे एक कागज पर यह लिखकर देने के पूर्व कि 'मै तुमसे प्रेम करती हू' तुम मेरे बारे मे क्या सोचते थे !'

वह उससे झूठ नही बोलना चाहता था। परन्तु सत्य, कटु सत्य बतलाकर भी प्रेम आरभ करने का तरीका हो सकता था ।

उसने कहा, 'मै तुमसे घृणा करता था । मै तुम्हारे साथ बलात्कार कर तुम्हे मार डालना चाहता था । दो सप्ताह पूर्व तो मै पत्थर से तुम्हारा सिर फोड देने की बात सोच रहा था। सच बताऊ ! मै तुम्हे विचार-पुलिस से संबंधित समझता था ।'

जुलिया बडे आकर्षक ढग से हस रही थी। वह इसे अपने छद्म वेष की प्रशसा मान रही थी ।

'नही विचार-पुलिस का आदमी नही माना होगा तुमने ?'

'शायद नही । परन्तु तुम्हारा चेहरा, चालढाल, तुम्हारा सौन्दर्य, यौवन और

स्वास्थ्य देखकर मने सोचा—शायद—जैसा तुम समझ सकती हो···।'

'तुम सोचते होगे कि मै पार्टी-भक्त सदस्य हू । वाणी और आचरण से एकदम शुद्ध । मेरे दिमाग मे सिवा झण्डो, जुलूसो, नारो और खेलो और सामुदायिक भ्रमणो के अलावा कुछ नही रहता। और तुम सोचते होगे कि मौका मिलते ही मै तुम्हे विचार-अपराधी घोषित कर मरवा डालूगी।'

'हा, कुछ इसी तरह की बाते मेरे दिमाग मे थी। आजकल बहुत-सी लडकिया ऐसा करती है, यह तो तुम जानती हो।'

'यह सब इसकी वजह से है', कहते हुए तरुण सेक्स लीग की कमरपट्टी उतारकर जूलिया ने पेड की डाल पर फेक दी। कमर पर हाथ पडते ही उसे जेब का ख्याल आया और उसने जेब मे हाथ डालकर चॉकलेट निकाली। चॉकलेट के दो टुकडे करके आधा उसने विन्स्टन को दे दिया। हाथ मे लेने के पूर्व सुगध से ही विन्स्टन समझ गया था कि जूलिया के हाथ मे कोई असाधारण चॉकलेट है। चॉकलेट का रग गहरा और चमकीला था और वह रुपहले कागज मे लिपटा था। साधारण चॉकलेट भद्दे भूरे रग के होते थे और उनका स्वाद राख-सा लगता था। लेकिन कभी-कभी उसने जूलिया जैसा चॉकलेट भी चखा था। पहली सुगधित तरग से उसे एक ऐसी बात याद आ गई जो बडी कष्टदायी थी और भुलाए नही भूलती थी।

'तुम्हे कहा मिल गई वह ?' उसने पूछा ।

'चोर बाजार से !' उदासीन भाव से जूलिया ने कहा, मुझे ऐसी चीज चाहिए। मै खिलाडी हू। जासूस-दल की नेता हू। तरुण सेक्स लीग मे हफ्ते मे तीन शाम मै स्वेच्छा से काम करती हू। मैने उनकी ऊटपटाग बातो का लन्दन भर मे प्रचार करने मे घटो बरबाद किए है। मै हमेशा जुलूस मे झण्डा लेकर चलती हू। मै हमेशा खुश दिखलाई पडती हू और किसी भी काम को करने से जी नही चुराती। हमेशा भीड मे साथ चिल्लाना चाहिए—यही मेरी प्रत्येक को शिक्षा है। सुरक्षित रहने का भी यही रास्ता है।'

चॉकलेट का पहला छोटा टुकडा विन्स्टन की जीभ पर घुल गया था। बडा स्वादिष्ट था। परन्तु अब भी उसे कुछ याद आ रहा था। स्मृति स्पष्ट नही थी। उसे वह घटना इस तरह अस्पष्ट दिखलाई पड रही थी जिस तरह आखो के कोर से किसी चीज की छायामात्र दीखती है। उसने स्मृति को पीछे धकेल दिया। उसे

याद आ रहा था पर वह उस घटना की याद भी नही करना चाहता ।

'तुम अभी कम आयु की हो', उसने कहा, 'मुझसे दस या पन्द्रह वर्ष छोटी हो। तुमको मुझ जैसे आदमी मे आकर्षण की क्या बात दिखलाई दी ?'

'कुछ चेहरे मे थी। मैंने सोचा कोशिश करू। मुझे बडी जल्दी पता लग जाता है कि कौन-से लोग बहुत पार्टी-भक्त नही है । देखते ही मुझे पता लग गया कि आप 'उनके' विरुद्ध है ।'

'उनके' शब्द से विन्स्टन ने यह अर्थ लिया कि जूलिया का मतलब पार्टी अधिकारियो से है जो पार्टी के अन्तरग सदस्य होते है । वह उनका स्पष्ट रूप से परिहास कर रही थी। इससे विन्स्टन को बडी बेचैनी हो रही थी। हालाकि वह जानता था कि यदि वे कही भी सुरक्षित हो सकते थे तो यही वह जगह थी, जहा ऐसा होना सभव था । वह जूलिया की स्पष्टवादिता से चकित था । पार्टी के सदस्यो से आशा की जाती थी कि वे शपथ नही खाएगे, कम से कम इतनी जोर से तो नही कि अन्य कोई सुन ले । विन्स्टन कभी-कभी ही जोर से कसम खाता था। जूलिया पार्टी के अन्तरग सदस्यो के सबध मे ऐसे सारे शब्दो का प्रयोग कर रही थी जो पाखाने आदि की दीवारो पर लिखे दिखलाई पड जाते थे । उसे उसका यह काम बहुत अधिक नापसन्द नही आया। वह पार्टी के खिलाफ है, यह इसका एकमात्र प्रकट लक्षण था । उसे यह स्वाभाविक और स्वस्थ प्रतीत हुआ । अब वे धूप-छाया में एक दूसरे की कमर मे हाथ डाले घूम रहे थे । पट्टी उतार देने के बाद जूलिया बड़ी कोमल लग रही थी। वे बहुत धीरे-धीरे बाते कर रहे थे । जूलिया ने कहा कि छिपने के गुप्त स्थान के बाहर उनका चुप रहना ही उचित है । वे अब घूमते-घूमते जगल के किनारे पहुच गए थे । जूलिया ने उसे रोक दिया ।

'खुले मे मत जाओ । शायद कोई देख रहा हो । हम पेड की शाखाओ के पीछे अधिक सुरक्षित है ।'

अब वे झाडियो की छाया मे खडे थे । धूप हजारो पत्तियो से छनकर उनके मुह पर पड रही थी और किरणो मे अब भी गर्मी थी। विन्स्टन ने सामने के मैदान की तरफ देखा। अकस्मात वह उस जगह को पहचान-सा गया । वह जानता था वह जगह पुराना चरागाह थी। इसमे चारो तरफ पगडडिया थी और इधर-उधर कुछ टीले थे । दूसरी ओर झाडियो की और पेड़ो की टहनियां हवा मे बहुत धीरे-धीरे हिल रही थी। दूर से लगना था जैसे वे किसी रमणी के केश हो।

अवश्य ही आसपास कही छोटा-मोटा ताल था जिसमे बतखे विचर रही थी।

'यहा कही ताल है क्या ?' उसने बहुत धीरे-धीरे से पूछा।

'हा ! दूसरे मैदान के किनारे पर। उसमे बडी-बडी मछलिया है। वे पेडो की छाया मे ताल मे तैरती दीखती है।'

'यह तो बिलकुल स्वर्णिम प्रदेश है।' वह बुदबुदाया।

'स्वर्णिम प्रदेश ?'

'स्वर्णिम प्रदेश नही। यह एक ऐसे दृश्य का नकशा है जो अक्सर स्वप्न मे मुझे दिखलाई पडता है।'

'देखो ! देखो !' जूलिया ने कहा।

कोई पाच मीटर दूर बिलकुल उनके मुह की सीध मे पेडो की एक डाल पर एक चिडिया आ बैठी थी। वह धूप मे थी और वे छाया मे, इसलिए उसने उनको नही देखा। डाल पर बैठते ही उसने पंख फैलाए। इसके बाद फिर उन्हे सिकोड लिया। थोडी देर के लिए अपना सिर झुका लिया जैसे सूर्य को प्रणाम कर रही हो और इसके बाद कूकना शुरू कर दिया। तीसरे पहर की शान्ति मे वह आवाज चारो तरफ गूज रही थी। विन्स्टन और जूलिया मारे आनन्द के एक दूसरे से और चिपक गए। कई मिनट गुजर गए किन्तु इस चिडिया का सगीत बन्द न हुआ। हर बार नई आवाज वह कण्ठ से निकाल रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह अपने गाने की कला का जान बूझकर उनके सामने प्रदर्शन कर रही है। कभी वह कुछ सेकेडो के लिए रुक जाती थी और अपने पंख सभाल लेती थी और फिर अपनी छाती फुलाकर गाना शुरू कर देती थी। विन्स्टन अजीब-सी श्रद्धा से वह कुहकना सुन रहा था। किसके लिए, क्यो, चिडिया गा रही थी, कोई साथी, कोई प्रतिद्वन्दी उसे देख नही रहा था। वह इस जगल के किनारे के एक पेड की टहनी पर एकान्त मे बैठकर बेकार अपनी सगीत-लहरी को क्यो नष्ट कर रही थी ? वह सोचने लगा कि क्या कही सचमुच कोई माइक्रोफोन इधर कही छिपा है ? वह और जूलिया बहुत धीरे-धीरे बोले थे। माइक उनकी बाते तो नही सुन सका होगा। परन्तु इस चिडिया का गाना तो माइक मे जरूर जा रहा होगा। सभवत दूसरी ओर इस गाने को कोई आदमी बडे ध्यान से सुन रहा होगा। परन्तु धीरे-धीरे संगीत ने उसकी सारी चिन्ताए हर ली। ऐसा लगा कि सगीत तरल बनकर धूप मे मिल गया है और सारे जगल पर छिडक दिया गया है। अब उसने सोचना बद कर

दिया था और वह केवल अनुभव कर रहा था । जूलिया की कमर उसकी बाहो मे थी । वह मुलायम और गरम थी । उसने जूलिया को और पास खीच लिया और अब उनकी छातिया एक दूसरे से चिपकी थी । ऐसा लग रहा था कि उसके शरीर मे जूलिया का शरीर घुला जा रहा है । जहा भी उसका हाथ जाता जूलिया से उसे पूर्ण समर्पण मिलता । उनके मुह एक दूसरे से मिले थे । वह स्पर्श उन कठोर चुबनो से बिलकुल भिन्न था जिनका वे पहले कभी अनुभव कर चुके थे । जब दोनो ने एक दूसरे के पास से अपना मुह हटाया तो दोनो के मुह से ठडी सास निकल गई । चिडिया अब डरकर उड गई ; थोड़ी देर उसके पखो की फटफटाहट सुनाई देती रही ।

अपने ओठो को विन्स्टन ने जूलिया के कानो पर रखकर कहा, 'अब ।'

'यहा नही', उसने उत्तर दिया । 'आओ अपने गुप्त स्थान पर वापस चले । वहा हम अधिक सुरक्षित रहेगे ।'

वे जल्दी-जल्दी उसी जगह फिर वापस चले गए। रास्ते मे पैर के नीचे एकाध सूखी टहनी के आ जाने से उसके टूटने की आवाज़ अवश्य हुई । वे जब पेडो से घिरी हुई उस जगह पहुच गए तो वह उसकी तरफ मुह करके खडी हो गई । दोनो की सास बडी तेजी से चल रही थी । परन्तु जूलिया के ओठो पर हलकी मुस्कुराहट थी। वह एक क्षण उसकी तरफ देखती हुई खडी रही । इसके बाद उसने अपनी वर्दी के जिपर को छुआ । और फिर लगभग वैसा ही हुआ जैसा उसने सपने मे देखा था । उसने अपने कपडे एकदम उतार डाले । उसकी त्वचा सूर्य की किरणो मे दूध की तरह चमक रही थी। क्षण भर उसने जूलिया के शरीर को नही देखा । उसकी आखे जूलिया के मुह पर जमी थी जिस पर अब भी मुस्कु-राहट थी। वह झुक गया और उसने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया ।

'क्या तुम पहले भी ऐसा कर चुकी हो ?'

'निस्सन्देह । सैकडो बार—सैकडो बार नही तो कम से कम बीसियो बार ।'

'पार्टी-सदस्यो के साथ ?'

'हां, हमेशा पार्टी-सदस्यो के साथ ही ।'

'क्या पार्टी के अन्तरग सदस्यो के साथ भी ?'

'नही, उन सुअरो के साथ नही । लेकिन यदि मौका हो तो उनमे बहुतेरे ऐसा काम करने को मिल जाएगे । वे इतने दूध के धुले नही है, जैसा वे कहते है ।'

उसका दिल बहुत ज़ोरो से धडकने लगा। वह बीसियो बार ऐसा कर चुकी है। वह चाहता था ऐसा सैकडो, हजारो बार हुआ हो। जिस बात से ज़रा भी भ्रष्टाचार का सकेत मिलता था वही बात उसे बडी-बडी आशाए बधा देती थी। कौन जानता है, सभव है पार्टी ऊपरी तौर पर मजबूत दीखती हो लेकिन अन्दर से सड गई हो। बहुत मुमकिन है कि यह बलिदान और त्याग के सिद्धान्तो का प्रचार अन्दर की सडाध छिपाने को हो। वह यदि सबको कोढी या आतशक रोग का शिकार बना दे तो कितना मजा आएं। वह पार्टी को खत्म कर देने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। अब विन्स्टन ने जूलिया को नीचे लिटा दिया। वे एक दूसरे के बिलकुल सामने थे।

'सुनो। तुमने जितने आदमियो के साथ संभोग किया है, उतना ही अधिक मै तुमसे प्यार करता हू। यह तुम समझ गई न ?'

'हा।'

'मै सतीत्व को, अच्छाई को पसन्द नही करता। उससे घृणा करता हूं। मै कोई गुण या भलाई कही भी नही चाहता। मै चाहता हू आदमी बिलकुल भ्रष्ट हो जाए।...

'...क्या तुम्हे ऐसा करना पसन्द है ? मेरा मतलब केवल अपने आपसे नही है, मै केवल सभोग के आनंद की बात पूछता हू।' विन्स्टन फिर बोला।

'हा, बहुत।'

वह यही सुनना चाहता था। केवल एक आदमी का प्रेम नही, परन्तु काम की तीव्र इच्छा ही वह शक्ति थी जो पार्टी को चूर-चूर कर देती। उसने घास और नीले फूलो पर उसे दबा लिया। इस बार कोई कठिनाई नही हुई। अब उसकी सास इतनी तेज़ नही चल रही थी। कुछ समय बाद वे एक दूसरे से अपने आप अलग हो गए। धूप मे कुछ और गरमी-सी आ गई थी। दोनो को नीद-सी आ गई। उसने अपने कपडे खीचकर कुछ भाग जूलिया पर डाल दिया। दोनो एक साथ सो गए और आधे घटे तक सोते रहे।

विन्स्टन की नीद पहले खुली। वह उठकर बैठ गया और जूलिया का चेहरा देखता रहा। वह उसकी हथेली का तकिया बनाए सो रही थी। उसका मुह सुन्दर था। अन्य चीज़े उतनी अच्छी नही थी। आखो के नीचे हलके-से गड्ढे थे। काले घने बालो का जूड़ा काफी मोटा था। उसे खयाल आया कि वह उसका

जाति-नाम नही जानता। यह भी नही जानता वह कहा रहती है ?

वह तरुण और सबल शरीर नीद मे बिलकुल असहाय पडा था। उसे दया आ रही थी और यह इच्छा हो रही थी, वह उसकी हर प्रकार से रक्षा करे। परन्तु अब उसमे वह कोमलता नही थी जो उसने झाडियो की छाया के नीचे अनुभव की थी। उसने कपडे हटाकर उसके श्वेत शरीर को देखा। उसने सोचा कि पुराने जमाने मे लोग लडकी की कोई वाछनीयता उसके शरीर को देखकर ही तय करते थे। परन्तु आजकल विशुद्ध प्रेम या विशुद्ध वासना जैसी कोई चीज नही थी। हर भाव मे घृणा और भय था। उनका आलिगन सघर्ष था। और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति विजय। उन्होने पार्टी को करारा घूसा मारा था। यह राजनीतिक कर्म था।

(३)

जूलिया ने कहा, 'हम एक बार यहा और आ सकते है। किसी भी स्थान का उपयोग दो बार किया जा सकता है। बेशक, महीने दो महीने बाद ही यहा आना न हो सकेगा।'

जागते ही जूलिया की चालढाल समान्य पार्टी-सदस्य की भाति हो गई। वह एकदम सतर्क थी और शीघ्रतापूर्वक तैयार हो गई। पहले उसने अपने कपडे पहने। इसके बाद कमर के चारो ओर सेक्स लीग की पट्टी बाध ली। और इसके बाद वापसी यात्रा की बाते विस्नारपूर्वक निश्चित करने लगी। स्पष्ट था कि जूलिया मे जैसी व्यवहार-बुद्धि थी, वैसी विन्स्टन मे नही थी। ऐसा लगता था कि उसे लन्दन और उसके आसपास के क्षेत्र के बारे मे बहुत ज्ञान था। इसका कारण यह था कि उसने अनगिनत सामुदायिक-भ्रमणो मे भाग लिया था। अबकी बार उसने जाने के लिए जो रास्ता तय किया वह आने वाले मार्ग से बिलकुल भिन्न था। वह एक दूसरे ही रेलवे स्टेशन पर जा निकलता था। 'जिस रास्ते से आओ उससे वापस कभी मत लौटो।' उसने यह कहकर महत्वपूर्ण सिद्धान्त स्थिर कर दिया था। पहले वह रवाना होगी। उसके रवाना होने के आधे घटे बाद विन्स्टन को प्रस्थान करना था।

उसने चार दिन बाद मिलने का एक स्थान भी निश्चित कर दिया। वे वहा दफ्तर का काम खत्म करने के बाद मिलते। वह स्थान निर्धनो की बस्ती में था। इस

बस्ती मे एक चोर बाजार था। यहा बराबर भीड रहती थी और बडा शोर होता रहता था। वह इधर-उधर दूकानो पर जूतो के फीते या सीने का तागा खरीदने के बहाने घूमेगी। यदि सब ठीक-ठाक हुआ तो वह अपनी नाक साफ करेगी। नही तो विन्स्टन को बिना उसे पहचाने पास से गुजर जाना होगा। यदि भाग्य ने साथ दिया तो भीड मे पन्द्रह मिनट बातचीत की जा सकेगी और अगली मुलाकात का स्थान भी तय किया जा सकेगा।

जैसे ही विन्स्टन ने उसके निर्देश समझ लिए वैसे ही उसने कहा, 'अब मै चलती हू। मुझे साढे उन्नीस (सध्या साढे सात) बजे वापस पहुचना है। मुझे तरुण सेक्स विरोधी लीग के दफ्तर का काम करना है। कुछ पर्चे-वर्चे बाटने होगे। क्या वाहियात काम है! है नही! जरा मेरे कपडे तो झाड दीजिए। मेरे बालो मे पत्ते आदि तो नही लगे है? ठीक से देख लीजिए। अच्छा तो विदा, प्रियतम, विदा।'

उसने अपने आपको विन्स्टन की बाहो मे छोड दिया। और आलिगन पाश मे बाधकर जोरो से चुम्बन लिए। एक क्षण ही बाद वह पेडो की शाखाओ को हटाकर जगल मे खो गई। ऐसा करते हुए उसने बहुत ही कम आवाज की। अब भी उसने जूलिया का जाति-नाम या उसके रहने का पता नही पूछा था। परन्तु इससे कोई भी फर्क नही पडता था, क्योकि उनके घर मे मिलने या परस्पर पत्र-व्यवहार करने की कोई सभावना नही थी।

वे फिर उस जगल वाले गुप्त स्थान मे कभी नही गए। मई मे फिर प्रेमालाप करने का केवल एक ही अवसर और मिल सका। यह स्थान जूलिया का जाना हुआ था। यह चर्च का खण्डहर था। उस स्थान पर तीस वर्ष पूर्व एक अणुबम गिरा था। वहा पहुच जाने के बाद छिपना आसान था, लेकिन वहा से निकल कर आना या जाना खतरनाक था। शेष दिनो वे केवल सडको या पार्को आदि मे भीड के बीच ही मिल सके थे। सडको पर एक विशेष ढग से बातचीत करना सभव था। वे फुटपाथ पर चलते-चलते बाते करते और यदि आसपास कही भी किसी पार्टी-सदस्य को आता देखते या किसी टेलीस्क्रीन के समीप पहुच जाते तो तुरन्त बिना वाक्य समाप्त किए ही रुक जाते और इसके बाद फिर छूटे हुए वाक्य से बिना सिर उठाए बाते करते और अलग हो जाते। जब दूसरे दिन मिलते तो बिना परिचय के ही बाते शुरू कर देते। जूलिया तो इस प्रकार की बातचीत की बहुत

ही अभ्यस्त जान पडती थी। ऐसी बातचीत को वह 'किश्तो मे बातचीत' कहती थी। बिना ओठ हिलाए उसे बाते करने का अद्भुत अभ्यास था। रात की मुलाकातो मे वे किसी प्रकार सबकी आखो मे धूल झोककर चुम्बन भी ले लेते थे। वे इस समय एक छोटी गली से चुपचाप गुजर रहे थे (जूलिया गलियो मे कभी नही बोलती थी। मुख्य सडक पर आते-जाते भीड मे ही वे बाते करते थे।) तभी कानो को फाड देने वाला धमाका हुआ। जमीन एकदम ऊची उठ गई। विन्स्टन गिरा पडा था और उसके चोटे आ गई थी। पास ही कही राकेट बम गिरा था। अकस्मात् उसे जूलिया का चेहरा दीखा—एकदम सफेद, बिलकुल खडिया की तरह सफेद। उसके ओठ तक सफेद हो गए थे। वह मर गई थी। उसने तुरन्त उसे थाम लिया। तब उसे पता लगा कि वह गरम और जीवित चेहरे को चूम रहा है। परन्तु उसके मुह मे कुछ धूल प्रविष्ट हो गई थी। दोनो के चेहरो पर वह धूल जम गई थी।

कभी-कभी वे लोग अपने मुलाकात के स्थान पर पहुच कर भी बात नही करते थे। कारण, कभी पुलिस का गश्ती दल होता था तो कभी ऊपर हैलीकॉप्टर मंडरा रहा होता था। यदि कुछ कम खतरा हुआ तो भी मिलना कठिन था। विन्स्टन सप्ताह मे साठ घटे काम करता था। जूलिया को इससे कुछ और अधिक घंटे काम करना पड़ता था। उनकी साप्ताहिक छुट्टिया अक्सर अलग-अलग पडती थी क्योकि छुट्टी का दिन काम की अधिकता या कमी के अनुसार निश्चित किया जाता था। जूलिया की कोई शाम शायद ही कभी खाली होती थी। वह व्याख्यानो और प्रदर्शनो में, तरुण सेक्स विरोधी लीग के प्रचार-साहित्य के वितरण, घृणा सप्ताह के लिए झडे तैयार करने, बचत अभियान के सिलसिले छोटी-छोटी रकमे जमा करने के काम मे तथा अन्य ऐसे ही कामो मे बहुत ज्यादा वक्त देती थी। उसका कहना था, ऐसा करने से अपने प्रेमकाण्ड पर पर्दा डाले रखने मे सहायता मिलती है। यदि आप छोटे-छोटे नियमो का पालन करते है तो बडे नियम कभी-कभी तोड सकते है। उसने प्रयत्न करके विन्स्टन को इस बात के लिए राजी कर लिया था कि अन्य उत्साही पार्टी-सदस्यो की भाति वह भी सप्ताह मे एक सध्या स्वेच्छा से गोला-बारूद के कारखाने मे कार्य करे। अतएव विन्स्टन सप्ताह मे एक बार सध्या को चार घटे बडे कष्ट से बिताता था। वह ढिबरी के हलके प्रकाश में बमो के फ्यूजो के छोटे-छोटे टुकडो को आपस मे जोडता था। यहा एक तरफ तो हथौडे बजते थे और दूसरी ओर टेलीस्क्रीन का सगीत चलता था। दोनो मिलकर

अजब समा बाध देते थे ।

जब वे चर्च वाली मीनार के पास मिले तो उनकी जो बाते अधूरी रह गई थी, वह उन्होने पूरी कर ली । तीसरे पहर का वक्त था और बाहर बडी गर्मी थी । जिस स्थान पर वे ऊपर मीनार मे थे, वह जगह भी बडी गर्म थी और वहा कुछ बदबू भी थी । यह बदबू कबूतरो की बीट की थी । वे वहा धूल भरे, पत्तिया और टहनी से भरे फर्श पर घटो बैठे बाते करते रहे । वे बारी-बारी से उठकर मीनार की नुकीली दरारो मे झाककर नीचे देख लेते थे, कही कोई आ तो नही रहा ?

जूलिया छब्बीस वर्ष की थी ; वह लडकियो के होस्टल मे रहती थी । उसके साथ तीस और लडकिया रहती थी । (हमेशा होस्टल की सदस्याए गन्दी बातें करती रहती थी । उनसे जुलिया को बडी घृणा थी ।) और वह जैसा कि विंस्टन ने अनुमान किया था, कथा-विभाग के उपन्यास-लेखन यत्र पर काम करती थी । यह यत्र बिजली के मोटर से चलता था । वह बहुत चतुर तो नही थी । लेकिन यन्त्रों से वह घबराती नही थी । वह उपन्यास लिखने की सारी यान्त्रिक प्रक्रिया का वर्णन कर सकती थी । उसे आयोजन समिति के निर्देशो से लेकर दोहराने वाले लेखको के दल के कार्य तक का पूरा ब्यौरा मालूम था । परन्तु वह उपन्यास के छपकर तैयार हो जाने वाले रूप मे रुचि नही रखती थी । वह पढने-बढने की फिक्र में नही रहती थी । जूतो के फीतो या मुरब्बो की तरह किताबे भी वस्तु थी जिनका उत्पादन होना चाहिए । बस, इसमे अधिक कुछ नही ।

सन् १९६० के आरभ की बातो की उसे कोई याद नही थी । क्रान्ति के पूर्व की दशा के बारे मे केवल उसके दादा बात किया करते थे । वह जब आठ वर्ष की थी, तभी वे लापता हो गए थे । स्कूल मे वह हॉकी टीम की कप्तान थी । उसने लगातार दो वर्षों तक शारीरिक व्यायाम की ट्राफी जीती थी । जासूस दल की वह नेता भी रही है । तरुण सेक्स विरोधी लीग की सदस्या बनने के पूर्व वह यूथ लीग की शाखा-सेक्रेटरी भी थी । चारित्रिक मामलो मे उस पर कभी कोई दाग नही आया । कथा-विभाग के एक विशिष्ट स्थान पर उसको अपनी चारित्रिक योग्यता के कारण ही काम मिला था । इस जगह मजदूरो के लिए सस्ते किस्म के उपन्यास छापे जाते थे । उस जगह का नाम उन लोगो ने 'कूडा-करकट घर' रख छोडा था । वह वहा ऐसी पुस्तको को तैयार करने मे मदद करती थी जो मुहरबद कागजी लिफाफो मे बाधकर बाजार मे भेजे जाते थे । इन पुस्तको के नाम होते

थ 'दुष्टता की कहानिया' या 'लडकियो के स्कूल मे एक रात' आदि। इन किताबो को युवक मजदूर यह समझकर खरीदते थे कि वे कोई गैर कानूनी चीज खरीद रहे है।

'ये कैसी किताबे है ?' विन्स्टन ने उत्सुकतावश पूछा ।

'ओह, बिलकुल रद्दी। बडी बोर। उनके पास छ कथानक है। वे उन्ही मे हेरफेर करके नई-नई पुस्तकें छापते रहते ह। मै तो केवल उस मशीन पर काम करती हू। मै कभी लेखको के दल मे नही रही। मै साहित्यिक नही हू।'

उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विभागीय अध्यक्ष को छोडकर जिस जगह जूलिया काम करती थी, वहा सब लडकिया ही काम करती थी। कारण यह था कि लडकियो की अपेक्षा आदमियो की कामवृत्ति अधिक असयमी होती है, इसलिए जो गदगी वहा छपती थी, उससे लडको के बिगड जाने की अधिक आशका थी। जूलिया ने बतलाया, 'वे लोग तो वहा विवाहित स्त्रियो को भी रखना पसन्द नही करते। कुमारियो को बडा शुद्ध समझा जाता है। लेकिन इस नियम का अपवाद मै ही हू।'

जूलिया का पहला प्रेम-काण्ड सोलह वर्ष की अवस्था मे साठ साल के एक पार्टी-सदस्य से हुआ था। बाद मे उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए आत्महत्या कर ली। जूलिया ने कहा, 'अच्छा ही किया। वर्ना वह अपने बयान मे मेरा भी नाम ले देता।' तब से फिर अनेक प्रेम-काण्ड हुए। उसके लिए जीवन साधारण और सीधा-सादा था। आप जीवन का आनन्द उठाना चाहते है। वे (पार्टी वाले) आपको रोकते है। आप नियम भग करते है। वे आपको आनन्द से वचित रखने के लिए नियम बनाते है। आप अपनी जान बचाते हुए नियम भग करते है। यह बिलकुल स्वाभाविक है। वह पार्टी से घृणा करती थी। और वह स्पष्ट शब्दो मे यह बात कह भी देती थी। वह कभी नई भाषा के शब्दो का प्रयोग नही करती थी। नई भाषा का वही शब्द वह काम मे लाती थी, जो सर्वसाधारण के प्रयोग में आने लगे थे। उसने 'ब्रदरहुड' का नाम नही सुना था और उसका अस्तित्व भी वह नही जानती थी। वह पार्टी के विरुद्ध ऐसा कोई विद्रोह नही करना चाहती थी जो असफल हो जाए। चतुराई इसमे थी कि नियम तोडो और जिन्दा बचे रहो। वह सोच रहा था—जूलिया जैसे न जाने कितने और व्यक्ति तरुण पीढी मे होगे जो पार्टी को आसमान की तरह अपरिवर्तनीय समझते होगे। वे उसकी सत्ता के विरुद्ध कभी आवाज नही उठाते थे। केवल, धोखा देते थे, ठीक उसी तरह जिस प्रकार खरगोश

कुत्तो को धोखा देते है।

उन्होने विवाह की सभावना पर कभी विचार नही किया। यह बात इतनी असभव थी कि उसके सबध मे विचार करना भी व्यर्थ जान पडता था। यदि विन्स्टन कैथराइन से किसी प्रकार अपना पिण्ड छुडा भी लेता तो भी पार्टी-कमेटी ऐसे विवाह की कभी अनुमति नही देती। विवाह का तो दिवास्वप्न भी नही देखा जा सकता था।

'वह कैसी थी ? आपकी बीवी ?' जूलिया ने पूछा।

'तुमने नई भाषा का यह शब्द सुना है, 'अच्छे विचारो वाली ?' जिसका अर्थ होता है, जो पार्टी के विरुद्ध कोई बात ही न सोच सके—ऐसी थी वह ! घोर पार्टी-भक्त !'

'मैने शब्द तो नही सुना, लेकिन इस प्रकार के लोगो को जानती अवश्य हूं।'

इसके बाद वह अपने दाम्पत्य जीवन की कथा उसे सुनाने लगा। लेकिन ताज्जुब की बात यह थी कि कथा का विशिष्ट भाग जूलिया को पहले ही ज्ञात था। जूलिया ने स्वय ही उसे बतला दिया कि वह किस प्रकार विन्स्टन के स्पर्श करते ही अपने अग-प्रत्यग को कठोर बना लेती होगी, और फिर उसे यह लगता होगा कि कैथराइन उसे पीछे धक्का देकर हटा रही है, हलाकि उसके हाथ विन्स्टन के चारो ओर होते होगे। जूलिया के साथ ये बाते करने मे विन्स्टन को कोई असुविधा नही हो रही थी। अब कैथराइन की स्मृति दुखदायी न होकर कडवी हो गई थी।

उसने कहा, 'मै यह सब भी बरदाश्त कर लेता किन्तु एक बात मुझे असह्य थी।' इसके बाद विन्स्टन ने उस दिन का विशेष और अनिवार्य कार्यक्रम बतलाया जिस रात कैथराइन उसके साथ ही सोती थी। 'कैथराइन को स्वय इस प्रकार पर्यकशायिनी बनना नापसन्द था, लेकिन वह मानती नही थी। वह इस रात के कार्यक्रम को एक विशिष्ट नाम से पुकारती थी, जिसकी शायद तुम कल्पना भी नही कर सकती।'

'क्यो ? वह कहती होगी, यह पार्टी के प्रति हमारा कर्तव्य है।' जूलिया ने तत्काल कहा।

'तुम्हे कैसे मालूम ?'

'मैने भी स्कूल मे पढा है। वहा सोलह वर्ष से ऊपर की लडकियो को काम-

विज्ञान पर सप्ताह मे एक बार व्याख्यान दिया जाता है। तरुण सस्था में भी। वे ये बाते वर्षो दोहराते हैं और कूट-कूटकर दिमाग मे भर देते है। बहुत-सी लड-किया तो अक्षरश मान जाती है। लेकिन इस बारे मे विशेष कुछ भी नही कहा जा सकता, क्योकि कुछ लोग बडे पाखण्डी होते हैं।

इसके बाद जुलिया ने इस विषय मे और विस्तार से बाते की। जूलिया हर बात अपनी कामुकता पर घटा देती थी। इस विषय मे वह बडी तेज थी। वह काम-सबधी हर पार्टी-नियम की गहराई को समझती थी—वे बातें भी, जिन्हे विन्स्टन नही जानता था। पार्टी न केवल काम-भावनाओ को इसलिए समाप्त कर देना चाहती थी क्योकि इससे हर व्यक्ति का अपना एक अलग मानसिक-जगत बन जाता है, अपितु इसलिए भी कि ऐसा होने देने से पार्टी का व्यक्ति पर नियत्रण कम हो जाता था। दूसरे यौन अभावो से लोगो को हिस्टीरिया आने लगता था। यह वाछनीय था। इसको युद्ध-ज्वर के रूप मे बदला जा सकता था। लोग इस कारण नेता की पूजा करने के लिए इच्छुक हो जाते थे। जूलिया का कहना था

'प्रेम करने मे आपकी शक्ति खर्च होती है। इसके बाद आप प्रसन्नता अनुभव करते है तथा अन्य चिन्ताओ का आप पर असर नही होता। पार्टी को यह सह्य नही है। वे चाहते है, हर समय आपमे से शक्ति फूटती रहे। ये मार्चे, हर्षध्वनिया, झडियो का हिलाना, इन सबकी अधिकता यौन विकृति का चिह्न है। यदि आप अन्त करण से प्रसन्न है तो बडे भाई या तीन वर्षीय योजना के सबध मे आपको उत्तेजित होने की क्या आवश्यकता है? दो मिनट की घृणा प्रचार की फिल्मे तथा अन्य वैसी ही चीजें देखकर आप क्यो उत्तेजित होगे?'

विन्स्टन सोचता था कि यह बात बिलकुल ठीक है। कौमार्य या ब्रह्मचर्य व्रत और राजनीतिक अधभक्ति मे अवश्य ही यही सबध था। पार्टी को भय, घृणा करने वाले तथा पागलो जैसी बातो पर विश्वास कर लेने वाले लोगो की जरूरत थी। यह सब बिना इस प्रकार कोई शक्ति दबाए किस प्रकार सभव होता? यौन-भावना पार्टी के लिए खतरनाक थी। इसलिए पार्टी ने इसे यह रूप दे रखा था। यही चाल उन्होने माता-पिता के अभिभावकत्व से भी खेली थी। परिवारो का उन्मूलन असभव था। लोगो को बच्चो से बडा प्यार होता है। बच्चो को ऐसी शिक्षा दी गई थी कि वे अपने मा-बाप के ही विरुद्ध हो गए थे और उन पर जासूसी करते थे। परिवार विचार नियत्रक पुलिस की शाखा बन गए थे। ऐसी तरकीब

की गई थी—एक दूसरे के निकटतम व्यक्ति सदा एक दूसरे पर जासूसी करते थे। यह जासूसी दिन-रात चलती थी।

पता नही क्यो, वह फिर सहसा कैथराइन की बात सोचने लगा था। कैथ-राइन को यदि विन्स्टन के विचारो का ज़रा भी पता लग जाता तो वह निस्सदेह बिना सकोच उसे विचार-पुलिस के हवाले कर देती। परन्तु उसके माथे पर तीसरे पहर की गरमी की वजह से पसीना बह निकलता था और इसके कारण ही उसे कैथराइन की याद आ गई थी। ग्यारह साल पहले ऐसी ही गरमियो के दोपहर मे जो बात हुई थी, वह उसकी बात जूलिया को सुनाने लगा।

दोनो का विवाह हुए तीन-चार महीने हो चुके थे। केट के समीप एक सामु-दायिक भ्रमण मे वे रास्ता भूल गए। वे कुछ ही पीछे थे, लेकिन वे भूल से गलत मुड गए। आगे पहुचकर उन्होने देखा कि एक चट्टान के बाद रास्ता खत्म हो जाता है। चट्टान के नीचे कोई दस या बीस फीट नीचा गड्ढा था। गड्ढे मे बडे-बडे पत्थर थे। कैथराइन ने यह जानकर कि वे रास्ते भूल गए है, बडी बेचैन हो उठी। भ्रमणार्थियो के हुल्लड से दूर हो जाने की बात ही उसे ऐसा लग रहा था कि उनसे कोई पाप हो रहा है। वह जल्दी से जल्दी उस जगह पहुच जाना चाहती थी जहा से वे मुडे थे। इसके बाद वह दूसरी ओर आगे बढ गए। वह भ्रमण दल को खोजना चाहती थी, तभी विन्स्टन ने एक पौधे मे दो रग के फूल देखे। उसने तत्काल कैथराइन को आवाज़ दी।

'देख कैथराइन! इन फूलो को देखना। दोनो अलग-अलग रग के है और एक ही पौधे में है।'

वह आगे बढने के लिए मुड चुकी थी। वह पुकारने पर भागकर वापस तो आई, परन्तु चेहरे से वह बहुत चिन्तित थी। उसने झुककर नीचे, गड्ढे की तरफ देखा भी। वह उसके कुछ पीछे खडा था। वह उसकी कमर थामे था, जिससे वह सभली रहे। तभी उसे ख्याल आया कि वे इस समय कितने अकेले है। आसपास कोई भी नही है। एक पत्ती भी नही खडक रही। चिडिया तक नही चहक रही। वहा किसी माइक्रोफोन के छिपे होने का खतरा भी नही था। और यदि माइक होता तो वह केवल कुछ खटर-पटर की आवाज ही सुनता। उस वक्त बडी तेज गर्मी थी। ऊपर सूरज था और उनके चेहरो से पसीना बह रहा था। और तभी उसे ख्याल आया

'तुमने उसे जोर से धक्का क्यो नही दिया ?' जूलिया ने कहा, 'मै होती तो जरूर दे देती।'

'हा डियर, शायद दे देती, मै भी दे देता यदि मेरी मानसिक अवस्था आज जैसी होती। या धक्का मै उस समय भी दे देता—मै कह नही सकता।'

'क्या तुम्हे खेद है कि ऐसा तुमने क्यो नही किया ?'

'हा, अब जरूर अफसोस है कि मैने क्यो न ऐसा किया।'

वे धूल भरे फर्श पर बराबर-बराबर बैठे थे। उसने जूलिया को अपनी बगल मे खीच लिया। वह उसके कधो पर ढुलक गई। उसके बालो की गहरी सुगध मे कबूतरो की बीट की सडाध खो गई। उसने सोचा, जूलिया अभी बडी कमसिन है। उसे अब भी जीवन का आनन्द लेना है। वह यह नही समझती कि एक आदमी को, जिसे न चाहो, उसे चट्टान से नीचे धक्का दे देने पर समस्या हल नही हो जाती।

'इससे कोई अन्तर न पड़ता।' उसने कहा।

'फिर तुम्हे क्यो अफसोस है कि धक्का नही दिया ?'

'मै सफलता चाहता हूं, असफलता नही। इस खेल मे जो हम खेल रहे है, जीत नही सकते। कुछ तरह की असफलताए अन्य प्रकार की असफलताओ की तुलना मे अच्छी होती है। बस।'

उसे लगा कि कधे हिलाकर वह अपनी असहमति प्रकट कर रही थी। वह नही मानती कि व्यक्ति सदैव असफल ही हो जाता है। यह कोई अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियम नही है। शायद वह यह अनुभव करती है कि कभी न कभी विचार-पुलिस उसे अवश्य पकड लेगी। परन्तु उसका विश्वास था कि आदमी की अपनी एक दुनिया अलग हो सकती है और उसमे गुप्त रूप से जैसा चाहे वैसा रहा भी जा सकता है। जरूरत केवल इस बात की है कि भाग्य दाहिने रहे, अक्ल हो और ज़रा बहादुरी हो। वह यह नही मानती थी कि विजय बहुत दूर है। इसकी भी आवश्यकता नही है कि पार्टी के विरुद्ध सघर्ष छेडने के बाद अपने शरीर को लाश ही समझना चाहिए।'

'हम मृत है।' विन्स्टन ने कहा।

'हम अभी मरे नही है।' जूलिया ने शुष्कता से कहा।

'भौतिक दृष्टि से नही। छ· मास, सालभर या अधिक से अधिक पाच साल। मुझे मौत से भय लगता है। तुम अभी जवान हो, इसलिए शायद और भी अधिक

डरती हो, मुझसे भी अधिक। जहा तक सभव होगा, हम लोग उसे टालेगे। लेकिन इससे कोई फर्क नही पडता। जब तक मनुष्य रहे, जिन्दगी या मौत, दोनो में कोई अन्तर नही है।

'उह! क्या बेकार की बाते करते हो। तुम मेरे साथ सो सकते हो या अस्थि-पजर के साथ? क्या तुम्हे जीवित रहने मे आनन्द नही आता? क्या मुझे स्पर्श करना पसन्द नही? यह मै हू, यह मेरा हाथ है, यह पैर है। मै यथार्थ हू, बिलकुल सत्य। क्या तुम इसे नही पसन्द करते?'

उसने अपने आपको सिकोड लिया और उसकी गोद मे और सिमट गई। वह उसके वक्षस्थल को स्पर्श कर रहा था। उसके स्तन उभर आए थे, परन्तु कठोर थे। उसे लग रहा था कि वह अपनी तरुणाई और शक्ति से उसे सींच रही है।

'हा, मै पसन्द करता हू', उसने कहा।

'तो फिर मौत की बातें बन्द करो। और अब सुनो, हमे अगली मुलाकात के बारे मे तय करना है। हम लोग जगल वाली जगह पर फिर जा सकते है। अब काफी दिन गुजर चुके है। लेकिन इस बार तुम्हे बिलकुल दूसरे रास्ते से जाना चाहिए। मैंने पूरी योजना बना ली है। तुम ट्रेन से जाना—लेकिन देखो, अच्छा मै नक्शा ही बना देती हू।'

और इसके फर्श की धूल भरी सतह पर उसने एक कबूतर के घोसले से टहनी निकाल कर नक्शा बनाना शुरू कर दिया।

(४)

विन्स्टन ने मि० चारिंगटन की दुकान के ऊपर के छोटे और जर्जर कमरे मे चारो तरफ दृष्टि दौडाई। खिडकी के पास पलग पडा था। और उस पर बिस्तर बिछा था। उस पर नीचे की तरफ पुराने कम्बल पडे थे। बिना गिलाफ का तकिया पड़ा था। पुराने ढग की घडी टिक-टिक चल रही थी। कोने मे तिपाई थी। काच का पेपरवेट भी रखा था। मन्दी रोशनी मे वह चमक रहा था।

आले मे टीन का स्टोव था। एक चाय बनाने का बर्तन और दो प्याले थे। ये चीजे मि० चारिंगटन ने ही दी थी। विन्स्टन ने स्टोव जलाकर उस पर पानी रख दिया। वह एक पैकेट विक्टरी काफी और कुछ सैकरीन की टिकिया ले

आया था। घडी मे सात बजकर बीस मिनट हुए थे। उसका साढे सात बजे आने का वायदा था।

वह मन ही मन सोच रहा था, मूर्खता, मूर्खता, मूर्खता! जान-बूझकर वह मूर्खता पर मूर्खता करता जा रहा है, जो आत्महत्या के सिवा कुछ नही है। उसके दिमाग मे यह ख्याल तिपाई पर चमकते हुए पेपरवेट को देखकर सबसे पहले आया। जैसी उसने कल्पना की थी, मि० चारिंगटन ने कमरे को किराए पर उठाने मे कोई आपत्ति न की। उलटे वह खुश थे, सोच रहे थे इससे उन्हे कुछ डालरो की घर बैठे-बिठाए आमदनी ही हो जाएगी। जब उनको यह बतलाया गया कि विन्स्टन कमरे को अपनी प्रेमिका के साथ कुछ समय बिताने के लिए किराए पर लेना चाहता है, तो भी मि० चारिंगटन न तो क्षुब्ध ही हुए और न उन्होने कोई विरोध ही किया। इसके बजाय उन्होने साधारण बातें करनी आरम्भ कर दी। उनका कहना था कि एकान्त बडी मूल्यवान वस्तु है। हर एक व्यक्ति कभी न कभी एकान्त की कामना करता है। और जब किसी को ऐसा एकान्त मिल जाए तो यह साधारण शिष्टाचार का तकाजा है कि जो इस बात को जाने वह अपना मुह भी उस विषय में न खोले। उन्होने यह भी बतलाया कि मकान के ऊपर वाले भाग मे जाने के दो रास्ते है। पहला सामने से और दूसरा पीछे से, जो गली मे खुलता था। इसके बाद वह गायब हो गए।

नीचे, खिडकी से बाहर, कोई गा रहा था, विन्स्टन ने झाककर देखा। वह मलमल के परदे मे भलीभाति छिपा था। जून का महीना था। सूरज जमीन और आकाश तपा रहा था। हाते मे एक स्थूलकाय स्त्री कपडे धो-धो कर सुखा रही थी। कुछ बच्चो के कपडे थे। वह कपडो मे क्लिपे भी लगा रही थी। जब उसके मुह में क्लिप न होती तो वह जोरो से गा उठती।

It was only an 'opeless fancy,
It passed like an Ipril dye,
But a look an' a word an' the dreams they stirred
They 'ave stolen my 'eart awye!
(वह आशाहीन कल्पना थी
जो अप्रैल के दिन की भाति गुजर गई
एक नजर और एक शब्द, इनसे क्या-क्या सपने बन गए।

इन्होने मेरे हृदय को चुरा लिया।)

यह धुन गत कई सप्ताहो से लन्दन पर छाई थी। यह गाना अनगिनत मजदूरो के लिए सतीत विभाग ने तैयार किया था। इस गाने के शब्द 'पद्य-यत्र' नाम की मशीन से तैयार किया गया था। लेकिन वह औरत इस ढग से गा रही थी कि वह बेहूदा गाना भी जानदार बन गया था। वह उस स्त्री की आवाज भी सुन रहा था और उसके आने-जाने पर जूतो की चरमराहट भी। सडक पर बच्चे शोर मचा रहे थे। कही दूर से गाडियो तथा मोटरो आदि के आने-जाने की आवाज़ भी सुनाई पड रही थी। फिर भी कमरा शान्त था। टेलीस्क्रीन न होने के कारण ऐसा था।

मूर्खता, मूर्खता, मूर्खता! उसने फिर सोचा। यह तो सोचा ही नही जा सकता था कि वे कुछ सप्ताह लगातार यहा आएं और फिर भी पकडे न जाए। परन्तु पास ही एकान्त वाली जगह होने का आकर्षण ऐसा था, जिससे वे दोनो ही बच नही पाए थे। गिरजे के खण्डहर मे मिलने के बाद वे फिर बहुत दिनो तक मिल ही नही पाए थे। घृणा सप्ताह के कारण काम के घटे बहुत अधिक बढा दिए गए थे। अभी वह सप्ताह आने मे एक मास की देर थी। परन्तु इसकी तैयारी मे अभी से लोगो को बहुत अधिक काम करना पड रहा था। परन्तु एक दिन दोनो ने किसी प्रकार तीसरे पहर थोडा-सा अवकाश प्राप्त कर ही लिया। उन लोगो ने तय किया था कि वे जगल के उसी गुप्त और एकान्त स्थान मे जाएगे। इसके एक दिन पहले सन्ध्या को वे सडक पर मिले थे। एक दूसरे की तरफ भीड में बढते हुए विन्स्टन ने मुश्किल से एक बार से अधिक जूलिया के चेहरे की ओर देखा होगा। जो थोडी-बहुत झलक मिली थी, उससे विन्स्टन को लगा कि जूलिया का चेहरा पहले की अपेक्षा अधिक पीला है।

उसने मौका पाते ही कहा, 'सब गडबड हो गया। कल, मेरा मतलब है कल।'

'क्या?' विन्स्टन ने पूछा।

'तीसरे पहर। कल तीसरे पहर मैं नही आ सकती।' जूलिया ने कहा।

'क्यो, क्या हुआ?'

'वही। इस बार जल्दी महीना हो गया।'

एक क्षण के लिए उसे बडा क्रोध आ गया। जब से वह उससे मिला था उसके बाद से उसकी इच्छाए बहुत कुछ दूसरा रूप धारण कर चुकी थी।

पहले उसकी इच्छाओ मे कामुकता नही थी। पहली बार मुलाकात करने के लिए तो उसे सोचकर सभोग की इच्छा उत्पन्न करनी पडी थी। परन्तु दूसरी बार कुछ और ही बात हुई। उसे लगा कि जूलिया के केश-राशि की सुगध, उसके अधरो का माधुर्य, तथा उसकी त्वचा का स्पर्श, सब कुछ उसके अन्दर प्रविष्ट हो गया है। अब जूलिया उसकी भौतिक आवश्यकता थी। परन्तु जब जूलिया ने कहा, वह नही आ सकती तो उसे लगा कि वह विन्स्टन को धोखा दे रही है। लेकिन तभी भीड मे दोनो के हाथ धक्के की वजह से छू गए। उसने जरा-सा हाथ दबा दिया जिसमे काम की भावना इतनी नही थी जितनी स्नेह की मात्रा। तभी उसे लगा कि स्त्री के साथ मैत्री करने पर इस प्रकार की निराशा कभी-कभी स्वाभाविक है और ऐसा कई बार होगा। अकस्मात् उसका हृदय कोमल भावनाओ से अभिभूत हो गया। ऐसे विचार पहले उसके मन मे कभी नही आए थे। उसने सोचा कितना अच्छा होता, उन्होने दस वर्ष पूर्व ही विवाह कर लिया होता। दोनो सडक पर ठीक उसी तरह चलते, जैसे इस समय चल रहे थे, परन्तु खुल कर, किसी से छिपाने की जरूरत न पडती। वे छोटी-मोटी बाते करते, और घर की छोटी-मोटी चीजे बाजार मे साथ-साथ खरीदते। उसकी इच्छा हो रही थी कि उनकी कोई एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहा वे मिले तो सही, लेकिन हर बार मिलने पर सभोग करना अनिवार्य न हो। उस दिन तो नही लेकिन एक दिन बाद उसके दिमाग मे यह बात आई कि क्यो न मि० चारिंगटन की दूकान के ऊपर का कमरा किराए पर ले लिया जाए। जब उसने जूलिया से यह प्रस्ताव किया तो वह बिना किसी आपत्ति के आशातीत ढग से कमरे को किराए पर लेने के प्रस्ताव से सहमत हो गई। दोनो जानते थे, यह निपट पागलपन है। ऐसा ही था, जैसे दोनो जानबूझ कर कब्र की ओर कदम बढा रहे हो। वह पलग की पाटी पर बैठा उसका इतजार कर रहा था किन्तु उसके दिमाग मे प्रेम मत्रालय के तहखाने नाच रहे थे। सामने मौत थी, ठीक उसी तरह जिस तरह सौ के पूर्व निन्यानवे की सख्या आती है। कोई बच नही सकता था, लेकिन थोडा टाला जरूर जा सकता था। फिर भी, हरेक जीवन और मौत का यह अन्तर कम करने के लिए कोई न कोई काम जान-बूझकर कर ही बैठता था।

तभी किसी के जीने पर जल्दी-जल्दी चढने की आवज सुनाई दी। जूलिया कमरे मे जल्दी से घुस आई। उसके हाथ मे भूरे रग का औजारो का झोला था।

इस झोले को लिए हुए उसने कई बार जूलिया को मंत्रालय मे इधर-उधर आते-जाते देखा था। उसने बाहे फैलाकर उसे आलिगन मे ले लिया लेकिन जूलिया ने जल्दी ही अपने आपको बाहुपाश से छुडा लिया। शायद उसका कारण यह था कि उसके हाथ मे झोला अब भी टगा था।

'आधे मिनट के लिए।' उसने कहा, 'मै क्या लाई हू, यह तो देखो। तुम वही गन्दी विक्टरी कॉफी फिर ले आए हो ? मै भी यही सोच रही थी। फेक दो। हमे उसकी जरूरत नही पडेगी। यह देखो!'

वह अपने घुटनो के बल बैठ गई। उसने झोला खोल दिया। कुछ पेचकस तथा अन्य औजार ऊपर रखे थे। नीचे कुछ साफ पैकट थे। पहला पैकट जो जूलिया ने विन्स्टन को दिया उसमे से कुछ जानी-पहचानी खुशबू आ रही थी। उसमे कुछ रेत जैसी भारी चीज थी। छूते ही वह धसक जाती थी।

'यह चीनी तो नही है ?' उसने कहा।

'बिल्कुल चीनी, असली चीनी है। सैकरीन नही है। यह सफेद डबल रोटी रही, काली सडियल रोटी नही, और यह मुरब्बे का डिब्बा है। यह दूध का टीन है। मुझे इसे बाधना पड गया क्योकि···।'

फिर वह चुप हो गई। उसने यह नही बतलाया कि उसने ऐसा क्यो किया। सुगध से कमरा भर गया था, ऐसी सुगध जिससे वह बचपन से परिचित था। आजकल तो कभी-कभी ही ऐसी सुगध मिलती थी। कभी किसी दरवाजे से आती तो कभी सड़क पर किसी आदमी के झोले या जेब से और फिर एकदम गायब हो जाती।

'ये काफी है, असली काफी।' जूलिया ने धीरे मे फुसफुसाकर कहा।

'ये पार्टी के अन्तरग सदस्यो को दी जाने वाली कॉफी है। मै पूरा किलो (एक सेर से कुछ अधिक) ले आई हू।' उसने कहा।

'परन्तु यह चीजे तुम्हे मिल कैसे गई ?' विन्स्टन ने पूछा।

'ये सब पार्टी के अन्तरग सदस्यो के लिए है। कोई ऐसी चीज नही है जो उन सुअरो को न मिलती हो। लेकिन उनके वहा भी तो नौकर-चाकर है और वे भी तो चोरी कर सकते है ? और यह देखो मैं एक पैकट चाय का भी लाई हू।'

विन्स्टन भी उसके पास जमीन मे ही बैठ गया था। उसने पैकट का एक कोना फाड़ दिया।

'यह असली चाय है। जामुन की पत्तिया नही।' जूलिया ने कहा। 'इधर काफी चाय आ रही है। शायद हिन्दुस्तान या ऐसी ही किसी जगह पर इन्होने कब्जा कर लिया है। हा, सुनो जरा तीन मिनट के लिए तुम मेरी तरफ पीठ करके बैठ जाओ। बिस्तर के दूसरी ओर लेकिन खिडकी के बहुत पास मत जाना। परन्तु जब तक मै न कहू मेरी ओर मुह न करना।'

विन्स्टन चुपचाप अर्थहीन दृष्टि से एकटक दूसरी ओर मलमल के पर्दे के बाहर देखता रहा। नीचे अब भी वह औरत कपडे धो-धोकर सुखा रही थी। उसने दो क्लिपे और रस्सी पर सूख रहे कपडो मे लगाकर फिर अत्यन्त भावपूर्वक गाया

They sye that time 'eals all things,

They sye you can always forget,

But the smiles an ' the tears across the years

They twist my ' earstrings yet.

('वे कहते है समय बीतने के साथ सब बाते विस्मृति के गर्भ मे समा जाती है।

वे कहते है आप सदैव उन बातो को भुला सकते है।

लेकिन उन मुस्कुराहटो और आसुओ की याद वर्षो बीत जाने के बाद भी मेरे हृदय को दुखी कर देती है।)

ऐसा प्रतीत होता था कि उसे पूरा गीत कण्ठाग्र था। उसका स्वर मधुर और गरम हवा मे चारो ओर गूज रहा था। उस स्वर मे अजीब दु ख था। उसे देखकर ऐसा लगता था कि यदि वह सन्ध्या अनन्त हो जाए और उसे लगातार अनगिनत कपडे धोने पडे तो भी उसे कोई शिकायत नही होगी। वह वहा हजारो बाल-बच्चो के कपड़े सुखाती होगी। और गीत गुनगुनाती रहेगी। उसे ख्याल आया कि पार्टी के किसी सदस्य को गाते या गुनगुनाते हुए उसने कभी नही सुना या देखा। गुन-गुनाने को पार्टी-भक्ति मे कमी और अपने आपसे बाते करने जैसी खतरनाक सनक समझा जाता। शायद जब लोग करीब-करीब भूखे रहते हो तभी उनको गाने की इजाजत दी जाती थी या उन्हे गीत दिए जाते थे।

'अब मुह मेरी तरफ कर सकते हो।' जूलिया ने कहा।

उसने सिर जूलिया की तरफ घुमा लिया। क्षण भर तो वह उसे पहचान ही नही सका। वह उम्मीद कर रहा था कि वह उसको नगा देखेगा। परन्तु वह नगी

नही थी । जो परिवर्तन हुआ था, वह उससे भी अधिक था । उसने अपने चेहरो को सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रो से सज्जित किया था ।

अवश्य ही वह मजदूरो की बस्ती की किसी दुकान मे घुस गई होगी और वहा से उसने 'मेकअप' सामग्री खरीद ली होगी । उसके ओठो पर लाली थी । गालो पर भी लाली थी । नाक पर पाउडर था । आखो के नीचे भी कुछ लगा था जिससे वे चमक गई थी । मेकअप चतुराई से नही किया गया था परन्तु इन मामलो मे विन्स्टन के प्रतिमान (स्टैण्डर्ड) भी कोई बहुत ऊचे नही थे । उसने किसी पार्टी सदस्या के चेहरे की सौन्दर्य प्रसाधन-सामग्रीयुक्त कल्पना नही की थी । जूलिया के बदले हुए चेहरे को देखकर वह चौक गया । कुछ रगो के लग जाने से वह खूबसूरत ही नही लग रही थी बल्कि पहले से अधिक स्त्रियोचित मुद्रा मे दिखलाई पड रही थी । उसके अधकटे केश तथा लडको जैसी पोशाक उसकी सुन्दरता मे चार-चाद लगा रहे थे और जैसे ही विन्स्टन ने उसको अपनी बाहो मे भरा कि उसके नासापुटो मे नकली सेंटो की खुशबू घुस गई । उसे अकस्मात् उस रसोईवाली वेश्या की याद आ गई । यही सेंट उसने भी प्रयुक्त किया था । परन्तु इस समय उसकी याद के लिए कोई गुजायश नही थी ।

'सेंट भी ?' उसने कहा ।

'हा प्रियतम ! सेंट भी । और तुम्हे मालूम है कि आगे मै क्या करने जा रही हू । अगली बार औरतो वाली फ्राक लाऊगी और इस पतलून को उतार फेकूगी । मै रेशमी मोजे और ऊची एडी के जूती पहनूगी । इस कमरे मे नारी बनकर रहूगी—पार्टी की सदस्या नही ।'

उन्होने अपने कपडे उतार फेके और उस महोगनी लकडी के पलग पर चढ गए । वह पहली बार उसके सामने बिलकुल नगा हुआ था । अभी तक वह अपने दुबले और पीले शरीर को देख बडा लज्जित होता था । उसे अपने टखने की नस पर फोडा देखकर भी शरम लगती थी । चादर तो कोई न थी लेकिन पलग पर जो कम्बल था वह हलका होते हुए भी बडा मुलायम था । पलग की लम्बाई-चौड़ाई तथा उसका गुदगुदापन दोनो के लिए बडा आश्चर्यदायी आनन्द था । जूलिया ने कहा, 'इस पलग मे खटमल ही खटमल भरे होगे । परन्तु क्या किया जाए ।' दोहरे पलग अब नही दिखलाई पडते । यदि कही दीखते भी थे तो केवल मजदूरो के ही मकानो मे । विन्स्टन अपने बचपन मे इस तरह के पलग पर कभी-कभी सोता था ।

जूलिया पहले कभी ऐसे पलग पर नही लेटी थी ।

कुछ देर के लिए वे सो गए। जब वे जगे तो कोई पौन घटा गुजर चूका था। वह हिला नही, क्योकि उसकी बाह का तकिता लगाए जूलिया सो रही थी। उसका अधिकाश पाउडर तथा लाली या तो विन्स्टन के चेहरे पर लग गई थी या तकिए पर । परन्तु गालो पर हलकी लाली अब भी थी । डूबते सूरज की पीली किरणे पलंग के पैताने पर पड रही थी । आतिशदान चमक रहा था । उस पर रखा पानी खूब खौल रहा था। नीचे हाते मे औरत का गाना बद हो गया था। सडक से बच्चो के शोर की आवाज़ अब भी आ रही थी। वह सोच रहा था कि क्या बीते जमाने मे स्त्री-पुरुषो का गरमी के दिनो मे इस प्रकार लेटा रहना, इच्छानुसार बाते करना, और उठने के लिए बाध्य न होना, चुपचाप बाहर से आनेवाली आवाजो को सुनना स्वाभाविक समझा जाता था ? ऐसा शायद कभी नही होता था। जूलिया जाग गई थी । उसने आखे मली और कुहनी के बल उठकर जलते स्टोव को देखा ।

'ओह आधा पानी तो भाप बनकर ही उड़ गया होगा', उसने कहा, 'मैं अभी उठकर झटपट कॉफी बनाती हूं । अभी बहुत समय है । आजकल तुम्हारे फ्लैटो की बिजली कब काट दी जाती है ?'

'साढे तेईस बजे (साढे ग्यारह बजे रात) ।'

'मेरे होस्टल मे तो बिजली ग्यारह बजे ही चली जाती है। इसलिए हम लोगो को इसके पूर्व ही पहुच जाना चाहिए क्योकि—चल भाग यहा से गन्दे !' और जूलिया ने नीचे झुककर अपना एक जूता उठाकर कोने की ओर फेंक-कर मारा । ठीक उसी तरह जिस प्रकार विन्स्टन ने उसे फिल्म के दौरान गोल्ड-स्टीन पर डिक्शनरी फेंकते देखा था ।

'कौन था ? उसने आश्चर्य से पूछा ।

'चूहा । वह अपने बिल से नाक चमका रहा था। वहा एक छेद है। लेकिन कुछ हो, मैंने काफी डरा दिया है उसे ।'

'अच्छा ! इस कमरे मे चूहे भी हैं ?' विन्स्टन ने कहा ।

जूलिया लेट गई थी । उसने कहा, 'यहा सब जगह है । हमारे होस्टल के रसोईघर तक मे हैं । लन्दन के कुछ भागो मे तो केवल चूहो की ही बस्ती है । तुम्हे मालूम है, वे बच्चो पर हमला कर देते हैं ? हा, कुछ स्थानो मे तो दो मिनट के लिए भी बच्चो को माताए जमीन पर लिटाकर अकेला नही छोडती । हमला

बडे-बडे भूरे चूहे करते हैं। और सबसे खतरनाक बात तो यह है कि वे···।

'बस, बस बन्द करो।' विन्स्टन ने कसकर अपनी आखे बन्द कर ली।

'प्रियतम, क्या हुआ? तुम्हारा चेहरा तो एकदम पीला पड गया है? क्या चूहो से बहुत डरते हो?'

'हा, मुझे चूहो से सबसे अधिक डर लगता है। दुनिया में और किसी चीज़ से नही।'

जूलिया ने विन्स्टन को अपने शरीर से चिपटा लिया और अपनी टागो को उस पर रख दिया जैसे वह अपने शरीर की उष्णता से विन्स्टन को भयमुक्त कर देना चाहती थी। उसने तुरन्त अपनी आखे नही खोली। कई क्षणो तक वह उस बुरे सपने की कल्पना करता रहा जो उसे अक्सर दिखलाई पडता था। वह हमेशा एक-सा ही होता था। वह एक दीवार के सामने अधेरे मे खडा है और उसकी दाहिनी ओर को असहाय वस्तु है, जिसे वह देखना भी बरदाश्त नही कर सकता। वह हमेशा अपने आपको सपने मे धोखा-सा देता था क्योकि दीवार के पार क्या है, यह उसे मालूम नही था। कभी-कभी वह अपने दिमाग मे घूम रही बात को खीच-कर सामने लाने की कोशिश करता था। परन्तु वह हमेशा वास्तविकता सामने आने के पूर्व ही जाग जाता था। परन्तु उस वास्तविकता का सबध क्या जूलिया की उस बात से था जो उसने बीच मे ही बिना सुने काट दी थी?

'सॉरी,' उसने कहा, 'कोई बात नही। मुझे चूहे पसन्द नही है, बस।'

'फिक्र न करो, डियर।' जूलिया ने कहा, 'मै इन गन्दे जानवरो को यहां नही घुसने दूगी। मै जाने के पूर्व इस छेद के मुह को किसी चीज़ से भर दूगी। अगली बार सीमेन्ट प्लास्टर लाकर इसे अच्छी तरह बन्द कर दूगी।'

चूहो की उपस्थिति से उत्पन्न आधा भय पहले ही गायब हो चुका था। उसे अपने ऊपर कुछ शरम भी आ रही थी। वह उठकर पलग के सिरहाने बैठ गया था। जूलिया बिस्तर से उठ पडी थी और उसने अपने कपडे पहन लिए थे। उसने कॉफी बना ली थी। सुगन्ध इतनी तेज़ थी कि उसे उठकर खिडकी बन्द कर देनी पडी। उसे लगा कि कही इस गंध से कोई उत्सुकतावश कमरे मे झाकने ऊपर न आ जाए। चीनी की वजह से कॉफी मे रेशम जैसी चमक आ गई थी। सैक-रीन की वजह से इस चमक को वह वर्षो हुए भूल गया था। जूलिया अपनी पतलून की एक जेब मे हाथ डाले और दूसरे मे डबल रोटी तथा मुरब्बा लिए

कमरे में इधर से उधर घूम रही थी। वह कभी उदासीन भाव से बुक केस को देखती और कभी तिपाई की मरम्मत की तरकीब बताने लगती और कभी आराम-कुर्सी पर कूदकर बैठ जाती और देखती कि उसमें बैठने से आराम मिलता है या नही। उसे पुरानी घडी देखने मे भी मजा आता था। काच के पेपरवेट को रोशनी मे अच्छी तरह देखने के लिए वह उसे पलग पर ले आई। उसने पेपरवेट जूलिया के हाथ से ले लिया। उसमे अन्दर का भाग वर्षा के जल जैसा लगता था।

'यह क्या है ?' जूलिया ने पूछा।

'कुछ नही, मेरा मतलब है, यह कभी काम मे नही लाया गया। यही बात मुझे पसन्द है। यह इतिहास का एक अश है, जिसे पार्टी-अधिकारी बदलना भूल गए। यह सौ वर्ष पूर्व की दुनिया का सन्देश है। बस यह जानने भर की ज़रूरत है कि यह क्या कहता है ?'

'और यह चित्र···' उसने उगली उठाकर दिखलाते हुए कहा, 'और यह तसवीर भी क्या सौ साल पुरानी है ?'

'और ज्यादा। शायद दो सौ बरस। ठीक-ठीक तो नही कहा जा सकता। आजकल कोई चीज़ कितनी पुरानी है, यह बतलाना बडा कठिन है ?'

वह उसे देखने और आगे बढ गई। इसके बाद उसने नीचे ठोकर मारकर कहा, 'यही से वह चूहा झाका था।' थोड़ी देर बाद तसवीर देखकर उसने कहा, 'ये कौन-सी जगह है ? ऐसा लगता है मैंने इसे पहले भी देखा है।"

"यह चर्च है या था। इसका नाम सेंट क्लीमेंट्स डेन था।" उसे वह पद्य याद आ गया जो मि० चारिंगटन ने उसे सिखाया था। उसने थोड़ी-सी उदासीनता से कहा, 'Oranges and lemons, say the bells of St Clement's···' परन्तु उसे उस समय बडा आश्चर्य हुआ जब बाकी पक्तिया जूलिया ने पूरी कर दी :

'You owe me three farthings, say the bells of St Martin's
When will you pay me ? say the bells of Old Bailey—

'मुझे आगे तो याद नही, लेकिन अंतिम पक्तिया याद है Here comes a candle to light you to bed and here comes a chopper to chop off your head'

यह ठीक उसी तरह से था जैसे किसी चीज़ के दो टुकडे मिल जाए। लेकिन The bells of Old Bailey के बाद एक पक्ति और होनी चाहिए। शायद

मि० चार्रिगटन को वह हिस्सा सुनाया जाए जो उन्हे याद नही है तो शेषाश भी उन्हे याद आ जाए।

'यह पद्य तुम्हे किसने सिखाया ?' उसने पूछा।

'मेरे दादा ने। जब मै छोटी थी तो वे अक्सर मेरे सामने यह कविता पढा करते थे। मै आठ साल की थी तभी उनको मार डाला गया था। कम से कम वे लापता तो हो ही गए। पता नही 'लेमन' क्या होता है ?' उसने कहा, 'मैने सन्तरे तो देखे है। वे नारगी रग के गोल फल होते है। उनके ऊपर का छिलका बडा मोटा होता है।'

विन्स्टन ने कहा, 'मै नीबू जानता हू कैसे होते है। सन् १९५० और सन् १९६० के बीच मे वे अक्सर मिलते थे। वे बडे खट्टे होते थे।'

'मै शर्त लगाकर कहती हूं।' जूलिया ने कहा, 'इस तसवीर मे खटमल भरे है। मै इसे उतार कर एक दिन इसकी सफाई करूगी। अब चलने का वक्त हो गया। मुझे मुह अच्छी तरह धो डालना चाहिए। मुझे तुम्हारे मुह को भी अच्छी तरह धोना पडेगा। यह काम बाद मे करूगी।'

विन्स्टन कुछ और मिनट बिस्तर से नही उठा। कमरे मे अधेरा हो रहा था। वह रोशनी के पास चला गया और पेपरवेट को एकटक देखता रहा। अन्दर का मूगा देख इतनी उत्सुकता नही होती थी जितनी उसके अन्दर का काच देखकर। काच को इस तरह बनाया गया था कि वह काफी गहरा-सा प्रतीत होता था। फिर भी उसकी पारदर्शिता मे कोई कमी नही आई थी। वह हवा की तरह पारदर्शी था। ऐसा प्रतीत होता था काच के ऊपर की सतह आकाश है जिसके नीचे अपना वातावरण है जिसमे पुरानी दुनिया बन्द है। उसे लगता था कि वह उसमे प्रविष्ट हो सकता है और सच यह था कि वह उसके अन्दर था। वही नही, वह महोगनी लकडी का पलग, तिपाई और घडी तथा इस्पात के तारो से बनी वह तसवीर तथा वह पेपरवेट खुद उसके अन्दर था। वह पेपरवेट वह कमरा था जिसमे वह बैठा था। वह मूगा उसका तथा जूलिया का जीवन था। वे काच के टुकडे मे बन्द करके अमर बना दिए गए थे।

साइम लापता हो गया। एक दिन सुबह वह काम पर नही आया। कुछ आदमियो ने उसकी अनुपस्थिति को बुरा ठहराया। इसके बाद वाले दिन किसी ने उसकी चर्चा भी नही की। तीसरे दिन विन्स्टन रिकर्ड विभाग के नोटिस को देखने गया। एक नोटिस मे शतरज कमेटी के सदस्यो की मुद्रित सूची थी। इसमे पहले साइम का भी नाम था। सूची पहले ही की तरह अब भी थी, अर्थात् कुछ भी काटा नही गया था—परन्तु उसमे एक नाम कम था। इतना काफी था। साइम का अस्तित्व जाता रहा था। उसका अस्तित्व कभी था ही नही।

गरमी बडी तेज हो गई थी। मत्रालय के भूगर्भस्थित कमरो मे तापमान नियत्रित था, उनमे खिडकिया नही थी। परन्तु बाहर फुटपाथ पर सूरज की गरमी से गरम जमीन पर पैर जलते थे। घृणा सप्ताह की तैयारी पूरी तेजी से जारी थी। सभी मत्रालयो के कर्मचारी ओवरटाइम ड्यूटी दे रहे थे। जुलूस, सभाए, सैनिक परेड, व्याख्यान, मोम के नमूने, फिल्म शो, टेलीस्क्रीन कार्यक्रम—सभी का सयोजन किया जा रहा था। स्टैंड बनाए जाने थे, कागज के पुतले बनाए जाने थे, नए नारे तैयार होने थे, गीत लिखे जाने थे, अफवाहे फैलानी थी तथा नकली फोटोग्राफ तैयार करने थे। जूलिया की यूनिट भी बजाय उपन्यास तैयार करने के दुश्मन के अत्याचारो भरे पैम्फ्लेट तैयार कर रही थी। रोज़ का काम करने के अलावा विन्स्टन को 'टाइम्स' की पिछली फाइलो का पारायण भी करना पडता था और ऐसे समाचार तैयार करने थे जो भाषणो मे उद्धृत किए जा सके। रात मे देर तक शहर मे उपद्रवी मज़दूर चक्कर काटते फिरते थे। उस समय अजब-सा वातावरण हो जाता था। राकेट बमो का गिरना पहले से अधिक बढ गया था। कभी-कभी कही दूर बडे जोरों का धडाका होता था। इनके बारे मे किसी के पास कोई जवाब नही होता था। इनको लेकर तरह-तरह की अफवाहे फैलाई जाती थी।

नए गीत (इनको घृणा गीत कहा जाता था) की धुन तैयार हो गई थी। वह टेलीस्क्रीन पर निरतर बजाई जा रही थी। बडी वीभत्स थी वह, जिसे सगीत नही कहा जा सकता था। वह कुछ-कुछ बहुत-से ढोलो के एक साथ पीटे जाने की आवाज से मिलती थी। उसे बहुत-से लोग सैनिको की मार्च के साथ जब चिल्लाकर गाते थे तो सुनकर डर मालम होने लगता था। मज़दूरो को वह पसन्द आ गई थी लेकिन

पहला गाना अब भी लोकप्रिय था। पारसन्स के बच्चे दिन-रात, जब मर्जी आती, कागज और कघे पर यह धुन बजाने लगते थे। कभी-कभी तो उनका शोर कानो के पर्दे फाडने लगता था। पारसन्स ने बहुत-से स्वयसेवको का दल बनाया था। ये स्वयसेवक सडके सजा रहे थे। जहा-तहा झण्डे लगाए जा रहे थे। पोस्टर तैया- हो रहे थे, झडो के डडे लगाए जा रहे थे। झण्डिया लगाई जा रही थी। पारो सन्स बडा खुश था। वह हर स्थान पर मौजूद लगता था। कभी किसी चीज कर गिराने के लिए धक्का दे रहा है तो कभी कोई रस्सी खीच रहा है, कभी आरा चला रहा है तो कभी हथौडा। हरेक की मदद करना, मजाक करना और कामरेडो की भाति उपदेश देना उसका दिन-रात का काम था। इसके साथ ही उसके शरीर से बराबर पसीना निकला करता था जिसकी बदबू जो भी पास होता उसकी नाक मे घुस जाती।

अकस्मात् लन्दन भर मे एक नए ढग का पोस्टर लग गया। इस पर कुछ लिखा नही था। इसमे केवल एक यूरेशियन सैनिक का बडा-सा सिर बना था जो तीन-चार मीटर बडा था। वह सैनिक आगे बढता-सा लग रहा था। उसके पास एक छोटी मशीनगन थी। आप चाहे जहा खडे हो, मशीनगन की नोक आपकी तरफ ही तनी लगती रहेगी। यह पोस्टर बडे भाई के चित्रो से भी अधिक सख्या मे हर खाली स्थान पर लगा दिया गया था। मजदूरो को अधिकतर युद्ध आदि की फिक्र नही रहती थी लेकिन उनमे भी देशभक्ति का ज्वार लाने की तैयारी की जा रही थी। अब राकेट बमो मे मरने वालो की संख्या भी बढने लगी थी। एक बम सिनेमाघर पर गिरा और सैकडो व्यक्ति जिन्दा दफन हो गए। मुर्दो का बडा लम्बा जुलूस निकला और बाद मे क्षोभ प्रकट करने के लिए सभा हुई। एक बम खेल के मैदान पर गिरा और शाम को जो बच्चे वहा खेलने आए थे उनमे से दर्जनो मर गए। यूरेशियन सैनिक वाले पोस्टर की सैकडो प्रतिया स्थान-स्थान पर फाड डाली गई। उनको जला दिया गया। इस झगडे मे बहुत-सी दुकाने भी लूट ली गई। तभी यह अफ-वाह फैला दी गई कि जासूस रेडियो तरगो से राकेट बम फेक रहे हैं। एक वृद्ध दम्पति के घर मे रहने वालो को विदेशी समझकर आग लगा दी गई और वे जिन्दा जल गए।

जब मि० चारिंगटन के कमरे मे जूलिया और विन्स्टन पहुचे तो वे नगे हो-कर पास-पास लेट गए। कपडे इसलिए उतार दिए थे कि गरमी न लगे। चूहा फिर

कभी नही आया । परन्तु गरमी बढने के साथ खटमलो की सख्या बहुत बढ गई थी। लेकिन कोई चिन्ता की बात नही थी। गन्दा हो या साफ, कमरा किसी स्वर्ग से कम न था। जैसे ही वे आते थे, चारो तरफ चोर बाजार से खरीदी हुई कीडे मारने की दवा छिडक देते थे। कपडे उतार फेंकते थे और सभोग करते थे। पसीना खूब निकलता था लेकिन इसकी उन्हे चिन्ता न थी, इसके बाद सो जाते थे।

उठते तो देखते कि खटमल फिर इकट्ठे हो गए और उन पर हमला करने की तैयारी कर रहे है।

चार, पाच, छ और सात बार वे उसी कमरे मे जून के महीने मे मिले। अब हर वक्त शराब पीना विन्स्टन ने छोड दिया था। उसे अब शराब की जरूरत भी नही थी। वह पहले से अधिक मोटा हो गया था। उसका नस के ऊपर का टखने वाला फोडा भी बैठ गया था। सवेरे उसे तेज खासी के दौरे आते थे, वे भी अब बद हो गए थे। जीवन अब उतना असह्य नही रहा था। टेलीस्क्रीन को देख-कर वह अब मुह नही बनाता था। और न उसकी यह इच्छा होती थी कि वह जोरो से गालिया बके। अब उनका घर था, गुप्त स्थान था, इसलिए यह बुरा नही लगता था कि वे कभी-कभी कुछ ही घटो के लिए मिल पाते है। अब तो मुख्य बात यह थी कि कबाडी की दुकान के ऊपर जो कमरा था, वह बना रहे। यह जानना कि कमरा सुरक्षित है, उसमे रहने के ही बराबर था। कमरा एक दुनिया थी जिसमे बीते हुए ससार के मृत जीव भी चल, फिर और घूम सकते थे। विन्स्टन सोच रहा था, मि० चारिंगटन भी मृतजीव ही है। ऊपर कमरे मे जाते हुए वह उनसे बाते करने के लिए बहुधा कुछ मिनटो के लिए ठहर जाया करता था। वृद्ध कही बाहर नही जाता था और ऐसा लगता था कि उसके पास ग्राहक भी नही आते थे। वह प्रेत की तरह रहता था। उसके दो स्थान थे। या तो अधेरी दूकान या उससे भी अधेरी रसोई, जहा मि० चारिंगटन खाना बनाते थे। रसोई मे अन्य चीजो के साथ पुराने किस्म का ग्रामोफोन था जिसमे बहुत बडा भोपा लगा था। विन्स्टन से बाते करने का मौका पा वह खुश होता था। वृद्ध की नाक लम्बी थी और उसके चश्मे का काच बडा मोटा था। वह अपने कधे झुकाए और मख-मली जैकेट पहने जब अपनी दुकान मे घूमता था तो ऐसा लगता था कि वह व्यापारी नही बल्कि कोई सग्रहकर्ता है। वह उत्साह से कभी एक चीज़ स्पर्श करता था तो कभी दूसरी। वह विन्स्टन से कभी कुछ भी खरीदने को नही कहता। वह

केवल उन चीजो की तारीफ चाहता था। मि० चार्रिंगटन की बाते सुनना ठीक उसी प्रकार था जिस प्रकार पुराने सगीत बक्स का बजाना। उसने कुछ और पद्यांश वृद्ध की स्मृति से निकलवा लिए थे। एक पद्य था चार सौ बीस चिडियो के सबध मे। दूसरा टूटे सीगवाली गाय के बारे मे। एक और था रोबिन नाम के गरीब मुरगे के सबध मे। वह कहते थे, लो यह गीत सुनो। मैंने सोचा शायद तुम्हे इसमें रुचि हो। परन्तु किसी भी पद्य की कुछ पक्तियो से अधिक उसे याद नही थी।

दोनो जानते थे—एक तरह से यह बात कभी उनके दिमाग मे नही निकली थी—कि जो कुछ हो रहा है, वह अधिक दिनो तक नही चलेगा। कभी-कभी तो उन्हें ऐसा लगता था कि मृत्यु उतनी ही सन्निकट है जितना बिस्तर, जिस पर वे लेटे हैं। वे एक दूसरे को छाती से लगा लेते थे। उनकी दशा ठीक उस व्यक्ति की भाति थी जो आनन्द के अमृत का आखिरी घूट भी मरने के पाच मिनट पूर्व तक बडी तृष्णा से पी रहा होता है। कभी-कभी उन्हे लगता कि वे सुरक्षित ही नही बल्कि उनकी यह व्यवस्था स्थायी भी है। परन्तु उस कमरे मे उनको लगता था कि कभी कोई नुकसान नही पहुच सकेगा। वहा पहुचना कठिन और एक तरह से खतरनाक भी था। परन्तु कमरा सुरक्षित दुर्ग था। कभी-कभी वे लोग बच निकलने के दिवास्वप्न भी देखते थे। यदि भाग्य ने साथ दिया तो वे शेष जीवन भर अपना यह गुप्त सबध बनाए रखेगे। या कैथराइन शायद मर जाए और फिर जूलिया से वह शादी कर लेगा। और नही तो वे दोनो एक साथ आत्महत्या कर लेगे। या वे गायब हो जाएगे। अपना सब कुछ बदल देगे। मजदूरो की भाति बोलना सीख लेगे और किसी कारखाने मे नौकरी कर किसी तग गली मे रहकर बाकी जिन्दगी गुजार देगे। परन्तु दोनो जानते थे, ये बेकार की बाते हैं। सच यह था कि बचने का कोई रास्ता नही था। एक ही व्यावहारिक योजना थी—आत्महत्या की और उसे भी काम मे लाने का उनका इरादा नही था। वे एक के बाद दूसरा दिन, एक के बाद दूसरा सप्ताह ठीक उसी तरह बिताते थे जिस प्रकार मनुष्य के फेफडे तब तक सास लेते रहते हैं, जब तक उन्हे हवा मिलती रहती है।

कभी-कभी वे पार्टी के विरुद्ध विद्रोह करने की बात भी सोचते थे। परन्तु उन्हे यह मालूम नही था कि इस विषय मे पहला कदम किस प्रकार उठाया जाए। यदि कल्पित राजद्रोही सस्था 'ब्रदरहुड' का अस्तित्व हो भी तो उसका

पता कैसे लगाया जाए, यह एक समस्या थी। विन्स्टन ने ओ'ब्रायन और अपने बीच के स्वभाव या भावनागत घनिष्ठता का हाल जूलिया को बतलाया। उसने यह भी कहा कि वह चाहता है कि स्वय ओ'ब्रायन से जाकर मिले और कहे कि मै पार्टी का शत्रु हू और उसकी सहायता का अभिलाषी। हैरानी की बात थी कि विन्स्टन की यह बात जूलिया को असभव नही लगी। वह आदमियो को उनके चेहरे से भाप लेती थी इसलिए उसने इस बात पर आपत्ति नही की कि ओ'ब्रायन विश्वास-पात्र है और ओ'ब्रायन मे उसे आख मे आई एक चमक से ही विश्वास हो गया है। दूसरे जूलिया की यह भी धारणा थी कि हर एक व्यक्ति मन ही मन पार्टी से घृणा करता है। यदि हर व्यक्ति यह जान जाए कि खतरा नही है तो वह पार्टी के नियमो का अवश्य ही उल्लघन करेगा। परन्तु उसका यह विश्वास न था कि कोई व्यापक विरोधी दल है या उसका कोई अस्तित्व भी हो सकता है। गोल्डस्टीन और उसके साथियो को अपने मतलब के लिए पार्टी ने रच लिया है और जिस पर आप केवल विश्वास करने का बहाना करते है। अनेको बार वह उन आदमियो की फासी के लिए चिल्लाई है जिनके नाम भी कभी उसने नही सुने और जो अभियोग उन पर लगाए गए थे उनकी सत्यता मे उसे रचमात्र भी विश्वास नही था। जब मुकद्दमे चलते थे तो वह उन कुछ लोगो के साथ होती थी जो अदालतो मे दिन-रात बैठे-बैठे यह धुन लगाए रहते थे कि राजद्रोहियो को मौत की सज़ा दो। दो मिनट की प्रचार फिलम मे वह गोल्डस्टीन के विरुद्ध चिल्लाने मे सबसे आगे रहती थी। फिर भी गोल्डस्टीन के बारे मे कुछ भी नही मालूम था। गोल्डस्टीन के सिद्धान्तो का भी उसे ज्ञान नही था। वह क्रान्ति के दौरान बालिका थी। उसे सन् १९५० और १९७० के बीच हुए विचारो सबंधी सघर्ष की कोई विशेष याद नही थी। कोई स्वतत्र राजनीतिक विरोधी दल या आन्दोलन हो सकता है, इसकी तो वह कल्पना भी नही कर सकती थी। और फिर कुछ भी हो पार्टी अजय-अमर थी। वह सदैव रहेगी और उसका रूप भी यही रहेगा। आप केवल उसके खिलाफ उग्र रूप से विद्रोह कर सकते है, गुप्त रूप से उसकी आज्ञाओ का पालन न करने का अवसर निकाल सकते है। कभी-कभी कोई हिसात्मक कार्य भी कर सकते है, जैसे किसी को मार डालना या कोई चीज बारूद से उडा देना।

कई बातो मे जूलिया विन्स्टन से अधिक तेज़ थी और उस पर पार्टी-प्रचार का शीघ्रता से असर भी नही पडा था। जब उसने किसी सिलसिले मे यूरेशिया के

विरुद्ध चलने वाले युद्ध का जिक्र या तो वह जूलिया के मुह से यह सुनकर चकित रह गया कि युद्ध नही हो रहा। लन्दन पर जो राकेट बम प्रतिदिन गिर रहे है, उन्हे शायद लोगो को डराए रखने के लिए ओशनिया की सरकार स्वय गिरा रही है। यह ऐसा विचार था जो उसके दिमाग मे कभी आया ही नही था। दो मिनट की प्रचार फिल्म के दौरान जूलिया का कहना था वह कठिनाई से अपनी हसी रोक पाती थी। वह सरकारी बातो को केवल इसलिए मान लेती थी क्योकि अक्सर सच या झूठ मे उसे कोई अन्तर नही लगता था। यथा, उसने यह मान लिया था कि हवाई जहाजो का आविष्कार पार्टी ने किया है। उसने यह स्कूल मे पढा था। अपने स्कूल के दिनो में, विन्स्टन को याद आया, पार्टी केवल यह कहा करती थी कि उसने हैलीकॉप्टर बनाए है। बारह साल बाद जूलिया के स्कूल के दिनो मे, तो वह हवाई जहाजो का आविष्कार करने का दावा करने लगी थी। और जब विन्स्टन ने बतलाया कि हवाई जहाज उसके पैदा होने के पूर्व भी थे और क्रान्ति के बहुत पहले बन चुके थे तो जूलिया को इसमे कोई खास मजा नही आया। आखिर इससे फर्क क्या पडता है, कि हवाई जहाजो का आविष्कार किसने किया? विन्स्टन को यह जानकर भी आश्चर्य हुआ कि चार वर्ष पूर्व ओशनिया की ईस्ट एशिया से लडाई थी और यूरेशिया से मित्रता। यह बात जूलिया को याद तक नही। वह युद्ध को गप्प समझती थी और उसने यह ध्यान तक नही दिया था कि दुश्मन का नाम बदल गया है। उसने कहा कि वह तो यह समझती थी कि लडाई यूरेशिया से हो रही है। इससे वह कुछ डर गया। हवाई जहाजो का आविष्कार उसके जन्म से बहुत पहले हुआ था। इसलिए उसका आविष्कार किसने किया, यह न याद होना स्वाभाविक था। परन्तु युद्ध मे यह परिवर्तन चार वर्ष पहले हुआ था, यह याद भी न होना आश्चर्यजनक था। कोशिश करके उसने असल बात जूलिया को याद करा दी। परन्तु फिर भी जूलिया ने इस बात की कोई परवाह नही की। उसका कहना था, 'इसकी कौन परवाह करता है?' उसने अधीरता से कहा, 'एक के बाद बराबर दूसरा युद्ध चलता रहेगा और हर कोई जानता है कि खबर झूठी है।'

कभी-कभी वह जूलिया से रिकर्ड विभाग की बाते करता और बतलाता कि उसने कैसी-कैसी जालसाजिया की है। परन्तु जूलिया इनसे तनिक भी घबडाई नही दीखती थी। वह अपने नीचे के अधगर्त को नही खोलना चाहती। उसने

जूलिया को जोन्स, पारसन्स और रदरफोर्ड की कहानी सुनाई। उस कागज की कहानी सुनाई। परन्तु इसका जूलिया पर कोई विशेष प्रभाव नही पडा। पहले तो उसकी समझ मे वास्तविकता ही नहीं आई।

'क्या वे तुम्हारे दोस्त थे ?' उसने पूछा।

'नही, मै तो उन्हे जानता भी नही था। वे पार्टी के अतरग सदस्य थे। दूसरे वे मुझसे उम्र मे कही अधिक बडे थे। वे क्रान्ति के पूर्व के नेता थे। मैं तो उन्हे शकल से ही जानता था।'

'तो फिर उनके सबध मे चिन्तित होने की क्या आवश्यकता है ? लोग तो हमेशा ही मारे जाते है। नही क्या ?'

उसने जूलिया को समझाने का यत्न किया। 'यह दूसरा मामला है। यह केवल मार डालने की ही बात नही है। क्या तुम यह समझती हो कि अतीत को, जो बीते हुए कल से शुरू होता है, बिलकुल खत्म कर दिया गया है ? यदि यह बचा है तो केवल पेपरवेट जैसी कुछ चीजो के रूप मे जिसकी भाषा कोई समझ नही सकता। हम इस समय क्रान्ति तक के सम्बध मे कुछ नही जानते। इसी प्रकार क्रान्ति के पूर्ववर्ती काल के सबंध मे भी हम कुछ नही जानते। सारा रिकर्ड नष्ट कर दिया गया है या झूठा बना दिया गया है। हर पुस्तक पुन लिख डाली गई है। हर तस्वीर का रग बदल दिया है। हर मूर्ति, इमारत और सडक का दूसरा नाम रख दिया गया है। यह प्रक्रिया हर दिन, हर मिनट और हर क्षण जारी है। इतिहास रुका है। वर्तमान के सिवा कुछ नही है। और वर्तमान मे केवल पार्टी का अस्तित्व है और कुछ नही। पार्टी जो करती है, वह ठीक है। मै जानता हू कि अतीत के बारे में झूठ बोला जा रहा है, लेकिन मै इसे प्रमाणित नही कर सकता। हालाकि जालसाजी मैंने खुद की है। एक बार वास्तविकता को झूठ मे बदल देने के बाद उसका कोई प्रमाण ही शेष नही रहता। केवल एक ही प्रमाण है, मेरी स्मृति, जो मेरे दिमाग मे है। मै नही कह सकता कि मेरे सिवा ये बाते किसी अन्य व्यक्ति को याद भी है या नही। एक ही ऐसा मामला था जिसके बारे मे मेरे हाथ मे ठोस सबूत आया था।'

'वह क्या चीज़ थी ?'

'वह तसवीर थी। परन्तु कुछ ही मिनट के बाद मैंने उसे फेक दिया। परन्तु आज यदि ऐसा ही प्रमाण मेरे हाथ आ जाए तो मै उसे अवश्य रख लूगा।'

'मैं ऐसा नही करूगी।' जूलिया ने कहा, 'मै खतरा उठाने को अवश्य तैयार

हू लेकिन तभी जब कोई फायदा हो, बेकार की अखबारो की रद्दी को रखकर अपनी जान खतरे मे नही डालूगी। यदि आप उसे रख भी लेते तो भी क्या लाभ होता ?'

'शायद अधिक लाभ न होता। यदि मै किसी अन्य व्यक्ति को दिखलाता तो शायद उसके दिमाग मे भी थोडा-सा सदेह उत्पन्न हो जाता। मै नही समझता कि हम जीवनकाल मे कोई परिवर्तन कर पाएगे। परन्तु छोटे-छोटे विद्रोही दल अवश्य बन सकते है। ये दल क्रमश बढ सकते है। कुछ रिकर्ड भी पीछे छोड़े जा सकते है। इससे अगली पीढी हमारे काम को आगे जा ले सकती है।'

'मेरी अगली पीढी मे कोई रुचि नही है। मै तो अपने आप मे तथा तुममे रुचि रखती हू।'

'तुम तो कमर से नीचे के हिस्सो मे ही विद्रोही हो।' उसने कहा।

जूलिया को यह बात बडी अच्छी लगी और उसने विन्स्टन को प्रसन्नता के मारे बाहो मे भर लिया।

पार्टी के सिद्धान्तो की आलोचना मे जूलिया को जरा भी दिलचस्पी नही थी। जब भी वह इस 'इगसोश', वास्तविकता की अवहेलना, अतीत की परिवर्तनीयता, नई भाषा के प्रयोग आदि के सबध मे बाते करता तो वह कुछ समझ न पाती और कह देती कि वह इन सब बातो पर कोई ध्यान नही देती। मानते हुए कि यह बेकार की बाते है, क्यो अपना दिमाग खराब किया जाए, वह जानती है कि कब हर्षध्वनि करनी चाहिए और कब थू थू—और बस इतना ही जानना आवश्यक है। यदि वह फिर भी ऐसी बाते करता ही जाता था तो वह सो जाती थी। वह उन लोगो मे थी जो कभी भी और किसी स्थिति मे सो सकते थे। उससे बाते करते हुए विन्स्टन ने अनुभव किया कि पार्टी-भक्ति बिना सिद्धान्त जाने भी कितनी आसान है ? आप कुछ भी विश्वास करा सकते है। लोग खयाल ही नही करते कि क्या हो रहा है। नासमझी की वजह से वे स्वस्थ रहते थे। वे जो कहा जाता था वह मान लेते थे। जो बातें वे मानते उनसे उन्हे कोई नुकसान नही होता था। कुछ बाकी तो बचता नही था। ठीक उसी तरह जिस तरह अन्न का साबित दाना निगल जाने पर चिडिया को वह हज्म नही होता और ज्यो का त्यो बाहर निकल आता है।

आखिर जिसका इन्तजार था, वह हो ही गया। जिस सन्देश की प्रतीक्षा थी वह आ ही गया। शायद जीवन भर वह इसी घटना की प्रतीक्षा करता रहा था।

वह मत्रालय के कमरो के बीच के लम्बे रास्ते मे जा रहा था। वह करीब-करीब उसी जगह था, जहा जूलिया फिसली थी और फिसलने के बाद उसने चिट दी थी। अकस्मात् उसने अनुभव किया कि उससे कही अधिक स्थूल शरीर का कोई व्यक्ति उसके पीछे आ रहा है। जो व्यक्ति पीछे था, वह थोडा-सा खासा। यह बोलने की भूमिका थी। विन्स्टन रुक गया और मुडा। वह ओ'ब्रायन था।

आखिर वे एक दूसरे के आमने-सामने थे। उसकी तबियत हो रही थी, वह भाग जाए। उसका दिल बडे जोरो से धडक रहा था। वह स्वय बोलने में असमर्थ था। ओ'ब्रायन पहले ही की तरह आगे बढता गया। थोडी-सी देर के लिए उसने मैत्री-पूर्वक विन्स्टन की बाह पर अपना हाथ रख दिया। अब तीनो साथ-साथ चल रहे थे। ओ'ब्रायन ने इस प्रकार बात करनी शुरू की जैसे वह बराबर का हो। यह शिष्टाचार पार्टी के अन्य अन्तरग सदस्यो मे नही था।

'मै तुमसे बात करने के मौके की तलाश मे था,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'कुछ दिन हुए तुम्हारे नई भाषा मे लिखे एक लेख को मै टाइम्स मे पढ रहा था। ऐसा लगता है कि तुम्हे नई भाषा मे बडी गवेषणात्मक रुचि है।'

विन्स्टन अब तक सभल गया था। उसने कहा, 'गवेषणात्मक तो क्या, मै तो केवल नौसिखुआ हू। यह मेरा विषय भी नही है। मेरा भाषा-निर्माण से कोई सबध नही है।'

'परन्तु तुम बडी अच्छी भाषा लिखते हो,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'यह केवल मेरी राय नही है। मै तुम्हारे एक मित्र से बाते कर रहा था। वह तो भाषा विशेषज्ञ है। उसका नाम इस समय मेरे दिमाग से उतर गया है।'

विन्स्टन का हृदय भय से धडकने लगा। ओ'ब्रायन का मतलब सिवा साइम के अन्य किसी व्यक्ति से नही था। परन्तु साइम न केवल मर गया था, बल्कि वह समाप्त कर दिया गया था और उस जैसे नाम का कोई आदमी पहले कभी था ही नही। उसका प्रत्यक्षत स्मरण किया जाना अक्षम्य अपराध होता। ओ'ब्रायन का यह कदम अवश्य ही किसी बात का सकेत होगा। वे धीरे-धीरे रास्ते के छोर तक

चले गए। यहा ओ'ब्रायन ने चश्मा नाक पर रखने के बाद कहा, 'मै तुम्हे बतलाना चाहता हू कि तुमने अपने लेख में ऐमे शब्दो का प्रयोग किया है जो समय के अनुकूल नही है। परन्तु वे अभी हाल ही मे निरर्थक हुए है। तुमने नई भाषा की डिक्शनरी का दसवा सस्करण देखा है क्या ?'

'नही', विन्स्टन ने कहा, 'क्या वह छप गया है ? मै तो समझता हू अभी वह छपा नही है। हम लोग रिकार्ड विभाग मे अब भी नवा सस्करण ही काम मे ला रहे है।

'मेरा खयाल है अभी दसवा सस्करण कुछ महीने और न निकल सकेगा। परन्तु कुछ अग्रिम प्रतिया उपलब्ध है। मेरे पास भी एक है। शायद तुम उसे देखना पसन्द करो ?'

'जी बहुत अधिक।' विन्स्टन ने इशारा समझकर कहा।

'कुछ नई चीजे बडे काम की है। क्रियाए बडी कम हो गई है। यह बात तुम्हे अच्छी लगेगी। क्या मै किसी के हाथ डिक्शनरी भेज दू ? परन्तु मै ऐसी बाते भूल जाता हू। न हो तो तुम मेरे फ्लैट मे आ जाओ और उसे अपने सुविधानुकूल समय पर ले लो। क्या यह ठीक रहेगा ? मै अपना पता तुम्हे बताए देता हू।'

वे उस समय एक टेलीस्क्रीन के सामने खडे थे। कुछ सोचते हुए ओ'ब्रायन ने अपनी दोनो जेबो मे हाथ डाले और चमडे की जिल्द मढी एक पॉकेट बुक तथा सोने की पेसिल निकाली। ओ'ब्रायन ने पता इस प्रकार लिखा कि कोई भी आदमी जो टेलीस्क्रीन के दूसरे छोर पर हो वह तुरन्त पढ सकता था कि ओ'ब्रायन ने क्या लिखा है। उसने पता लिखा और कागज़ फाडकर विन्स्टन को दे दिया।

'मै शाम को अक्सर घर पर ही रहता हू', ओ'ब्रायन ने कहा, 'यदि न रहू तो भी डिक्शनरी मेरा नौकर तुम्हे दे देगा।'

वह चला गया। विन्स्टन अपने हाथ मे कागज़ का टुकडा थामे था। इस बार उसे छिपाने की जरूरत नही थी। फिर भी उसने पते को अच्छी तरह याद कर लिया और कुछ घटो बाद कागज़ जलने वाली भट्टी मे अन्य बहुत-से कागज़ो के साथ छोड दिया।

वे एक दूसरे से अधिक से अधिक कुछ मिनटो तक बाते करते रहे होगे। इस घटना का एक ही मतलब था—ऐसा इन्तजाम किया गया था कि विन्स्टन ओ'ब्रायन का पता जान ले। यह जरूरी था। बिना सीधे पूछे किसी के रहने के स्थान

का पता जाना ही नही जा सकता था । किसी प्रकार की कोई डायरेक्टरी तो थी नही । ओ'ब्रायन का मतलब था, 'यदि तुम कभी मुझसे मिलना चाहो तो मेरा यह पता है जहा भेट हो सकती है।' सभव है डिक्शनरी मे कोई सदेश भी छिपा है । जो कुछ भी हो, एक बात निश्चित थी, वह यह कि जिस षडयत्रकारी दल की कल्पना उसने की थी वह यही था । वह उस दल की चौखट तक पहुच गया था ।

वह जानता था कि उसे देर या सवेर ओ'ब्रायन के बुलाहट का सम्मान कर जाना ही पडेगा । शायद कल, या शायद कुछ समय बाद, यह तय नही था। अब जो हो रहा था वह वर्षो की प्रतीक्षा का परिणाम था । पहला गुप्त मानसिक विचार था । दूसरा था डायरी लिखना । अब शब्दो से आगे कुछ काम करना था । अब आखिरी काम प्रेम मत्रालय मे होने वाला था । उसने स्वीकार कर लिया था । अन्त तो कार्य के आरभ मे ही था । यह भयावह था । यह मौत के ग्रास को चखने के पूर्व का स्वाद था । ओ'ब्रायन का मतलब समझ जाने के बाद उसका शरीर मौत जैसी ठडक अनुभव कर रहा था । लेकिन यह कोई अच्छी बात नही थी । वह यह तो सदैव जानता था कि कब्र है और वह उसकी प्रतीक्षा कर रही है ।

(७)

विन्स्टन जागा तो उसकी आखो मे आसू भरे थे । जूलिया सोते-सोते उसकी तरफ खिसक आई थी । वह कुछ-कुछ बुदबुदाई । जो शब्द उसके मुह से निकले उनका मतलब शायद यह था कि क्या बात है ?

'मैंने सपना देखा है··· ।' उसने कहा और फिर बात पूरी करने के पहले ही रुक गया । सपना देखा था और इसके बाद सपने की याद आ गई ।

वह चुपचाप आखे मूदे पडा था । वह अब भी स्वप्न के सबध मे ही सोच रहा था । वह लम्बा-चौड़ा सपना था जिसमे उसका सारा जीवन चमक रहा था, ठीक उसी तरह जिस तरह गर्मी मे वर्षा के बाद सध्या का पूरा दृश्य चमक उठता है। यह सब कुछ उसी कमरे मे हुआ था । सपने मे कुछ उसे अपने बचपन की भी याद आ गई थी । उसकी मा ने भी कुछ-कुछ उसी प्रकार अपनी बाहे बढाई थी । जिस प्रकार फिल्म मे अपने बच्चे को हैलीकॉप्टर की गोलियो से बचाने के लिए उस यहूदी मा ने बाहो मे भरकर छिपा लिया था । कुछ देर बाद ही वह छोटी किश्ती

बम गिराकर उडा दी गई।

'क्या तुम मानोगी' उसने कहा, 'मै इस क्षण तक यह मानता हू कि अपनी मा की हत्या के लिए मै ही जिम्मेदार हू।'

'तुमने अपनी मा की हत्या क्यो की ?' जूलिया ने सोते-सोते पूछा।

'मैने उसे अपने हाथो से नही मारा।'

सपने मे उसे अपनी मा की अंतिम झलक याद हो आई थी। कुछ ही क्षणो मे उसे मा से सबधित सारी घटनाए घटा की तरह उमड आई। इनको उसने जान-बूझकर भुला रखा था। उसे ठीक याद नही, लेकिन जब यह काण्ड हुआ तो वह दस वर्ष का या शायद बारह का था।

उसके पिता पहले ही लापता हो चुके थे। कितने पहले, उसे यह मालूम नही। उसे याद है कि समय बडा कठिन था। अक्सर हवाई हमलो के दिनो मे उन्हे जमीन के नीचे छिपना पडता था, सडको पर विचित्र पोस्टर चिपके होते थे, युवको के दल के दल घूमते थे, रोटी की दुकानो के सामने लम्बे-लम्बे क्यू लगते थे—कही दूरी पर मशीनगन चलने की आवाज भी सुनाई पड जाती थी और सबसे बडी बात थी कि उन्हें पेट भर खाना कभी नही मिलता था। वह अन्य बच्चो के साथ कूडेखाने मे बदगोभी की पत्तिया, आलू के छिलके, बासी रोटियो के टुकडे ढूढा करता था। वे उन सडको पर जाते थे जहा से ट्रके गुजरती थी। इन ट्रको के खराब सडक पर उछलने से कुछ खली गिर जाती थी। वे लोग उसे भी उठा लेते थे।

पिता के लापता हो जाने के बाद मा ने कोई आश्चर्य प्रकट नही किया और न वह रोई, चिल्लाई ही। परन्तु एक अजीब प्रकार का परिवर्तन उसमे आ गया। वह बिलकुल निर्जीव-सी हो गई। वह किसी ऐसी चीज की प्रतीक्षा कर रही थी जिसे होना ही था। वह घर का काम बराबर करती—खाना बनाना, कपडे धोना, सीना-पिरोना, बिस्तर बिछाना, फर्श पोछना, झाडू लगाना--सभी कुछ होता था, पर बहुत धीरे-धीरे। किसी काम मे उत्साह नही था। वह घटो चुपचाप बिस्तर पर ही बैठी रह जाती थी, बिलकुल स्तब्ध भाव से। छोटी बहन को दूध पिलाती रहती। विन्स्टन की बहन छोटी और दुबली-पतली थी। उमर कोई दो या तीन साल की थी। वह कभी-कभी विन्स्टन को अपनी छाती से लगा लेती और बडी देर तक उसे चिपकाए ही रहती। कहती कुछ भी नही थी। वह छोटा होते हुए भी जानता था कि इसका सबध उस बात से है, जिसकी चर्चा कभी नही की जाती।

वे एक अंधेरे बदबूदार कमरे मे रहते थे। इस कमरे का आधा भाग बिस्तर से ढका होता था। आले मे गैस का नल था, एक अलमारी थी जिसमे लकडी रहती थी। बाहर मिट्टी का बर्तन था। यह कई कमरो के बीच एक था। उसे याद है, उसकी मा गैस के नल पर बर्तन में खाने की चीजे किस तरह झुकी-झुकी बनाती थी। उसे बडी भूख लगती थी लेकिन पेट भर खाने को नही मिलता, और वह चिल्लाकर कहता था कि उसे और खाना क्यो नही दिया जाता। कभी वह अपने हिस्से से अधिक खाना लेने के लिए खुशामद करने लगता था। उसकी मा अधिक खाना देने के लिए तैयार भी रहती थी। वह यह मानकर चलती थी कि लडके को सबसे अधिक खाना मिलना चाहिए। लेकिन वह कितना ही अधिक देती वह और अधिक मागता। हर बार भोजन के समय वह उसे समझाती कि वह बहुत अधिक स्वार्थी न बने और याद रखे कि उसकी छोटी बहन भी है जिसे खाने की जरूरत है। लेकिन कोई फायदा न होता था। वह परोसना बन्द किए जाते ही जोरो से चिल्लाकर रोने लगता था। वह मां के हाथ से बर्तन छीनकर चम्मच से खुद परोस लेना चाहता था। वह अपनी बहन की प्लेट से चीजे उठाकर खा जाता था। वह जानता था कि एसा करने से मा और बहन भूखी रह जाएगी। फिर भी वह समझता था कि ऐसा करना उसका अधिकार है। उसे इतनी भूख लगती थी कि उसे खाने के सिवा कुछ सुझाई ही नही पडता था। खाने के बाद मा की आखे बचाकर वह भडार में से चीजे चुराकर खा जाता था।

एक दिन चॉकलेट का राशन मिला। पिछले कई सप्ताहो से क्या, महीनो से चॉकलेट का राशन नही मिला था। उसे याद है कि वह चॉकलेट का टुकडा उसे कितना कीमती लगता था। वह दो औस का टुकडा था (उन दिनो औंसो की ही बात की जाती थी)। यह टुकडा तीन आदमियो के बीच मिला था। स्पष्ट था कि उसे तीन बराबर टुकड़ो मे बाटा जाना चाहिए था। अकस्मात् विन्स्टन ने चिल्लाते हुए माग की कि उसे सारा चॉकलेट दे दिया जाए। मा ने कहा, वह ज्यादा लालची न बने। बडी देर तक वह जिद्द करता रहा। कभी वह चिल्लाता, कभी आसू बहाता, कभी डाट खाता और कभी खुशामद करता। उसकी छोटी बहन दोनो हाथो से मा को पकडे थी। ऐसी लगती थी जैसे कोई छोटी बदरिया बैठी हो। उसकी बडी-बड़ी आखो से दु ख टपका-सा पडता था। अन्तत. मा ने चॉकलेट का एक तिहाई हिस्सा तोडकर विन्स्टन को और दूसरा उतना ही बड़ा हिस्सा उसकी बहन

को दे दिया। उसकी छोटी बहन ने वह टुकडा धीरे से अपने हाथ मे ले लिया। वह समझ नही पा रही थी कि इसका क्या किया जाए। इसके बाद एकाएक वह झपटा और उसने वह टुकडा जो बहन के हाथ मे था छीन लिया था और बाहर भाग निकला।

'विन्स्टन! विन्स्टन!'—मा ने चिल्लाते हुए कहा, 'लौटो, तुरन्त लौटो। बहन को उसके हिस्से का चॉकलेट वापस करो।'

वह रुक तो गया लेकिन वापस नही लौटा। उसकी मा आतुर प्रतीक्षा से उसकी ओर देखती रही। वह जानता था कि कोई बात होने वाली है पर क्या, यह वह नही जानता था। उसकी बहन थोडा-थोडा रोने लगी थी, क्योकि वह समझ गई थी कि कोई चीज़ उससे छीन ली गई है। मा ने बहन को खीचकर अपनी छाती से चिपका लिया। वह घूमकर सीढियों से नीचे आ गया। चॉकलेट हाथ मे घुल गया था और चिपचिपाने लगा था।

इसके बाद उसने अपनी मा को फिर कभी नही देखा। चॉकलेट खा लेने के बाद उसे अपने आप पर कुछ शर्म आई और वह घटो सडको पर घूमता रहा। आखिर बहुत भूख लगने पर घर वापस लौटा। लौटने पर मा नही मिली। इस प्रकार की घटनाए उस समय भी सामान्य हो चली थी। कमरे मे सिवाय मा और बहन के और कोई चीज गायब नही थी। उन्होने कोई कपडे तक नही लिए थे। मा का ओवर कोट तक टगा था। आज तक उसे निश्चय नही था कि उसकी मा जीवित है या मर गई। बहुत सभव है कि उसे बेगार कराने के लिए भेज दिया गया हो। बहन को शायद किसी अनाथालय मे भेज दिया गया हो। क्योकि विन्स्टन का भी यही हाल हुआ था। ये अनाथालय गृहयुद्ध के दौरान मे खुल गए थे। शायद बहन को मा के साथ ही श्रम-शिविर मे ही भेज दिया गया हो या बहुत मुमकिन कही मरने के लिए ही छोड दिया गया हो।

अभी भी स्वप्न उसके मस्तिष्क में छाया था। विशेष रूप से मा की वे बाहे जो उसकी रक्षा के लिए फैलाई गई थीं और जिन्होने उसे लपेट रखा था। उसे इसी मे सारा अर्थ छिपा लग रहा था। उसका ध्यान एक और सपने की तरफ चला गया। यह सपना उसने दो मास पूर्व देखा था। इस सपने मे मा, उसकी मा सफेद किन्तु जर्जर अवस्था मे बिस्तर पर बैठी थी। यह बिस्तर एक जहाज़ मे था, जो डूबा जा रहा था। उसकी बहन मा से चिपकी थी। मा एकटक

अंधेरे जल से बाहर ऊपर की तरफ देख रही थी।

उसने जूलिया को अपनी मा के लापता होने का किस्सा बतलाया। बिना आखें खोले वह लुढक गई और आराम से लेट गई।

'मै समझती हू, उस समय तुम बडे ही जगली रहे होगे,' उसने कहा, 'आज-कल तो सभी बच्चे सुअर होते है।'

'हा, लेकिन किस्से की असल बात ··'

उसके सास लेने के ढग से साफ जाहिर था कि वह फिर सोई जा रही थी। वह अपनी मा के बारे मे अभी उससे और बाते करना चाहता था। उसे जो कुछ याद था उससे विन्स्टन का अनुमान था कि उसकी मा कोई असाधारण स्त्री नही थी। उसे बहुत अधिक बुद्धिमान भी नही कहा जा सकता था। फिर भी मा मे एक प्रकार की सौजन्यता, पवित्रता थी और वह कुछ अर्थो मे आदर्शवादी थी। बाहर की बातो का उसकी भावनाओ या आदर्शो पर कोई असर नही होता था। यदि आप किसी को प्यार करते है तो बस प्यार करते है, यदि देने के लिए कुछ न भी हो तो भी आप प्यार तो दे ही सकते है। जब चॉकलेट का आखिरी टुकडा भी उसने बहन से छीन लिया तो उसकी मा ने बच्ची को छाती से लगा लिया था। परन्तु उससे कुछ नही हुआ, कुछ मिल नही गया, उससे कोई चॉकलेट नही मिल गया, इससे मा या छोटी बच्ची मरने से बची नही, परन्तु लडकी को प्यार से चिपका लेना उसे स्वाभाविक लगा। नाव में बैठी शरणार्थी महिला ने भी अपने बच्चे को इसी प्रकार अपनी गोद मे छिपा लिया था। हालाकि उसकी गोद गोलियो के आगे कागज़ के पर्दे से अधिक नही थी। पार्टी ने जो सबसे भयानक बात की थी, वह यह थी कि पार्टी के आगे महज भावनाए कोई मूल्य नही रखती और इसके साथ ही पार्टी ने सारी भौतिक शक्तिया भी छीन ली थी। एक बार पार्टी के चगुल मे आ जाने के बाद आप क्या अनुभव करते है और क्या नही, क्या करते है और क्या नही, इससे कोई फर्क नही पडता था। कुछ भी हो, आपको समाप्त कर दिया जाएगा और फिर न आपके बारे में और न आपके किसी काम के बारे में ही कभी कुछ सुना जाएगा। आप इतिहास की धारा से दूध की मक्खी की तरह साफ उठाकर फेक दिए जाएगे। दो पीढी पूर्व के लोगो के लिए यह महत्वपूर्ण नही था क्योकि वे इतिहास को बदलने की कोशिश नही करते थे। वे लोगो के प्रति अपने विश्वास और प्रेम के कारण उनके लिए काम करते थे और उन पर कोई सन्देह नही

करते थे। व्यक्तिगत सबधो को महत्व दिया जाता था। असहाय भाव से प्रदर्शित एक मुद्रा, आलिगन, एक आमू, मरते व्यक्ति के एक शब्द तक का मूल्य हो सकता था। मजदूर अवश्य ही अब भी इसी अवस्था मे थे। वे किसी पार्टी, देश या विचार मे बधे नही थे। जीवन में पहली बार विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह मज़दूरो से घृणा नही करता। उन्हे वह निर्जीव नही समझता। उन्हें वह ऐसा नही समझता जो कभी भविष्य मे विद्रोह करे तो करे—इस समय उनमे कोई दम नही है। मजदूरो मे अभी कम से कम मानवीय भावनाए तो सुरक्षित थी। वे अभी आरभिक अवस्था मे थे। अब उसे स्वय वे बाते प्रयत्न करके सीखनी पड रही थी। उमे इमी के साथ याद आया कि अभी कुछ ही दिन पहले उसने किस प्रकार एक कटे हाथ को ठोकर मारकर नाली मे फेक दिया था, जैसे वह आदमी का हाथ न होकर बदगोभी का कोई टुकडा हो।

'मज़दूर आदमी है,' उसने जोर से कहा, 'हम वह भी नही है।'

'क्यो नही,' जूलिया ने कहा। वह फिर जाग गई थी।

वह कुछ देर मोचता रहा। फिर वह बोला, 'क्या तुमने कभी यह सोचा है कि हम लोग यहा से निकल चलें और फिर एक दूमरे से कभी न मिले। हम दोनो के लिए यह मबसे अच्छा होगा।'

'हा। यह बात मेरे ही दिमाग मे भी कई बार आई। परन्तु फिर भी मै ऐसा करने को तैयार नही हू।'

'हम भाग्यवान है, परन्तु यह क्रम अधिक दिन तक नही चल सकेगा। तुम अभी जवान हो। तुम सामान्य और निर्दोष लगती हो। तुमको मुझ जैसे आद-मियो से दूर रहना चाहिए। शायद तुम अभी पचास साल और जीवित रह सको।'

'नही, मैने सोच लिया है। तुम जो करोगे वही मै भी करूगी। और निराश होने की ज़रूरत नही है। मै जानती हू जीवित कैमे रहा जाना है।'

'शायद हम लोग साल-छ महीने और साथ रह सके—कौन जानता है? अन्त मे तो हमे अलग होना ही पडेगा। उम सयय क्या तुम सोच सकती हो, हम अपने आपको कितना अकेला अनुभव करेगे? एक बार पकडे जाने के बाद फिर कुछ भी शेप नही रहेगा। हम एक दूसरे के लिए कुछ न कर सकेगे। यदि मै अपना अप-राध स्वीकार कर लूगा तो भी वे तुम्हे गोली मार देगे। और अपराध नही स्वीकार करूंगा तो भी वे गोली मार देगे। मुझमे वे जो चाहेगे कहलवा

लगाया जा सकता था और वे यत्रणा देकर आपके मुह से उगलवाए जा सकते थे लेकिन यदि उद्देश्य जीवित रहना न हो, मनुष्य बना रहना हो तो इसमे क्या अन्तर पडता है? वे आपकी भावनाओ को नही बदल सकते। और तो और, आप चाहे तो आप स्वय अपनी भावनाओ मे परिवर्तन नही कर सकते। वे यह अवश्य जान सकते थे कि आपने क्या किया है, आप क्या सोचते और क्या कहते थे, परन्तु अन्तर-मानस के रहस्यो को, जिन्हे आप भी नही जानते, उनमें उनका प्रवेश सभव नही था।

(८)

आखिरकार उन्होने वह काम भी कर ही डाला। जिस कमरे मे वे खडे थे वह लम्बा था। उसमे हलकी रोशनी जल रही थी। टेलीस्क्रीन बहुत धीमा बज रहा था। गहरे नीले रग का कालीन चलने पर ऐसा लगता था जैसे मखमल हो। कमरे के कोने पर ओ'ब्रायन एक मेज पर बैठा था। हरे रग के शेड का टेबिल-लैम्प था। उसके दोनो तरफ कागजो के ढेर थे। जब जूलिया और विन्स्टन को नौकर अन्दर लाया तो उसने सिर उठाकर भी नही देखा।

विन्स्टन का हृदय इतने जोरो से धडक रहा था कि उसे विश्वास नही हो रहा था कि वह बोल भी सकेगा। आखिर हमको फास ही लिया, हमको फास ही लिया, विन्स्टन केवल इतना ही सोच पा रहा था। यहा आना ही बडी गलती थी और साथ आना तो और भी बडी मूर्खता थी। यह सच था कि वे अलग-अलग रास्तो से आए थे और ओ'ब्रायन के मकान की सीढियो पर ही आकर मिले थे। परन्तु ऐसी जगह आना भी साहस का काम था। ऐसा बहुत कम होता था कि कोई पार्टी के अन्तरग सदस्यो के मोहल्ले मे आए, और उनके घर मे अन्दर घुसना तो अनहोनी ही बात थी। बडे-बडे फ्लैटो के ब्लाक थे, हर चीज से अमीरी टपकती थी। हर वस्तु लम्बी-चौडी थी, चारो तरफ खाने की अच्छी-अच्छी चीजो की खुशबू आ रही थी, असली और अच्छी तम्बाकू-गध भी यहा मिलती थी, बिना आवाज किए तेज लिफ्टे सरसराती हुई ऊपर और नीचे चली जाती थी। सफेद वर्दियो मे नौकर इधर-उधर दौडते नजर आते थे। सारा वातावरण डर पैदा कर देता था। यहा आने का उसके पास बडा अच्छा बहाना था। फिर भी उसे हर कदम पर यही भय लगता था कि किसी कोने से काली वर्दीधारी सिपाही निकल

आएगा, उससे उसके कागज मागेगा और तुरन्त बाहर चले जाने को कह देगा। ओ'ब्रायन के नौकर ने बिना किसी तशद्दुद के उन दोनो को अन्दर चला आने दिया। नौकर ठिगना था। उसके बाल काले थे और वह सफेद वर्दी पहने था। उसके चेहरे पर कोई भाव नही था। ऐसा लगता था कि वह चीनी है। जिस रास्ते से होकर वह उन्हे कमरे में ले गया उसमें हलका कालीन बिछा था। दीवाल के दोनो ओर क्रीम जैसे रग का कागज़ लगा था। दीवारो पर सफेद रग था। सभी कुछ बहुत ही स्वस्थ प्रतीत होता था। यह भी डर पैदा करता था। विन्स्टन ने ऐसा कोई रास्ता नही देखा था जिसकी दीवारे आदमियो के आने-जाने की रगड़ से काली न हो गई हो।

ओ'ब्रायन के हाथ मे कागज़ की एक स्लिप थी। इसे वह बड़े ध्यान से देख रहा था। उसका मुह झुका था। नाक स्पष्ट दिखलाई पड रही थी। इससे वह बडा सख्त और बुद्धिमान प्रतीत होता था। कोई बीस सेकेंड वह वैसा ही बैठा रहा। इसके बाद उसने लेखन यत्र सामने खीचकर मत्रालय की भाषा मे आज्ञा लिखवा दी

आइटम एक, अर्धविराम पाच, अर्धविराम सात, बिल्कुल ठीक है। छठा आइटम मजाक-सा लगता है। इसमे विचार अपराध की झलक है। इसे निकाल दो।···

वह उठा और उनकी तरफ आया। कालीन पर चलने की वजह से ज़रा भी आवाज़ नही हुई। सरकारी वातावरण लेखन यंत्र सामने से हटा देने के बाद गायब-सा हो गया था। परन्तु उसका चेहरा पहले की अपेक्षा अधिक कठोर था। ऐसा लगता था कि उनके आने से काम मे बाधा पडी है और वह इस प्रकार की बाधा पडना पसन्द नही करता। विन्स्टन का भय और बढ गया। उसे लगा कि वह बडी ही गलती कर बैठा है। यथा, विन्स्टन के पास क्या सबूत है कि ओ'ब्रायन राजनीतिक षड्यत्रकारी है। आखो मे एकबारगी चमक तथा एकाध सदिग्ध बात कहने के अतिरिक्त ओ'ब्रायन ने कुछ नही किया था और यह कोई प्रमाण नही था। शेष उसकी कल्पना थी जिसका कोई आधार नही था। अब तो वह यह भी नही कह सकता था कि वह डिक्शनरी लेने आया है क्योकि ऐसी हालत मे जूलिया की उपस्थिति को कैसे स्पष्ट करता? जैसे ही ओ'ब्रायन टेलीस्क्रीन से आगे पहुचा कि उसके दिमाग मे कोई ख्याल आया। ओ'ब्रायन रुका, बगल मे

गया और दीवार में लगी स्विच को उसने दबा दिया। खट से आवाज़ हुई और टेलीस्क्रीन से आवाज़ आनी बन्द हो गई।

जूलिया के मुह से अस्पष्ट आवाज निकल गई, इसमे आश्चर्य मिश्रित था। विन्स्टन डरा हुआ था लेकिन फिर भी वह इतना विस्मित हुआ कि बिना बोले रुक न सका।

'क्या आप टेलीस्क्रीन को बद कर सकते है?' वह पूछ ही बैठा।

'हा।' ओ'ब्रायन ने कहा, 'हम बन्द कर सकते है। हमे यह विशेषाधिकार प्राप्त है।'

अब ओ'ब्रायन दोनो के सामने खडा था। उसके मुह का भाव अब भी अन्दर की भावनाओ को व्यक्त नही कर रहा था। वह इन्तजार कर रहा था कि विन्स्टन कुछ बोले। परन्तु वह क्या बोलता? अब भी ऐसा लग रहा था कि ओ'ब्रायन बहुत व्यस्त आदमी है और वह अनुभव कर रहा था कि उसमे मिलने आकर उन लोगो ने काम मे बाधा डाली है जिससे वह परेशान है। टेलीस्क्रीन के बद हो जाने के बाद कमरे मे मौन जैसी शान्ति थी। एक के बाद एक सेकेंड गुजर रहा था। बडी कठिनाई से विन्स्टन ओ'ब्रायन की आखो से आख मिलाकर रख पा रहा था। अकस्मात् ओ'ब्रायन के चेहरे का भाव बदला और ऐसा लगा कि वह मुस्कराने वाला है। ओ'ब्रायन ने अपने विशेष ढग से चश्मे को नाक पर रख लिया।

'क्या मै बोलू या तुम कुछ कहोगे?' उसने पूछा।

'मै ही कहता हू,' तुरन्त विन्स्टन बोला, 'क्या टेलीस्क्रीन बिलकुल बन्द हो गई?'

'हा, हर चीज बन्द है। हम बिल्कुल अकेले है।'

'हम यहा इसलिए आए है, क्योकि···

विन्स्टन रुक गया, उसने अनुभव किया कि उसका उद्देश्य कितना अस्पष्ट है। यह अस्पष्टता शायद वह पहली बार अनुभव कर रहा था। वह नही जानता था कि ओ'ब्रायन से किस प्रकार की मदद मिल सकेगी, इसलिए वह यह भी नही जानता था कि वह अपना क्या उद्देश्य बतलाए। पर वह कहता गया हालाकि वह जानता था कि उसका कथन बडा लचर और कमजोर साबित होगा।

'हमारा ख्याल है कि पार्टी के विरुद्ध कोई षड्यत्रकारी दल काम कर रहा

है और आप भी उसके सदस्य हैं। हम उस दल के सदस्य बनना चाहते हैं। हम भी पार्टी के शत्रु है। हमारा 'इगसोश' के सिद्धातो मे कोई विश्वास नही है। हम विचार-अपराधी है। हम व्यभिचारी भी हैं। हम आपसे इसलिए यह रहस्य कह रहे है क्योकि हम अपने आपको आपकी दया पर छोड देना चाहते है। यदि आप हमसे कोई काम लेना चाहे तो हम उसके लिए तैयार है।'

वह रुक गया और उसने पीछे देखा। शायद दरवाज़ा खुल गया था। वह नौकर दरवाजा बिना खटखटाए अन्दर चला आया था। विन्स्टन ने देखा उसके हाथ मे एक ट्रे है। ट्रे मे काच की सुराही और गिलास थे।

'मार्टिन भी हमारा एक साथी है,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'ट्रे इधर ले आओ मार्टिन। गोल मेज पर रखो। कुर्सिया तो काफी है न? ठीक है, हम वही बैठकर बातें करेंगे। अपने लिए भी एक कुर्सी ले आओ, मार्टिन। अब हम काम की बाते करेंगे। और दस मिनट के लिए तुम यह सोचना बद कर दो कि तुम नौकर हो।'

मार्टिन भी आराम से बैठ गया। परन्तु उसके चेहरे से नौकर की भावनाए दूर नही हुई। ऐसा जरूर लगता था कि वह विशेष कृपापात्र नौकर है। विन्स्टन उसे तिरछी नजर से देखता रहा। ऐसा लगता था कि वह सारी जिन्दगी नौकर का ही अभिनय करता रहा है और यह अभिनय करते-करते इतना अभ्यस्त और सतर्क हो गया है कि वह एक मिनट के लिए भी नौकर के पात्र का स्वरूप नही छोडना चाहता। सुराही से गिलासो में ओ'ब्रायन ने शराब डाली और गिलास को लाल पेय से भर दिया। ऊपर से देखने पर सुराही का तरल पदार्थ काला-सा लग रहा था। परन्तु बगल से वह लाल दीखता था। उसकी खुशबू कुछ खट्टी-मीठी-सी थी। जूलिया गिलास उठाकर उसे बडी उत्सुकता से सूघने लगी।

'यह शराब है,' ओ'ब्रायन ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुमने शायद किताबो मे इसके बारे मे पढा होगा। पार्टी के छोटे सदस्यो तक यह नही पहुच पाती है।' इसके बाद गिलास उठाकर उसने सबके स्वास्थ्य की कामना की। साथ ही नेता इमैनुअल गोल्डस्टीन का भी नाम लिया।

विन्स्टन ने भी अपना गिलास कुछ उत्सुकता से उठाया। इस लाल शराब के बारे मे उसने काफी पढा था। इसके काफी सपने भी देखे थे। यह लाल शराब भी मि० चारिंगटन के पेपरवेट की भाति बीते युग की चीज थी। पता नही क्यो वह इसके स्वाद की कल्पना सदैव मीठी ही करता था, जामुन के मुरब्बे की भाति।

वह यह भी मोचता था कि इस लाल शराब को पीते ही नशा आ जाता है परन्तु चखने पर स्वाद बिलकुल भिन्न निकला। सच तो यह है कि वर्षो नकली शराब पीने के बाद उसमे इस असली लाल शराब का स्वाद अनुभव करने की क्षमता ही शेप नही रह गई थी। उसने खाली गिलास मेज़ पर रख दिया।

'तो क्या गोल्डस्टीन नाम का सचमुच कोई व्यक्ति है?' उमने पूछा।

'हा है। और वह जिन्दा भी है। कहा है यह नही जानता।'

'और उसका दल, षड्यत्र—ये सब सच है क्या? क्या ये विचार पुलिस की मनगढत बाते नही है?"

'नही, वे सब सच है। हम उस दल को ब्रदरहुड कहते है। तुम इस दल के बारे मे आज जितना जानते हो उससे अधिक कभी नही जान पाओगे। बस इतना ही तुम्हे और मालूम होगा कि तुम भी इसके सदस्य हो। मै अभी तुम्हे बताऊगा।' अपनी कलाई मे बधी घडी की ओर देखते हुए ओ'ब्रायन ने कहा, 'पार्टी के अन्तरग सदस्यो के लिए भी यह सुरक्षित नही है कि वे एक बार मे आधे घटे से अधिक टेलीस्क्रीन को बन्द रखें। तुम्हे साथ-साथ नही आना चाहिए था। अब तुम लोग अलग-अलग जाना। तुम कामरेड—' जूलिया की ओर देखते हुए उसने कहा, 'तुम पहले निकल जाना। अभी बीस मिनट का वक्त है। मै तुमसे कुछ प्रश्न पूछूगा, साधारण रूप से तुम क्या करने को तैयार हो?'

'कुछ भी, जो हम कर सकते हो।' विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन अपनी कुर्सी पर कुछ मुडकर इस तरह बैठ गया कि विन्स्टन का मुह उसके सामने रहे। जूलिया की तरफ उसने देखना ही बन्द कर दिया। उमने यह मान लिया कि विन्स्टन ही जूलिया के लिए उत्तर दे सकता है। थोडी देर के लिए उसकी पलके झुक गई। फिर धीरे से, बिना किसी भाव के उमने प्रश्न पूछने आरभ किए। उसके स्वर से ऐसा लगता था कि उसे प्रश्न पूछने की आदत पडी हुई है या उसे उनके उत्तर सुनने का अभ्यास हो गया था।

'क्या आप अपना जीवन देने को तैयार है?'

'हा।'

'क्या ऐसे तोड-फोड के काम करने को तैयार है जिनसे सैकडो निर्दोप व्यक्ति मर जाए?"

'हा।'

'क्या आप अपने देश के साथ धोखा करने को प्रस्तुत हैं ?'

'हा।'

'क्या आप धोखेबाजी, ठगी, जालसाजी,इधर की बात उधर करके लोगो को धमकाने के लिए तैयार है ? क्या आप बच्चो को बिगाडने के लिए, नशीली दवाएं बाटने को, वेश्या वृत्ति को प्रोत्साहन देने को, यौन रोगो को फैलाने को तैयार है ? सक्षेप मे क्या आप ऐसा कोई भी कार्य करने को तैयार है जिससे लोगो की हिम्मत टूटे और पार्टी की शक्ति कम हो जाए ?'

'हा।'

'उदाहरण के लिए, यदि आपसे कहा जाए कि आप किसी बच्चे के मुह पर अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए तेजाब छोड दे तो क्या आप यह काम कर सकेंगे ?'

'हा।'

'क्या आप अपना वर्तमान रूप छोडकर शेष जीवन भर वेटर या बन्दरगाह के मजदूर के रूप मे अपना जीवन व्यतीत करने को तैयार है ?'

'हा।'

'क्या आप, जब कहा जाएगा तब आत्महत्या कर लेगे ?'

'हा।'

'क्या आप दोनो एक दूसरे को छोडने और फिर कभी न मिलने की प्रतिज्ञा करने को तैयार है ?'

'नही।' इस बार जूलिया बोल पडी।

विन्स्टन को ऐसा लगा कि वह बहुत देर बाद बोल पाई। कुछ देर के लिए उसे ऐसा लगा कि उसमें बोलने की भी ताकत नही रही है। उसके मुह से बडी मुश्किल से निकल पाया, 'नही।'

'यह बतला कर तुमने अच्छा किया,' ओ'ब्रायन ने कहा।

'हमारे लिए हर बात को पहले ही जान लेना जरूरी है।'

इसके बाद वह जूलिया की तरफ मुडकर तनिक भावनापूर्वक बोला 'तुम यह समझ रही हो न कि यदि यह बच भी गया तो बिलकुल भिन्न किस्म का व्यक्ति होगा ? हमे इसका रूप बिलकुल बदल देना होगा। इसका चेहरा, इसकी चाल-ढाल, इसके हाथो की बनावट, इसके बालो का रग और इसकी आवाज तक बदल जाएगी। और तुम, तुम शायद खुद भी बदल जाओ। हमारे सर्जन

आदमी को बिलकुल बदल सकते हैं। कभी-कभी यह जरूरी हो जाता है। आवश्यकता पडने पर हम कभी शरीर का कोई अग भी काट डालते हैं।'

विन्स्टन से मार्टिन के मगोलो जैसे चेहरे पर फिर दृष्टि डाले बिना नही रहा गया। उसके चेहरे पर कही कोई घाव का निशान नही था। जूलिया कुछ और पीली हो गई थी। परन्तु वह ओ'ब्रायन की ओर बडी वीरता मे देख रही थी। वह कुछ अस्पष्ट रूप से बुदबुदाई जिसका अर्थ सहमति था।

'ठीक है। यह तो तय हो गया।'

मेज पर चादी का डिब्बा था। उसमे सिगरेटे थी। ओ'ब्रायन ने उसमे से एक सिगरेट खुद निकालकर डिब्बा अन्य लोगो की ओर सरका दिया। इसके बाद खडा होकर इधर-उधर टहलने लगा। ऐसा लगता था कि वह खडे होकर ज्यादा अच्छी तरह सोच सकता था। सिगरेटे बहुत अच्छी थी। वे रेशम जैसे कागज मे लिपटी थी। उसने फिर अपनी कलाई की घडी देखी।

'मार्टिन, अब तुम रसोई मे जाओ। मै पन्द्रह मिनट मे टेलीस्क्रीन खोलूगा। इन कामरेडो को भली भाति पहचान लो क्योकि इनसे शायद तुम्हे फिर काम पडे और तुम फिर शायद इन्हे देखो। मुझे सभवत अब इनसे नही मिलना पडेगा।'

मार्टिन ने इन्हे फिर देखा। उसकी आखो मे मित्रता का भाव लेशमात्र भी नही था। वह उन्हे पहचानने के लिए उनके चेहरे की विशेषताए रट रहा था लेकिन ऐसा लगता था कि उसकी उनमे रुचि नही है। उसी समय विन्स्टन को खयाल आया कि शायद नकली चेहरे पर किसी भी प्रकार के भाव आते-जाते ही नहीं हैं। बिना किसी प्रकार की सलाम-दुआ किए मार्टिन कमरे से बाहर चला गया। वह धीरे से अपने पीछे किवाड भी बन्द कर गया। ओ'ब्रायन अब भी टहल रहा था। एक हाथ उसका पतलून मे था और दूसरे हाथ मे सिगरेट थी।

'आप समझ लीजिए कि आपको अधेरे मे लडना है।' उसने कहा, 'आप हमेशा इसी प्रकार रहेगे। आपको आदेश मिलेगे और उनका आपको पालन करना होगा। आप आज्ञाओ का कारण नही जान सकेगे। बाद में आपके पास मै एक पुस्तक भेजूगा जिससे वर्तमान समाज की प्रकृति को समझ सकेगे। उसी से आप यह भी समझ सकेगे कि हम इसको किस प्रकार नष्ट करेगे। जब आप पूरी किताब पढ लेगे तो आप ब्रदरहुड के सदस्य हो जाएगे। लेकिन आन्दोलन के सामान्य उद्देश्यो या तात्कालिक कार्यो के सम्बन्ध मे आप कुछ भी नही जान

सकेंगे। मैं केवल यह बतला सकता हूं कि ऐसे आन्दोलनकारियो का दल अवश्य है। परन्तु यह नही कह सकता कि इसकी सदस्य-सख्या सौ है या दस लाख। अपने ज्ञान के आधार पर आप कभी यह भी नही कह सकेंगे कि इस दल की सदस्य-सख्या बारह भी है। आपका तीन या चार व्यक्तियो से सम्पर्क होगा। ये सम्पर्क भी बदलते रहेंगे। मुझसे आपका पहली बार सम्पर्क हुआ, इसलिए वह बना रहेगा। मेरे द्वारा आपको आज्ञाए मिलेंगी। यदि कोई सूचना देनी हुई तो वह मार्टिन के जरिए मिलेगी। जब आप पकड लिए जाएगे तो आप अपना-अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे। लेकिन आपके पास स्वीकारोक्ति के लिए बहुत कम मसाला होगा। आप कुछ साधारण व्यक्तियो को ही फसा सकेंगे। शायद आप मुझे भी धोखा न दे सकेंगे। सभव है, उस समय तक मै मर जाऊ या मै बिलकुल नया आदमी ही बन जाऊ।'

ओ'ब्रायन बराबर नरम कालीन पर इधर से उधर टहलता रहा; स्थूलकाय होते हुए भी उसके चलने मे शान थी। यह शान एक हाथ पतलून की जेब मे पडे रहने से और बढ गई थी। उसके व्यक्तित्व से शक्तिशालिता ही नही बल्कि आत्मविश्वास भी झलकता था। ऐसा लगता था वह बहुत समझदार है। वह चाहे जितना अपने सिद्धान्तो पर दृढ हो परन्तु उसमे कट्टरता नही थी। जब वह हत्याए, आत्म-हत्याओ, यौन रोगो, कटे अगो तथा बदले चेहरो के बारे मे बात कर रहा था तो ऐसा लगता था कि वह कह रहा है, 'इन बातो से छुटकारा नही है। यह हमे करना ही पडेगा। परन्तु हम यह काम उस समय नही करेंगे जब जीवन आज से अधिक सुखपूर्वक बिताने के काबिल होगे।' विन्स्टन की एकदम यह इच्छा हुई कि वह श्रद्धा मे ओ'ब्रायन के सामने सिर झुका दे। कुछ देर के लिए वह गोल्डस्टीन को भी भूल गया। ओ'ब्रायन के सुसभ्य किन्तु बदसूरत चेहरे को देखकर यह विश्वास ही नही होता था कि उसे कभी कोई पराजित भी कर सकता है। कोई भी सकट हो, वह उसका सामना करने लिए प्रस्तुत था, कोई भी खतरा हो, वह उसे पहले ही देख सकता था। जूलिया भी प्रभावित लग रही थी। उसका सिगरेट बुझ गया था। और वह ध्यान से सुन रही थी। ओ'ब्रायन कह रहा था.

'ब्रदरहुड के बारे मे तुम्हारी अपनी धारणाए भी होगी। तुमने सोचा होगा कि षड्यन्त्रकारियो का एक बहुत बडा समूह होगा। वे किसी तहखाने मे मिलते होगे। दीवारो पर सदेश लिखते होगे। एक दूसरे को साकेतिक भाषा से पहचान

लेते होगे या हाथो से कोई विशेष इशारा करते होगे। इस तरह की कोई चीज़ नही है। दल के लोगो के पास एक दूसरे को पहचानने का कोई साधन नही है। एक सदस्य दो-चार अन्य सदस्यो को ही जान सकता है। गोल्डस्टीन स्वय यदि विचार-पुलिस के हाथ पड जाए तो वह भी पूरी सदस्य-सूची नही दे सकता। और न वह ऐसी कोई सूचना ही दे सकता है जिससे पूरी सदस्य-सूची का ज्ञान हो जाए। ऐसी कोई सूची है ही नही। ब्रदरहुड को कोई भी नष्ट नही कर सकता क्योकि वह सामान्य दल नही है। यह दल विचारमात्र है, जो अनश्वर है। इसी विचार-सूत्र से यह दल बधा हुआ है। विचार के अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु आपको बाधे नही रखेगी। आपका कोई साथी नही होगा और न कोई आपको हिम्मत ही बधाएगा। अन्त मे जब आप पकडे जाएगे तो भी आपको कोई मदद नही मिलेगी। हम अपने सदस्यो को कोई सहायता नही करते। जब हम बहुत ही आवश्यक समझते है कि पकडा गया सदस्य चुप रहे तो हम कभी-कभी चुपचाप रेजर ब्लेड चोरी से उसके पास पहुचवा देते है। आपको बिना प्रतिफल और बिना किसी आशा के जीवित रहने का अभ्यास डालना होगा। आप थोडा-सा काम करेगे, पकडे जाएगे, अपराध स्वीकार करेगे और मर जाएगे। यही परिणाम है जिन्हे आप देख सकेगे। हमारे जीवन-काल मे कोई दृष्टिगोचर परिणाम होगा, हमे इसकी आशा नही करनी चाहिए। हम मृत है। हमारा असली जीवन भविष्य है। हम उसमे मुट्ठी भर धूल के रूप या मुट्ठी भर हड्डियो के रूप मे ही भाग ले सकेगे। यह भावी जीवन भी कितनी दूर है, नही कहा जा सकता। शायद एक हजार साल लग जाएगे। इस समय सिवा इसके और कुछ सभव नही है कि हम स्वस्थ व्यक्तियो के क्षेत्र को अर्थात् सदस्य-सख्या को धीरे-धीरे बढाते जाए। सामूहिक रूप से तो हम कोई काम कर ही नही सकते। हम ज्ञान का प्रचार व्यक्ति से व्यक्ति तक ही कर सकते है। विचार-पुलिस के सामने अन्य कोई चारा नही है।'

वह रुक गया और उसने तीसरी बार घडी की ओर देखा।

'कामरेड, अब वक्त हो गया है, आप जाए।' उसने कहा, 'लेकिन रुकिए। अभी भी सुराही आधी भरी है।' उसने गिलास भर दिए और अपना गिलास उठा लिया।

'इस बार हम क्या कामना करेगे?' उसने सुझाव देते हुए कहा, 'विचार-पुलिस अव्यवस्थित हो जाए? बडे भाई की मौत हो? मानवता के नाम पर? भविष्य के लिए?'

विन्स्टन ने कहा, 'अतीत के लिए ?'

'हा, अतीन अधिक महत्वपूर्ण है।' ओ'ब्रायन ने गभीरतापूर्वक कहा। उन्होने अपने-अपन गिलास खाली कर दिए। एक क्षण बाद ही जूलिया चलने को उठ खड़ी हुई। ओ'ब्रायन ने, एक अलमारी के ऊपर रखे डिब्बे से एक सफेद चपटी गोली जूलिया को दी, और कहा कि वह उसे अपनी जीभ पर रख ले। यह जरूरी है कि उनके मुह से यहा से जाते समय शराब की गध न आए। लिफ्ट वाले कर्मचारी इस बात पर बडा ध्यान रखते है। जैसे ही जूलिया बाहर गई, ओ'ब्रायन उसके अस्तित्व के सबध मे एकदम भूल गया। वह टहलता हुआ दो कदम चला।

'कुछ ब्यौरे की बाते तय करनी है,' उसने कहा, 'मैं समझता हू, तुम्हारे पास छिपने का कोई गुप्त स्थान है।'

विन्स्टन ने मि० चारिंगटन की दुकान के ऊपर वाले कमरे के सबध मे बतलाया।

'फिलहाल यह ठीक है। इसके बाद हम तुम्हारे लिए कुछ और व्यवस्था कर देगे। यह ज़रूरी है कि गुप्त स्थान बराबर बदलता रहे। इस बीच मे तुम्हे किताब भेजने की कोशिश करूगा।' विन्स्टन को ऐसा लगा कि ओ'ब्रायन कहने वाला था, 'गोल्डस्टीन की किताब।' परन्तु उसने कहा नही। ओ'ब्रायन ने अपना कथन जारी रखते हुए कहा, 'पुस्तक की एक प्रति प्राप्त करने मे ही कई दिन लग जाते है। इसकी बहुत अधिक प्रतिया उपलब्ध नही है। विचार-पुलिस पता लगते ही या हाथ पडते ही नष्ट कर डालती है। हम उतनी तेज़ी से पुस्तक की प्रतिया छाप नही पाते। परन्तु इससे कोई भी फर्क नही पडता। पुस्तक अमर है। यदि अतिम प्रति भी नष्ट हो जाए तो भी हम अक्षरश वैसी ही पुस्तक फिर प्रकाशित कर देंगे। क्या तुम हमेशा अपने साथ छोटा बैग रखते हो ?'

'हा, नियमित रूप से।'

'कैसा है वह ?'

'काला और पुराना, उसमे दो पट्टिया है।'

'काला और पुराना, दो पट्टियो वाला ? अच्छा। बहुत जल्दी ही किसी दिन—तारीख तो नही बता सकता—सवेरे काम पर जब पहुचोगे तो तुम्हे एक सदेश मिलेगा। इसमे एक अशुद्धि होगी, जिसकी वजह से तुम उस सदेश को

दुवारा मागोगे। उसके दूसरे दिन तुम बिना बैग के दफ्तर जाओगे। मेरा खयाल है आपने अपना बेग गिरा दिया है। यह कहते हुए एक आदमी जो बैग तुम्हे देगा उसमे गोल्डस्टीन की पुस्तक होगी। तुम उसे पढकर चौदह दिन में वापस कर देना।'

कुछ क्षण वे चुप रहे।

'अभी कुछ मिनट बाद तुम्हे जाना है। हम फिर मिलेंगे। यदि हम दुबारा मिले तो ।'

विन्स्टन ने आख उठाकर उसकी तरफ देखा और फिर कुछ हिचकिचाते हुए कहा, 'तो वह ऐसी जगह होगी जहा बिलकुल अधेरा न होगा।'

ओ'ब्रायन ने सिर हिला दिया। उसने अपनी स्वीकृति इस प्रकार दी जैसे वह सदर्भ जानता हो, 'हा वह जगह ऐसी होगी जहा बिलकुल अधेरा नही होगा।—और हा। इस बीच तुम्हे कोई सदेशा देना है? कोई प्रश्न पूछना है?'

विन्स्टन सोचने लगा। अब उसे आगे कोई प्रश्न तो करना नही है। उसे कुछ करने की इच्छा भी नहीं है। इसके बजाय उसे उस अधेरे कमरे का खयाल आया जिसमे बचपन मे वह अपनी मा के साथ रहता था और जहा उसकी मा ने अपने अतिम दिन व्यतीत किए थे। फिर उसे मि० चारिंगटन वाले कमरे की याद आई। काच के पेपरवेट का खयाल आया। गुलाब की लकडी के फ्रेम वाली तस्वीर की याद आई। उसके मुह से अकस्मात् निकल गया

'क्या आपने कभी यह कविता सुनी है Oranges and lemons, say the bells of St Clement's?'

ओ'ब्रायन ने सिर हिलाकर सकारात्मक उत्तर दिया। और फिर गभीर किन्तु अत्यत शिष्ट ढग से कविता की शेष पक्तिया पूरी कर दी :

'Oranges and lemons, say the bells of St Clement's,
You owe me three farthings, say the bells of St Martin's,
When will you pay me? say the bells of Old Bailey,
When I grow rich, say the bells of Shoreditch'

विन्स्टन ने पूछा, 'क्या आपको अतिम पक्ति भी याद थी?'

'हा, मुझे अतिम क्ति भी याद थी,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'अब मैं समझता हू, तुम्हे प्रस्थान करना चाहिए। लेकिन रुकना। अच्छा हो कि तुम भी इसमे से एक

टिकिया खाते जाओ।'

विन्स्टन जैसे ही खडा हुआ ओ'ब्रायन ने अपना हाथ बढा दिया। ओ'ब्रायन के मज़बूत पंजे मे हाथ मिलाते समय विन्स्टन को ऐसा लगा कि उसकी हड्डिया चूर-चूर हो जाएगी। विन्स्टन ने दरवाजे से एक बार और मुडकर देखा। ओ'ब्रायन उसे भुलाने की प्रक्रिया मे था। वह टेलीस्क्रीन के सामने खडा उसका स्विच दबाने वाला था। उसके आगे हरे शेड का टेबिल लैम्प मेजपर रखा था और मेज पर ही लेखन यंत्र भी था और बास्केटो मे सरकारी कागज भरे थे। भेंट समाप्त हो गई थी। विन्स्टन ने सोचा, तीस सेकेंड के भीतर ओ'ब्रायन पार्टी के काम मे फिर जुट जाएगा।

(६)

विन्स्टन थककर चूर-चूर हो गया था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सारे शरीर की शक्ति किसी ने चूस ली थी। उसे वे कपडे तक बोझ प्रतीत हो रहे थे जिन्हे वह पहना था। पैरो मे फुटपाथ से आते समय चोट लग गई थी। हाथ की मुट्ठी खोलना और बन्द करना तक परिश्रमसाध्य था।

पिछले पाच दिनो मे उसने नब्बे घंटे काम किया था। उसने ही क्या मंत्रालय के हर कर्मचारी ने इतना ही काम किया था। अब सब काम खतम हो गया था और कल सुबह तक के लिए बिलकुल फुरसत थी। वह छ घटे अपने गुप्त कमरे में और नौ घटे बिस्तर पर बिता सकता था। धीरे-धीरे तीसरे पहर की धूप मे वह अधेरी गली से मि० चारिंगटन की दुकान के ऊपर वाले कमरे के लिए रवाना हुआ। वह पुलिस के गश्ती दल पर भी अपनी आखे गडाए था। परन्तु मन ही मन उसे लग रहा था, आज अब उससे कोई छेडछाड नही करेगा। उसके हाथ मे भारी बैग था जो बार-बार उसके घुटने से टकरा रहा था। उसके अन्दर वही किताब थी। किताब छ दिन पूर्व उसके पास आ गई थी। परन्तु उसे देखना तो दूर, खोलने तक का अवकाश नही मिला था।

घृणा सप्ताह के छठे दिन इतने जुलूस निकल चुके थे, इतने व्याख्यान हो चुके थे, इतना शोर मच चुका था, इतने गाने गाए जा चुके थे, इतने पोस्टर लग चुके थे, इतनी फिल्मे दिखलाई जा चुकी थी, इतने बिगुल, नगाडे और दमामे मार्च के साथ पीटे जा चुके थे, इतने टैंक जमीन रौंद चुके थे, हवाई जहाज़ उड़ चुके थे,

तोपे दागी जा चुकी थी कि यूरेशिया के विरुद्ध लोग बुरी तरह उबल रहे थे। उस समय जनता के क्रोध की दशा यह थी कि यदि उमी समय दो हजार यूरेशियन युद्धापराधियो को फासी दी जानी होती तो जनता उनको फासी दिए जाने के पूर्व ही उन्हे टुकडे-टुकडे कर मार डालती। उसी समय घोपणा की गई कि ओशनिया की लडाई यूरेशिया मे नही है बल्कि ईस्ट एशिया से है। यूरेशिया मित्र है।

बेशक, कही भी यह स्वीकार नही किया गया कि कोई परिवर्तन हुआ है। ईस्ट एशिया मे दुश्मनी और यूरेशिया मे मैत्री की बात एक माथ मब स्थानो मे वतला दी गई। विन्स्टन लन्दन के मध्य स्थित एक स्क्वायर मे हुए प्रदर्शनो मे भाग ले रहा था। जिम ममय यह हुआ, रात का वक्त था। सफेद चेहरे और नीले झडे रोशनी मे चमक रहे थे। स्क्वायर मे उस समय हजारो आदमी थे। करीब एक हजार बालक-गुप्तचर भी थे। लाल-पट्टियो से ढके मच पर अन्तरग पार्टी का एक सदस्य भापण दे रहा था। वक्ता दुबला-पतला था। उसके हाथ लम्बे-लम्बे थे। मिर नगा था। कही-कही थोडे-बहुत बालो के गुच्छे-से जरूर थे। वह एक हाथ से माइक्रोफोन को पकडे था और उसका दूसरा हाथ ऊपर की तरफ हवा मे था। आवाज बडी सख्त थी। वह अत्याचारो, हत्याओ, निष्कासनो, लूटो, बलात्कारो, बदियों को दी गई यत्रणाओ, नागरिको पर की गई बमवर्षाओ का लम्बा इतिहास सुना रहा था। वह झूठे प्रचार, अन्यायपूर्ण आक्रमण, भगमधियो की बाबत भीड को बता रहा था। यह असभव था कि आप व्याख्यान सुनकर वक्ता की बाते न मानें और फिर क्रोध मे पागल न हो उठे। बीच-बीच मे जनसमूह इतनी जोर से चिघाड उठता था कि उसमे वक्ता का कठ डूब जाता था। सबसे ज्यादा शोर स्कूल में पढने वाले बच्चे कर रहे थे। अभी व्याख्यान शुरू हुए मुश्किल से बीस मिनट गुजरे होगे कि एक आदमी कोई कागज लेकर मच पर दौडता हुआ आया। वक्ता ने विना रुके कागज पढ लिया; उसकी आवाज या बोलने की चालढाल में कोई फर्क नही पडा, और न व्याख्यान के शब्द ही बदले, परन्तु अकस्मात् नाम बदल गए। बिना एक भी शब्द कहे जनसमूह वस्तुस्थिति समझ गया। ओशनिया की लडाई ईस्ट एशिया से है। अकस्मात् दूसरे ही क्षण बडी अशान्ति-सी मच गई। झडे और पोस्टर जिनसे स्क्वायर सजाया गया था, गलत थे। आधे से ज्यादा पोस्टरो पर गलत शक्ले थी। यह किमी दुश्मन के एजेट की कार्रवाई थी। गोल्ड-स्टीन के साथी अपनी साजिश मे जुटे है। थोडी देर के लिए सारा काम बन्द हो

गया और कुछ ही क्षणो मे सारे पोस्टर फाड डाले गए । बच्चो ने सारी झण्डिया छतो पर चढ-चढकर काट दी । वक्ता माइक्रोफोन पकडे, अपना हाथ हवा मे घुमाता हुआ बराबर भाषण देता रहा । एक मिनट बाद ही जनसमूह फिर पहले की भाति क्रोध से गरज रहा था । घृणा प्रचार वैसे ही जारी था, जैसे पहले, केवल लक्ष्य बदल गया था ।

विन्स्टन इस बात से बडा प्रभावित हुआ था कि वक्ता ने अपना भाषण बीच वाक्य मे से बदला था फिर भी वाक्य कहीं से भग नही हुआ था । परन्तु उस समय विन्स्टन के दिमाग मे अन्य बाते घूम रही थी । जब लोग पोस्टर और झडिया फाडने मे व्यस्त थे तभी एक आदमी ने उसकी बाह छूकर कहा, 'क्षमा कीजिएगा । आपने अपना बैग गिरा दिया है ।' उसने बिना कोई भाव प्रकट किए बैग ले लिया । वह उस समय भी जानता था कि अभी वह कई दिन यह बैग खोल भी नही सकेगा । प्रदर्शनो के समाप्त होते ही वह मत्रालय पहुच गया । हालाकि रात के ग्यारह बज चुके थे । मत्रालय के समस्त कर्मचारी यही कर रहे थे । टेलीस्क्रीन पर काम पर आने के लिए आदेश देने की कोई आवश्यकता ही नही थी ।

ओशनिया की लडाई ईस्ट एशिया से थी । हमेशा रही है । पिछले पाच वर्ष का सारा सरकारी रिकर्ड बेकार हो गया था । रिपोर्टे, सब तरह के कागज, समाचारपत्र, पुस्तके, पैम्फलेट, फिल्मे और फोटोग्राफ सभी बेकार हो गए थे । सबमे बिजली की तेजी से परिवर्तन किए जाने की आवश्यकता थी । यद्यपि कोई आदेश नही दिया गया था लेकिन सब यह जानते थे कि उनके विभागीय अध्यक्ष यह चाहते थे कि एक सप्ताह के अन्दर एक भी ऐसा कागज बाकी न रहे जिसमे यूरेशिया से लड़ाई का जिक्र हो और ईस्ट एशिया से मित्रता की बात हो । बहुत बडा काम था । रिकर्ड विभाग का हर आदमी अठारह-अठारह घटे काम कर रहे थे । मुश्किल से दो या तीन घंटे सोने को मिलता था । तहखानो से चटाइया ला-लाकर कमरो के बाहर बरामदो मे बिछा दी गई थी । कैंटीन का नौकर मेजो पर ही सैंडविचें और विक्टरी कॉफी बाट जाता था । हर बार सोने जाने के पूर्व विन्स्टन अपनी डेस्क साफ कर देता लेकिन जब वह उठता तो देखता था फिर वह कागजो से लदी है । जब वह उठना तो कागज उड रहे होते । चिपकती आखो को मलता और सिर दबाता हुआ जब वह उठता तो सबसे पहले उडते कागजो को दबाता । सारा काम यत्रवत् होता था । अक्सर एक की जगह दूसरा नाम लिख देने से काम चल

जाना था परन्तु ब्यौरे की रिपोर्ट मे सावधानी और बहुत अक्लमदी से काम करने की जरूरत थी। युद्ध का ससार के एक भाग से दूसरे भाग मे स्थानान्तरित करने मे काफी भौगोलिक ज्ञान की आवश्यकता थी।

तीसरे दिन विन्स्टन की यह हालत हो गई थी कि उसकी आखो मे असह्य पीड़ा होने लगी थी और कुछ ही मिनटो बाद चश्मा साफ करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगती थी। ऐसा लग रहा था कि उसे काम दबाए डाल रहा है, पीसे दे रहा है, और उसे काम न करने का हक है। परन्तु वह अपने स्नायविक तनाव की धुन मे काम मे जुटा था। वह पेसिल से जो कुछ लिख रहा था वह सब झूठ था। हर आदमी, जो वहा काम कर रहा था, जालसाजी को भली भाति करना चाहता था। छठे दिन सुबह कागज आने कम हो गए। आधे घटे तक कुछ नही आया। फिर एकाध कागज आया। इसके बाद फिर कुछ नही आया। हर जगह काम का जोर घट गया था। बहुत जबर्दस्त काम जिसकी कही चर्चा भी नही होनी थी, पूरा हो गया था। बारह बजे अगले दिन तक की छुट्टी कर दी गई। विन्स्टन के बैग में अब भी वह किताब थी। वह घर गया। उसने दाढी बनाई। नहाया। नहाने मे ही उसे नीद आ गई।

कापते घुटनो से वह मि० चारिंगटन की दुकान से ऊपर गए जीने पर चढा। वह थका था परन्तु उसे अब नीद आ नही रही थी। उसने खिड़की खोल दी। गन्दा स्टोव जला दिया। जूलिया भी आ ही जाने वाली थी। इस बीच वह किताब पढेगा। वह आराम कुर्सी पर बैठ गया और उसने बैग खोला।

काली जिल्द चढी एक किताब निकल आई। इस पर कोई नाम नही था। मुद्रण भी कही-कही टेढा-मेढा था। ऊपर के पृष्ठ पुराने लगते थे। वे तुरन्त अलग हो जाते थे। ऐसा लगता था कि पुस्तक कई हाथो से गुजरी थी। अन्दर के मुख-पृष्ठ पर लिखा था

भ्रष्ट धनिकतंत्र (Oligarchy) के समूहवाद का
सिद्धान्त और प्रयोग

लेखक

इमैनुअल गोल्डस्टीन

(विन्स्टन ने पढना शुरू किया।)

अध्याय १

अज्ञान ही शक्ति है

इतिहास साक्षी है कि पाषाण युग की समाप्ति के बाद से ससार मे सदैव तीन प्रकार के वर्ग रहे है उच्च, मध्य तथा निम्न । इन वर्गो का और भी विभाजन हुआ है और उन उपवर्गो के तरह-तरह के नाम भी रहे है । उनकी सख्या तथा उनके पारस्परिक सबध भी समय-समय पर बदलते रहे है । परन्तु समाज की अनिवार्य रूपरेखा कभी नही बदलती । बहुत-सी क्रान्तियो के बावजूद यह व्यवस्था बारम्बार उभरती रही, ठीक उसी प्रकार जिस तरह कुतुबनुमे की सुई हमेशा उत्तर दिशा दिखलाती है ।

इन तीनो वर्गो के उद्देश्य और लक्ष्य सर्वथा भिन्न रहे है ।

विन्स्टन ने पढना बन्द कर दिया । पहला कारण तो यह था कि वह अकेला था । दूसरे उसे आराम मिल रहा था । तीसरे वह सुरक्षित था । वहा कोई टेली-स्क्रीन नही था । इन तथ्यो को वह भली भाति अनुभव करना चाहता था । गर्मियो की वायु उसके कपोलो को स्पर्श कर रही थी । कही दूर पर बच्चे खेल रहे थे और उनके शोर की आवाज उसके कानो मे पड रही थी । वह कुर्सी मे और आराम से बैठ गया और उसने अपने पैर दीवाल से टिका लिए । बडा सुख मिल रहा था उसे । उसने कुछ ही क्षण बाद दूसरी जगह पुस्तक को खोल लिया । अबकी बार उसके सामने तीसरा अध्याय आया । वह पढता गया ।

अध्याय ३

युद्ध ही शान्ति है

ससार का तीन बडे-बडे राज्यो मे विभक्त हो जाना ऐसी घटना थी जिसकी कल्पना बीसवी शताब्दी के मध्य मे ही कर ली गई थी । रूस ने सारा यूरोप हडप लिया था और ब्रिटेन तथा उसके साम्राज्य को अमरीका ने हडप लिया था । इस प्रकार यूरेशिया और ओशनिया राज्यो का प्रादुर्भाव हो चुका था । तीसरा बडा राज्य ईस्ट एशिया काफी लम्बे युद्ध के बाद बन सका । इन तीनो राज्यो की सीमाए अनिश्चित है और युद्ध के परिणामो के अनुसार बदलती रहती है । परन्तु साधारण रूप से वे भौगोलिक सीमाओ के अनुकूल है । यूरेशिया मे यूरोप और एशिया का समस्त उत्तरी भाग है । यह पुर्तगाल मे बेरिंग जलडमरूमध्य तक

फैला है । ओशनिया मे दोनो अमरीका, अतलातक द्वीप समूह और ब्रिटिश द्वीप समूह हैं । इसमे आस्ट्रेलिया और अफ्रीका के दक्षिणी भाग भी हैं । ईस्ट एशिया अन्य दोनो राज्यो की तुलना मे छोटा था । उसकी पश्चिमी सीमाए यूरेशिया तथा ओशनिया की अपेक्षा अनिश्चित थी । ईस्ट एशिया मे चीन तथा उसके दक्षिण मे स्थित अन्य देश, जापान तथा मचूरिया, मगोलिया और तिब्बत के क्षेत्र थे जिनका कुछ भाग कभी ईस्ट एशिया के हाथ मे होता था तो कभी ओशनिया या यूरेशिया के हाथ मे ।

ये तीन महाराज्य किसी एक राज्य से मैत्री रखकर तीसरे राज्य से हमेशा पिछले पचीस वर्षो से युद्ध करते चले आ रहे हैं । परन्तु अब युद्ध की विभीपिका उतनी भयकर नही रही है जितनी वह बीसवी शताब्दी के कुछ आरभिक दशको मे थी । युद्ध सीमित बातो पर होता है और तीनो राज्य यह जानते हैं कि वे एक दूसरे को नष्ट नही कर सकते । उनके बीच युद्ध का कोई दृढ कारण भी नही है । इन राज्यो मे कोई परस्पर सैद्धान्तिक मतभेद भी नही है । परन्तु इसका मतलब यह नही है कि युद्ध मे रक्तपिपासा अपेक्षाकृत घट गई है या इन राज्यो के सैनिको मे वीरता की भावना अधिक जागृत हो गई है । इसके विपरीत तीनो राज्यो मे जोरो से युद्ध प्रचार होता है । बलात्कार, लूटपाट, बच्चो का कत्ल, सारी जनता को दास बना देना, बदियो से बदला लेना जिसमे उनको गरम पानी मे उबालना और जिन्दा दफना देने के कर्म भी शामिल हैं, बिलकुल साधारण समझे जाते हैं । लेकिन शर्त यह है कि वे अपने पक्ष की ओर से किए गए हैं । यदि शत्रु पक्ष करता है तो उसका बडा विरोधात्मक प्रचार किया जाता है । परन्तु अब युद्ध मे पहले की अपेक्षा बहुत कम व्यक्ति भाग लेते हैं । लडाइयो मे हताहत सख्या भी बहुत कम होती है । लडाई, यदि होती है तो सीमावर्ती क्षेत्रो मे होती है और जगह का अनुमान लोग अन्दाज से ही कर लेते है । या लडाई तैरते किलो के पास होती है जो समुद्री सीमा की रक्षा करते हैं । युद्ध का देश के अन्य भागो मे अर्थ होता है उपभोग्य वस्तुओ का शाश्वत अभाव, कभी-कभी राकेट बमो का फट जाना और उनसे कुछ कोडी व्यक्तियो का मर जाना । युद्ध का असल मतलब ही बदल गया है । सच तो यह है कि युद्ध के आधार ही बदल गए है । बीसवी सदी के आरभ मे महायुद्धो मे जो कारण छोटे-छोटे माने जाते थे, अब वे ही विराट् हो गए है और उन्ही के अनुसार सारा काम होता है ।

वर्तमान युद्ध का यथार्थ रूप समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है (हालाकि राज्यो की मैत्री और शत्रुता हर दो, तीन, चार वर्ष बाद बदलती रहती है।) कि आजकल का युद्ध निर्णयात्मक कभी हो ही नही सकता। अब राज्यो की शक्ति बराबर है और तीनो ही राज्यो की भौगोलिक सीमाए उनकी बराबर रक्षा करती हैं। यूरेशिया के पास इतनी अधिक भूमि है कि उसे जीत पाना कठिन है। ओशनिया की रक्षा अतलातक महासागर की लम्बाई-चौडाई करती है। ईस्ट एशिया की जनसख्या बहुत है और वहा के लोग बहुत अधिक परिश्रमी हैं। दूसरे, युद्ध करने के लिए कोई भौतिक कारण नही है। पहले युद्ध बाजारो के लिए होते थे। अब हर राज्य की अर्थ-व्यवस्था आत्मनिर्भर है, इसलिए बाजारो की प्रतिद्वदिता का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। कच्चे माल की प्राप्ति अब किसी भी राज्य के लिए जीवन या मरण का प्रश्न नही है। ये तीनो राज्य इतने बडे है कि इन्हे अपनी ही सीमाओ मे यथेष्ट और आवश्यकतानुरूप कच्चा माल मिल जाता है। यदि वर्तमान युद्धो का कोई आर्थिक प्रयोजन है तो वह है मजदूरी करने योग्य मनुष्यो को प्राप्त करना। ससार के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहा राज्यो की सीमाए अस्थिर हैं। इन क्षेत्रो मे विश्व जनसख्या का पाचवा भाग रहता है। वे स्थान या क्षेत्र है टेंजियर, ब्राजाविले, डारविन और हागकाग। तीनो बडे-बडे राज्य इन्ही घनी आबादी वाले क्षेत्रो पर कब्जा कर लेने के लिए बराबर युद्ध करते रहते हैं। विवादग्रस्त क्षेत्रो पर पूर्णरूप से कभी किसी राज्य का पूर्ण आधिपत्य स्थापित नही हो पाता। इन पर प्रतिद्वन्द्वी राज्यो की सत्ता बराबर बदलती रहती है। कितनी चालाकी या धोखेबाजी से किसी स्थान पर कब्जा किया जाता है, पारस्परिक मित्रता या शत्रुता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है।

सभी विवादग्रस्त क्षेत्रो मे रबर होता है। ठडे प्रदेशो मे रबर बनावटी ही बनाया जा सकता है, उत्पन्न नही किया जा सकता। दूसरे इन सभी क्षेत्रो में मूल्यवान खनिज धातुए भी हैं। इसके अलावा सबसे बडी बात तो यह है कि यहा अनगिनत श्रमिक हैं जो बहुत सस्ते मिल जाते है। जो भी शक्ति भूमध्यरेखावर्ती अफीका, मध्यपूर्व, दक्षिण भारत या इडोनेशियन द्वीप समूह को अपने कब्जे मे रखती है वह सैकडो लाख कुलियो को भी सस्ते दामो मे पा सकती है। इन क्षेत्रो के लोग करीब-करीब गुलाम हो गए हैं। क्योकि वे एक के बाद दूसरे विजेता के अधिकार में आते-जाते रहे हैं। उनका कोयले या तेल की भाति अधिकाधिक क्षेत्र प्राप्त

करने के लिए प्रयोग किया जाता है । यह ध्यान मे रखने योग्य बात है कि युद्ध विवादग्रस्त क्षेत्रो से आगे कभी नही बढता । यूरेशिया की सीमाए कागो नदी की घाटी और भूमध्य सागर के उत्तरी तट के बीच घटती-बढती रहती है । भारतीय महासागर के द्वीपो पर कभी यूरेशिया और कभी ईस्ट एशिया का अधिकार हो जाता है । मगोलिया मे ईस्ट एशिया तथा यूरेशिया की सीमारेखा कभी स्थायी नही हो पाती । ध्रुव के आसपास के बहुत-से क्षेत्र पर तीनो शक्तिया दावा करती है लेकिन इसमे अधिकाश प्रदेश मे आबादी ही नही है और वहा कोई भी गया नही है । परन्तु शक्ति सन्तुलन हमेशा लगभग बराबर रहता है । इसी तरह हर राज्य के बीच का भाग हमेशा सुरक्षित रहता है । इसके अलावा भूमध्यरेखा के पास ही मनुजशक्ति का शोषण विश्व की अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक नही है । वे विश्व की सम्पदा मे वृद्धि भी नही करते क्योकि वे जो कुछ बनाते है वह युद्ध के काम मे ही आता है । दासो के श्रम से युद्ध को तेजी से चलाने मे ही सहायता मिलती है । लेकिन यदि वे उपलब्ध न हो तो ससार की आर्थिक-व्यवस्था मे कोई विशेष अन्तर नही पडता ।

आधुनिक युद्ध का मुख्य उद्देश्य (जिसे द्वैध विचार सिद्धान्त के अनुसार अन्तरग पार्टी के नीति निर्धारक व्यक्ति मानते भी है और नही भी मानते) मशीनो के उत्पादन को जीवन यापन का स्तर बिना अधिक ऊचा उठाए खर्च कर डालना है । उन्नीसवी शताब्दी के आरभ ही मे औद्योगिक समाज के सम्मुख यह समस्या रही है कि अतिरिक्त उत्पादन का क्या किया जाए । वर्तमान काल मे, जब लोगो को पेट भर भोजन ही मुश्किल से मिलता है, यह समस्या इतनी कठिन नही है, फिर भी उत्पादन को नष्ट करने का यह कृत्रिम ढग अपना काम कर रहा है, सन् १९१४ के पूर्व जो ससार था, उसकी तुलना मे आज की दुनिया भूखी, नगी और खण्ड-विखण्ड है । उस समय आज की दुनिया के बारे में लोगों ने जो कल्पना की थी उसकी तुलना मे तो उक्त तथ्य और भी ज्वलन्त है । बीसवी शताब्दी के आरभ मे हर पढा-लिखा व्यक्ति आज की दुनिया के बारे मे यह कल्पना किए था कि वह इतनी धनी, आरामदेह, व्यवस्थित और दक्ष होगी कि उसका कोई ठिकाना नही । उसकी यह दुनिया चमकते काच, इस्पात और श्वेत ककरीट की दुनिया थी । विज्ञान और प्रौद्योगशास्त्र बडी द्रुत गति से आगे बढ रहा था । इसलिए यह स्वाभाविक लगता था कि वे आगे बढते जाएगे । परन्तु क्रान्तियो और

अभावो के कारण ऐसा नही हो सका । दूसरे विज्ञान अनुभवयुक्त विचार की देन है जो बहुत दलित समाज मे, ऐसे समाज मे जिस पर बहुत अकुश हो, पनप नही सकता। कुल मिलाकर आज का ससार पचास साल पूर्व की अपेक्षा कही अधिक जगली है। कुछ पिछडे क्षेत्र अवश्य विकसित हुए है । तथा युद्ध की कुछ पद्धतियो का भी विकास हुआ है। परन्तु आविष्कार तथा खोजे होनी बिलकुल बन्द हो गई है। सन् १९५० मे जो अणु-आयुधो का युद्ध हुआ था—उन युद्धो से नष्ट वस्तुओ को कभी ठीक नही किया जा सका। परन्तु मशीनो के खतरे अब भी मौजूद है । मशीनो के आविष्कार के बाद लोग यह अनुभव करने लगे थे कि अब मानव-समाज मे विषमता के लिए कोई स्थान शेष नही रहा है । यदि मशीनो का प्रयोग मूल उद्देश्यो के अनुसार किया जाता तो भूख, अधिक श्रम, गन्दगी, अशिक्षा, रोगो आदि को कुछ ही पीढियो मे सदैव के लिए समाप्त किया जा सकता है। मशीनो की वजह से लोगो के जीवन यापन का स्तर उन्नीसवी शताब्दी के अन्त तथा बीसवी शताब्दी के आरभ मे ऊचा भी हुआ था।

परन्तु यह भी स्पष्ट हो गया था कि यदि सम्पत्ति की वृद्धि हुई तो वर्गगत समाज का अन्त हो जाएगा। ऐसी दुनिया जिसमे हर आदमी को दो-चार घटो से अधिक काम न करना पडे, खाने पीने को पर्याप्त हो, ऐसे मकान मे रहे जिसमे उसके लिए स्नानागार और रेफ्रीजेरेटर हो, चढने के लिए कार या हवाई जहाज हो, उस स्थिति मे आर्थिक विषमता तो स्वयमेव दूर हो जाती है। एक बार ऐसा हो गया तो धन की कमी या अधिकता से एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति मे कोई विशेष अन्तर नही रह सकता। फिर भी यह सभव था कि राजनीतिक शक्ति किसी वर्ग विशेष के हाथ मे रहती। लेकिन ऐसा व्यावहारिक रूप से सभव नही था। यदि सबको आवश्यकतानुसार पर्याप्त सुरक्षा हो, तो जो लोग निर्धनता और अशिक्षा के पाश मे बधे होने के कारण कुछ नही कर पाते वे भी शिक्षित हो जाएगे और स्वय भी सोचना शुरू कर देगे और फिर उन्हे यह अनुभव करते देर न लगेगी कि विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसख्यक वर्ग के पास कोई काम नही है। और वे उस वर्ग को उखाड फेकेंगे। अधिकाश लोग निर्धन और अशिक्षित है। बीसवी शताब्दी के आरभ मे कुछ लोग सोचते थे कि वे समाज को कृषि युग की ओर वापस ले जाएगे। यह भी सभव नही है। यह युग के यत्रीकरण के विरुद्ध था। यत्रीकरण सारी दुनिया के स्वभाव मे बसा हुआ था। दूसरे, जो देश औद्योगिक दृष्टि

से अविकसित थे वे सैनिक दृष्टि मे भी पिछड़े थे। ऐसी दशा में उनका अधिक विकसित देशो के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव मे रहना स्वाभाविक था।

यह भी संभव नही था कि मशीनो मे इतना कम उत्पादन किया जाए कि जनता निर्धन ही बनी रहे। ऐसा सन् १९२० और १९४० के बीच पूजीवादी व्यवस्था की समाप्ति के समय हुआ भी। बहुत-से देशो की अर्थ-व्यवस्था यो ही सड गई। भूमि पर लोगो ने खेती करना छोड दिया। मशीनो को बढाया नही गया। बहुत-से व्यक्ति बेकार हो गए जिनको राज्य की ओर से आधे पेट भोजन दिया जाता था। परन्तु इससे भी वे देश सैनिक दृष्टि से क्षीण हुए। जो अभाव थे, वे कृत्रिम और अनावश्यक थे अतएव उनका विरोध हुआ। समस्या यह थी कि उद्योगो को बिना उत्पादन बढाए किस प्रकार चलाया जाए। उत्पादन तो हो, किन्तु वितरण न हो। इसका व्यावहारिक समाधन था—युद्ध। लगातार युद्ध करते रहने से ही यह सभव था।

युद्ध मे केवल जनहानि ही नही, मानव श्रम से बनाई गई वस्तुओ का भी नाश होता है। युद्ध ऐसी प्रक्रिया है जिसमे ऐसी सामग्री को नष्ट किया जाता है, हवा मे उडा दिया जाता है, या डुबा दिया जाता है जिसे प्राप्त करके लोग आराम से रह सकते है या फिर बराबर इस स्थिति मे रहने पर दीर्घकाल मे बुद्धिमान हो जाते है। जब अस्त्र-शस्त्र न भी नष्ट हो रहे है, उस समय भी उनको बनाते रहने से मानव शक्ति का प्रयोग ऐसे कार्यो मे होता रहता है जो लाभदायी सामग्री नही बनाती। उदाहरण के लिए तैरते किले का निर्माण ही ले लीजिए। इसके बनाने मे जितना श्रम और समय लगता है उतने समय और श्रम मे सैकडो लद्दू जहाज बनाए जा सकते है। अन्तत इसको रद्दी घोषित करके नष्ट किया जाता है और अपने सेवाकाल मे यह बहुत कम या बिलकुल काम नही आया होता। वस्तुत युद्ध योजना ही इस प्रकार बनाई जाती है कि वह सारे अतिरिक्त उत्पादन को नष्ट कर दे। जनता की आवश्यकताओ का अनुमान हमेशा कम लगाया जाता है, जिससे वह भूखी और नगी रहती है। इसको लाभदायी भी समझा जाता है। जिन वर्गो को कृपापात्र समझा जाता है उनको भी बराबर कठिनाइयो मे रखा जाता है। सामान्य अभाव की स्थितियो मे थोडी-थोडी सुविधाए भी वर्ग-भेद बनाए रखती है। बीसवी शताब्दी के हिसाब से अन्तरग पार्टी सदस्य को भी मितव्यय तथा अत्यन्त श्रमपूर्ण जीवन बिताना पडता है। पार्टी के निचले सदस्यो की तुलना मे उसके पास एक

बडा फ्लैट होता है, दो-तीन नौकर होते हैं। खाना और कपडा अच्छा मिलता है। तम्बाकू और शराब भी अच्छी होती है। इसी प्रकार पार्टी के निचले सदस्य सबसे निचले मज़दूरो के वर्ग के मुकाबिले मे मजे मे होते हैं। सामाजिक जीवन बहुत ही घिरा-घिरा होता है। छोटी-छोटी चीजे अमीरी और गरीबी का फर्क पैदा कर देनी हैं। और जब युद्ध का खतरा बराबर बना रहे उस समय यह स्वाभाविक लगता है कि सत्ता किन्ही थोडे-से व्यक्तियो के हाथ मे ही रहे।

युद्ध से केवल वस्तुए नष्ट ही नही होती बल्कि वे इस तरह नष्ट होती हैं कि लोग उस नाश को अनिवार्य मान लेते हैं। सिद्धान्तत मदिर और पिरामिड बनाकर भी अतिरिक्त वस्तुओ को नष्ट किया जा सकता है। गड्ढो को खोदकर और उन्हे भरने मे मानव शक्ति नष्ट की जा सकती है। अतिरिक्त उत्पादन को जलाया जा सकता है। परन्तु यह वर्गगत और विशेषाधिकार प्राप्त समाज का आर्थिक आधार ही होगा, भावनात्मक आधार नही। परन्तु यहा नैतिक साहस बनाए रखने का प्रश्न है। जनता जब तक काम मे लगी रहे तब तक वह अन्य बातो की परवाह नही करती लेकिन फिर पार्टी के सदस्यो को भी तो सन्तुष्ट रखना है। छोटे-छोटे-से पार्टी-सदस्य से भी यह आशा की जाती है कि वह योग्य होगा, दक्ष होगा और अपने सीमित बौद्धिक क्षेत्र मे बुद्धिमान भी होगा। परन्तु इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि वह पार्टी जो बात कहे वह अध भक्त की तरह मान ले तथा अज्ञानी अधपार्टी भक्त हो। आजकल उसमे भय, घृणा तथा सराहना के भावो का ही जोर है। सक्षेप मे उसका मन युद्ध की स्थिति के अनुकूल होना चाहिए। युद्ध का होना न होना आवश्यक नही है और चूकि निर्णयात्मक विजय होनी आवश्यक ही नही है और इसलिए युद्ध अच्छी तरह चल रहा है या नही, इसकी भी चिन्ता करने की आवश्यकता नही है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि युद्ध चलता रहे। ज्यो-ज्यो पार्टी के उच्चाधिकारी वर्ग की ओर हम बढते हैं, यह देखने में आता है कि उनमे शत्रु के विरुद्ध युद्ध और घृणा का भाव सबसे अधिक होता है। वह पार्टी का उच्चाधिकारी प्रशासक के नाते यह भी जानता है कि युद्ध का अमुक समाचार झूठा है और अमुक सच्चा। वह यह भी जानता है अमुक युद्ध हो ही नही रहा। या हो भी रहा है तो उन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए नही जिनकी घोषणा की जा चुकी है। हर उच्चाधिकारी यही समझता है कि युद्ध वास्तविक है। युद्ध में उसी का देश विजयी होगा और सारे संसार पर ओशनिया का अधिकार होगा।

आगामी विश्वविजय में पार्टी के हर व्यक्ति का अडिग विश्वास होता है। यह विजय या तो धीरे-धीरे अधिकाधिक भूक्षेत्र पर कब्जा करके प्राप्त होगी या फिर किसी ऐसे शस्त्र के द्वारा जिसका अन्य कोई देश आविष्कार नही कर पाएगे। नए शस्त्रो के लिए बराबर खोज और आविष्कार किए जाते है। यही एक ऐसा क्षेत्र है जिसमे कुछ ऐसे व्यक्तियो के लिए कुछ स्थान है जिनमे थोडी-सी मौलिकता है। पुराने अर्थो मे अब विज्ञान शेष नही रहा है। नई भाषा मे विज्ञान जैसा कोई शब्द नही है। विचार या चिन्ता की वे समस्त पद्धतिया, जो अनुभूतिमूलक है,'इगसोश' के मूल सिद्धान्तो के विपरीत है। औद्योगिक प्रगति भी तभी होती है जब वह किसी तरह मानवीय स्वतन्त्रता को कम करती हो। कला क्षेत्र मे ससार या तो यथा-स्थान है या पीछे जा रहा है। खेतो को घोडो से जोता जाता है और पुस्तके मशीनो से लिखी जाती है। युद्ध तथा पुलिस व्यवस्था के क्षेत्र मे अनुभूतिमूलक पद्धति को प्रोत्साहित किया जाता है। या यो कह लीजिए बरदाश्त किया जाता है। पार्टी के दो लक्ष्य है पहला सारे ससार के भू-क्षेत्र पर कब्जा करना और दूसरा स्वतन्त्र विचार के सब तरीको को नष्ट कर देना। अतएव पार्टी के सामने दो प्रमुख समस्याए है। पहली तो यह कि दूसरा आदमी क्या सोच रहा है यह जान लेने की मशीन बना लेना और दूसरे करोडो आदमियो को सेकेडो मे बिना चेतावनी दिए मार डालने की तरकीब निकालना। जो विज्ञान अब शेष है, उसकी शोध के अब यही उपर्युक्त दो विषय है। आज के वैज्ञानिक दो श्रेणियो मे विभक्त है। पहली श्रेणी मे तो वे वैज्ञानिक है जो मनोवैज्ञानिक तथा जिज्ञासु है। वे असाधारण ब्यौरे से लोगो के चेहरो के भावो, सकेतो, कठस्वर के मतलब को समझने के लिए सतत रूप से प्रयत्नशील है। वे विभिन्न औषधियो का प्रयोग करके यह देखते है कि कौन-सी चीज ऐसी है जिसके खिला देने मे आदमी अपने आप सच-सच हृदय की बात बता देता है। वे यह भी देखते है कि यन्त्रणा देकर, घबडा देने वाली बाते कहकर, सम्मोहन आदि द्वारा किस प्रकार असल बात उगलवाई जा सकती है। दूसरी श्रेणी मे वे वैज्ञानिक है जो केवल रसायन शास्त्री, भौतिक शास्त्री या जीव शास्त्री है। इनके शोध का विषय केवल प्राण हरने के नए-नए तरीको को निकालना है। शान्ति मत्रालय की बडी-बडी प्रयोगशालाओ मे, ब्राजील के जगलो मे, आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानो मे, दक्षिणी ध्रुव के गुप्त द्वीपो मे अवस्थित गुप्त प्रयोगशालाओ मे वैज्ञानिक सतत रूप से इन कामो मे जुटे रहते है। कुछ वैज्ञानिक

केवल भावी युद्धो का ढग तय करने मे लगे रहते है । कुछ बडे से बडे राकेट बमो को बनाने मे व्यस्त रहते है । कुछ अधिकाधिक शक्तिशाली बारूद बनाने में लगे हैं । कुछ का काम ऐसे टैक बनाने है जिनकी चादर फट ही न सके । कुछ मार डालने वाली नई-नई गैसे बनाने मे जुटे रहते है । वे ऐसे विषो की खोज मे रहते हैं जिनके मिला देने से पूरे-पूरे महाद्वीपो की जनसख्या ही नष्ट न हो जाए बल्कि वहा वनस्पति तक पैदा न हो । कुछ रोगो के ऐसे कीटाणु बनाने मे व्यस्त है जिनसे कोई बच ही नही सके । कुछ ऐसी सवारी बनाने की फिक्र मे है जो जमीन के नीचे पनडुब्बी की भाति चलेगी । कुछ की समस्या है एक हवाई जहाज बनाना जो पानी के जहाज की भाति चले और किसी हवाई अड्डे का मोहताज न हो । कुछ वैज्ञानिक और भी ऐसी ही असम्भव बाते खोजने मे व्यस्त है । जैसे सूर्य की उन किरणो का लैसो द्वारा सग्रह जो अन्तरिक्ष मे हजारो मील दूर है, या कृत्रिम भूकम्प पैदा करना या भूमि के मध्य भाग की उष्णता को इकट्ठी करके बडी-बड़ी समुद्री लहरे उत्पन्न कर देना । परन्तु इनमे से कोई भी योजना सफल होती प्रतीत नही होती । और न तीनो राज्यो मे से एक भी अन्य दो देशो से आगे बढ पाता है । मजे की बात यह है कि तीनो ही महादेशो को अणुबम बनाना आता है जो इन सब शोधो से कही अधिक शक्तिशाली शस्त्र है । पार्टी का कहना है कि अणु-बम उसने बनाया है लेकिन वस्तुत अणुबम सन् १९४० के आसपास बना था और इसका प्रयोग पहली बार कोई दस साल बाद किया गया था । उस समय सैकडो अणुबम मुख्य-मुख्य औद्योगिक केन्द्रो पर डाले गए । वे जगह थी यूरो-पियन रूस, पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका । इन बमो को गिराने का मत-लब यह था कि सब देशो मे शासक यह समझ ले कि यदि कुछ और बम गिरें तो व्यवस्थित समाज का अन्त हो जाएगा और उसके साथ ही उनकी शासन व्यवस्था का भी । इसके बाद कोई समझौता तो नही हुआ लेकिन कोई बम नही गिराया गया । सब राज्य बम बना-बनाकर रखते गए और इसका इन्तजार करते रहे कि जब मौका आएगा तब इनको काम मे लाया जाएगा । इस बीच युद्ध जहा का तहा स्थिर है । इसे कोई तीस-चालीस वर्ष हो गए है । हैलीकॉप्टरो का पहले से अधिक प्रयोग होने लगा है । बमवर्षक हवाई जहाजो के स्थान पर स्वचालित राकेट प्रयोग मे आने लगे है । युद्धपोतो के स्थान पर तैरते किलो का प्रयोग होने लगा है जो करीब-करीब इस तरह के बने है कि उनको डुबाया ही नही

जा सकता। इसके अलावा अन्य कोई विकास कार्य नही हुआ है। टैक, पनडुब्बी, तारपीडो, मशीनगनो, राइफलो आदि का अब भी प्रयोग होता है। प्रेस और टेलीस्क्रीन के प्रचार के बावजूद ऐसे युद्ध फिर कभी नही हुए जिनमे क्रान्ति के पूर्व कुछ सप्ताहो मे ही करोडो व्यक्ति मारे गए थे।

कोई भी बडा राज्य ऐसा काम कभी नहीं करता जिसमे पूर्ण पराजय की सभावना हो। जब भी कोई बडा आक्रमण किया जाता है तो वह मित्र देश के विरुद्ध आकस्मिक हमले के रूप मे होता है। तीनो राज्यो की सामरिक नीति लगभग एक-सी ही है। योजना यह है कि अपने शत्रु देश को उसके चारो तरफ अड्डे बनाकर घेर लिया जाए। इस उद्देश्य की पूर्ति मे धोखेधडी से हमले करने की नीति का पूरा प्रयोग किया जाता है। नीति यह है कि पहले दोस्ती कर ली जाए, इसके बाद उस समय तक चुप रहा जाए जब तक दोनो पक्षो के प्रति हृदय मे एक दूसरे के प्रति कोई सदेह नही रह जाए और फिर अकस्मात् हमला करके इच्छित स्थान पर कब्जा कर लिया जाए। इस बीच सभी महत्वपूर्ण स्थानो पर राकेटो से अणुबमो को गिराने की पूरी तैयारी कर ली जाए। अगुबम वर्षा में यह ध्यान रखा जाए कि शत्रु बदला न ले सके। इसी बीच दूसरे शत्रु देश से मित्रता की सधि करने की तैयारी कर ली जाए। यह योजना दिवास्वप्न मात्र है। इसकी पूर्ति असभव है। भूमध्यरेखा के विवादग्रस्त क्षेत्रो को छोडकर तथा ध्रुव प्रदेश के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान मे युद्ध नहीं होता। इससे स्पष्ट है, कही-कही महाराज्यो के बीच की सीमाए मनचाही है। यथा, यूरेशिया चाहे तो आसानी से ब्रिटिश द्वीप समूह पर कब्जा कर सकता है। भौगोलिक दृष्टि से ब्रिटिश द्वीप समूह है भी योरोप के ही अग। इसी प्रकार ओशनिया आसानी से यूरेशिया की पश्चिमी सीमाओ को राइन या विश्चुला तक खिसका सकता है। परन्तु इससे सास्कृतिक एकता के सिद्धान्त का, यद्यपि ऐसा किसी सम्मेलन मे कभी तय नही हुआ, हनन होता है। अतएव कोई इस तरह की बात नही करता। यदि ओशनिया उन क्षेत्रो पर कब्जा करना चाहे जिन्हे कभी फ्रास और जर्मनी माना जाता था, उसे या तो वहा की सारी आबादी को खत्म करना होगा जो बडा कठिन काम है, या फिर उस आबादी को आत्मसात् करना होगा जिसका टेकनिकल ज्ञान लगभग उतना ही है जितना ओशनिया के लोगो का। यही समस्या अन्य दोनो राज्यो के सामने भी रहती है। यह आवश्यक है कि तीनो देशो का परस्पर कोई सबध न रहे। इसका

अपवाद केवल युद्धबंदी या काले दाम ही है जो विदेशी के रूप मे एक से दूसरे राज्य मे आते-जाते है। सरकारी तौर पर जो मित्रदेश होना है उसे भी शक की निगाह से ही देखा जाता है। युद्धबदियो को छोडकर ओशनिया का औसत नागरिक कभी किसी विदेशी को नही देखता। वह यूरेशिया या ईस्ट एशिया की भाषा भी नही सीख सकता। यदि वह अपने पडोसी देशवासियो से मिले तो उसे ज्ञात होगा कि वे भी उसी की तरह हाड-मास के जीव है, और विदेशियो के बारे मे उसे जो कुछ बतलाया गया है वह सब कुछ झूठ है। जिस मुहरबद दुनिया मे वह रहता है, उसके बद दरवाज़े टूट जाएगे। भय, घृणा आदि समाप्त हो जाएगी। अतएव हरएक राज्य यह चाहता है कि ईरान, मिस्र, जावा या सीलोन पर जहा चाहे जितनी बार उसका कब्जा हो जाए या चाहे जितनी बार वे उसके हाथ से निकल जाए परन्तु देश की मुख्य सीमाए उनके नागरिक कभी पार न करे। सीमा पार करने का हक केवल राकेट बमो को ही है।

इसकी तह मे तथ्य छिपा है। तीनो राज्यो मे जीवन यापन की अवस्था लगभग समान है, परन्तु यह बात केवल समझ ली गई है। इसे कोई मुह पर नही लाता। ओशनिया मे प्रचलित दर्शन इगशोश कहलाता है। यूरेशिया मे इसका नाम नया बोल्शेविज्म और ईस्ट एशिया मे मृत्यु पूजा या आत्म-बलि। ओशनिया के नागरिको को दूर देशों के दर्शनो के सबध मे कुछ भी पढने की मनाही है। परन्तु उससे कहा जाता है कि वह इनको बर्बरता पूर्ण दर्शन समझे। और यह माने कि वे अनैतिक है। सच यह है कि तीनो दर्शनो मे कोई स्पष्ट अन्तर ही नही है। वे दर्शन जिस सामाजिक रूपरेखा का समर्थन करते है उनमे भी कोई फर्क नही है। वही शीर्ष पर सारी शक्ति केन्द्रित है। उसी तरह हर देश मे अर्ध ईश्वर रूपी नेता की पूजा होती है। अतएव, इसका निष्कर्ष यह है कि ये तीनो महाराज्य एक दूसरे को जीतने में तो असमर्थ है ही, साथ ही वे जानते है कि विजय प्राप्त कर लेने से कोई लाभ नही होगा। इसके विपरीत जौ की परतो की तरह वे युद्ध काल मे एक दूसरे के ऊपर हो जाते है और इस प्रकार अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का उन्हे अवसर मिल जाता है। इसके साथ ही इन देशो का शासकवर्ग अपने कार्यो से भिज्ञ भी है और अनभिज्ञ भी। उन्होने विश्व-विजय को अपना लक्ष्य बना रखा है। परन्तु वे ये भी जानते है युद्ध शाश्वत रूप से चलना चाहिए और जीत किसी की नही होनी चाहिए। विजय की कोई सभावना

न होने से इगसोश वास्तविकताओ की ओर से आखे मूदे रहता है। और उसका परस्पर विरोधी विचारो का क्रम भी चलता रहता है। यहा फिर यह बात दोहरा देनी आवश्यक है कि युद्ध की निरन्तरता से उसका पुराना रूप ही बदल गया है।

प्राचीन काल मे युद्ध शब्द मे ही यह अर्थ निहित समझा जाता था कि वह कभी न कभी समाप्त हो जाएगा। युद्ध के अन्त में जीत होगी या हार। प्राचीन युग मे युद्ध के कारण लोग वास्तविकताओ पर भी नजर रखते थे। सभी युगो में शासको ने तरह-तरह के सब्जबाग लोगो को दिखाए, परन्तु उन्होने ऐसा कोई काम कभी नही किया जिससे सैनिक शक्ति का ह्रास होता हो। जब युद्ध का अर्थ स्वतत्रता की समाप्ति हो या उससे अवाछनीय बात होती हो, तो पराजय से बचने के लिए हर उपाय किया जाता था। वास्तविकताओ से आखे नही मूदी जाती थी। दर्शन, आचार शास्त्र या राजनीति, इन सबमे दो और दो पाच हो सकते है लेकिन जब आप किसी हवाई जहाज का डिजाइन तैयार कर रहे हो तो दो और दो चार ही होने चाहिएं। कमजोर राज्यो की कभी न कभी पराजय अवश्यम्भावी मानी जाती थी। सैनिक दृष्टि से दक्ष होने के लिए यह आवश्यक था कि अतीत से भली भाति शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता हो। इसका यह भी मतलब था कि आपको यह ज्ञान हो कि अतीत में क्या हुआ है। समचारपत्रो और ऐतिहासिक पाठ्य पुस्तको को कुछ मिर्च-मसाला लगाकर छापा जाता था लेकिन झूठी बाते लिखना सभव नही था। यह वर्तमान काल ही मे सभव है। युद्ध की आशका मिथ्यावादिता से रक्षा करती थी। युद्ध मे हार-जीत की महत्ता बहुत अधिक होने के कारण कोई भी शासकवर्ग गैरजिम्मेदार नही हो सकता था।

लेकिन जब युद्ध शाश्वत हो जाए तो उससे उत्पन्न खतरे का भी महत्व नही रहता। तब सैनिक आवश्यकता जैसी भी कोई वस्तु नही रहती। औद्योगिक प्रगति रुक जाती है और आखो देखी बात से इन्कार किया जा सकता है। उदाहरण के लिए युद्धास्त्रो सबधी खोजे अब भी जारी है। लेकिन उनका महत्व दिवा-स्वप्नो से अधिक नही है। यदि उन शोधो से कोई परिणाम नही निकलता तब भी कोई बात नही है। कार्यदक्षता या सैनिक-दक्षता की भी अब आवश्यकता नही रह गई है। ओशनिया मे विचार-पुलिस के सिवा अन्य कोई भी कार्यदक्ष नही है। प्रत्येक महाराज्य चूकि अजेय है, इसलिए अपने क्षेत्र मे शासक निर्भय जो मर्जी हो कर सकता है। यथार्थता को केवल खाने-पीने, आवास, वसन आदि के

सबंध मे ही माना जाता है। या फिर इस बात का ध्यान रखा जाता है कि सीढियो से ही नीचे उतरा जाए तिमजले पर बनी खिडकी से कूद कर नही। जीवन और मृत्यु, आराम और कष्ट इनका भी अन्तर माना जाता है। परन्तु इसके आगे यथार्थता की नही चलती। ओशनिया का शेष ससार से कोई सबध नही है और वहा के नागरिक ठीक उसी तरह रहते है जिस तरह बोतल मे बद कोई कीडा। उसे ऊपर-नीचे आदि दिशाओ का कोई ज्ञान नही होता। इसके शासक पूर्णरूप से निरकुश है। ऐसी निरंकुशता सीजर या मिस्र के राजाओ को भी प्राप्त नही थी। वे अपने यहा बहुत अधिक आदमियो को तो भूखा नही मरने देते और न सैनिक कार्यकुशलता को ही अन्य राज्यो की तुलना में अच्छा बनाने की कोशिश करते है। वे इन बातो का न्यूनतम ध्यान रखने के बाद जो मर्जी आती है वह करते हैं।

इसलिए, प्राचीन काल के युद्ध की तुलना मे आज का युद्ध जाली है। आजकल की लडाइया उन जानवरो की लडाइयो की भाति है जिनके सीग इस प्रकार के है कि वे उनसे एक दूसरे को नुकसान पहुंचा ही नही सकते। यह अयथार्थ हो, किन्तु अर्थ-हीन नही है। इनसे अतिरिक्त उत्पादन की खपत हो जाती है और वह वातावरण बना रहता है जो वर्गगत समाज की रक्षा के लिए आवश्यक है। युद्ध अब केवल आन्तरिक समस्या है। अतीत काल मे, सब देशो के शासक आपस मे लडते थे और विजयी हमेशा पराजित के धन को लूट लेता था। यह बात दूसरी है कि युद्ध से जातिविध्वस का अनुमान लगाकर वे युद्धक्षेत्र को सीमित कर देते हो। परन्तु आज शासकवर्ग एक दूसरे से नही लडता। आज हर देश का शासक अपने प्रजा-वर्ग से लड रहा है। इस युद्ध का उद्देश्य भूक्षेत्र जीतना नही बल्कि समाज का वर्तमान ढाचा बनाए रखना है। अतएव, 'युद्ध' शब्द ही भ्रमात्मक है। यह कहना अधिक समीचीन होगा कि युद्ध का निरंतरता के कारण अस्तित्व लुप्त हो गया। नए पाषाण युग से बीसवी शताब्दी के आरम्भ तक युद्ध के कारण मनुष्य पर जो भार पडता था वह अब नही पडता। इसकी जगह अब एक बिलकुल नई चीज ने ले ली है। यदि तीनो राज्य आपस मे यह तय कर ले कि वे शान्ति से रहेगे और एक दूसरे पर हमला नही करेगे तो भी उसका वही असर होगा जो आज है। ऐसी अवस्था मे हर राज्य का अपना विश्व होगा। वे बाह्य खतरो से उत्पन्न स्वस्थ दृष्टिकोण से वचित रहेगे। स्थायी शाति, स्थायी युद्ध की भाति ही होगी। 'युद्ध

ही शाति है' इस नारे का यही अर्थ है। इस अर्थ को पार्टी के बहुसख्यक सदस्य पूरी तरह नही समझते।

विन्स्टन ने एक क्षण के लिए पढना बद कर दिया। पास ही कही राकेट बम फटा। अभी यह भावना समाप्त नही हुई थी, कि वह बिना टेलीस्क्रीन वाले कमरे मे एकान्त में आराम से बैठा है। एकान्त और सुरक्षा ऐसा लगता था कि क्लान्ति के साथ उसके रग-रग मे समा गए थे। यही भाव उसे मुलायम कुर्सी मे और उसे स्पर्श करने वाली हवा मे भी व्याप्त लग रहा था। पुस्तक बडी आकर्षक लग रही थी। उसे बडा आराम मिल रहा था। एक प्रकार से पुस्तक में कोई नई बात नही थी, परन्तु यह भी आकर्षण का एक कारण था। यदि वह अपने विचार व्यवस्थित कर लिख पाता तो वह भी वही बातें लिखता जो किताब मे उसने पढी थी। वह पुस्तक उसी जैसे किसी व्यक्ति ने लिखी थी, परन्तु वह निश्चित रूप से विन्स्टन से अधिक मेधावी, अधिक बुद्धिमान तथा अधिक निर्भय था। वह सोच रहा था कि वह पुस्तक सर्वोत्तम होती है जिसकी विषय-वस्तु का उन्हे पहले से ही ज्ञान हो। उसने पुन प्रथम अध्याय खोला ही था कि उसे लगा कि जूलिया आ गई और वह उससे मिलने पुस्तक रखकर उठ गया और आगे बढा। जूलिया ने आते ही अपना झोला पटक दिया और अपने आपको विन्स्टन की बाहो मे छोड दिया। उन्हे मिले एक सप्ताह मे अधिक समय हो गया था।

'मुझे किताब मिल गई, उसने अलग होते हुए कहा।

'मिल गई ? अच्छा हुआ।' उसने बिना कोई दिलचस्पी दिखलाए हुए कहा। इसके बाद तत्काल कॉफी बनाने के लिए स्टोव जलाने में लग गई।

पुस्तक के बारे मे उन्होने कोई आधे घंटे तक बात नही की। जब बात शुरू हुई तो वे पलग पर लेटे थे। शाम ठडी थी। उन्होने खिडकी के काच बन्द कर रखे थे। नीचे से गाने का परिचित स्वर सुनाई पड रहा था। और जूतो की खट-खट की आवाज़ सुनाई पड रही थी। अहाते मे दिखने वाली वह मोटी औरत, जिसे पहले दिन विन्स्टन ने देखा था, हमेशा वहा रहती थी। कोई ऐसा समय न था जब वह औरत कपडे धोती और सुखाती नज़र न आती हो। जूलिया उसके बगल मे लेट गई थी। ऐसा लगता था कि वह सो ही जाने वाली है। वह फर्श पर पड़ी किताब उठा लाया और पलग के सिरहाने से पीठ टेककर उसे फिर पढने लगा।

'यह किताब हमे पढनी चाहिए' विन्स्टन ने कहा, 'ब्रदरहुड के हर सदस्य ने

इसे पढा है।'

'तुम पढो। जोर से पढो कि तुम पढने के साथ मुझे भी समझाते चलोगे।'

घडी मे शाम के छ अर्थात् अठारह बजे थे। अभी उनके पास तीन-चार घटो का वक्त था। उसने घुटने पर पुस्तक रख ली और पढना शुरू कर दिया।

अध्याय १

अज्ञान ही शक्ति है

इतिहास के आरभ से और सभवत नवीन पाषाणयुग के अन्तिम चरण से ससार मे तीन प्रकार के लोग रहे है। उच्च, मध्य और निम्न। वे अन्य उपवर्णो में भी विभक्त हुए है और उनके अनगिनत नाम रहे है और उनके पारस्परिक सबधी भी भिन्न-भिन्न प्रकार से रहे है। युगो के अनुसार उनमे अन्तर भी रहा है, परन्तु समाज की यही रूपरेखा फिर उभरी है। जिस प्रकार जीरोस्कोप (गति के सिद्धान्त का प्रकट करने वाला एक चर्खानुमा यत्र) चाहे जितना घुमाया जाए अत मे वह एक समय पर आकर रुक ही जाता है।

'जूलिया—क्या तुम जग रही हो ?' विन्स्टन ने पूछा।

'हा, प्रियतम ! मै सुन रही हू। पढते रहो। बडा आनन्द आ रहा है।'

उसने पढना जारी रखा.

समाज के इन तीनो वर्गो के लक्ष्य एक दूसरे से बिलकुल भिन्न है और उनके बीच कोई समझौता नही हो सकता। उच्च वर्ग जहा है, वही रहना चाहता है। निम्न वर्ग का यदि कभी कोई उद्देश्य होता है तो वह यह कि वर्गो को नष्ट किया जाए और वर्गहीन समाज बनाया जाए। अधिकतर निम्नवर्ग इतना दबाया जाता है कि वह रोज़ की दाल-रोटी के अलावा कुछ भी सोच नही पाता और जब सोचता है तो उपर्युक्त बात ही सोचता है। अतएव इतिहास मे यही सघर्ष मे नए-नए रूपो में बार-बार सामने आता है। दीर्घकाल तक उच्चवर्ग सुरक्षित रूप से सत्तारूढ प्रतीत होता है। परन्तु कभी न कभी ऐसा समय आता है जब वह आत्मविश्वास खो बैठता है या शासन करने की क्षमता उसमे नही रहती या दोनो ही बाते गायब हो जाती है। तब मध्यवर्ग अल्पवर्ग के लोगो को उखाड फेंक देता है। मध्य-वर्ग के ये लोग निम्नवर्ग को यह कहकर अपनी तरफ मिला लेते है कि वे स्वतन्त्रता तथा न्याय के लिए दासता के विरुद्ध लड रहे है और स्वयं उच्चवर्ग

का सदस्य बन बैठता है। इसके बाद कुछ निम्नवर्ग के लोग तथा कुछ उच्चवर्ग के लोग भी पुन मध्यवर्ग बना लेते हैं और सघर्ष पुनः शुरू हो जाता है। तीनो वर्गों में निम्न ही ऐसा वर्ग है जिसे अस्थायी रूप से भी सफलता नही मिलती है। यह अति-शयोक्ति है कि प्राचीन काल से अब नक कोई भौतिक प्रगनि ही नही हुई है। आज भी औसत व्यक्ति कुछ शताब्दी पूर्व के लोगो से शारीरिक दृष्टि से अधिक स्वस्थ है। परन्तु चाहे जिननी धन-सम्पत्ति बढी हो, चाहे जितनी शिष्टता बढी हो, चाहे कितने ही सुधार हुए हो, क्रान्तिया हुई हो, इनसे किसी से इंच मात्र भी वर्गगत समानता की दिशा में प्रगति नही हुई है। निम्नवर्ग की दृष्टि से, परिवर्तन चाहे जितने हुए, स्वामियो मे ही फर्क पडा है। इससे अधिक कुछ नही।

उन्नीसवी शताब्दी के अन्त तक सघर्षो का यह क्रम बहुत-से लोगो के मस्तिष्क मे स्पष्ट हो गया। कुछ लोगो ने इतिहास की गति को चक्राकार बतलाकर कहा कि निम्न और उच्च वर्गों के बीच के अन्तर को अपरिहार्य मान लिया जाए। इस सिद्धान्त के मानने वाले तो आदि काल से थे लेकिन बाद में एक विशिष्ट अन्तर के साथ लोगो ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। प्राचीन काल मे यह सिद्धान्त उच्चवर्गो द्वारा प्रतिपादित किया गया था। इनमें राजा, धनिकवर्ग के व्यक्ति, वकील, पुरोहित तथा इन लोगो पर आश्रित व्यक्ति थे। निम्नवर्ग के लोगो को यह भरोसा दिलाया जाता था कि लोकोत्तर जीवन मे उन्हे उनके बलिदानो और आत्मत्याग का सुपरिणाम मिलेगा। मध्यवर्ग के लोग जब तक सघर्प करते थे तब तक हमेशा स्वतन्त्रता, न्याय और बधुता का नारा लगाते थे। परन्तु अब उन्ही लोगो ने इस मानवबन्धुता के विरुद्ध नारा लगाना शुरू कर दिया जो सत्ता-रूढ तो नही थे परन्तु जिनके सत्तारूढ हो जाने की सभावना थी। नवीन मध्य-वर्ग ने अपने अत्याचारो की घोषणा एक प्रकार से पहले ही कर दी। समाजवाद जिसका सबध प्राचीनकाल के दास विद्रोहो तक से था, ऐसी अन्तिम कडी था जो अतीत के वर्गसमानता के सुखद स्वप्न से सबधित था, लेकिन सन् १६०० के बाद जितने भी समाजवादी आन्दोलन आरभ हुए उन सबने स्वतत्रता और समानता के सिद्धान्त का अधिकाधिक परित्याग ही किया। समाजवाद का प्रादुर्भाव उन्नी-सवी शताब्दी मे हुआ। परन्तु जो नए आन्दोलन इस शताब्दी के मध्य में आरभ हुए, और जो ओशनिया मे इगसोश, यूरेशिया मे नवीन बोल्शेविज्म और ईस्ट-एशिया मे मृत्यु पूजा के नाम से विख्यात है, उनका उद्देश्य स्वाधीनता को नष्ट करना

और असमानता को प्रोत्साहन देना था। इसमे सदेह नही कि ये नए आन्दोलन पुरानो मे से ही शुरू हुए परन्तु वे पुराने समाजवाद से केवल मौखिक सहानुभूति ही रखते थे। इन सबका उद्देश्य प्रगति को अवरुद्ध करना और इतिहास को उचित अवसर पर आगे बढने से रोक देना था। एक बार कालचक्र और घूमना था और इसके बाद उसे रुक जाना था। पूर्ववत् उच्चवर्ग और मध्यवर्ग द्वारा अपदस्थ होना था। मध्यवर्ग को उच्चवर्ग बन जाना था। परन्तु इस बार उच्चवर्ग ने ऐसी पैतरेबाजी की कि उसे कोई ऊचे आसन से हटा ही न सके।

यह नया सिद्धान्त कुछ तो ऐतिहासिक ज्ञान के सचय से और कुछ ऐतिहासिक घटनाओ की कल्पना से स्थिर हुआ। उन्नीसवी शताब्दी के पूर्व ऐसा नही था। इतिहास की चक्राकार गति को अब समझ लिया गया था, या कम से कम ऐसा लगता था। यदि इतिहास की गति समझ ली गई थी तो लोगो का ख्याल था कि उसे बदला भी जा सकता है। लेकिन इसका मुख्य कारण यह था कि बीसवी शताब्दी के आरभ मे ऐसा प्रतीत होने लगा था कि मानव-समानता स्थापित हो जाने की सभावना है। यह सच था कि हर आदमी एक-सा ही मेधावी नही होता और कोई किसी काम के उपयुक्त होता है तो कोई किसी के, परन्तु अब वर्ग-विषमता या धन के बाहुल्य से उत्पन्न असमानता के लिए कोई स्थान नही था। आरभिक युगो मे वर्गभेद अनिवार्य ही नही वांछनीय भी था। असमानता सभ्यता का मूल्य थी। परन्तु मशीनो से उत्पन्न होने वाले उत्पादन के कारण स्थिति बदल गई। यदि यह ज़रूरी भी हो कि लोग अलग-अलग ढग के काम करे तो भी यह आवश्यक नही था कि वे भिन्न सामाजिक या आर्थिक स्तरो पर रहे। अतएव, मध्यवर्ग के जिन लोगो को सत्ता मिलने वाली थी, उन्हे मानव-समानता वाछनीय आदर्श नही प्रतीत हुआ, अपितु वह ऐसी आशका प्रतीत हुई जिसका उन्मूलन आवश्यक था। प्रारभ मे, जब न्यायसम्मत और शान्तिपूर्ण समाज का अस्तित्व सभव नही था तब तो इन आदर्शो के लिए लडा भी जा सकता था और विश्वास भी किया जा सकता था। यही कारण है कि हज़ारो वर्षो तक आदमी इस कल्पना-स्वर्ग मे विचरण करता रहा कि ऐसा समाज हो जिसमे पशु की तरह किसी को श्रम न करना पडे। सब भाइयो की तरह हिल-मिलकर रहे और कोई कानून न हो। इस कल्पना का जो लोग सत्ता मे आए उन पर भी कुछ न कुछ असर था। परन्तु बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से हर राजनीतिक सिद्धान्त ने तानाशाही

का समर्थन शुरू कर दिया। पृथ्वी पर स्वर्ग लाने की कल्पना का ठीक उस समय परित्याग कर दिया गया जब उसको मूर्तरूप देना सभव हो गया था। हर नया राजनीतिक सिद्धान्त वर्गगत समाज और दमन का समर्थन करने लगा। सन् १९३० के आसपास इस राजनीतिक सकीर्णता और कठोरता के कारण वे बाते भी होनी आरभ हो गई जो काफी दिनो से बद थी। जैसे बिना मुकद्दमे के नज़रबन्द कर देना। युद्धबदियो का दासो की भाति प्रयोग, सार्वजनिक रूप से फासी देना, इकबाली बयान के लिए यातना देना, तथा सामूहिक रूप से लोगो को निष्कासित कर देना। इन बातो को न केवल शुरू ही कर दिया गया अपितु इन्हे बरदाश्त भी किया जाने लगा और पढे-लिखे लोग भी इनका समर्थन करने लगे।

पूरे दस वर्ष तक गृहयुद्धो, क्रान्तियो, प्रतिक्रान्तियो तथा सघर्षो के बाद इगसोश तथा इसके समान अन्य दो और राजदर्शन सफल हो सके। परन्तु इन पर तानाशाही की छाया पहले ही पड चुकी थी। यह भी स्पष्ट हो गया था कि इतनी अव्यवस्था और अशान्ति के उपरान्त तानाशाही शासन ही आएगा। यह भी पता लग गया था कि दुनिया का शासन किस प्रकार के लोगो के हाथ मे रहेगा। अभिजात्यवर्ग नौकरशाहो, वैज्ञानिको, टेकनिशियनो, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ताओ, प्रचार-विशेषज्ञो, समाजविज्ञानियो, अध्यापको, पत्रकारो तथा व्यावसायिक राजनीतिज्ञो का था। इस वर्ग के अधिकाश व्यक्ति मध्यवर्ग के वेतनभोगी व्यक्ति थे। इनमे से कुछ श्रमिको के उच्चतर वर्ग के थे। इस अभिजात्यवर्ग को उद्योगो के एकाधिपत्य तथा केन्द्रीय सरकार हो जाने के पूर्व अपना वर्तमान रूप प्राप्त करने मे और भी सहायता मिल गई। इन लोगो की यदि पहले के अधिकारियो से तुलना की जाए तो पता लगता है कि इस वर्ग के लोग अपेक्षाकृत कम लालची, विलासिता से बहुत अधिक आकृष्ट न होने वाले परन्तु अधिक से अधिक सत्ता हथिया लेने के लिए आतुर प्रतीत होते है। वे क्या कर रहे है, यह बात वे अच्छी तरह जानते है और विरोधियो को कुचलने में जरा भी काहिली, सुस्ती या दया नही दिखलाते। यह अन्तिम अन्तर विशेप रूप से महत्वपूर्ण है। आज की निरकुश तानाशाही की तुलना मे अतीत के समस्त निरकुश शासक अदक्ष थे। उन्होने पूरी तरह विरोध का दमन नही किया। शासक वर्ग के विरुद्ध जब तक कोई प्रत्यक्ष कार्य नही होता था वह लोगो से छेडछाड नही करता था और थोडी-बहुत उदारता दिखलाता था। लोगो को विचारस्वातत्र्य भी रहता था, कम से कम इन अर्थों मे कि वे जो चाहे

सोच । आधुनिक प्रतिमानो की तुलना मे मध्ययुग का कैथोलिक चर्च भी पर्याप्त सहिष्णु था । इसका एक कारण यह भी था कि कोई भी सरकार हर व्यक्ति पर निगाह नही रख सकती थी । प्रेस के आविष्कार के कारण जनमत तैयार करना आसान हो गया । रेडियो और टेलीविजन ने इसे और भी अधिक सुविधा प्रदान की । टेलीविजन ने बाद मे यह उन्नति की कि इसमे जिस पर्दे से चित्र देखा जा सकता था उसी से चित्र लिया भी जा सकता था । इससे निजी जीवन की समाप्ति हो गई । इसके जरिये हर ऐसे नागरिक पर चौबीसो घटे दृष्टि रखी जा सकती थी जिसके क्रियाकलाप राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकते है । सरकारी प्रचार के अतिरिक्त विचार-विमर्श के अन्य सब विकल्प समाप्त किए जा सकते है । इस प्रकार न केवल सब लोग राज्य की इच्छा के अनुसार आचरण ही करने लगे अपितु पहली बार हर विषय पर लोगो का एक ही मत भी होने लगा ।

सन् १९५० तथा १९६० के बीच के बीस वर्षो के बाद, जिनमे क्रान्तियो के कारण चारो ओर अव्यवस्था थी, समाज फिर तीन वर्गों मे विभक्त हो गया . उच्च, मध्य तथा निम्न । इस बार उच्चवर्ग यह जानता था कि उसे अपनी स्थिति सुदृढ बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए । अब यह बात भली भाति समझ ली गई थी कि अयोग्य उच्चवर्ग को बनाए रखने के लिए समूहवाद ही सबसे अधिक उचित सिद्धान्त है । धन-सम्पत्ति और विशेषाधिकारो की रक्षा का सबसे अच्छा रास्ता सयुक्त स्वामित्व है । 'निजी सम्पत्ति का उन्मूलन' जो क्रान्तियो के दौरान में हुआ, उसकी जगह अब ऐसी व्यवस्था ने ली थी जिसमे सम्पत्ति अपेक्षाकृत अत्यल्प व्यक्तियो के हाथो में सीमित हो गई । फर्क इतना ही था कि अब एक व्यक्ति स्वामी नही था, बल्कि एक वर्ग था । व्यक्तिगत रूप से पार्टी के किसी सदस्य के पास उसके अपने काम मे आने वाली कुछ चीजो को छोडकर अन्य कोई सम्पत्ति नही है । सामूहिक रूप से, ओशनिया की हर चीज़ पर पार्टी का कब्जा है, क्योकि सारे देश पर उसी का नियत्रण है । वह हर वस्तु का जैसे चाहती है, वैसे प्रयोग करती है । क्रान्ति के बाद तो पार्टी के आधिपत्य तथा अधिकार प्रयोग का विरोध भी बन्द हो गया । पहले यह समझा जाता था कि पूजीवादी वर्ग को समाप्त कर देने पर अपने आप समग्र सम्पत्ति पर समाज का सामूहिक अधिकार हो जाता है । इंगसोश पूर्वप्रचलित समाजवादी विचारधाराओ से ही यह विचार उत्पन्न हुआ था । इसलिए इगसोश के अनुयायियो ने आते ही पूजीवादी तथा निजी सम्पत्ति

की व्यवस्था को समाप्त कर दिया। इसके बाद जैसा कि उन्होने पहले ही सोच लिया था, आर्थिक और वित्तीय असमानता को स्थायी बना दिया।

किन्तु वर्गगत समाज को शाश्वत बना देना इतना आसान नही है। ये समस्याए और भी उलझन भरी और गहरी हैं। शासकवर्ग को पदच्यूत करने के कुल चार ढग ही सभव है। वह है · बाहर की कोई शक्ति हमला करके उसे परास्त कर दे, या शासकवर्ग स्वय ही शासन करने की इच्छा त्याग दे, या फिर वह ऐसे मध्यवर्ग को जन्म दे दे जो बहुत ही शक्तिशाली भी हो और साथ ही शासको से असन्तुष्ट भी हो। या ये सब कारण एक साथ काम करे। जो शासकवर्ग इन कारणो को हटा देगा वह हमेशा शासन करने में सफल हो जाएगा। अन्त मे जो सबसे महत्वपूर्ण है, वह यह कि शासकवर्ग की अपनी मनोवृत्ति क्या है।

वर्तमान शताब्दी के मध्यकाल के बीत जाने के बाद किसी बाह्यशक्ति के आक्रमण की सभावना तो शेष रही नही। आज सारी दुनिया जिन तीन राज्यो मे विभक्त है, वे करीब-करीब अजेय हैं। इन राज्यो को तभी जीता जा सकता है जब इनकी जनता को बदल दिया जाए। इन परिवर्तनो को कोई भी सतर्क शासकवर्ग आसानी से नियन्त्रिन कर सकता है। जनता का असन्तोष और विद्रोह करने की बात केवल सैद्धान्तिक है। जनता अपने आप स्वय कभी विद्रोह नही करती। और विशेष रूप से दमन के विरुद्ध कभी विद्रोह नही किया जाता। जब तक जनता के सामने तुलनात्मक जीवनयापन के मानदण्ड नही होते तब तक उसे पता भी नही लगता कि वह दलित है या उस पर अत्याचार किया जा रहा है। अतीत मे बार-बार जो आर्थिक सकट उत्पन्न हो जाता था, उसे बिलकुल अनावश्यक समझा जाता है, अब वैसे सकट उत्पन्न ही नहीं होने दिए जाते। अन्य प्रकार के और बडे सकट उत्पन्न होते हैं, लेकिन उनका कोई राजनीतिक परिणाम नही होता। इसका कारण यह है कि असन्तोष को प्रकट करने का कोई माध्यम ही नही है। मशीनो के कारण जो अधिक उत्पादन होता है उसकी समस्या भी निरन्तर चलने वाले युद्ध से हल कर ली गई है। (तीसरा अध्याय देखिए।) इससे जनता के नैतिक साहस का स्तर भी बना रहता है। अतएव वर्तमान शासकवर्ग की समस्याए ये हैं - योग्य, बेकार, सत्तापिपासु व्यक्तियो का कोई शक्तिशाली वर्ग न बन पाए। तथा पार्टी मे उदारतावाद और सन्देहवाद के पोषको का कोई दल न उभर आए। अतएव यह समस्या शिर्प सबधी कही जा सकती है। जरूरत

इस बात की है कि शासनकर्ता हर व्यक्ति को इस सबध मे सचेत रखा जाए। इसके विपरीत जनता की चेतना को जितना सभव हो दबाया जाए।

इस भूमिका को समझ लेने के बाद यदि कोई ओशनिया के सामाजिक ढाचे को न भी जानता हो तो भी उसकी कल्पना तो भली भाति कर ही सकता है। स्तूप के शीर्ष बिन्दु पर बडे भाई है। उनसे कोई गलती नही हो सकती और वे सर्वशक्तिमान है। वे ही प्रत्येक सफलता, प्रत्येक विजय, प्रत्येक शोध, सारे ज्ञान, समस्त गुणो के स्रोत है। ऐसी हर बात उन्ही के नेतृत्व तथा प्रेरणा-शक्ति होने के कारण होती है। पोस्टरो पर उनका चेहरा दिखलाई पडता है और टेलीस्क्रीन पर उनकी आवाज़ सुनाई देती है। वे करीब-करीब अमर है और वे कब पैदा हुए थे, यह कोई नही जानता। बडे भाई के रूप मे ही पार्टी अपने आपको सारे ससार के सामने प्रकट करती है। बडे भाई जनता के स्नेह, श्रद्धा, भय तथा अन्य ऐसी ही भावनाओ के केन्द्र है जो किसी व्यक्ति के प्रति तो उमड सकती है लेकिन किसी दल के प्रति नही। बडे भाई के ठीक नीचे अन्तरग पार्टी है। इसमे कोई साठ लाख व्यक्ति है। यह सख्या ओशनिया की आबादी का दो प्रतिशत है। अन्तरंग पार्टी के बाद बाह्य और बडी पार्टी का नम्बर आता है। यदि अन्तरग पार्टी मस्तिष्क है तो बाह्यपार्टी हाथ है। सबसे नीचे गूगी जनता है जो मजदूर कहलाती है। ओशनिया मे ८५ प्रतिशत लोग मजदूर है। पहले हमने जो वर्गविभाजन किया है उसके अनुसार मजदूर जनता निम्नवर्ग मे आई। भूमध्यरेखावर्ती लोग किसी वर्ग मे नही आते क्योकि इनके शासक बराबर बदलते रहते है। उन्हे समाज का अनिवार्य अग नही माना जाता।

सिद्धान्तत इन तीनो वर्गो की सदस्यता वशगत नही है। अन्तरग पार्टी के सदस्य माता-पिता का बच्चा अपने आप जन्म के अधिकार से अन्तरग पार्टी का सदस्य नही बन जाता। पार्टी के किसी भी वर्ग मे शामिल करने के लिए उसकी परीक्षा ली जाती है। यह परीक्षा सोलह वर्ष की अवस्था मे होती है। किसी प्रकार का जातिगत भेदभाव भी नही है। किसी जाति विशेष का भी शासकवर्ग पर ज़ोर नही है। यहूदी, नीग्रो, दक्षिणी अमेरिकन भी पार्टी के उच्च पदो पर प्रतिष्ठित है। प्रत्येक क्षेत्र का उच्चशासक उसी क्षेत्र का होता है। ओशनिया के किसी भी क्षेत्र की जनता के मन मे यह भाव उत्पन्न नही हो सकता कि वे उपनिवेश मे रहते है जिसका शासन किसी सुदूरवर्ती राजधानी से किया जाता है।

ओशनिया की कोई राजधानी नही है। इस राज्य का उच्चतम शासक ऐसा व्यक्ति है जिसके निवास स्थान के बारे मे किसी को कुछ भी पता नही है। अंग्रेजी मुख्य भाषा है और नई भाषा राजभाषा है। इसका भी केन्द्रीकरण नही किया गया है। ओशनिया के शासको का परस्पर रक्तसबध नही है बल्कि समान-सिद्धान्तो मे विश्वास ही उनकी एकता का कारण है। यह सच है कि हमारा समाज स्थिर और पार्टी पर दृष्टिपात करने पर ऐसा लगता है कि वह जन्म के आधार पर है। परन्तु एक वर्ग से दूसरे वर्ग मे आना-जाना बहुत कम होता है। मशीन-युग के आरभ होने के पूर्व तथा पूजीवादी युग मे भी इतने कम लोगो का वर्ग-परिवर्तन नही होता था। दल के दो वर्गो मे आदान-प्रदान होता है। परन्तु उसका उद्देश्य केवल इतना ही है कि अन्तरग पार्टी के कमजोर आदमियो को हटा दिया जाए और अत्यन्त महत्वाकाक्षी व्यक्तियो को थोडा ऊचा पद देकर सन्तुष्ट कर दिया जाए। मज़दूरो को पार्टी मे प्रविष्ट ही नही होने दिया जाता। मज़दूर वर्ग के महत्वाकाक्षी व्यक्तियो को, जो असतोष की आग भडका सकते है, विचार-पुलिस अपनी निगाह मे रखती है और बाद मे उनको समाप्त कर देती है। परन्तु यह व्यवस्था स्थायी नही है। और न ऐसा किसी सैद्धान्तिक आधार पर ही किया जाता है। पुराने वर्ग के अर्थो मे पार्टी, वर्गमात्र नही है। अर्थात् पार्टी के सदस्यो के बच्चो को ही सत्ता मिलेगी यह ज़रूरी नही है। यदि उच्च स्थानो के लिए योग्य व्यक्ति न हो तो वह मज़दूरो के वर्ग से भी पूरी पीढी को लेने के लिए तैयार है। आरभ के सकटालीन वर्षो मे, पार्टी की सत्ता पार्टी-सदस्यो के बच्चो को ही हस्तान्तरित नही हो सकती, इस सिद्धान्त के प्रचार मे विरोध काफी हलका पड गया था। पुराने समाजवादियो का खयाल था कि जो वश परम्परागत नही है वह वर्ग स्थायी नही हो सकता। उसने यह नही सोचा कि अयोग्य धनिकतत्र भौतिक होना आवश्यक नही है। उसने यह भी नही विचार किया कि वशपरम्परागत धनिकवर्ग का शासन हमेशा अल्पकालीन होता है। इसके विपरीत कैथोलिक चर्च जैसी सस्थाए सैकडो वर्ष चली। उच्च वर्गतत्र का अर्थ पिता से पुत्र को सत्ता-हस्तान्तरण नही है—अपितु जीवन के प्रति एक विशिष्ट दृष्टिकोण और जीवन-यापन का एक विशिष्ट ढग है। इसको मृत व्यक्ति जीवितो पर लादते जाते है। शासक वर्ग जब तक अपने उत्तराधिकारियो को निश्चित कर सकता है तब तक वह शासक ही बना रहेगा। पार्टी अपनी रक्त-परम्परा जारी रखने मे कोई दिलचस्पी

नही रखती। यदि वाछित वर्ग-व्यवस्था, बनी रहती है तो शक्ति का प्रयोग कौन करता है, यह बात महत्वपूर्ण नही है।

हमारे समस्त विश्वासो, आदतो, रुचियो, मनोवृत्तियो को इस प्रकार का बना दिया गया है जिससे पार्टी का रहस्य छिपा रहे और वर्तमान सामाजिक रूपरेखा का वास्तविक चित्र हमारी आखो के सामने न आए। विद्रोह या विद्रोह की तरफ कोई कदम भी उठाना बिलकुल असभव है। मजदूर वर्ग की ओर से डरने की कोई जरूरत नही है। यदि उनसे छेड-छाड न की जाए तो पीढी के बाद पीढिया, शताब्दियो के बाद शताब्दिया गुजरती चली जाएगी और मजदूर उसी तरह काम करते रहेगे। बच्चे पैदा करते जाएगे और मरते जाएगे। उनमे न केवल किसी विद्रोह की ही भावना उत्पन्न नही होगी बल्कि वे कल्पना भी नही कर सकेगे कि जो ससार है उसके अलावा भी और कोई दुनिया हो सकती है। यदि औद्योगिक प्रगति के लिए उन्हे उच्च शिक्षा दी गई तो वे अवश्य खतरनाक सिद्ध हो सकते है। लेकिन अब सैनिक और औद्योगिक होड शेष नही रह गई है। इसलिए लोगो को दी जाने वाली शिक्षा का स्तर भी गिरता जा रहा है। बौद्धिक स्वतत्रता भी उनको इसीलिए दी गई है कि उनमे विचार करने की बुद्धि ही नही है। इसके विपरीत पार्टी मे छोटे से छोटे विषय पर छोटे से छोटे सदस्य के विमत को बरदाश्त नही किया जाता।

जन्म से मृत्यु तक पार्टी-सदस्य पर विचार-पुलिस की दृष्टि रहती है। वह जब एकान्त मे होता है तो भी उसे यह पता नही होता कि वह अकेला है। वह सोता हो या जागता, काम कर रहा हो या आराम कर रहा हो, नहा रहा हो या बिस्तर पर हो, वह चाहे कही हो, बिना पूर्व सूचना के उसके पास पुलिस पहुच सकती है या उस पर इस प्रकार भी दृष्टि रखी जा सकती है, कि उसे पता ही नही चले। कोई भी काम, जो पार्टी-सदस्य करता है, पार्टी उससे उदासीन नही रह सकती। उसके मित्रो, उसके मनोरजन या विश्राम के ढगो, अकेले मे उसकी बुदबुदाहट, एकान्त मे उसके चेहरे के भावो तक का अध्ययन किया जाता है। वास्तविक कदाचरण ही नही, सनक, स्नायुओ की बेकली या ऐसी समस्त बातो का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता, जिससे मानसिक सघर्ष का भाव व्यक्त होता हो। उसके आचरण का नियमन किसी कानून या आचार-सहिता से नही होता। ओशनिया मे कोई कानून नही है। ऐसे विचार या कार्य जिनसे मृत्युदण्ड मिल सकता है, करने की मनाही नही है। वस्तुत शुद्धि-करण, गिरफ्तारियो, यत्रणाओ, कारागारवासो तथा मार डालने का जो अनन्त

सिलसिला है, वह यह नही प्रकट करता कि पकडे गए सारे व्यक्तियो ने कोई न कोई अपराध किया ही है, बल्कि उनमें वे व्यक्ति अधिक सख्या मे होगे जिनसे भविष्य मे किसी अपराध के किए जाने की सभावना होगी। पार्टी-सदस्य का मन ही पार्टी के अनुकूल होना जरूरी नही है बल्कि यह भी जरूरी है कि उसके भाव भी पार्टी के विरुद्ध न हो। पार्टी क्या चाहती है, यह कभी नही बतलाया जाता। सच तो यह है कि यदि स्पष्टत अपनी मशा प्रकट कर दे तो इंगसोश की परस्पर विरोधी बाते प्रकाश मे आ जाती है। यदि कोई व्यक्ति पार्टी का भक्त है तो उसे अपने आप पता लग जाएगा कि क्या बात सही है और क्या गलत। परन्तु सच बात तो यह है कि उसे बचपन मे जो शिक्षा मिलती है उसके कारण उसमे सोचने की शक्ति ही शेष नही रह जाती।

पार्टी-सदस्य की कोई निजी भावनाए नही होनी चाहिए। उसे निरुत्साहित भी नही दिखलाई पडना चाहिए। विदेशियो के प्रति हमेशा क्रुद्ध रहना चाहिए और उनसे घृणा करनी चाहिए। यही भाव देश के प्रति विश्वासघात करने वालो के सबध मे होना चाहिए। जीवनयापन की दशाओ के प्रति असतोष को प्रतिदिन प्रचार की फिल्मे दिखलाकर समाप्त कर दिया जाता है। अन्य प्रकार की विद्रोही भावनाओ को पार्टी के अनुशासन की शिक्षा द्वारा समाप्त कर दिया जाता है। बच्चो को सिखलाया जाता है कि वे किस प्रकार अपराधपूर्ण विचार के निकट पहुचते ही आगे सोचना बन्द कर दे। उनकी उपमाओ या रूपको से बात समझने की शक्ति को नष्ट कर दिया जाता है। वे तर्क की त्रुटियो को कभी नही समझने पाते। यदि वे इगसोश के विरुद्ध हो तो साधारण से तर्क को भी गलत ही समझेगे। उनके सामने यदि इगसोश के विरुद्ध कोई भी बात कही जाएगी तो वे ऊब जाएगे और उसे सुनेगे ही नही। अपराध रोकने वाली शिक्षा का अर्थ है ऐसी मूर्खता की स्थिति प्राप्त कर लेना जो जीवन की रक्षा करती रहे। इसके विपरीत पार्टीभक्ति का मतलब है मानसिक शक्ति पर इतना नियत्रण रहे कि आप उसे जैसा चाहे मोड दे, ठीक उसी तरह जिस प्रकार सरकस के पहलवान अपने शरीर को जिधर चाहे मोड सकते है। ओशनिया का समाज इस विश्वास पर आधारित है कि बडे भाई सर्वान्तर्यामी है और पार्टी कभी कोई गलती कर ही नही सकती। परन्तु वस्तुत. बडे भाई सर्वान्तर्यामी नही है और पार्टी भी गलतिया कर सकती है, अतएव तथ्यो को बराबर गढते रहने के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता है। यहा पार्टी के हित को दृष्टि मे रखते हुए काले को सफेद कहना और सोचना पडता है। अतीत

की बातो को इसलिए बराबर बदलते रहने की जरूरत है। इसलिए लक्ष्य को द्वैध विचार की शक्ति से प्राप्त किया गया है।

भूनकाल की घटनाओ मे परिवर्तन के दो कारण हैं। इनमे से एक तो सावधानी बरतना कहा जा सकता है। वह यह है कि पार्टी के छोटे सदस्य भी जीवन की कठिन परिस्थितियो को केवल इसलिए बरदाश्त करते हैं क्योकि उनके सामने तुलना करने के लिए कोई चीज नही है। इसी दृष्टि से पार्टी-सदस्यो को इतिहास का ज्ञान भी नही होना चाहिए। क्योकि इस ज्ञान के अभाव में वे यह कभी नही जान सकेगे कि उनके पूर्वज उनकी अपेक्षा अच्छी स्थिति में रहते थे। उसे तो वही लगना चाहिए कि उसके जीवनयापन के प्रतिमान सुधरते जा रहे हैं। भाषण और रिपोर्टे ही पर्याप्त नही है। पिछले रिकार्ड भी इस तरह दुरुस्त होने चाहिए कि पार्टी के अनुमान सही साबित हो। यह भी दिखलाया जाए कि पार्टी के सिद्धान्तो या उसके मित्रो में कभी कोई परिवर्तन नही हुआ है। इसकी वजह यह है कि सिद्धान्त बदलने का या मित्र-परिवर्तन करने से भी कमजोरी प्रकट होती है। उदाहरण के लिए, यूरेशिया या ईस्ट एशिया (कोई भी) आज शत्रु है तो फिर वह हमेशा ही शत्रु होना चाहिए। यदि तथ्य विपरीत हो तो यह ज़रूरी है कि उनको अनुकूल बनाया जाए। इस प्रकार इतिहास बराबर लिखा जाता है। सत्य मत्रालय का यह काम इतना ज़रूरी है जितना षड्यत्रो के दमन का काम, जो प्रेम मत्रालय करता है।

इगसोश के दर्शन का मुख्य तत्व है यह सिद्धान्त कि अतीत बदल सकता है। विगत घटनाओ का कोई भौतिक प्रमाण नही है, सिवा इतिहास के और स्मृति के। अतीत वही है जो पिछला इतिहास और स्मृति कहे। चूकि इतिहास पर पार्टी का नियत्रण है और पार्टी का अपने सदस्यो के दिमाग पर भी नियत्रण है, इसलिए अनीत वही है जो पार्टी कहती है। अतीत परिवर्तनीय अवश्य है लेकिन किसी विशिष्ट घटना को लेकर यह परिवर्तन कभी नही किया गया। जब किसी बात को लेकर परिवर्तन किया जाता है तो अतीत के इतिहास का वही पृष्ठ सामने होता है, दूसरा अन्य कोई इतिहास का सस्करण उपलब्ध नही होता। एक साल मे भी इसमे काफी परिवर्तन किया जा सकता है। यह हम कह चुके हैं। लिखित बातो को पार्टी की वर्तमान नीति के अनुकूल बनाने को पार्टीभक्ति समझा जाता है। इसके साथ ही यह याद रखना भी ज़रूरी है कि घटनाओ का क्रम भी वाछनीय ही हो। यदि किसी

को रिकर्डों में परिवर्तन करना पडे या अपनी स्मृति को ठीक करना पडे तो यह भी जरूरी है कि वह जो कुछ करे उसे भूल जाए। इसकी तरकीब यह है कि वहुमल्यक पार्टी-सदस्य वही बात कहने लगते हैं जो नए रिकर्डों मे होनी है तथा अन्य लोगो को भी वही बात माननी पडती है। इसे यथार्थ नियत्रण कहते है। नई भाषा में इसे 'द्वैध विचार' कहते हैं।

द्वैध विचार का मतलब है अपने दिमाग मे दो तथ्यो को रखना और दोनो पर ही विश्वास करना। पार्टी का बुद्धिवादी सदस्य जानता है कि उसे किस दिशा में अपनी स्मृति को मोडना है। परन्तु वह द्वैध विचार द्वारा यह व्यवस्था भी कर लेता है कि वास्तविकता को बिलकुल न भूल जाए। इतनी चेतना होनी चाहिए कि कोई गलती न हो पाए और इतनी अचेतना कि काम होने के वाद वह परिवर्तन की क्रिया को भूल जाए। द्वैध विचार इगसोश का मुख्य तत्व है। विश्वासपूर्वक झूठ वोलना, असुविधा पैदा करने वाले सत्य को भुला देना, आवश्यकता पडने पर सत्य को याद कर लेना और जब तक जरूरी हो याद रखना और फिर भुला देना, यह सब निहायत जरूरी है। द्वैध विचार शब्द का इस्तेमाल करते हुए भी दो तरह के विचार होने आवश्यक है। कारण, इस शब्द का प्रयोग करते हुए आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप वास्तविकता को मिटा रहे हैं। द्वैध विचार के प्रयोग द्वारा जान-बूझकर आप किसी जानकारी को भुलाते है और इस प्रकार आप एक झूठ के सहारे सचाई की सीमा को कूदकर पार कर जाते है। इस प्रकार पार्टी हजारो वर्षो की गति को रोक सकती है। इतिहास की धारा को अव द्ध कर सकती है।

अतीत के वर्गतत्रो का पतन इसलिए हुआ है कि वे या तो कामचोर हो गए या उनके विश्वास की जडे हिल गई। या तो वे बेवकूफी करने लगे या बदलनी परिस्थितियो के अनुकूल अपने आपको नही बना सके। या तो वे उदारतावादी हो गए या कायर। और उन्होने ऐसे स्थानो पर भीरुता दिखलाई जहा शक्ति प्रयोग आवश्यक था और इसी कारण पदच्युत कर दिए गए। अतएव उनका पतन जान-बूझकर किए गए कामो या नासमझी की वजह से हुआ। पार्टी की यह सफलता है कि उसने ऐसी तरकीब निकाल ली है कि जिसमे दोनो प्रकार की बाते निभ सकती है। यह तरकीब है द्वैध विचार की। इसके अलावा अन्य किसी ताकत से पार्टी की सत्ता को शाश्वत नही बनाया जा सकता था। यदि किसी को शासन करना

है और करते रहना है तो उसमें यह ताकत होनी चाहिए कि वह यथार्थ को बदल सके। शासन करने का गुप्त मत्र यह है कि शासक को अपने ऊपर तो यह विश्वास हो कि वह कभी कोई गलती कर ही नही सकता और दूसरे उसमे यह शक्ति हो कि वह अपनी पिछली गलतियो से शिक्षा ले सके।

द्वैध विचार के अन्वेषक ही इसके सबसे बडे प्रयोगकर्ता भी है। वे जानते है कि यह मानसिक धोखेधडी के सिवाय कुछ भी नही है। हमारे समाज मे जिन लोगो को इस बात का ज्ञान है कि दुनिया मे क्या हो रहा है, वही ससार को यथार्थ दृष्टि से देखने मे बिलकुल असमर्थ है। सामान्यतः वे जितने समझदार है उतने ही अधिक धोखे मे है। इसका सबसे बडा उदाहरण है यह बात कि ज्यो-ज्यो आदमी का सामाजिक स्तर ओशनिया मे बढता जाता है त्यो-त्यो उसकी युद्ध-मनोवृत्ति भी बढनी जाती है। युद्ध के प्रति सबसे अधिक विवेकपूर्ण दृष्टि-कोण विवादास्पद प्रदेशो के निवासियो का है। वे युद्ध को समुद्री तूफान की भाति शाश्वत संकटमय लहर मानते है जो उनके ऊपर से बराबर आती-जाती रहती है। कौन-सा पक्ष जीतता है इस तथ्य के प्रति वे बिलकुल उदासीन है। उनके लिए दोनो मालिक बराबर है क्योकि उनको दोनो के लिए उसी तरह काम करना पडता है और दोनो मालिको का व्यवहार उनके साथ एक-सा ही है। इनसे कुछ ही अच्छी अवस्था मे मज़दूर वर्ग के लोग है। परन्तु इनको भी बराबर लड़ाई की याद दिलाई जाती रहती है। उन्हे प्रचार द्वारा कभी-कभी क्रुद्ध किया जा सकता है किन्तु यदि उनसे छेडछाड़ न की जाए तो वे परवाह भी नही करते कि युद्ध हो भी रहा है या नही और यदि हो तो उसमें क्या हो रहा है। पार्टी मे और विशेष रूप से अन्तरग पार्टी के सदस्यो मे युद्ध के लिए बडा उत्साह पाया जाता है। वही लोग विश्व विजय में सबसे अधिक विश्वास प्रकट करते है जो समझते है कि ऐसा होना असभव है। यह दो परस्परविरोधी बातो का एक साथ होना ही—ज्ञान के साथ घोर अज्ञान, सनक के साथ कट्टरता—ओशनिया के समाज की मुख्य विशेषता है। सरकारी विचारो मे भी इसी प्रकार के विरोधाभास मिलते है। कई जगह तो बिना ज़रूरत भी इनको रखा गया प्रतीत होता है। अतएव पार्टी इन सब बातो को ठुकराती और बुरा बतलाती है जो किसी समय समाजवादी आन्दो-लन का ध्यय और उद्देश्य थी। परन्तु यह सब होता है समाजवाद के नाम पर। पार्टी शारीरिक श्रम को हेय समझती है, परन्तु अपने सदस्यो को वर्दी वही देती है जो

किसी समय मजदूर पहनते थे। पारिवारिक भावनाओ को खत्म करने का हर प्रयत्न किया जाता है, किन्तु उन्ही के आधार पर पार्टी-नेता के प्रति असीम श्रद्धा, अनुराग और भक्ति की माग की जाती है। मत्रालयो के काम भी इसी प्रकार उलटे है। शाति मत्रालय का काम युद्ध सचालन है। सत्य मत्रालय का काम दिन-रात असत्य और मिथ्या बाते गढना है। प्रेम मत्रालय यत्रणाघर है। समृद्धि मत्रालय लोगो को भूखा मारना है। ये विरोधाभास सयोगवश नही है। जानबूझ कर ऐसा किया गया है। ये पाखड भी नही है। ये द्वैध विचारो का प्रत्यक्ष प्रयोग या अभ्यास है। इन विरोधाभास के बीच सामजस्य स्थापित करके ही अनिश्चित काल तक के लिए शक्ति और सत्ता को अपने हाथ मे बनाए रखा जा सकता है। अन्य किसी प्रकार से काल-चक्र की गति को रोका नही जा सकता। यदि मानव समानता को कभी स्थापित नही होने देना है—यदि उच्चवर्ग को हमेशा उसकी जगह बने रहने देना है तो वर्तमान मानसिक अवस्था को बनाए रखना पडेगा, जो नियत्रित पागलपन के सिवा कुछ भी नही है।

लेकिन एक और सवाल है जिसकी ओर अभी तक हमने ध्यान नही दिया है। प्रश्न है—मानव समानता को क्यो न स्थापित किया जाए ? मान लिया कि आपकी प्रक्रिया बिलकुल ठीक है परन्तु इतनी बडी प्रशासन व्यवस्था द्वारा इतिहास की गति अवरुद्ध करने की जरूरत क्या है ?

इन प्रश्नो का उत्तर ही सच्ची बात को खोलकर सामने रख देना है। जैसा हम कह आए है, पार्टी का सारा दारोमदार द्वैधविचार के सिद्धान्त पर है। परन्तु वास्तविक उद्देश्य और भी गहरा है। वह उद्देश्य जिससे प्रेरित होकर इस वर्ग ने सत्ता हथियाई, द्वैधविचार को जन्म दिया, विचार-पुलिस बनाई, युद्ध को शाश्वत बनाया और आवश्यक प्रशासनिक व्यवस्था को जन्म दिया। इन सब बातो पर किसी ने ध्यान नही दिया। यह उद्देश्य था…

विन्स्टन सहसा अपने चारो ओर छाए मौन से सचेत हो उठा। ठीक उसी तरह जैसे कोई नई आवाज सुनकर चौक उठता है। ऐसा लग रहा था कि जूलिया काफी देर से बिलकुल चुप थी। वह करवट लिए लेटी थी और कमर से ऊपर का हिस्सा बिलकुल नगा था। वह हाथो पर अपने गाल रखे थी और बालो की एक लट आखो पर झूल रही थी। उसका वक्षस्थल निरन्तर ऊपर-नीचे उठ-गिर रहा था।

'जूलिया।'

उत्तर नदारद ।

'जूलिया जाग रही हो क्या ?'

कोई जवाब नही। वह सो रही थी। उसने किताब बन्द करके फर्श पर रख दी। और चादर जूलिया को उढा दी और खुद भी ओढ ली।

वह सोच रहा था, असली रहस्य तो उसने जाना ही नही। वह यह तो समझ गया था कि 'कैसे ?' परन्तु उसकी समझ मे यह नही आया था कि 'क्यो?' प्रथम की भाति तीसरे अध्याय ने भी उसे कोई बात नही बतलाई थी जिसे वह न जानता हो, हा, पढने से उसका ज्ञान व्यवस्थित और क्रमबद्ध अवश्य हो गया था। लेकिन पढने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि कम से कम वह पागल तो नही है। सत्य और असत्य दो चीजे है। यदि आप सत्य को मानते है, तो आप पागल नहीं है, चाहे फिर आप अकेले ही क्यो न हो। डूबते सूरज की पीली किरण तिरछी होकर उसके कमरे मे आ रही थी। वह तकिए पर पड रही थी। उसने आखे मूद ली। मुह पर पडने वाली धूप और लडकी के कोमल शरीर का स्पर्श उसे निद्रादायी विश्राम प्रदान कर रहा था। उसमे विश्वास जाग गया था। वह सुरक्षित था। वह बिलकुल ठीक था। वह यह बुदबुदाता हुआ सो गया कि 'मानसिक स्वस्थता कोई भौतिक वस्तु नही है।' उसे लगा कि उसकी इस टीका मे बडी विद्वता छिपी है।

(१०)

जब विन्स्टन की आख खुली तो उसे ऐसा लगा कि वह बडी देर तक सोया रहा है। पुरानी घडी देखने पर पता लगा कि अभी तो केवल २० बजकर ३० मिनट हुए है (रात के साढे आठ)। वह कुछ देर पडा रहा। अकस्मात् नीचे हाते से यह स्वर उसके कानो मे पडा :

It was only an ' opeless fancy,
It passed like an Ipril dye,
But a look an' a word an' the dreams they stirred
They ' ave stolen my ' eart awye !

लगता था कि वह शुष्क गीत अब भी लोकप्रिय बना था, अब भी वह यहा-वहा सब जगह सुनाई पड जाता था। इस गीत के सामने 'घृणा गीत' फीका पड गया

था। जूलिया गीत की आवाज़ सुनकर जाग पडी। उसने बडी अदा से अगडाई ली और पलग से नीचे आ गई।

'मुझे भूख लगी है।' उसने कहा, 'और कॉफी बनानी है। उह स्टोव तो बुझ गया और पानी ठडा पडा है।' उसने स्टोव उठाकर हिलाया। 'इसमे तो तेल ही नही है।'

'नीचे से थोडा तेल मिल जाएगा।'

'अजब बात है। कुछ देर पहले तो यह बिलकुल भरा था। मै कपडे पहन लूं। ठड हो गई है।'

विन्स्टन भी उठ पडा और उसने भी अपने कपडे पहन लिए। नीचे वाली औरत गाए जा रही थी

They sye that time ' eals all things,
They sye you can always forget,
But the smiles an ' the tears across the years
They twist my ' eartstrings yet !

वह अपनी वर्दी की पेटियो को कसता हुआ खिडकी तक आ गया। सूरज मकानो के पीछे जाकर छिप गया होगा। हाते मे धूप नही थी। कपडे धोने का पत्थर अभी भी गीला था। चिमनियो के बीच आसमान भी ऐसा नीला और स्तब्ध था जैसे अभी-अभी धोया गया हो। वह औरत गा रही थी, इधर-उधर चल-फिर रही थी, कभी चुप हो जाती थी और कपडे सुखाने लगती थी। वह सोच रहा था, शायद यह धोबिन है या शायद बीस-तीस नातियो के कपडे धोती है। जूलिया भी उसकी बगल मे आ गई थी। दोनो मिलकर नीचे वाली स्थूल स्त्री को देखने लगे। उसको देखते-देखते पहली बार विन्स्टन ने अनुभव किया कि वह औरत खूब-सूरत भी है। उसने कल्पना भी नही की थी कि इतनी स्थूल स्त्री जिसने बहुत सारे बच्चे पैदा किए हो, इतनी सुन्दर भी बनी रह सकती है। लेकिन वह सुन्दर थी और होती भी क्यो न ?

'काफी सुन्दर है।' वह बुदबुदाया।

'लेकिन इसके कूल्हे कितने मोटे-मोटे है ?' जूलिया ने कहा।

'यही तो उसकी सुन्दरता है।' विन्स्टन बोला।

उसने जूलिया की कमर को अपनी बाहो मे लपेट रखा था। घुटने से कमर

तक वे एक दूसरे से चिपके खडे थे। उनके शरीरो के स्पर्श से कभी कोई बच्चा पैदा न होगा। यही एक ऐसी बात है जिसे वे कभी नही कर सकते। वे केवल शब्दो से एक दूसरे को मन की बात कह-सुन सकते थे। नीचे वाली औरत के दिमाग नही था, परन्तु बडा-सा स्वस्थ शरीर, मजबूत हाथ-पैर और उर्बर पेट। वह सोच रहा था, पता नही इस औरत ने कितने बच्चे पैदा किए होगे। शायद पन्द्रह बच्चे पैदा किए हो। वह शायद एक साल के लिए जवान रही हो, जगली गुलाब की तरह, और फिर वह फल की भाति फूल गई होगी, सख्त हो गई होगी—सुर्ख और खुरदरी हो गई होगी। उसका सारा जीवन कपडे धोने, फर्श धोने, सीने-पिरोने, खाना बनाने, झाडू लगाने, पालिश करने मे बीत गया हो। पहले अपने बच्चो के लिए फिर अपने बच्चो के बच्चो के लिए उसने यह सब किया होगा और यह काम वह लगातार पिछले तीस वर्षों से करती चली आ रही है। अब भी वह गा रही है। उसके मन मे अजब-सी श्रद्धा जाग रही थी जिसे वह प्रकट नही कर पा रहा था। उसके यह भाव चिमनियो के पीछे फैले, नीले, मेघविहीन आकाश के साथ मिल गए थे। वह सोच रहा था कि क्या आकाश ईस्ट एशिया तथा यूरेशिया में भी ऐसा ही है जैसा यहा। क्या आकाश के नीचे रहने वाले सब व्यक्ति एक ही तरह के हैं। क्या वे सभी एक दूसरे के अस्तित्व से अनभिज्ञ ह, क्या उन सबके बीच घृणा और मिथ्या की दीवारे खडी है और क्या सभी जगह के लोगो मे वह शक्ति छिपी है जो एक दुनिया बदल देगी। अगर किसी से आशा है तो वह मजदूर वर्ग से ही है। बिना पूरी किताब पढे ही वह समझ गया था कि गोल्डस्टीन का यही सदेश होगा। भविष्य मज़दूरो का ही है। और क्या वह किसी प्रकार यह विश्वास कर सकता है कि जब वह दुनिया बनेगी तो उसमे विन्स्टन स्मिथ के खिलाफ कोई नही होगा जिस प्रकार आजकल पार्टी द्वारा बनाई गई दुनिया मे पार्टी के लोग ही उसके शत्रु है? हा, उसका कोई शत्रु नही होगा, क्योकि वह स्वस्थ मन वाले लोगो की दुनिया होगी। देर या सवेर कभी न कभी ऐसा अवश्य होगा कि मज़दूर भी सोचेंगे और जब सोच सकेगे, तो जागेगे और जाग-कर वह काम करेगे जिसकी उनसे आशा की जाती है। मजदूर वर्ग अनश्वर है। नीचे खडी औरत को देखकर सदेह की कोई गुजायश ही नही रह जाती। एक न एक दिन वे जरूर जागेगे। और जब तक ऐसा नही होता, चाहे इसमे हज़ार वर्ष ही क्यो न लगे, तब तक वे अनगिनत मुसीबतो के होते हुए भी जिन्दा रहेगे। चिडियो की तरह वे अपनी ताकत एक शरीर से दूसरे शरीर को देते रहेगे जिसमे न तो

पार्टी हिस्सेदार वन मकती है और न उस ताकत को मार ही मकती है।

'तुम्हे याद है वह चिडिया,' विन्स्टन ने पूछा, 'जिसने पहले दिन हमे अपना गीत सुनाया था ?'

'उसने कोई गीत नही सुनाया, वह तो अपने मन को खुश करने के लिए गा रही थी। शायद अपना जी खुश करने के लिए भी नही, वस गाने के लिए गा रही थी।' जूलिया ने कहा।

चिडिया गाती है। मजदूर गाते है। पार्टी नही गाती। सारी दुनिया मे, लन्दन मे, पेरिस मे, न्यूयार्क मे, अफ्रीका और ब्राजील मे, सीमा पार के निषिद्ध प्रदेशो मे, बर्लिन मे, रूसी मैदानो के गावो मे, चीन और जापान के बाजारो मे, हर स्थान पर वही अजेय मज़दूर था जो दानव की भाति श्रमरत था। उनकी स्त्रिया बच्चे पैदा करती थी और मजदूर जन्म से लेकर मृत्यु तक काम करता था और वरावर गाता रहता था। इन सोए आदमियो मे मे एक न एक दिन ऐसा आदमी अवश्य जन्म लेगा जिसमे सोच-विचार की भी शक्ति होगी। आप मरे व्यक्ति के समान है। भविष्य मज़दूरो का है। यदि आप जागरूक रहे तो उनके भावी जीवन मे हिस्सा ले सकते है। और यह सिद्धान्त आगे बढा सकते है कि दो और दो चार होते है।

'हम मृत है।' विन्स्टन ने कहा।

'हम मृत है।' जूलिया ने उसकी ही बात प्रतिध्वनित कर दी।

'हा, तुम मृत हो।' उनके पीछे से कठोर स्वर म किसी ने दोहराया।

वे उछलकर अलग खडे हो गए। विन्स्टन को काटो तो खून नही। उसका बदन बर्फ की तरह शीतल हो गया था। जूलिया का चेहरा भी सफेद पड गया था। अब वह पीला, दूधिया पीला पड गया था। गाल की लाली अब भी रग की तरह चमक रही थी। ऐसा लगता था कि उसका नीचे की त्वचा से कोई सबध नही है।

'तुम मृत हो।' कठोरतापूर्वक फिर किसी ने कहा।

'वह तसवीर के पीछे था।' जूलिया ने कहा।

'वह तसवीर के पीछे था।' फिर आवाज़ आई।

'जहा हो, ठीक वही खडे रहो। जब तक कहा न जाए, ज़रा भी हिलना मत।'

शुरू हो गया। आखिर शुरू हो गया। वे एक दूसरे को देखने के अलावा कुछ भी नही कर सकते थे। मकान से निकल भागे—अपनी जान बचाने को कूदकर

भाग जाए—ऐसा कोई विचार उनके दिमाग मे नही आया। दीवाल से जो आदेश मिल रहे थे उनके उल्लघन की तो वे बात भी नही सोच सकते थे। खटके की आवाज़ आई। किसी ने शायद सिटकनी खोली थी। इसके बाद काच टूटने की आवाज़ आई। तसवीर जमीन पर गिर गई थी। उसके पीछे जो टेलीस्क्रीन छिपा था, वह सामने आ गया।

'अब वे हमे देख भी सकते हैं।' जूलिया ने कहा।

'अब हम तुम्हे देख भी सकते है,' उसी कण्ठस्वर ने कहा, 'कमरे के बीचो-बीच खडे हो जाओ। अपनी पीठ एक दूसरे के सामने कर लो। अपने हाथ सिर के पीछे ले जाकर बाध लो। एक दूसरे को छुओ मत।'

वह उसे छू तो नही रहा था लेकिन उसे लग रहा था कि जूलिया का सारा बदन बुरी तरह काप रहा था। या शायद वही अकेला काप रहा था। उसने बडी मुश्किल से अपने दातो को बजने से रोक लिया था, परन्तु वह अपने घुटनो पर काबू नही पा रहा था। नीचे से बहुत-से जूतो की खटखटाहट सुनाई पड रही थी। आवाज घर के अन्दर और बाहर दोनो तरफ से आ रही थी। होते मे लोग भरे थे। कोई चीज़ घसीटकर पत्थर की ओर लाई जा रही थी। औरत का गाना अकस्मात् रुक गया था। बडे जोर के साथ किसी चीज़ के गिरने तथा लुढकने की आवाज़ आई थी। शायद कपड़े धोने के टब को फेंक दिया गया था। इसके बाद गुस्से से चीखने की आवाज़ आई और ऐसा लगा कि कोई दर्द से चिल्ला रहा है।

'मकान को घेर लिया गया है।' विन्स्टन ने कहा।

'मकान को घेर लिया गया है।' टेलीस्क्रीन ने दोहराया।

उसे लगा कि जूलिया ने मुह खोला। इसके बाद ही वह बोली, 'मै समझती हूं अब हम लोग एक दूसरे से अलविदा कह लें।'

'हा तुम लोग अलविदा कह सकते हो।' टेलीस्क्रीन ने कहा, इसके बाद कण्ठ-स्वर बदल गया। यह किसी सभ्य व्यक्ति का कण्ठ प्रतीत होता था। विन्स्टन को लगा यह आवाज़ उसने पहले भी सुनी है। 'और अब हम प्रसग वश कह दे Here comes a candle to light you to bed, here comes a chopper to chop off your head!'

विन्स्टन के पीछे बिस्तर पर कोई चीज धम से गिरी। खिडकी के सहारे किसी ने सीढी रखी थी जिसने फ्रेम तोड दिया था, वही बिस्तर पर गिरा था।

कोई खिडकी मे लगाई गई सीढी के सहारे ऊपर चढ रहा था। कमरा काली वर्दी-धारी सिपाहियो से भर गया था। उनके हाथो में हथकडिया थी।

विन्स्टन का कापना बन्द हो गया था। वह इधर-उधर देख तक नही रहा था। एक ही काम करना था—वह यह, कि एकदम सीधा बिना हिले-डुले खडा रहा जाए और उन लोगो को मारने का मौका न दिया जाए। एक आदमी का चमकता हुआ बेत उसके सामने आया। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके शरीर का हर भाग खुला है। और यह भाव असहनीय था। विन्स्टन ने उसकी आख से आख मिलाई। उस आदमी ने जीभ से अपने ओठ गीले किए और आगे बढ गया। फिर जोर का धमाका हुआ। किसी ने काच का पेपरवेट उठाकर ज़मीन पर दे मारा था। वह आतिशदान से लगकर टुकडे-टुकडे हो गया था।

मूगे का टुकडा, केक से गिरे चीनी के गुलाबी फूल की तरह नीचे गिरकर चटाई पर लुढक गया था। विन्स्टन ने सोचा, कितना छोटा, यह हमेशा कितना छोटा होता है। अकस्मात् किसी ने उसके टखने मे जोरो से ठोकर मारी जिससे वह गिरते-गिरते बच गया। किसी ने जूलिया के घूसा मारा था और वह ज़मीन पर दोहरा होकर तडप रही थी और उसकी आवाज़ तक नही निकल पा रही थी। विन्स्टन को इतनी भी हिम्मत नही पड रही थी कि वह उसकी तरफ लेशमात्र भी मुडकर देख सके। परन्तु कभी-कभी उसे थोडा-सा जूलिया का तडपना हुआ चेहरा दिखलाई पड जाता था। उस आतक की अवस्था मे भी वह जूलिया का तडपना अनुभव कर रहा था। वह यही चाह रहा था कि दर्द तो है ही, लेकिन हे भगवान, जूलिया की सास वापस लौट आए। वह जान रहा था कि प्रहार कितना भयानक हो रहा होगा। परन्तु फिर भी सास का आना ज़रूरी था। इसके बाद दो आदमियो ने जूलिया को बोरी की तरह उठा लिया और बाहर लेकर चले गए। विन्स्टन को जूलिया के चेहरे की झलक मिल गई। जूलिया का चेहरा नीचे झूल गया था, पीला था और उसकी आखे मुद गई थी। उसके दोनो गालो पर लगी लाली अब भी मिटी नही थी। यही जूलिया के अन्तिम दर्शन थे।

वह मुर्दे की तरह चुपचाप खडा था। किसी ने उसे अभी तक मारा नही था। उसके दिमाग मे तरह-तरह के विचार आ रहे थे परन्तु उसमे उसकी कोई दिलचस्पी नही थी। वह सोच रहा था—पता नही, इन लोगो ने क्या मि० चार्रिंगटन को भी पकड लिया है। वह सोच रहा था, उस हाते वाली औरत का क्या

हुआ। इसी बीच उसे बडे जोरो का पेशाब लग आया। उसे आश्चर्य हुआ क्योकि वह दो-तीन घटे पूर्व ही पेशाब कर चुका था। घडी मे रात के नौ बज रहे थे। फिर भी बाहर प्रकाश था। क्या नौ बजे अगस्त मे अधेरा नही हो जाता ? क्या जूलिया ने गलत वक्त देखा था ? क्या वे लोग रात भर मोते तो नही रह गए और कही सुबह तो नही हो गई। शाम के बजाय कही सुबह के साढे आठ बजे तो उनकी आख नही खुली थी। लेकिन उसने आगे नही सोचा। कोई दिलचस्प बात नही थी यह।

तभी सीढियो पर हलके कदम से किसी के चढने की आवाज आई। मि० चार्रिगटन ने कमरे मे प्रवेश किया। काली वर्दीधारी आदमियो का धृष्ट व्यवहार कुछ कम हो गया। मि० चार्रिगटन की शकल भी बदल गई थी। उनकी आखे पेपरवेट के टुकडो पर पडी।

'इन टुकडो को उठाओ।' उन्होने तेजी से कहा।

तुरन्त ही एक सिपाही ने झुककर उनकी आज्ञा का पालन किया। उनकी बात का विशेष लहजा भी बदल गया था। विन्स्टन को खयाल आया, यही आवाज उसने कुछ सेकेंड पहले टेलीस्क्रीन पर सुनी थी। मि० चार्रिगटन अभी भी अपनी मखमली जाकेट पहने थे। परन्तु उनके केश जो पहले सफेद थे, अब बिलकुल काले हो गए थे। अब वह चश्मा भी नही था। उन्होने विन्स्टन पर एक तीखी नजर डाली जैसे उसे पहचान रहा रहे हो, इसके बाद फिर कोई ध्यान नही दिया। चार्रिगटन पहचाना तो जा सकता था लेकिन वह अब पहले जैसे नही थे। उनकी कमर सीधी हो गई थी। ऐसा लगता था कि लम्बाई बढ गई है। उनके चेहरे मे भी थोडा-सा परिवर्तन हो गया था। परन्तु थोडे-से परिवर्तन ने ही बहुत बडा परिवर्तन कर दिया था। भौहो के बाल अब भी कम थे लेकिन झुरियां बिलकुल गायब थी। चेहरा बदला-सा लगता था। नाक भी छोटी लगने लगी थी। अब पैंतीस वर्ष के व्यक्ति का कठोर चेहरा सामने था। विन्स्टन को खयाल आया कि जीवन मे पहली बार वह विचार-पुलिस के आदमी को अपनी जानकारी मे सामने खडा देख रहा है।

पता नही वह कहा था। सभवत वह प्रेम मत्रालय मे था, परन्तु स्थान निर्धारण का कोई साधन नही था।

वह जिस कोठरी मे बन्द था, उसकी छत काफी ऊची थी। खिडकी एक भी नही थी। बल्ब छिपे थे, केवल उनकी रोशनी ही कमरे मे थी। हुऽ हुऽऽ हुऽऽऽ की आवाज़ आ रही थी। ऐसा लगता था कि इसका सबध हवा की सप्लाई मे था। दीवार के सहारे बेंच-सी बनी थी, जिस पर बैठा जा सकता था। वह दरवाज़े के पास जाकर खत्म हो जाती थी। दूसरी तरफ के दरवाज़े के पास पाखाने के लिए तसला था जिस पर लकडी का घेरा नही था। हर दीवार मे एक-एक यानी चार टेलीस्क्रीन थे।

उसके पेट मे हलका-हलका दर्द हो रहा था। यह दर्द तब से ही था जब उसे बडल बनाकर चारो तरफ से बद मोटर मे पटककर कही ले जाया गया था। परन्तु उसे भूख भी लगी थी। शायद उसे अतिम बार भोजन किए चौबीस घटे गुज़र चुके थे या शायद छत्तीस घटे हो गए हो। उसे यह कभी पता नही लग सकेगा कि उसे शाम को पकडा गया था या सुबह को। परन्तु जब से उसे गिरफ्तार किया गया था उसे कुछ खाने को नही दिया गया था।

वह अपने भर चुपचाप घुटने पर हाथ पर हाथ रखे बेंचपर बैठा था। उसे चुपचाप बैठना आ गया था। ज़रा-सी भी हरकत करने पर टेलीस्क्रीन से पहरेदार चिल्लाना शुरू कर देते थे। परन्तु उसकी भूख बढती जा रही थी। उसे रोटी के टुकडे की ज़रूरत थी। उसे खयाल आया कि उसकी जेब मे कुछ रोटी के टुकडे पडे है क्योकि उसकी पतलून की जेब मे रखी कोई चीज़ उसकी टागो से लड रही थी। आखिरकार उसने भय छोडकर रोटी के टुकडे के लिए जेब मे हाथ डाल दिया।

'स्मिथ', तुरन्त ही टेलीस्क्रीन मे आवाज़ आई, '६०७६ स्मिथ डब्लू। कोठरी

मे जेब मे हाथ डालना मना है।'

वह चुपचाप बैठ गया। यहा लाने से पहले उसे कुछ समय के लिए हवालात मे भी रखा गया था। उसे याद नही था कि उसे वहा कितनी देर रखा गया था। सभवत कुछ घटे, बिना घडी के समय का अन्दाज करना बडा कठिन था। दिन की रोशनी तक नही आने पाती थी। कोठरी मे काफी शोर था और अजब-सी बदबू आ रही थी। पहले ही जैसी कोठरी मे अब भी उसे रखा गया था। परन्तु वह कोठरी बडी गन्दी थी और उसमे बराबर दस या पन्द्रह आदमी रहते थे। अधिकाश साधारण अपराधी थे, परन्तु कुछ राजनीतिक बन्दी भी थे। वह चुप हो दीवार का सहारा लेकर बेच पर बैठ गया। उसके पास सटकर और भी गन्दे लोग बैठे थे। वह बडा भयभीत था। उसके पेट मे दर्द था ही। उसे अपने आस-पास के वातावरण मे कोई विशेष रुचि नही थी। परन्तु पार्टी-सदस्यो तथा अन्य साधारण बन्दियो के व्यवहार मे बडी भिन्नता थी। पार्टी के बदी, बडे डरे-से थे परन्तु साधारण अपराधी किसी की कोई परवाह नही करते थे। वे अपराधी गारद के सिपाहियो को गालिया देते थे और जब उनकी चीज छीनी जाती तो वे जोरो से लड भी पडते। जमीन पर अश्लील वाक्य लिखते थे। चोरी से लाया गया खाना खाते थे। पता नही वे उसे अपने कपडो मे छिपाकर जाने किस प्रकार ले आए थे। यदि टेलीस्क्रीन से सिपाही शान्ति स्थापित करने की चेष्टा करते तो वे उन पर ही उल्टे चिल्ला पडते थे। यही नही, कुछ की तो सिपाहियो से दोस्ती जान पडती थी। वे उन्हे उनके घर के नामो से बुलाते थे। दरवाज़े के छेद से सिगरेट लेने-देने की कोशिश भी करते थे। सिपाही भी इनके साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार करते थे। मारपीट भी उतनी सख्ती से नही करते थे। इनमे से अधिकाश को बेगार कराने के लिए श्रम-शिविरो मे भेजा जाता था। शिविरो मे यदि परिचय और पहुच हो तो कोई दिक्कत नही होती थी। रिश्वत, पक्षपात, हर तरह की बेईमानी सभी कुछ चलता था। व्यभिचार और वेश्यागमन भी होता था। यही नही, आलुओ से शराब भी बनाई जाती थी। बदमाशो और हत्यारो को ऊचे पदो पर रखा जाता था। वही श्रम-शिविरो मे आभिजात्य वर्ग के अधिकारी होते थे। कठिन और गन्दे काम राजनीतिक बन्दियो को करने पडते थे।

हवालात मे हर तरह के बन्दियो का आना-जाना बराबर जारी रहता था—नशीली सामग्री चोरी से लाने वाले, चोर-डकैत, चोरबाजारिए, शराबी और

वेश्याए । कुछ शराबी तो इतने हिसक होते कि कई बन्दियो को मिलकर उन पर काबू करना पडता था। एक साठ बरस की बुढिया को, जिसके बाल सफेद हो गए थे और जिसके स्तन लटक गए थे, हाथ-पैर टागकर चार सिपाही हवालात मे अन्दर पटक गए। इस पर भी वह बराबर हाथ-पैर चला रही थी । उन्होने बुढिया के जूते खीचकर उतार लिए जिनसे वह ठोकरे मार रही थी, और वे उसे विन्स्टन पर पटक गए। विन्स्टन को लगा कि उनकी जाघ की हड्डी टूट जाएगी। औरत फिर उठ खडी हुई और उन सिपाहियो की मा को गालिया देने लगी । इसके बाद वह विन्स्टन की गोद से सरककर बेच पर बैठ गई थी ।

'मुझे माफ करना', बुढिया ने कहा, 'मै जान-बूझकर तुम्हारे ऊपर नही गिरी । उन बदमाशो ने मुझे तुम पर पटका है। उन्हे ज़रा भी तमीज नही है ।' वह ठहर गई। इसके बाद उसने छाती थपथपाकर डकार ली। 'माफ करना', बुढिया ने कहा, 'मुझे अपने आप पर काबू नही है ।'

वह आगे झुक गई और उसने बडे ज़ोरो से कै कर दी।

'अब ठीक है।' यह कहती हुई वह दीवार का सहारा लेकर बैठ गई । उसने आखे मूद रखी थी। 'कै को रोकने की कभी कोशिश नही करनी चाहिए—मै तो यही कहती हू । यदि उल्टी आ रही हो तो वह अवश्य कर देनी चाहिए ।'

उसने आखे खोल ली। एक बार मुडकर देखा और फिर विन्स्टन मे खास तौर पर दिलचस्पी लेने लगी । उसने अपना लम्बा हाथ विन्स्टन के कधे पर रख दिया और उसे अपनी ओर खीचने लगी। उसके मुह से बियर की दुर्गन्ध आ रही थी और वह विन्स्टन की नाक मे घुसी जा रही थी ।

'तुम्हारा क्या नाम है ?' उसने प्यार मे पूछा ।

'स्मिथ ।' विन्स्टन ने उत्तर दिया ।

'स्मिथ ?' वृद्धा ने ज़रा विस्मयपूर्वक कहा, 'अजब बात है । मेरा नाम भी स्मिथ है । क्यो,' इसके बाद वृद्धा ने भावुकतापूर्ण कण्ठ मे कहा, 'सभव है, मै तुम्हारी मा हू ।'

विन्स्टन ने भी सोचा, शायद वह वृद्धा उसकी मा ही हो । उसकी मा की आयु भी इतनी ही होती और वह भी ,इतनी ही बुड्ढी दिखलाई पडती । लोग श्रम-शिविरो मे बेगार लिए जाने की वजह से बदल भी तो जाते है । और मा से बिछुडे तो उसे बीस वर्ष हो गए ।

अन्य किसी ने उससे बात तक नही की । यह आश्चर्य की बात थी कि साधारण अपराधी भी पार्टी-बन्दियो की ओर कोई ध्यान नही देते थे । वे उन्हे 'राजबन्दी' कहते थे और बिना दिलचस्पी दिखलाए उनकी अवहेलना कर देते थे । पार्टी के बदी स्वय किसी से बात करने तक मे घबडाते थे । केवल एक बार, जब दो स्त्रिया पार्टी-बन्दियो के रूप मे आई और एक दूसरे से सटकर बेच पर बैठ गई तो उस शोर मे विन्स्टन को यह फुसफुसाहट सुनाई दी, 'कमरा नम्बर एक सौ एक' इसका मतलब उसकी समझ मे नही आया ।

सभवत पुलिस उसे यहा दो-तीन घटे पहले लाई थी । पेट का दर्द बिलकुल बन्द कभी नही हुआ । हा, कभी वह बढ जाता और कभी घट जाता था । जब दर्द बढ जाता तो वह केवल पेट के दर्द की बात और खाने की ही सोचता और जब वह घट जाता तो आतकग्रस्त हो जाता । ऐसे भी क्षण आते जब वह स्पष्ट रूप से यह कल्पना कर लेता कि उसके साथ क्या व्यवहार किया जाएगा । यह कल्पनात्मक अनुभूति इतनी तीव्र होती कि उसका हृदय तेजी से धडकने लगता और उसकी सास रुक-सी जाती । उसे लगता कि हण्टरो से उसकी कोहनी पर प्रहार किया जा रहा है और नालदार जूतो की आवाज पीछे से आ रही है । उसे खयाल आया कि वह जमीन पर पडा तडप रहा है । उसके दात टूट गए है और वह दया की भिक्षा माग रहा है । ऐसे मे उसे जूलिया का खयाल तक नही आ रहा था । वह उसके बारे मे सोच ही नही पा रहा था । वह उसे प्यार करता था और उसके साथ धोखा नही कर सकता था । लेकिन यह एक ऐसा तथ्य था, जिसकी जानकारी उसे गणित के नियमो की भाति ही थी । उसके हृदय मे जूलिया के लिए प्रेम का कोई भाव नही आ रहा था । जूलिया कैसे होगी, इसके बारे मे उसे खयाल तक नही आ रहा था । वह अकसर ओ'ब्रायन के सबध मे सोचता था । उसे कभी आशा बधती और कभी उसकी वह आशा टूट जाती । ओ'ब्रायन को यह तो पता लग ही गया होगा कि वह पकड लिया गया है । उसने कह दिया था कि ब्रदरहुड अपने सदस्यो को बचाने की कभी कोई कोशिश नही करता लेकिन वे रेजर ब्लेड तो भेज सकते है । कोठरी मे आने मे सिपाहियो को पाच सेकेड तो लग ही जाएगे । ब्लेड उसे जलती हुई शीतलता से काट देगा और जो उगलिया ब्लेड को पकडे होगी वे भी हड्डी तक कट जाएगी । उसकी तबियत बहुत खराब थी और जरा-सा दर्द होते ही वह कापने लगता था । उसे विश्वास नही हो रहा था कि वह मिल जाने

पर भी ब्लेड का इस्तेमाल करेगा। जरा-सी तकलीफ होते ही वह कापने लगता था। एक-एक क्षण जीना भी अधिक स्वाभाविक था, विशेषकर उस समय जब यह पता हो कि जीवन के अन्त होने के पूर्व घोर यन्त्रणा ही मिलेगी।

कभी वह दीवारो की ईटे गिनता परन्तु वह पूरी गिनती करने के पहले ही भूल मे पड जाता। वह बार-बार आश्चर्य करता कि आखिर वह है कहा ! और वक्त क्या है । कभी वह सोचता कि बाहर अवश्य ही दिन होगा और फिर दूसरे क्षण ही वह अनुमान करता कि बाहर बिलकुल अधेरी रात है। यहा, वह जानता था, इस कोठरी मे बत्तिया कभी नही बुझाई जाएगी। यह ऐसी जगह थी जहा कभी अधेरा नही होता था। अब उसकी समझ मे आ गया था कि ओ'ब्रायन ने प्रसग को किस प्रकार बिना बताए ही समझ लिया था। प्रेम मत्रालय मे कही कोई खिडकी नही थी। उसकी कोई भी कोठरी इमारत के बीचोबीच भी हो सकती है या बाहरी दीवार की तरफ भी हो सकती है। हो सकता था वह नीचे हो, और यह भी सभव था कि वह जमीन के नीचे दसवे तल पर हो या तीस मजिल ऊपर हो। वह अपने दिमाग को जगह-जगह दौडा रहा था। वह निश्चय करना चाहता था कि वह ज़मीदोज़ कर दिया गया है या हवा मे लटका है।

बाहर से बूटो की आवाज़ आई। लोहे का दरवाज़ा आवाज़ करता हुआ खुल गया। एक तरुण अफसर फुरती से अदर आ गया। उसकी काली वर्दी पर पीतल के बटन और चमडे की पट्टिया चमक रही थी। उसका चेहरा मोम जैसा नकली लगता था। कुछ-कुछ पीला-सा। अन्दर आकर उसने कैदी को अन्दर लाने का इशारा किया। कवि एम्पिलफोर्थ लडखडाता हुआ अदर आया। दरवाजा फिर आवाज करता हुआ बद हो गया। एम्पिलफोर्थ पहले तो दूसरे दरवाजे मे और आगे जाने की कोशिश करने लगा फिर इधर-उधर टहलने लगा। अभी तक उसने विन्स्टन को देखा नही था। विन्स्टन के सिर से ऊपर वह दीवार की ओर देख रहा था। वह जूते भी नही पहने था। मोजो से उसके अगूठे बाहर निकले थे। मोजे फटे थे। दाढी बनाए उसे कई दिन हो गए थे। दाढी के बाल उसके गालो की उभरी हुई हड्डियो पर आ गए थे। ऐसा लगता था कि वह कोई गुण्डा है। परन्तु उसके कमज़ोर शरीर को देखते हुए और उसकी भयत्रस्तता को देखते हुए उसे गुण्डा कहना जमता नही था।

विन्स्टन ने आलस छोड दिया। वह स्वय एम्पिलफोर्थ से बोलेगा। और इस

प्रकार टेलीस्क्रीन से डाट खाने का खतरा उठाएगा। हो सकता है कि एम्पिलफोर्थ के पास ब्लेड हो।

'एम्पिलफोर्थ।' उसने कहा।

टेलीस्क्रीन से कोई चिल्लाया नही। एम्पिलफोर्थ रुका। कुछ चौका। धीरे-धीरे उसकी निगाह विन्स्टन पर रुकी।

'एह, स्मिथ', उसने कहा, 'तुम भी यहा हो ?'

"तुम यहा कैसे लाए गए ?'

'सच यह है कि'—वह सामने की बेच पर विन्स्टन की ओर मुह करके बैठ गया। 'एक ही अपराध होता है—है न ?'

'क्या तुमने वह अपराध किया है ?'

'हा, लगता तो है।'

उसने अपनी कनपटियो पर हाथ रख लिया और कुछ सोचने लगा। ऐसा लगता था, वह कुछ याद कर रहा था।

'ये बातें हो जाती हैं,' उसने निरुद्देश्य कहना शुरू किया, 'हो ही जाती है। मुझे एक उदाहरण याद आ रहा है। मेरी बेवकूफी थी, इसमे कोई शक नही। हम किपलिंग की कविताओ का सग्रह छाप रहे हैं। मैंने एक कविता के अत मे गॉड (God) शब्द रहने दिया। परन्तु मै मजबूर था।' वह क्षोभ से चिल्ला पडा और विन्स्टन को अपना सिर ऊचा उठाना पडा। 'मुझे रॉड(Rod) से तुक मिलानी थी। इसके लिए भाषा मे केवल बारह ही शब्द हैं। मैंने बडी कोशिश की और सिर मारा। कोई और तुक मिली ही नही।' उसके चेहरे का भाव बदल गया। क्रोध का भाव धीरे-धीरे उसके चेहरे से गायब हो गया। क्षण भर के लिए वह प्रसन्न-सा दिखाई पडा। उसके चेहरे पर ऐसा भाव आया जिससे लगा कि उसने कोई बेकार का तथ्य खोज लिया है। उसका चेहरा एक अध्यापक के चेहरे की भाति चमक रहा था। बाल और मुह धूलि-धूसरित होते हुए भी भाव स्पष्ट था।

उसने कहा, 'तुम्हारे दिमाग मे कभी यह खयाल आया है कि अग्रेजी काव्य के इतिहास के रूप को स्थिर करने मे इस बात का बडा हाथ रहा है कि इस भाषा मे तुको की बडी कमी है।'

यह बात विन्स्टन के दिमाग मे पहले कभी नही आई थी। वर्तमान परिस्थिति में उसे यह खयाल कोई बहुत दिलचस्प भी नही लगा।

'बता सकोगे, इस समय कितने बजे होगे ?' उसने पूछा। एम्पिलफोर्थ फिर चौक गया। 'ओह, इस बारे मे तो मैंने सोचा ही नही। दो या शायद तीन दिन पहले पुलिस ने मुझे गिरफ्तार किया था।' इसके बाद उसने दीवार मे चारो तरफ नजर डाली। वह खिडकी तलाश कर रहा था। 'इस जगह दिन या रात होने से कोई अन्तर नही पडता। पता नही यहा वक्त कैसे जाना जा सकता है।'

कुछ समय वे इधर-उधर की बाते करते रहे। इसके बाद अकस्मात् टेली-स्क्रीन से किसी ने चिल्लाकर उनसे चुप हो जाने के लिए कहा। विन्स्टन हाथ पर हाथ रखकर चुप बैठ गया। एम्पिलफोर्थ बेंच पर आराम से बैठ ही नही सकता। इसलिए वह कभी एक तरफ से सहारा लेकर तो कभी दूसरी तरफ से सहारा लेकर बैठ जाता था। फिर वह अन्तिम कोने पर जाकर बैठ गया। टेलीस्क्रीन से फिर आज्ञा दी गई कि वह चुपचाप बैठ जाए। समय बीतता गया। बीस मिनट बीते या एक घण्टा—यह तय करना कठिन था। एक बार फिर बाहर से जूतो की आवाज आई। विन्स्टन के रोए खडे हो गए। जल्दी, बहुत जल्दी शायद पाच मिनट बाद ही उसे पता लग जाएगा कि उसकी भी बारी आ गई है।

दरवाजा खुला। कठोर चेहरे वाले अफसर ने प्रवेश किया। एक छोटे-से सकेत से उसने एम्पिलफोर्थ से कहा, 'कमरा नम्बर १०१'

एम्पिलफोर्थ सिपाहियो के बीच धीरे-धीरे चलने लगा। वह कुछ परेशान जरूर था। परन्तु उसकी समझ मे ज्यादा कुछ नही आ रहा था।

विन्स्टन को प्रतीत हो रहा था, बहुत समय गुजर गया है। उसके पेट मे फिर दर्द हो रहा था। उसका दिमाग एक ही जगह चक्कर काट रहा था। ऐसा लगता था कि गेंद बार-बार एक ही जगह गिर रही थी। उसके दिमाग मे कुल छ विचार थे। पेट मे दर्द, रोटी का टुकडा, खून और चीखे, ओ ब्रायन, जूलिया और रेजर ब्लेड। उसके रोए फिर खडे हो गए। बाहर से जूतो की आवाज़ फिर आई। दरवाजा खुलते ही ठडे पसीने की बदबू से कोठरी भर गई। पारसन्स अन्दर आ गया। वह खाकी पेंट और खाकी कमीज पहने था।

इस बार विन्स्टन अपने ही विचारो मे खोया हुआ था। 'तुम यहा!' उसने कहा। पारसन्स ने विन्स्टन की ओर देखा। इस निगाह में न तो कोई दिलचस्पी थी और न आश्चर्य ही। केवल दुःख और पीडा ही थी। वह इधर-उधर टहलने लगा। उससे चुपचाप नही बैठा जा रहा था। हर बार जब भी वह घुटने सीधे

करता, वे कापते हुए लगते। उसकी आखे पूरी तरह खुली थी। वह एक दिशा मे ही घूरता जा रहा था। वह कही दूर देख रहा था। उसका ध्यान बीच की तरफ जाता ही नही था।

'तुम्हे क्यो पकडा गया ?' विन्स्टन ने पूछा।

'विचार-अपराध।' पारसन्स ने कहा। उसके कंठ मे अपने अपराध के लिए पूर्ण स्वीकारोक्ति का भाव था। एक प्रकार की त्रस्तता भी थी कि उससे यह अपराध बन पडा है। कुछ देर उसने विन्स्टन की ओर देखा और फिर उत्सुकना-पूर्वक कहने लगा, 'वे मुझे गोली तो नही मारेंगे न, तुम्हारा क्या खयाल है? वे शायद गोली तब तक नही मारते जब तक कोई यथार्थत राजद्रोह का काम न किया हो। विचारो को दिमाग मे आने से कोई नही रोक सकता। मै यह तो जानता हू कि वे सबकी बात पूरी तरह सुनते है। ओह, मै तो इसी के आसरे हू। वे मेरे बारे मे अन्य बाते तो रिकर्ड से जान लेगे। नही क्या ? तुम तो जानते ही हो मै कैसा आदमी था। अपनी स्थिति मे कोई खराब नही था। मुझमे अकल तो कोई ज्यादा नही थी लेकिन काम करने का उत्साह था। मैने पार्टी की अधिक से अधिक सेवा करने की कोशिश की है। नही क्या ? शायद पाच साल की कैद की सजा मुझे मिल जाए और मै छूट जाऊ। तुम्हारा क्या खयाल है ? या शायद, दस वर्ष के लिए जेल भेजा जाऊ। मुझ जैसा आदमी तो श्रम-शिविर मे भी काफी लाभ-दायी सिद्ध होगा। एक बार की गलती के लिए वे मुझे गोली तो नही मार ेगे ?'

'क्या तुम दोषी हो ?' विन्स्टन ने पूछा।

'बेशक। मै मुजरिम हू।' टेलीस्क्रीन की ओर दासभाव से देखते हुए पारसन्स ने कहा। 'पार्टी कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को तो पकडती ही नही। क्यो ?' उसका मेढक-सा चेहरा अब शान्त हो गया था। कुछ पवित्रता का-सा भाव भी उसके मुह पर आ गया था। 'विचार अपराध बडी भयानक चीज है। वह आपके न जानते हुए दिमाग में घुस सकता है। जानते हो, मै इसके चक्कर मे कैसे आया? सोते मे। बिलकुल सत्य है। मै अपने काम मे लगा था और मुझे पता भी नही कि अपराधपूर्ण विचार कब मेरे दिमाग मे घर कर गए। इसके बाद मैने सोते में बडबडाना शुरू कर दिया। मालूम है लोगो ने मुझे क्या कहते सुना ?'

वह इस प्रकार निढाल हो गया जैसे डाक्टरी कारणो से कुछ अश्लील बात कहने को बाध्य हो गया हो।

'बडे भाई का नाश हो ।—हा ! यही मैंने कहा । लगता है कि मैंने यह बात कई बार कही । मै खुश हूँ कि यह बात अन्य लोगो तक पहुचने के पूर्व ही मुझे पकड लिया गया । जानते हो, मै उनके सामने क्या कहूगा ? मै कहूगा—धन्यवाद, मै आपको धन्यवाद देता हू । आपने मुझे आगे अपराध करने मे बचा लिया ।'

'तुम्हे पकडवाया किसने ?'

'मेरी छोटी लडकी ने ।' पारसन्स ने ज़रा गर्वपूर्वक कहा, 'उसने मुझे चाबी वाले छेद से बडबडाते हुए सुन लिया । सुनने के बाद दूसरे दिन ही उसने पुलिस के गश्ती दस्ते को इसकी सूचना दे दी । सात साल की बच्ची के लिए यह कोई छोटी बात नही है । मुझे कोई शिकायत नही है । सच तो यह है कि मुझे अपनी लडकी पर बडा अभिमान है । इससे प्रकट होता है कि मैंने उसका लालन-पालन ठीक किया ।' वह फिर कुछ देर एक कोने से दूसरे कोने तक कापता हुआ टहलता रहा । उसने कई बार शौच के पात्र को देखा । इसके बाद उसने हाफपैंट उतार दिया ।

'भई, माफ करना,' उसने कहा, 'मै अब और अधिक न रोक सकूगा । मुझे बडी जोर से हाजत हो रही है ।'

वह कमॉड पर बैठ गया । विन्स्टन ने अपना मुह हाथो मे छिपा लिया ।

'स्मिथ,' तुरन्त ही टेलीस्क्रीन मे आवाज आई, '६०७९ स्मिथ डब्लू ! अपने मुह पर से हाथ हटाओ ! ! मुह को इस तरह छिपाना मना है ! ' विन्स्टन ने अपने हाथो को हटा लिया । पारसन्स के जाने के बाद पता लगा कि पानी नही आता जिससे कमॉड की सफाई होती है । फलत घण्टो बदबू आती रही । पारसन्स हटा दिया गया । उसने जी भरकर अपना पेट साफ किया था । और भी अपराधी इसी रहस्यमय तरीके से आए और चले गए । एक औरत को जब बतलाया गया कि उसे १०१ नम्बर के कमरे मे ले जाया जाएगा तो वह बुरी तरह काप गई और उसके चेहरे का रग एकदम बदल गया । समय बीत रहा था । यदि वह सुबह लाया गया होगा तो दोपहर हुई होगी और यदि तीसरे पहर लाया गया होगा तो आधी रात होगी । कोठरी मे छ बन्दी थे—स्त्री और पुरुष सब मिलाकर । सब चुप बैठे थे । विन्स्टन के ठीक सामने एक ऐसा आदमी बैठा था, जिसके ठोडी थी ही नही । उसके दात दिखाई पडते थे और वह मासूम चूहे या बन्दर-सा लगता था । उसके गाल इतने फूले हुए थे कि विश्वास नही होता था कि उनमे खाने की कोई चीज

नही भरी है। वह अपनी छोटी-छोटी आखो से बारी-बारी से हर एक को देख रहा था। यदि किसी की आख उससे मिल जाती थी तो वह अपना मुह तुरन्त फेर लेता था।

दरवाजा खुला। एक और बदी लाया गया। उसे देखते ही एक बार तो विन्स्टन का खून बर्फ की तरह जम गया। वह बहुत ही साधारण व्यक्ति था। इजीनियर या कोई टेकनीशियन-सा लगता था। शकल से बहुत छोटा आदमी मालूम होता था। लेकिन उसका चेहरा देखने लायक था। बिलकुल मुर्दों जैसी खोपडी लगता था। मुह इतना पतला था कि ओठ तथा आखे अनुपात से बडी दिखलाई पडती थी। आखो से हत्यारापन प्रकट होता था और यह भी लगता था कि उसके हृदय मे ऐसी घृणा बस गई जो कभी खत्म नही हो सकती है।

वह विन्स्टन से कुछ हटकर बेच पर बैठ गया। विन्स्टन ने उसकी तरफ दुबारा नही देखा। परन्तु उस आदमी का चेहरा विन्स्टन के दिमाग से एकदम कभी नही निकल पाया। उसे ऐसा लग रहा था कि वह उसकी आखो मे आखे डालकर देख रहा है। अकस्मात् उसने अनुमान किया कि मामला क्या है। उस आदमी की भूख से जान निकली जा रही थी। यही विचार सब बदियो के मन मे उत्पन्न हुआ। सब लोग अपनी-अपनी जगह से हिल गए। बिना ठोडी के आदमी ने मुर्दे की खोपडी जैसे आदमी को भी देखा। इसके बाद उसने अपना मुह फेर लिया। वह अपनी जगह पर ही बार-बार आसन बदलने लगा। आखिरकार विन्स्टन उठकर खडा हो गया। टहलते हुए जाकर उसने अपनी जेब से रोटी का एक टुकडा निकालकर उस मुर्दे की शकल वाले आदमी को दिखलाया।

टेलीस्क्रीन से भयानक शोर हुआ। गोल मुह वाला आदमी एकदम घूम गया। और उसने विन्स्टन के हाथ से रोटी छीन ली। जिस आदमी को डबलरोटी दिखलाई गई थी उसने अपना हाथ पीछे कर लिया। इस तरह जैसे उसने रोटी लेने से इन्कार कर दिया हो।

'बमस्टीड', टेलीस्क्रीन वाली आवाज ने कहा, '२७७३, बमस्टीड जे। वह रोटी का टुकडा छोड दो!!'

गोल मुह वाले आदमी ने रोटी का टुकडा गिरा दिया।

'जहा हो, वही खडे रहो!' आवाज़ ने कहा, 'दरवाज़े की ओर मुह कर लो! ज़रा भी मत हिलो!'

बिना ठोडी वाले आदमी ने आज्ञा का अक्षरश पालन किया। अब उसके गाल काप रहे थे और वह अपने को नियत्रित नही रख पा रहा था। दरवाजा आवाज़ करता हुआ खुल गया। अफसर के साथ कुछ सशस्त्र सिपाही भी कोठरी मे घुस आए। घुसते ही अफसर ने पूरी ताकत से एक घूसा बमस्टीड के मुह पर मारा। घूसे के प्रहार से वह बिलकुल जमीन पर गिर गया। और उसका शरीर धक्के से पाखाने के बरतन से जा लडा। वह कुछ क्षण के लिए मूच्छित हो गया और जहा का तहा पडा रहा। उसके मुह और नाक से खून की धारा बह निकली थी। गले से केवल गरगराहट ही आ रही थी शायद वह आवाज भी बेहोशी मे ही निकल रही थी। उसके बाद वह घुटनो के बल उठकर बैठने लगा। खून और लार के साथ उसके सारे दात बाहर आ गए।

सब बदी चुपचाप बैठे थे। वे हाथो पर हाथ रखे थे। मोटा आदमी अपनी जगह पर आकर बैठ गया। उसका मुह काले फल की तरह सूज गया था और वह पहचाना भी नही जा रहा था। एक तरफ का निकला हुआ मास काला पडा जा रहा था। मुह के नाम पर चेहरे मे केवल एक छेद रह गया था। कभी-कभी उसके कपडो पर एकाध बूद खून गिर जाता था। उसकी भूरी आखे अब भी हर आदमी के चेहरे पर दौड रही थी। शायद वह जानना चाहता था कि अन्य लोग इस अपमान के बाद उससे कितनी घृणा करने लगे है।

दरवाज़ा फिर खुला। मुर्दे जैसी खोपडी वाली शकल के आदमी की ओर इशारा करते हुए अफसर ने कहा, 'कमरा न० १०१।'

विन्स्टन ने चीख की आवाज़ सुनी। वह आदमी कूदकर फर्श पर आ गया था और घुटनो के बल बैठ गया था। उसने दोनो हाथो की मुट्ठिया बद कर रखी थी।

'कामरेड, अफसर,' उसने चिल्लाकर कहा, 'मुझे वहा मत ले चलो। मैने क्या सब कुछ आपको बता नही दिया, अब और क्या आप जानना चाहते है? ऐसी कोई बात नही है, जिसे मानने के लिए मै तैयार नही। मुझे बताओ, क्या बात कहनी है मै कह दूगा, या लिख लो—मै दस्तखत कर दूगा—कुछ भी लिख लो। पर १०१ नम्बर मे मत ले चलो।'

'कमरा नम्बर १०१।' अफसर ने फिर दोहराया।

उस आदमी का चेहरा पहले ही पीला पडा था और अब तो वह इतना विकृत हो गया था कि विन्स्टन को विश्वास नही हो रहा था कि किसी आदमी का चेहरा

इतना भी बिगड़ सकता है। निश्चित रूप से अब उसके चेहरे का रग हलका हरा हो गया था।

वह फिर चीखा, 'और चाहे जो करो। तुम मुझे हफ्तो से भूखा मार रहे हो। मुझे मर जाने दो। मुझे गोली मार दो। फासी पर लटका दो। मुझे २५ साल के लिए जेल भेज दो। क्या तुम चाहते हो कि मै किसी और आदमी का नाम ले दू। तुम वह नाम बतलाओ मै उसका नाम भी ले दूगा। मेरी पत्नी है। तीन बच्चे है। उनमे सबसे बडा छ साल का है। आप सबके गले मेरे सामने काट डालिए। मै खडा-खडा देखता रहूगा। कुछ न बोलूगा। लेकिन १०१ नम्बर के कमरे मे मत ले चलिए।'

'कमरा न० १०१।' अफसर ने फिर दोहराया।

उस आदमी ने और लोगो की तरफ देखा। जैसे वह चाहता हो कि उसकी जगह अन्य कोई बदी ले जाया जाए। उसकी आखें गोल चेहरे वाला बिना ठोडी वाले आदमी पर ठहर गई। उसने अपना दुर्बल हाथ उठाकर उसकी तरफ इशारा किया।

'यह है वह आदमी! जिसे आपको ले जाना चाहिए, मुझे नही।' उसने चीख-कर कहा, 'आपने नही सुना कि मुह पर घूसा लगने के बाद यह क्या कह रहा था। मुझे मौका दीजिए, मै सब कुछ बता दूगा कि क्या कह रहा था। यही पार्टी के विरुद्ध है, मै नही।' सिपाही आगे आ गए। आदमी का चीखना और भी तेज़ हो गया। 'उसकी बात नही सुनो क्योकि टेलीस्क्रीन मे कुछ गडबड थी। आप इस आदमी को ले जाइए। इसे ले जाइए मुझे नही।'

दो मजबूत सिपाही उसे बगल से पकडकर उठा लेने के लिए झुक गए। लेकिन तभी वह फर्श पर धडाम से गिरकर लेट गया। उसने बेंच के लोहे का एक पाया पकड लिया। वह पशुओ की तरह चिल्ला रहा था। एक भी शब्द उसके मुह से नही निकल रहा था। सिपाहियो ने उसे घसीटा, लेकिन वह जितनी ताकत से उस लोहे की सलाख को पकडे था उसे देखकर आश्चर्य हो रहा था। खीचतान कोई बीस सेकेंड चली होगी। सारे बदी चुपचाप हाथ पर हाथ रखे देखते रहे। वे अपनी निगाह सामने गडाए थे। उस आदमी के मुह से आवाज़ निकलना भी बन्द हो गया था। अब वह केवल लोहे का पाया ही पकडे था। और तब इसके बाद दूसरी तरह की दर्दभरी चीख उसके गले से निकली। एक

सिपाही ने बूट से उसके हाथ मे इतने जोरो से ठोकर मारी कि एक हाथ की उंगलियो की हड्डिया टूट गई थी। अब उन्होंने उसके पैर पकडकर उसे घसीट लिया।

'कमरा न० १०१।' अफसर ने कहा।

वह आदमी लडखडाता हुआ सिपाहियो के सहारे बाहर चला गया। उसका सिर एक तरफ झुक गया था। वह अपने कुचले हाथ को सहला रहा था। उसका प्रतिरोध समाप्त हो गया था।

बहुत समय गुजर गया। यदि उस आदमी को सिपाही आधी रात को ले गए थे तो सुबह हो गई थी और सुबह ले गए थे तो दोपहर बाद का समय हो गया था। विन्स्टन अकेला था और घटो अकेला रहा था। पतली बेच पर बैठे-बैठे जब कमर दुख जाती थी तो वह खडा हो जाता था। इधर-उधर टहल भी लेता था। टेलीस्क्रीन इस पर कोई आपत्ति नही करता था। रोटी का टुकडा अब वही पडा था। जहा उसे बिना ठोडी वाले गोल मुह के मोटे आदमी ने गिराया था। पहले तो उसकी तरफ देखना ही कठिन था। लेकिन अब उसे भूख की जगह प्यास लग आई थी। उसका मुह सूख गया था और स्वाद बिगड गया था। हूऽ हूंऽऽ की आवाज और सफेद रोशनी मे अब उसकी सोचने ताकत भी जाती रही थी। कुछ बेहोशी-सी आ रही थी। वह तभी उठता था जब हड्डिया बुरी तरह दुखने लगती थी। अब उससे दर्द भी सहा नही जाता था। वह बैठता तब था जब उसे चक्कर आने लगते थे और उसे यह विश्वास नही होता था कि वह और अधिक खडा हो सकेगा। जब भी उसके दर्द मे कमी होती उसे भय आकर दबा लेता था। कभी-कभी वह बडी आशा से ओ'ब्रायन और रेजर ब्लेड की बात भी सोच लेता था। शायद उसे कभी खाना भेजा जाए तो ब्लेड उसके हाथ आ जाए। जूलिया के बारे मे तो वह और भी कम सोच रहा था। कही न कही वह भी यत्रणा भोग रही होगी। क्या पता, वह भी पीडा से इस समय चिल्ला रही हो। उसने सोचा 'यदि मेरा दर्द दूना हो जाए और उससे जूलिया का दर्द जाता रहे तो क्या मैं यह रास्ता अपनाऊँगा ? हा।' मन ही मन उसने उत्तर दिया। परन्तु यह तो मन मे किया गया फैसला था। वह भी इसलिए कि उसे ऐसा ही फैसला करना चाहिए। यहा सिवा दर्द या दर्द की सभावना के और कोई बात सोची भी नही जा सकती थी। क्या यह सभव है कि आप स्वय पीडा से तडप रहे हो और उस वक्त

यह सोचे, चाहे उसका कुछ भी कारण क्यो न हो, आपकी पीडा बढ जाए ? परन्तु इस प्रश्न का जवाब देने की स्थिति मे वह नही था।

बूटो की आवाज फिर आई। उसका धैर्य समाप्त हो गया था। टेलीस्क्रीन की भी उसे परवाह नही रही थी।

वह चिल्ला पडा, 'आखिर आपको भी पकड ही लिया।'

'मुझे तो बहुत पहले पकड चुके है,' ओ'ब्रायन ने कोमल स्वर से कहा। इसमे खेद और व्यग का भाव मिश्रित था। ओ'ब्रायन के पीछे से चौडी छाती वाला वर्दीधारी सिपाही कोडे लिए आगे बढ आया।

'इस बात को तुम जानते थे', विन्स्टन से ओ'ब्रायन ने कहा, 'अपने आपको धोखा मत दो, यह बात तो तुम पहले ही से जानते थे। इसको तुम हमेशा ही जानते थे।'

हा, वह अनुभव कर रहा था कि वह यह बात जानता था। लेकिन अब उन बातो को याद करने का वक्त कहा था। अब तो उसका सारा ध्यान कोडे पर था। कोडा कही भी पड सकता था, सिर पर, कान पर, बाह पर या कोहनी पर। वह घुटनो पर झुक गया। ऐसा लग रहा था कि उसे पक्षाघात हो गया है। वह कोहनी के उस भाग को जहा कोडा पडा था, दूसरे हाथ से पकडे था। एकबारगी हर चीज पीले प्रकाश से चमक उठी। एक बार ही मे इतनी पीडा हो सकती है, इसकी कोई कल्पना भी नही कर सकता था। अब पीला प्रकाश साफ़ हो गया था। अन्य दो व्यक्ति उसे देख रहे थे। सिपाही उसकी विकृत मुख-मुद्रा पर हस रहे थे। कम से कम एक सवाल का जवाब उसे मिल चुका था। आप कभी भी किसी भी कारणवश अपनी शारीरिक पीडा को बढाए जाने की प्रार्थना कभी नही कर सकते। पीड़ा के समय तो उसके रुक जाने की इच्छा ही की जा सकती है। दुनिया मे शारीरिक पीडा से बुरी कोई वस्तु नही है। पीडा के समय सारी वीरता हवा हो जाती है। वह बार-बार यही सोच रहा था और फर्श पर अपनी कोहनी को पकडे बार-बार तडप रहा था।

(२)

उसे ऐसा लग रहा था कि वह स्ट्रेचर पर पडा है। अन्तर था तो केवल यह

कि जमीन से जरा अधिक ऊचा था। वह इस तरह बधा था कि हिल भी नही सकता था। उसके मुह पर साधारण से अधिक तेज प्रकाश पड रहा था। ओ'ब्रायन उसके बगल मे खडा था और बारबार ध्यान से देख रहा था। दूसरी ओर एक आदमी सफेद कोट पहने खडा था। उसके हाथ मे इन्जेक्शन की सुई थी।

आखे खुलने के बाद भी आसपास की चीजे देखने मे और समझने मे उसे कुछ समय लगा। उसे लग रहा था कि वह इस कमरे मे दूसरी दुनिया से तैरता हुआ आ गया है। वह दुनिया जहा से वह आया है पानी के नीचे है। वह कब तक इस दुनिया मे रहा उसे ज्ञात नही था। गिरफ्तारी के बाद से उसने दिन या रात के दर्शन नही किए। इसके अलावा उसकी याददाश्त भी काम नही दे रही थी। सोते समय भी जो चेतना आदमी मे रहती है, वह भी खत्म हो गई थी और शायद दुबारा शुरू हुई थी। सुप्त चेतना के लम्बे भाग की कोई याद उसे नही रह गई थी। यह बीच का समय कुछ दिनो का था या हफ्तो का या केवल सेकेडो का ही था उसे याद नही था। जानने का कोई साधन भी नही था।

कोहनी पर पहला कोडा पडने के बाद वह दुस्स्वप्न शुरू हुआ था। बाद में उसने अनुभव किया कि उसके साथ जो हुआ वह साधारण और हर बदी के साथ की जाने वाली प्राथमिक पूछताछ थी। अपराधो की एक लम्बी फेहरिस्त थी—षड्यत्र, विध्वस आदि की–जिन्हे सामान्यत हर बदी को स्वीकार ही करना पडता था। अपराधो की स्वीकारोक्ति औपचारिक होती थी। यत्रणाएं यथार्थ थी। कितनी बार वह पीटा गया, कितनी देर पीटा गया, यह सब उसे कुछ भी याद नही था। उसे मारने के लिए हमेशा पाच या छ काली वर्दीधारी सिपाही जुटते थे। कभी घूसो से, तो कभी कोडो से, तो कभी लोहे के डडे या नालदार जूतो से उसे पीटा जाता था। वह पशु की तरह फर्श पर लज्जा का परित्याग कर लोटा-लोटा फिरता था और अपने बदन को छलनो कराता था। कभी वह ठोकरे बचाने की कोशिश भी करता था। परन्तु इससे वह और मार खाता था। कभी पसली में, कभी पेट मे, कभी कोहनी और कभी गुप्त अगो पर ठोकरे मारी जाती थी। और यह क्रम कभी-कभी तब तक चलता जब तक वह बेहोश नही हो जाता था। कभी-कभी तो पिटाई आरभ होने के पहले वह दया की भीख मागने लगता था। वह घूसा देखते ही वास्तविक और कल्पित सभी अपराध स्वीकार करने लगता था। कभी यह तय कर लेता था कि वह कुछ भी स्वीकार नही करेगा परतु

वह पीडा से चिल्ला-चिलाकर बोल उठता था। कभी वह कहता कि मै अपराध तो मान लूगा लेकिन अभी नही। मै तब तक प्रतिरोध करूगा जब तक पीडा असह्य ही नही हो जाती। तीन बार और ठोकर मारने दो, दो बार और, और तब मै जो वे चाहते है वह बात कह दूगा। कभी-कभी तो उसे इतना मारा जाता था कि वह खडा भी नही हो पाता था। उसे फिर आलू के बोरे की तरह कोठरी मे पटक दिया जाता, कुछ घटो अकेला छोडकर होश मे आने दिया जाता और फिर बाहर ले जाकर पीटा जाता। कभी-कभी होश आने मे बहुत समय लग जाता था। उसे वह समय याद नही क्योकि एकान्त का समय मूर्च्छा या निद्रा मे गुजरता था। उसे अपनी कोठरी की याद थी। उसमे लकडी का तख्त था। हाथ धोने के लिए टीन का एक पात्र था और खाने के लिए गरम शोरबा और रोटी या कॉफी दी जाती थी। उसकी दाढी बनाने के लिए एक नाई भी आता था, जो बाल भी काट जाता था। काम से काम रखने वाले तथा बिना किसी प्रकार की सहानुभूति के सफेद कोट पहने लोग आते, उसकी नाडी देखते, उसकी पलके उलटकर देखते, टूटी हड्डियो के लिए जगह-जगह बदन दबाते और नीद के लिए इन्जेक्शन दे जाते थे।

अब उसका पीटा जाना कम हो गया था। पीटने की धमकिया ही दी जाती थी। यदि किसी सवाल के जवाब को असन्तोषजनक समझा जाता तो कहा जाता कि क्या फिर पिटवाया जाए? वह इस धमकी से भी बहुत भय खाता था। अब उससे काली वर्दीधारी गुण्डे सवाल नही करते थे, बल्कि पार्टी के बुद्धिवादी करते थे। ये ठिगने, स्थूल और गोल-मटोल होते थे। उनके हाव-भावो मे बडी फुरती होती थी और उनके चश्मे बहुत चमकते थे। प्रश्नो की झडी जब एक बार शुरू होती तो वह दस-बारह घंटे चलती रहती थी। ये प्रश्नकर्ता उसे बराबर कुछ न कुछ कष्ट देते रहते थे। परन्तु वे पीडा पर ही पूर्णत निर्भर नही करते थे। कभी वे उसके मुह पर थप्पड जड देते थे। कभी कानो को मल देते थे। पेशाब नही करने देते थे। मुह पर इतनी तेज रोशनी डालते थे कि आखो से पानी बह निकलता था। उनका उद्देश्य उसका इतना अपमान करना था कि उसकी तर्क और विवेक शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाए। परन्तु उनका मुख्य शस्त्र था, प्रश्न। प्रश्नो की निर्मम झडी बराबर घटो तक चलती जाती थी। वे ऐसे सवाल करते जिससे वह फस जाए, अपनी ही बात का स्वय खण्डन कर दे। वे उसकी हर बात को तोडते-मरोडते थे। उस पर झूठा होने का आरोप लगाते थे। अन्त मे वह तग होकर और स्नायविक

क्लान्ति तथा लज्जा के कारण रोने लगता था। कभी-कभी तो वह एक ही बार के प्रश्नोत्तर मे छ-छ बार रो पडता था। प्रश्नकर्ताओ का अधिकाश समय चीखने मे और गालिया बकने में बीता था और यदि उत्तर देने मे वह तनिक भी हिचकिचाता तो वे उसे फिर सिपाहियो के हवाले कर देने की धमकी देते थे। कभी-कभी उनका स्वर अकस्मात् बदल जाता। वे उसे कॉमरेड कहकर पुकारते। उससे वे इगसोश और बडे भाई के नाम पर अपीले करते। खेदपूर्वक उससे पूछते कि क्या वह अब भी पार्टी के प्रति वफादार हुआ है या नही और अपने पाप का प्रायश्चित उसने कर लिया है या नही। घटो के प्रश्नो के बाद उसमे जरा-सा भी साहस नही रह जाता था और उत्तर मे केवल उसकी आखो मे आसू भर आते और जलधार बह निकलती। अन्त मे ये आवाजे उसे सिपाहियो के लात-घूसो की मार से भी अधिक तोड देती। वह ऐसी सारी बाते तुरन्त स्वीकार कर लेता था जो वे उससे मनवाना चाहते थे। अब उसका काम यह था कि पहले पता लगा लेना कि वे क्या चाहते है और फिर तुरन्त जो कुछ वे कहे स्वीकार कर लेना और दस्तखत कर देने, जिससे डाट-फटकार शुरू न होने पाए। उसने यह स्वीकार कर लिया था कि वह कई प्रमुख पार्टी-सदस्यो की हत्याए कर चुका है। राजद्रोह सबधी परचे उसने बाटे हैं। उसने सार्वजनिक धनराशि मे से गबन किया है। सैनिक गुप्त रहस्यो को बेचा है। हर प्रकार का विध्वस कार्य उसने किया है। वह सन् १९६८ से ईस्ट एशियाई सरकार से गुप्तचर का काम करने के लिए रुपया पाता रहा है। उसने यह भी मान लिया कि वह धार्मिकता मे विश्वास करता है। पूजीवाद का प्रशसक है। व्यभिचारी है। उसने यह भी स्वीकार कर लिया कि उसने अपनी पत्नी की हत्या की है। हालाकि वह भी जानता था और उसके प्रश्नकर्ता भी जानते थे कि उसकी पत्नी अब भी जिन्दा है। उसने यह भी स्वीकार किया था कि वह वर्षों गोल्डस्टीन के सम्पर्क मे रहा है और उसके गुप्तदल का सदस्य है। उसने उन सब आदमियो के भी नाम सदस्यो के रूप मे ले दिए थे जिन्हे वह जानता था। हर बात को स्वीकार कर लेना और हर आदमी को फसा देना अधिक आसान था। इसके अलावा एक तरह से यह ठीक भी था। यह सच था कि वह पार्टी का शत्रु है। पार्टी की निगाह मे विचारो और कार्यो मे कोई अन्तर नही था।

इसके अलावा उसे कुछ और भी बाते याद थी। पर उनका एक दूसरे से कोई सबध नही था। यह याद ठीक इस तरह की थी जैसे कोई चित्र हो जो चमक रहा

हो परन्तु उसके चारो ओर का और पास का सारा हिस्सा काला हो।

वह एक कोठरी मे था। शायद उसमे अंधेरा था। यह शायद किसी तरह का प्रकाश था। वह सिवा दो आखो के और कुछ नही देख सकता था। पास ही एक यत्र टिक्-टिक् करता हुआ धीरे परन्तु बराबर चलता जा रहा था। आखें बडी और चमकदार होती जाती थी। अकस्मात् वह अपनी जगह से तैरता हुआ आया और आखो मे छलाग मारकर कूद गया और फिर उनमे खो गया।

उसे एक कुर्सी पर बहुत-सी पट्टिया बाधकर बैठा दिया गया। इन पट्टियो का सबध बहुत-से डायलो से था। इसके बाद उस पर तेज चमकीली रोशनी फेकी जाने लगी। सफेद कोट पहने एक आदमी इन डायलो को पढ रहा था। तभी भारी बूटो की आवाज सुनाई दी। दरवाजा खुला। मोम के नकली चेहरे जैसी शक्ल का अफसर दो सिपाहियो के साथ अन्दर आ गया।

'कमरा नम्बर १०१' अफसर ने कहा।

सफेद कोट पहने हुए जो व्यक्ति खडा था उसने पीछे मुडकर भी नही देखा। उसने विन्स्टन की ओर भी नही देखा। वह बराबर डायलो की ओर देख रहा था।

तभी वह कोई एक किलोमीटर चौडी सडक पर अपनी कुर्सी मे बैठा चला जा रहा था। यह सडक रोशनी से जगमगा रही थी। वह खूब जोरो से हस रहा था। और अपने अपराध स्वीकार करता जा रहा था। वह हर बात स्वीकार कर रहा था, वे बाते भी जिन्हे उसने कडी से कडी मार के बाद भी छिपा लिया था। वह अपने जीवन का सारा इतिहास उन श्रोताओ को बता रहा था जो हर बात पहले ही जानते थे। उसके साथ उस बद जगमगाती सडक पर और लोग भी थे सिपाही, उसके प्रश्नकर्ता, सफेद कोट पहने लोग, ओ'ब्रायन, जूलिया, मि० चारिंगटन। सभी उसके साथ उस सडक पर चले जा रहे थे चिल्लाते और हसते। वह भयानक बात जो भविष्य के गर्भ मे छिपी थी, और होनी चाहिए थी, वह नही हुई थी। वे उससे बच गए थे। हर चीज ठीक थी। कोई दर्द नही था। उसके जीवन का हर रहस्य खुली किताब था। उसे समझ लिया गया था और उसे क्षमा कर दिया गया था।

वह अपने तख्त से आधा उठ गया क्योकि उसे लग रहा था कि उसके कानो में ओ'ब्रायन की आवाज पडी है। अपनी सम्पूर्ण जिरह मे ओ'ब्रायन को उसने कभी नही देखा था लेकिन उसे बराबर यह भय रहा कि वह उसकी कोहनी के पास

पीछे खडा है और प्रश्नकर्ता को इशारे कर रहा है कि वह क्या प्रश्न करे। वही सिपाहियो से पिटवाता था और वही उसको मरने से बचाता था। वही यह तय करता था कि विन्स्टन कब दर्द के मारे चीखे कब उसे आराम मिले। कब उसे खाना दिया जाए, कब सोने दिया जाए और कब बाहो में नशीली दवाओ के इन्जेक्शन दिये जाए। वही प्रश्न पूछता था और वही उन प्रश्नो के उत्तर भी सुझाव रूप मे सामने रखता था। वही यत्रणादाता था, वही रक्षक था, वही प्रश्न-कर्ता था और वही मित्र था। और एक बार—कब, यह तो विन्स्टन को पता नही, शायद मादक औषधि के नशे मे, या सोते मे या कुछ क्षणो के लिए जग जाने पर कभी यह शब्द उसके कानो मे पडे 'विन्स्टन, चिन्ता मत करो, तुम मेरे पास हो। सात साल से मै तुम पर निगाह रखे हू। अब मौका आ गया है। मै तुम्हे बचा लूगा। मै तुम्हे बिलकुल ठीक कर दूगा।' उसे यह ध्यान नही कि वह ओ'ब्रायन की ही आवाज थी। लेकिन उसे इतना खयाल जरूर है कि यह स्वर उससे मिलता-जुलता था, जिसने यह कहा था कि 'अब हम ऐसी जगह मिलेगे जहा कभी अधेरा नही होता होगा।' यह शब्द उसने सात साल पहले एक सपने मे सुने थे। उसे याद नही कि सवाल कभी समाप्त भी हुए। पहले उसकी आखो के आगे अधेरा छाया रहा। उसके बाद कोठरी या कमरे का दृश्य स्पष्ट हो गया। वह पीठ के बल लेटा था। जरा भी हिल-डुल नही सकता था। हर जगह वह बधा था। पता नही कैसे, उसकी खोपडी का पिछला हिस्सा तक बधा था। ओ'ब्रायन गभीरता से उसके चेहरे को देख रहा था। कुछ दुखी भी था। नीचे से देखने पर उसका चेहरा खुर-दरा और क्लान्त लग रहा था। आखो के नीचे गड्ढे थे और नाक से गाल तक एक लम्बी झुर्री थी। विन्स्टन ने उसकी आयु के सम्बन्ध मे जितना अनुमान लगाया था, वह उससे कही अधिक बडा था। वह शायद ४८ या ५० वर्ष का था। उसके हाथो के नीचे एक डायल था जिसमे अक लिखे थे। ऊपर एक लिवर था।

'मैने तुमसे कह दिया कि यदि हम मिलें तो हमारे मिलने की जगह यही होगी।' ओ'ब्रायन ने कहा।

'हा।' विन्स्टन ने उत्तर दिया।

बिना किसी चेतावनी के ओ'ब्रायन का हाथ जरा-सा हिला और उसके शरीर मे घोर पीडा की एक लहर दौड गई। भयानक दर्द था। उसे पता हो नही लग

रहा था कि क्या हो रहा है। परन्तु उसे लग रहा था कि उसे घातक चोट पहुचाई जा रही है । दर्द का कारण बिजली की लहर थी या सचमुच उसे पीटा जा रहा था, यह भी उसकी समझ मे नही आ रहा था ।

परन्तु उसके शरीर को तोडा जा रहा था । हर जोड खीच-खीचकर अलग किया जा रहा था । हालाकि दर्द के मारे उसके माथे पर पसीना आ गया था लेकिन इससे भी भयानक बात यह थी कि उसकी रीढ की हड्डी निकली जा रही थी । उसने दात दबा लिए और जोर-जोर से सास लेने लगा, जिससे वह जितना सभव हो चुप रह सके ।

'तुम व्यर्थ डर रहे हो, विन्स्टन', ओ'ब्रायन ने उसका चेहरा देखते हुए कहा, 'तुम्हे लग रहा है कि अगले ही क्षण कोई चीज टूट जाएगी । तुम्हे अपनी रीढ की हड्डी से भय लग रहा है । तुम सोच रहे हो वह निकलकर अलग जा पडेगी और उसमे जो रस है, वह बह निकलेगा । यही सोच रहे हो न ?'

विन्स्टन ने उत्तर नही दिया । लिवर को ओ'ब्रायन ने ढीला छोड दिया । पीडा की लहर जितनी शीघ्रता से आई थी उतनी ही जल्दी गायब भी हो गई ।

'यह चालीस था', ओ'ब्रायन ने कहा,'देख लो, इस डायल पर सौ तक नम्बर लिखे है । अब यह बात हमेशा याद रखना कि मै जिस क्षण चाहूगा उसी क्षण मनचाही मात्रा मे कष्ट दे सकूगा । अगर तुम झूठ बोले, या किसी भी कारण तुमने ठीक उत्तर न दिया या तुम्हारे उत्तर तुम्हारे सामान्य बौद्धिक स्तर से नीचे हुए तो समझ लेना तुम एकदम दर्द के मारे चीख उठोगे । समझ गए न ?'

'हा !' विन्स्टन ने उत्तर दिया ।

ओ'ब्रायन की कठोरता कम हो गई । उसने अपना चश्मा कुछ सोचते हुए ठीक कर लिया । एक-दो कदम इधर-उधर टहला । जब वह बोला तो उसकी वाणी मे कोमलता थी, धीरज था । वह डाक्टर, अध्यापक या पादरी-सा लग रहा था—जो बात को समझाना चाहता है, शारीरिक दण्ड नही देना चाहता ।

'मै तुम्हारी वजह से स्वय परेशान इसलिए हो रहा हू, विन्स्टन', ओ'ब्रायन कह रहा था, 'क्योकि ऐसा करना नफे का सौदा है । तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हारी खराबी क्या है ? तुम बहुत पहले से अपनी त्रुटि जानते रहे हो । हालाकि इस ज्ञान के विरुद्ध तुमने काफी सघर्ष भी किया है । तुम पागल हो । तुम्हारी स्मरणशक्ति मे दोष है । तुम यथार्थ घटनाओ को याद रखने की बजाय उन

बातो को याद रखते हो जो कभी नही हुई। सौभाग्यवश हमारे पास इसका इलाज है। तुम स्वय इसका इलाज इसलिए नही कर सके क्योकि तुमने स्वय ऐसा करना पसद नही किया। तुम्हे अपनी इच्छा-शक्ति काम में लानी चाहिए थी। परन्तु तुमने ऐसा नही किया। अब भी तुम रोगग्रस्त हो क्योकि तुम समझते हो कि तुम्हारी कमी ही तुम्हारा गुण है। उदाहरण के लिए एक प्रश्न मै तुमसे पूछता हू। आज कल ओशनिया किससे युद्ध कर रहा है?'

'जब मै पकडा गया था तब ओशनिया की लडाई ईस्ट एशिया से चल रही थी।'

'ईस्ट एशिया से! ठीक। और ओशनिया की लडाई हमेशा से ईस्ट एशिया से ही रही है। है न?'

विन्स्टन ने सास ली। वह बोलना चाहता था लेकिन बोल नही सका। उसकी आखे डायल पर थी। वह उन्हे वहा से हटा नही पा रहा था।

'सच बोलना। मुझे वही बतलाओ जो तुम ठीक समझते हो, जो तुम्हे याद हो।'

'मुझे याद है कि ईस्ट एशिया से लडाई होने की घोषणा के पूर्व हमारा युद्ध उससे था ही नही। हमारी उससे दोस्ती थी। युद्ध यूरेशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला। इसके पूर्व ईस्ट एशिया के विरुद्ध चल रहा था। वह चार साल चला।'

'दूसरा उदाहरण', उसने कहा, 'कुछ साल पूर्व तुम्हे एक और भ्रम हुआ था। तुम समझने लगे थे कि जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड, जो पहले पार्टी के सदस्य थे और जो गद्दारी और तोड-फोड के काम करने के लिए अपने बयानो के बाद फासी पर चढा दिए गए थे, वस्तुत अपराधी नही थे। तुम्हारा ख्याल है कि तुमने ऐसा सबूत देखा था, जो गलत नही हो सकता। तुमने एक फोटोग्राफ की कल्पना कर ली थी। तुम्हारा खयाल है कि वह तुम्हारे हाथ मे भी रहा है। वह फोटोग्राफ ऐसा था।'

ओ'ब्रायन के हाथ मे समाचारपत्र की कटिंग थी। इसमे लम्बी अधिक और चौडी कम वही फोटो थी जो विन्स्टन ने देखी थी। कोई पाच सेकेड वह फोटो को देखता रहा। यह वही फोटो थी जो किसी पार्टी समारोह मे ग्यारह वर्ष पूर्व न्यूयार्क मे ली गई थी। अखबार मे छपी थी और फिर उस सस्करण की समस्त प्रतिया नष्ट कर दी गई थी। एक क्षण वह और फोटो देखता रहा। इसके बाद वह

फोटो उसकी आखो के सामने से हटा दी गई। लेकिन यह निर्विवाद था कि उसने वह फोटो देखी थी। उसने अपने शरीर के ऊपरी भाग को ऊचा करने की कोशिश की किन्तु घोर पीडा के अलावा उसके हाथ और कुछ न लगा। किसी भी दिशा मे जरा भी हिलना सम्भव नही था। क्षण भर के लिए वह डायल तक को भूल गया। वह चाहता था कि वह चित्र हाथ मे ले ले या थोडा-सा और देखे।

'है तो यह!' वह चिल्लाया।

'नही।' ओ'ब्रायन ने कहा।

वह कमरे के दूसरी ओर गया। वहा भट्ठी वाला छेद सामने की दीवार मे था। ओ'ब्रायन ने उस छेद का मुह खोला। वह फोटो वाला कागज़ उसने भट्ठी मे डाल दिया। और वह टुकडा गरम हवा के झोके से बिना किसी के देखे अपने आप भट्ठी मे जलने के लिए उडता चला जा रहा था। वह लपटो की एक झपट मे ही समाप्त हो जाएगा। ओ'ब्रायन लौट आया।

'राख,' उसने कहा, 'ऐसी राख जिसे तुम पहचान भी नही सकते। भस्म। वह फोटो नही है। कभी नही थी।'

'लेकिन वह है, वह थी। वह स्मृति मे है। मेरी स्मृति मे। आपकी स्मृति मे। आपको भी याद है।'

'मुझे याद नही है।' ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन का दिल डूब गया। यह द्वैध विचार था। वह घोर असहाय था। यदि वह जानता होता कि ओ'ब्रायन झूठ बोल रहा है तो कोई इतने बहुत महत्व की बात नही थी। लेकिन सम्भव था ओ'ब्रायन चित्र को भूल गया हो, सचमुच भूल गया हो। यदि हा, तो वह अपनी याददाश्त को भी भूल गया था और भूल जाने के कृत्य को भी भूल गया होगा। यह केवल चालाकी है—कोई यह कैसे समझे? सभवत, वह पागल हो, और ऐसी बातो को न भुला पाता होगा। यही विचार था जिसने विन्स्टन को परास्त कर दिया।

ओ'ब्रायन उसकी ओर कुछ सोचता हुआ देख रहा था। वह ऐसा लग रहा था कि कोई मास्टर है जो शरारती किन्तु प्रतिभा शाली बच्चे को पढा रहा है। 'अतीत के नियन्त्रण के सबध मे पार्टी का नारा है। चाहो तो उसे दोहरा दो', ओ'ब्रायन ने कहा।

'पार्टी यथार्थ का नियन्त्रण करती है, वही भविष्य को भी नियंत्रित करती

है। जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है वह अतीत को भी अपने नियन्त्रण मे रख सकता है।' विन्स्टन ने आज्ञाकारी की भाति नारे को दोहरा दिया।

'जो वर्तमान को नियन्त्रित कर सकता है, वह अतीत को भी नियन्त्रित कर सकता है।' बात का समर्थन करते हुए ओ'ब्रायन ने सिर हिलाया। 'क्या विन्स्टन, तुम्हारा यह भी मत है कि अतीत का कोई यथार्थ अस्तित्व है?'

विन्स्टन फिर अपनी घोर असहाय स्थिति अनुभव करने लगा। उसकी आखे डायल की ओर चली गई। वह नही जानता था कि हा या ना कौन-सी बात कहने से वह डायल से बच सकता है। वह यह नही जानता था कि कौन-सा उत्तर ठीक है।

ओ'ब्रायन थोडा-सा हस दिया। 'तुम अध्यात्मवादी नही हो, विन्स्टन,' उसने कहा, 'अभी तक तुमने यह नही सोचा कि अस्तित्व क्या है? उसका अर्थ क्या होता है? मै प्रश्न और भी स्पष्ट ढग से पूछता हू। क्या अतीत किसी स्थान विशेष मे भौतिक रूप है? यहा या कही भी अतीत था और वह अब भी घट रहा है?'

'नही।'

'तो अतीत कहा है, यदि है तो?'

'रिकर्डो मे—लिखा हुआ।'

'रिकर्डो मे—और···?'

'दिमाग मे। मानवीय स्मृति मे।'

'स्मृति मे। ठीक। तो पार्टी सारे रिकर्डो को नियन्त्रित करती है और हम स्मृति को अपनी मुट्ठी मे रखते है। ऐसी दशा मे अतीत हमारी मुट्ठी मे हुआ या नही?'

'लेकिन आप अन्य लोगो को याद रखने से कैसे रोक सकते है?' विन्स्टन ने चीखकर कहा। वह क्षण भर के लिए डायल भूल गया। अतीन की बाते तो अपने आप याद रहती है। वह आदमी के बस के बाहर है। स्मृति शक्ति आप कैसे नियन्त्रित करेगे? आप मेरी स्मृति कहा नियन्त्रित कर पाए है।'

ओ'ब्राइन का मुह कठोर हो गया। उसने अपना हाथ डायल पर से लिवर पर रखा।

'उल्टी बात है,' उसने कहा, 'तुमने स्वय अपनी स्मृति को अपने नियन्त्रण मे नही

रखा है। इसलिए तुमको यहा आना पडा है। तुम यहा क्यो लाए गए ? इसलिए कि तुमने आत्मनियत्रण नही किया। स्वस्थता—मानसिक स्वस्थता का मूल है, आत्मार्पण। यह तुमने नही किया। तुम पागल होना पसन्द करते हो। एक ही व्यक्ति की अल्पसख्या बनना चाहते हो। विन्स्टन, यथार्थता को सयमी मानसिक वृत्ति वाला व्यक्ति ही देख सकता है। तुम समझते हो यथार्थता कोई भौतिक, बाह्य और ठोस चीज है। यथार्थता अपने आप प्रकट है। परन्तु विन्स्टन यथार्थता सत्य नही है। यथार्थता केवल मानव मस्तिष्क मे रह सकती है। अन्यत्र कही भी नही। सो भी व्यक्ति के मस्तिष्क मे नही, जो गलती कर सकता है, बल्कि पार्टी के मस्तिष्क मे। पार्टी का मस्तिष्क सामूहिक है, अनश्वर है। जो पार्टी कहती है वही सत्य है। यथार्थता को केवल पार्टी की दृष्टि से ही देखा जा सकता है। अन्यथा उसका देखना असम्भव है। यह तथ्य है जिसे तुम्हे सीखना पडेगा। यह ऐसा कार्य है जिसमे आत्मध्वस करना पडता है। अपनी इच्छाशक्ति का प्रयोग करना पडता है। तुम्हे स्वस्थ होने के पूर्व काफी झुकना पडेगा।'

वह कुछ सेकेडो के लिए चुप हो गया। ओ'ब्रायन चाहता था कि उसने जो कुछ कहा है, वह विन्स्टन आत्मसात् कर ले।

'तुम्हे याद है, विन्स्टन,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुमने डायरी मे लिखा था कि, दो धन दो, चार होते है—यह कहने का हक ही स्वतन्त्रता है ?'

'हा।' विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन ने अपना बाया हाथ ऊपर उठाया। हाथ का पिछला हिस्सा विन्स्टन की ओर था। अगूठा दबा था और चारो अगुलिया ऊपर की तरफ खुली थी।

'मेरी कितनी अगलिया खडी है ?' ओ'ब्रायन ने पूछा।

'चार।'

'और यदि पार्टी कहती है कि ये चार नही पाच है तो ये कितनी अगलिया है ?'

'चार।'

उसका शब्द समाप्त होते न होते उसके मुह से दर्दभरी चीख निकल गई। डायल की सुई पचपन पर पहुच गई थी। विन्स्टन का सारा शरीर पसीने-पसीने हो गया था। सास के साथ वह कराह रहा था। दातो को भीचकर भी उसकी

'कभी-कभी, विन्स्टन। कभी-कभी वे पाच होते है और कभी-कभी तीन। कभी-कभी वे तीन, चार, पाच एक साथ होते है। तुम्हे और प्रयत्न करना होगा। स्वस्थ होना कोई ग्रासान काम नही है।'

विन्स्टन को उसने फिर लिटा दिया। उसके हाथ-पैर फिर शिकजे मे कसे गए। लेकिन दर्द नही था। कापना भी रुक गया था। वह कमजोरी अनुभव कर रहा था। उसका सारा शरीर अब भी डा पडा था। ओ'ब्रायन ने सफेद कोट वाले आदमी को इशारा किया। वह उस सारे काण्ड को निश्चल खडा हो देख रहा था। वह नीचे झुक गया। उसने समीप आकर विन्स्टन की आखो को देखा। नाडी देखी। उसकी छाती मे अपने कान लगाए। इधर-उधर अगुलियो से बजाकर देखा। फिर ओ'ब्रायन की ओर देखकर सिर हिला दिया।

'फिर', ओ'ब्रायन ने कहा।

विन्स्टन के सारे शरीर मे फिर पीडा की लहर दौड गई। सुई अवश्य ही सत्तर या पचहत्तर पर होगी। इस बार उसने अपनी आखे बद कर ली थी। वह जानता था अगुलिया चार ही होगी। अब उसे तब तक किसी तरह जीवित ही रहना था जब तक दर्द का यह दौर बीत न जाए। अब उसने इसकी भी फिक्र छोड दी कि वह चीख रहा है या नही। दर्द फिर गायब हो गया। लिवर ढीला कर दिया गया था। उसने आखे खोल ली।

'कितनी अगुलिया है विन्स्टन?'

'चार। मै समझता हू चार। मै पाच देखने की कोशिश करूगा।'

'तुम मुझे विश्वास दिला रहे हो या स्वय पाच देखने की कोशिश करोगे?'

'मै स्वय पाच देखने की कोशिश करूगा।'

'फिर।'

इस बार सुई फिर अस्सी या शायद नब्बे तक चली गई थी। विन्स्टन को शायद कभी-कभी याद आ जाता था कि दर्द क्यो हो रहा है। अगुलियो का जगल उसके सामने नाच रहा था। कभी वह दिखलाई पड जाता था, कभी गायब हो जाता था। वह फिर भी उनको गिनने की कोशिश कर रहा था। उनका गिनना असभव था। क्यो, यह नही बता सकता। शायद चार और पाच की रहस्यमयता के लिए। असख्य अगुलिया, पेडो की भाति उसकी आखो के सामने आ-जा रही थी। उसने फिर आखे बद कर ली।

'कितनी अगुलिया है विन्स्टन ?'

'मै नही जानता। लेकिन यदि तुमने फिर कसा तो अब की बार मै मर ही जाऊगा। चार, पाच, छः, मै नही जानता।

'बेहतर।'

विन्स्टन की बाह मे इन्जेक्शन की सुई घुस गई। उसी समय विन्स्टन के सारे शरीर मे विश्रामदायक उष्णता की लहर दौड गई। आधा दर्द जा चुका था। उसने आखे खोली और ओ'ब्रायन की ओर कृतज्ञता से देखा। वह भारी, झुर्रीदार, भद्दा किन्तु बौद्धिक चेहरा देखकर उसका हृदय डूबने लगता था। यदि वह स्वतत्र होता तो अपना एकहाथ उठाकर ओ'ब्रायन की बाह पर रख देता। उसने ओ'ब्रायन को उनना कभी प्यार नही किया जितना वह इस समय कर रहा था। उसका एक मात्र कारण यह नही था कि उसने एकदम दर्द रोक दिया था। उसकी यह पुरानी भावना फिर लौट आई थी, कि ओ'ब्रायन वस्तुत शत्रु है या मित्र इससे कुछ भी प्रयोजन नही है। 'लेकिन वह ऐसा व्यक्ति अवश्य है जिसके साथ बातचीत की जा सकती है। शायद कोई व्यक्ति उतना प्यार नही चाहता जितना यह कि लोग उसकी बात को समझे। ओ'ब्रायन ने उसे यत्रणा दे-देकर करीब-करीब पागल बना दिया था और कुछ देर बाद वह उसे मार भी डालेगा। यह भी निश्चित था। लेकिन इससे कोई फर्क नही पडता। उन दोनो के बीच दोस्ती से भी अधिक कुछ था। घनिष्ठता थी। शायद वे यथार्थत. कभी न बोल पाए लेकिन एक जगह तो थी जहा वे बैठकर बात कर सकते थे। ओ'ब्रायन उसकी तरफ ऐसे देख रहा था जैसे वही बाते उसके दिमाग मे भी हो। अब की बार जब वह बोला तो उसमे आर्द्रता थी और उसके स्वर मे कोई असाधारणता नही थी।

'तुम जानते हो, विन्स्टन, इस समय कहा हो ?' उसने पूछा।

'नही! लेकिन शायद प्रेम मत्रालय मे। यह मेरा अनुमान है।'

'जानते हो तुम्हे आए कितना वक्त गुजर गया ?'

'नही मालूम। शायद दिन, हफ्ते, महीनो गुजर गए।'

'यहा हम क्यो लाते है लोगो को ?'

'उनसे उनके अपराध स्वीकार कराने को।'

'नही यह कारण नही है। और सोचो।'

'उनको सजा देने के लिए।'

'नही !' ओ'ब्रायन असाधारण रूप से चिल्ला पडा। उसका चेहरा क्रोध से लाल और कठोर हो गया। नही केवल अपराध कुबूल करवाने और सजा देने के लिए नही। क्यो मै यह बतलाऊ कि हम तुम्हे यहा क्यो लाए है। तुम्हारा इलाज करने। तुम्हे स्वस्थ बनाने। क्या तुम जानते हो, विन्स्टन, यहा जो आता है, वह हमारे हाथ से बिना अच्छा हुए कभी नही जाता ? तुमने जो बेवकूफिया की है, उनमे हमारी कोई दिलचस्पी नही है। पार्टी इन सबकी परवाह नही करती। हम विचारो की अधिक परवाह करते है। हम अपने दुश्मनो को नष्ट नही करते, हम उन्हे बदल देते है। तुम मेरा अभिप्राय समझ गए ?'

वह विन्स्टन पर झुका था। समीप होने के कारण उसका चेहरा और भी बडा दिखलाई पड रहा था। नीचे से दिखलाई पडने के कारण उसकी बदसूरती भी बढ गई थी। उसमे कुछ प्रसन्नता भी थी और पागलो जैसी कठोरता भी। विन्स्टन का हृदय फिर डूबने लगा। यदि सभव होता तो वह बिस्तर मे और घुस जाता। उसे लग रहा था कि अब की ओ'ब्रायन केवल दुष्टतावश लिवर दबा देगा। इसी समय ओ' ब्रायन मुड गया। एक या दो कदम आगे गया। इसके बाद जब वह फिर बोला तो ऐसा लगा कि ओ'ब्रायन का क्रोध काफी कम हो गया है

'सबसे पहली बात तो तुम यह समझ लो कि यहा कोई शहीद नही होता। तुमने शायद वे किस्से पढे होगे जिनमे पादरी लोगो को यत्रणा देते थे। यत्रणा का यह ढग, जिनके बारे मे तुमने पढा है, मध्ययुग मे था। वह सफल नही हुआ। नास्तिकता समाप्त करने के लिए उसे आरम्भ किया गया था। लेकिन उस व्यवस्था से नास्तिकता अमर हो गई। एक नास्तिक जलाया गया परन्तु उसकी जगह हजारो पैदा हो गए। क्यो ? ऐसा क्यो हुआ ? उसका कारण यह था कि पादरियो का न्यायालय खुले मे विरोधियो को मारता था। उन्हे उस समय मारता था जब वे लोग अपने कर्मो पर पश्चात्ताप तक करने को तैयार नही होते थे। सच तो यह है कि पश्चात्ताप प्रकट न करने के कारण ही उनकी जान जाती थी। लोग अपने विश्वास का परित्याग नही करते थे और मर जाते थे। नतीजा यह होता था जो मरता वह शहीद हो जाता था, और लोग पादरियो को धिक्कारते थे। बीसवी शताब्दी मे तानाशाह हुए। जर्मन नाजियो और रूसी साम्यवादियो का नाम लिया जा सकता है। रूसियो ने साम्यवाद-विरोधियो को मध्ययुग के पादरियो से कही अधिक निर्दयता से दबाया। और वे समझते थे कि वे पुराने लोगो

से अधिक बुद्धिमान् है और उन्होने इतिहास से शिक्षा लेकर पुरानी गलतिया सुधार ली हैं। परन्तु वे यह जान गए थे कि लोगो को शहीद नही बनने दिया जाए। जिनको वे पकडते थे और जिन पर मुकदमा चलाते थे उनको सार्वजनिक रूप से लाछित और अपमानित पहले कर देते थे। वे उनको अकेले मे तब तक बद रखते और तब तक यत्रणाए देते गए जब तक वे रो-रोकर अपने सारे अपराध स्वीकार नही कर लेते थे, दया की भिक्षा मागने नही लगते थे। कुछ समय बाद फिर वही बात होती थी। मृत व्यक्ति शहीद माने जाते थे और उनके अपमान को भुला दिया जाता था। फिर सवाल उठता है—ऐसा क्यो होता था? इसका पहला कारण यह था कि जो अपराध वे स्वीकार कराते थे वे बलात् कराते थे और वे स्वीकारोक्तिया असत्य होती थी। हम ऐसी कोई गलती नही करते। हम उन स्वीकारोक्तियो को सच्चा बना देते है। हम मृतको को अपने खिलाफ कभी नही खडा होने देते। तुम यह कभी मत सोचना कि भावी सन्तति तुम्हारे दृष्टिकोण का समर्थन करेगी। भावी सन्तति तुम्हारा नाम तक नही जानेगी। तुम इतिहास की धारा से दूध की मक्खी की तरह निकाल फेके जाओगे। हम तुम्हे भाप बनाकर अन्तरिक्ष में उडा देगे। तुम्हारा कोई अवशेष नही रहेगा। तुम्हारा किसी रजिस्टर मे नाम तक नही होगा और किसी जीवित व्यक्ति के दिमाग तक मे तुम नही रहोगे। तुम अतीत और भविष्य दोनो मे समाप्त कर दिए जाओगे। सब रिकर्ड इस तरह सशोधित कर दिए जाएगे जैसे लगे कि तुम कभी थे ही नही।'

'तो फिर मुझे ये कष्ट और यातना क्यो दी जा रही है?' विन्स्टन ने सोचा। उसके हृदय मे कटुता भर आई थी। ओ'ब्रायन टहलते-टहलते रुक गया। जैसे विन्स्टन ने अपना विचार जोर से कह दिया हो। उसका वह भारी-भरकम चेहरा विन्स्टन के समीप आ गया। आखे छोटी और तग हो गईं।

'तुम सोच रहे हो कि यदि हम तुम्हे मार ही डालना चाहते है और तुम्हारा नामोनिशा भी नही छोडना चाहते हैं, तो इस बात से क्या फर्क पडता है कि तुम क्या सोचते हो, क्या करते हो? हम इतनी जिरह क्यो करते है? यही सोच रहे थे न?'

'हा।' विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन ज़रा-सा मुस्करा दिया। 'विन्स्टन, तुम सफेद चादर पर दाग की तरह हो। और इस दाग को हमे मिटाना ही पडेगा। मैने तुम्हे यह नही बतलाया

कि हम अतीत के यन्त्रणादाताओ से भिन्न है ? हम निषेधात्मक आज्ञाकारिता से सन्तुष्ट नही होते। पूर्ण किन्तु उदासीन समर्पण पाकर भी हमे सन्तोष नही होता। जब तुम अन्तत आत्मसमर्पण करोगे तो वह तुम अपनी इच्छा से करोगे। हम उन लोगो को केवल इसलिए नही मार देते कि वे हमारी बात नही मानते या हमारा प्रतिरोध करते है। जब तक कोई हमारा प्रतिरोध करता रहता है, सच तो यह है कि तब तक हम उसे कभी नही मारते। हम उसको अपने मत का बना लेते है। हम उसके अन्त करण पर कब्जा करते है। हम उसके मस्तिष्क को बिलकुल भिन्न रूप मे, अपने अनुकूल बना देते है। हम उसकी सारी दुष्टता जला देते है। उसके सारे स्वप्नो को धूल मे मिला देते है। हम उसे अपने पक्ष मे मिला लेते है दिखावटी तौर पर नही, बल्कि हृदय से। सचमुच वह व्यक्ति हमारी तरफ हो जाता है। जब वह हमारा एक अग बन जाता है, तब हम उसे मार डालते है। हमे यह सह्य नही कि ससार मे कही भी गलत विचार हो। चाहे वे विचार कितने ही गुप्त या शक्तिहीन क्यो न हो। मृत्यु के समय भी हम कोई पथ या विचारभ्रष्टता नही बरदाश्त कर सकते। प्राचीन समय मे नास्तिक नास्तिकता का जप करते ही करते मर जाता था। वह अपने विचारो की घोषणा करता जाता था और इस प्रकार सहर्ष आत्मोत्सर्ग कर देता था। रूसी लोग जब विरोधियो की सफाई करते थे तब भी उनके दिमाग मे राजद्रोह और विद्रोह के विचार खोपडी मे बद होते थे। हम दिमाग को बिलकुल ठीक बनाकर आदमी को मारते है। पुराने तानाशाह आज्ञा देते थे . 'यह मत कर।' हम कहते है। 'यह कर।' यहा जो भी आता है, वह हमसे अन्त तक कभी लोहा नही ले पाता। यहा आदमी को धो-पोछकर साफ कर दिया जाता है। उन तीन दुष्ट राजद्रोहियो को भी—जोन्स, आरोन्सन और रदरफोर्ड को, जिनकी निर्दोषिता मे तुम्हारा विश्वास था, हमने इसी प्रकार धो-पोछकर साफ कर दिया था। वे भी अन्त मे बोल गए। मैने स्वय उनके साथ जिरह की थी। धीरे-धीरे वे भी क्लान्त हो गए, भुनभुनाते, कराहते, चिल्लाते, पुकारते और रोते और अन्त मे दर्द या पीडा के कारण नही बल्कि समझदारी से उन्होने हमारी बाते मान ली। जब हमने अपना काम समाप्त किया तो वे आदमी के ढाचे मात्र ही रह गए थे। अन्त मे केवल उनमे अपनी करनी पर पश्चात्ताप और बड़े भाई के लिए स्नेह मात्र ही रह गया था। उनका बड़े भाई से स्नेह करना अत्यन्त मर्मस्पर्शी था। वे अनुरोध कर रहे थे कि उनको

जल्दी से जल्दी गोली मार दी जाए जिससे जब वे मरे तो उनके दिमाग मे बडे भाई के प्रति प्रेम के अलावा अन्य कोई गलत विचार न हो ।

ओ'ब्रायन इस तरह बोल रहा था जैसे सपने मे कोई बोल रहा हो। वह हर्ष, वह पागलो-सा उत्साह उसके चेहरे पर अब भी झलक रहा था। विन्स्टन सोच रहा था कि वह मक्कारी नही कर रहा था। ओ'ब्रायन पाखण्डी नही था। वह जो कुछ कह रहा था उसके हर शब्द में उसका विश्वास है। परन्तु वह स्वय अपनी मानसिक और बौद्धिक हीनता से दबा जा रहा था। वह भारी-भरकम किन्तु शानदार शरीर कभी टहलता हुआ उसकी आखो से ओझल हो जाता और फिर कभी उसके सामने आ जाता था। ओ'ब्रायन हमेशा उससे बडा था। ऐसा कोई विचार न था जो ओ'बायन के दिमाग मे बहुत पहले ही न आ चुका हो और उसकी भलीभाति उसने परीक्षा न कर ली हो और फिर उसे उसने अस्वीकार न कर दिया हो। उसके दिमाग मे विन्स्टन का दिमाग भी था। लेकिन इस मामले मे वह किस प्रकार सिद्ध कर सकता था कि ओ'ब्रायन पागल है ? अवश्य ही विन्स्टन पागल रहा होगा। ओ'ब्रायन रुक गया और उसने विन्स्टन की तरफ देखा । उसका कण्ठ अब पुन: कठोर हो गया था ।

'यह मत सोचना कि तुम पूर्ण आत्मसमर्पण के बाद आत्मरक्षा मे सफल हो जाओगे। जो एक बार पथभ्रष्ट हुआ वह फिर कभी अपनी जीवन-रक्षा नही कर सका। यदि हम तुम्हे जीने के लिए छोड भी दे तो भी तुम हमसे बच नही सकोगे। यहा जो कुछ होगा वह हमेशा के लिए होगा । यह बात पहले ही भली भाति समझ लो। हम तुम्हे इतना कुचल देगे कि फिर तुम कभी उठ ही न सकोगे। चाहे तुम हजार बरस क्यो न जिओ। सामान्य मानवीय भावनाए तुममे कभी नही उत्पन्न हो सकेगी। तुम्हारे अन्दर की हर चीज़ मर चुकेगी। तुम न तो प्रेम कर सकोगे, न हंस सकोगे, न तुममे जिज्ञासा होगी, न साहस और न ईमानदारी ही। तुम एकदम रिक्त रहोगे। हम तुम्हे निचोडकर एकदम रिक्त कर देगे। इसके बाद हम तुममे अपनी भावनाएं भर देगे।'

वह रुका और उसने सफेद कोट वाले व्यक्ति को इशारा किया। विन्स्टन ने अनुभव किया कि उसके सिर के नीचे कोई भारी यंत्र खिसका दिया गया। ओ'ब्रायन विन्स्टन के बगल मे बैठ गया। अब उसका चेहरा विन्स्टन के चेहरे के बराबर था।

'तीन हजार ।' ओ'ब्रायन ने सफेद कोट वाले आदमी से कहा ।

दो कोमल पैड उसकी कनपटियो से चिपक गए। वह चिल्ला पडा । अब एक नई तरह का दर्द हो रहा था। ओ'ब्रायन ने आश्वस्त करते हुए एक हाथ दिखलाया ।

'इस बार तुम्हे कोई कष्ट नही होगा,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुम अपनी आखो से मेरी आखो मे देखो ।'

उसी समय बडे जोरो का धमाका हुआ । या उसे लगा कि विस्फोट-सा हुआ है । लेकिन कोई लपट-सी अवश्य चमकी जिससे उसकी आखे चौधिया गईं । वह पहले ही पीठ के बल लेटा था, लेकिन उसे लगा कि वह धमाके के बाद और सीधा हो गया है। परन्तु दर्द नही हुआ । उसके दिमाग मे भी अन्दर कुछ हो गया था। जब पुन वह देख सका तो उसे अनुभव हुआ कि वह कहा है और वह उस चेहरे को भी पहचान गया जो उसे घूर रहा था। परन्तु उसके दिमाग मे एक अजीब प्रकार की रिक्तता थी। ऐसा लगता था कि उसके दिमाग से कुछ निकाल लिया गया है ।

'यह असर देर तक नही रहेगा' ओ'ब्रायन ने कहा, 'मुझे देखो। ओशनिया किस देश से लड़ रहा है ।'

'विन्स्टन जानता था कि ओशनिया से क्या मतलब है । वह स्वय ओशनिया का नागरिक था । वह ईस्ट एशिया और यूरेशिया के नाम भी जानता था। परन्तु उसे यह याद नही था कि कौन किससे युद्ध कर रहा है। सच तो यह है कि उसे युद्ध के बारे मे कुछ भी नही मालूम था ।

'मुझे याद नही ।'

'ओशनिया का ईस्ट एशिया से युद्ध चल रहा है। यह याद रहेगा न ?'

'हा ।'

'ओशनिया की हमेशा से ईस्ट एशिया से लडाई रही है । जब से तुम पैदा हुए, जब से पार्टी बनी, जब से इतिहास आरम्भ हुआ तब से अब तक बराबर लडाई होती रही है । वह कभी रुकी नही । यह याद है तुम्हे ?'

'हा ।'

'ग्यारह वर्ष पूर्व तुमने तीन राजद्रोहियो के बारे मे यह कहानी गढी थी कि वे निर्दोष है । गद्दार नही है । तुम्हारा ख्याल था कि तुमने ऐसा कागज देखा है

जिससे उनकी निर्दोषिता प्रमाणित हो जाती है। ऐसा कागज या चित्र कभी नही था। यह तुम्हारी मनगढत बात थी। याद है तुम्हे।'

'हा।'

'अभी मैंने अपने बाए हाथ की अगुलिया उठाई थी। वे पाच थी। याद है ?'

'हा।'

ओ'ब्रायन ने फिर हाथ उठा दिया। अगूठा दबा रहा।

'ये पाच अगुलिया हैं। क्या तुम्हे पाच अगुलिया दिखलाई पड रही हैं ?'

'हा।'

और उसे पाच अगुलिया दिखलाई पड रही थी। उनमे कोई विकृति नही थी। इसके बाद फिर हर चीज पहले जैसी हो गई। पुराना भय, घृणा, परेशानी क्रोध सब कुछ वापस लौट आया। परन्तु तीस सेकेण्ड के लिए उसे पाच अगुलिया दिखलाई दी थी। दो और दो पाच दिखलाई पडे थे। ओ'ब्रायन के कथन से दिमाग का जो हिस्सा धमाके की वजह से गायब हुआ था वह भर गया था।

'अब तो तुमने देख लिया कि यह बात भी सभव है कि पाच अगुलिया दिखलाई पडे ?' ओ'ब्रायन ने कहा।

'हा।' विन्स्टन ने कहा।

ओ'ब्रायन के चेहरे पर सन्तोष था। विन्स्टन की बाई तरफ एक काच की शीशी से सफेद कोट वाला आदमी सुई मे दवा भर रहा था। ओ'ब्रायन ने घूमकर हसते हुए अपना मुह विन्स्टन की ओर कर लिया था। पुराने ढग से उसने अपना चश्मा फिर नाक पर रख लिया।

'तुम्हे याद है कि तुम डायरी लिखते थे,' उसने कहा, 'उसमे तुमने लिखा था कि म तुम्हारा दोस्त हू या दुश्मन इससे कोई मतलब नही, लेकिन ऐसा आदमी अवश्य हू जिससे बात की जा सकती है। मै तुम्हारी बात मानता हू। मुझे भी तुमसे बाते करने मे बडा मजा आया। तुम्हारा विचार मुझे पसन्द है। तुम्हारे विचार मुझसे मिलते है। मेरे और तुम्हारे दिमाग मे फर्क इतना है कि तुम पागल हो और मै नही हू। आज की भेट समाप्त होने से पूर्व यदि तुम कोई प्रश्न पूछना चाहो तो पूछ सकते हो।'

'कोई भी प्रश्न पूछ सकता हू ?'

'कोई भी।' ओ'ब्रायन ने देखा कि विन्स्टन की निगाहे डायल पर हैं। 'डायल

का स्विच आफ कर दिया गया है। वह काम नही करेगा, तुम्हारा पहला प्रश्न क्या है ?'

'आपने जूलिया का क्या किया ?' विन्स्टन ने पूछा। ओ'ब्रायन मुस्करा दिया। फिर बोला 'उसने तुम्हे धोखा दिया है, विन्स्टन। पकडे जाने के बाद तुरन्त, बिना कुछ भी छिपाए हर बात उसने कह दी। मैंने ऐसे लोग बहुत कम देखे है जो इतनी जल्दी हमारे काबू मे आ जाए। यदि वह तुम्हारे सामने आ जाए तो शायद ही तुम उसे पहचान सकोगे। उसका सारा विद्रोह, उसका अभिमान, उसकी बेवकूफिया और उसके गन्दे विचार सब कुछ जला दिए गए। उसका मतपरिवर्तन पूर्ण था, बिलकुल पाठ्य पुस्तक के उदाहरण लायक।'

'तुमने उसे यत्रणा दी होगी।'

ओ'ब्रायन ने उसे कोई उत्तर नही दिया। बोला, 'अगला प्रश्न,'

'क्या बडे भाई सचमुच है ?'

'बेशक पार्टी है। बडे भाई है, वे तो पार्टी के प्रतीक है।'

'क्या वे उसी तरह है जिस प्रकार मै हू ?'

'अब तुम नही हो।' ओ'ब्रायन ने कहा।

एक बार फिर विन्स्टन घोर असहाय होने की दशा अनुभव करने लगा। वह जानता था कि किस प्रकार, दलीलो से उसकी अस्तित्वहीनता सिद्ध कर दी जाएगी। लेकिन वे दलीले व्यर्थ थी। केवल शब्दो के साथ खिलवाड किया जा रहा था। क्या इस कथन मे कोई भी तुक है कि मेरा कोई अस्तित्व नही है ? लेकिन इसका विरोध करने से क्या लाभ। वह उन तर्को की कल्पना कर सकता था जिनसे ओ'ब्रायन उसकी अस्तित्वहीनता प्रमाणित करता।

विन्स्टन ने क्लान्त भाव से कहा, 'मै पैदा हुआ था। मै मरूंगा। मेरे हाथ और पैर है। मै ससार मे थोडी-सी जगह घेरे हू। कोई भी ठोस पदार्थ मेरे साथ उसी जगह मे नही रखा जा सकता। क्या इन अर्थों मे बडे भाई का अस्तित्व है?'

'तुम्हारी बात का कोई महत्व नही है। बडे भाई है।'

'क्या बडे भाई की कभी मृत्यु होगी ?'

'कभी नही। वे कैसे मर सकते है ? अगला सवाल।'

'क्या ब्रदरहुड है ?'

'यह विन्स्टन, तुम कभी नही जान सकोगे। अगर हम तुम्हे छोड़ भी दे और

तुम नव्वे वर्ष की आयु तक भी जिओ तो भी तुम्हे पता नही लग सकेगा । जब तक तुम जिन्दा रहोगे, यह पहेली अनबूझी ही रह जाएगी ।'

विन्स्टन चुपचाप पडा रहा । उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे होने लगी । उसके दिमाग मे सबसे पहले जो सवाल आया था उसे वह अभी तक पूछ नही पाया था । उसे पूछना ही था और फिर भी वह सवाल जबान पर नही आ रहा था । ओ'ब्रायन के चेहरे पर मनोरजन का भाव था । उसके चश्मे की चमक तक मे व्यग्य था । शायद उसे, ओ'ब्रायन को, मालूम है कि वह क्या प्रश्न पूछने जा रहा है । इस विचार के आते ही उसके मुह से ये शब्द निकल पडे ।

'कमरा नम्बर १०१ क्या है ?'

ओ'ब्रायन के चेहरे का भाव नही बदला । उसने शुष्क कण्ठ से उत्तर दिया

'तुम जानते हो वह क्या है । हर आदमी जानता है कमरा नम्बर १०१ क्या है ।'

उसने सफेद कोट वाले आदमी को उगली दिखलाई । स्पष्ट था कि भेट समाप्त हो रही थी । विन्स्टन की बाह मे इन्जेक्शन की सुई घुस गई । उसी क्षण वह गहरी निद्रा में खो गया ।

(३)

'असली पार्टी-सदस्य बनने की तीन अवस्थाए है सीखना, समझना और स्वीकार करना । अब तुम दूसरी अवस्था मे प्रवेश कर हो ।'

हमेशा की तरह विन्स्टन पीठ के बल सीधा लेटा था । परन्तु इधर कुछ दिनो से उसकी पट्टिया खुली रहने लगी थी । वह बिस्तर पर अब भी बधा था लेकिन वह अपना घुटना या सिर थोडा-सा इधर-उधर घुमा सकता था । थोडा-सा हाथ भी उठा सकता था । डायल का डर भी घट गया था । यदि वह बुद्धि प्रयोग कर लेता था तो दर्द के दौरो से बच जाता था । बेवकूफी करने पर ही ओ'ब्रायन डायल का लिवर दबाता था । कभी-कभी पूरी मुलाकात भर मे डायल की जरूरत नही पडती थी । उसे याद नही कितनी ऐसी भेटे हुई । ऐसा लगता था कि जब एक बार क्रम शुरू हो जाता था तो वह हफ्तो चलता था । कभी कुछ घण्टो या दो-एक दिन का मध्यान्तर भी पड जाता था ।

ओ'ब्रायन कह रहा था, 'इस बिस्तर पर पडे-पडे अक्सर तुम सोचते हो कि

प्रेम मत्रालय तुम पर इतना समय और धन क्यो खर्च कर रहा है, जब कि वह जानता है कि तुमसे उसे कोई लाभ नही होना है। जब तुम स्वतत्र थे तब भी करीब-करीब ऐसा ही प्रश्न अपने आपसे पूछ-पूछ कर हैरान होते थे।

तुम वर्तमान सामाजिक व्यवस्था तो समझ गए थे, लेकिन तुम्हारी समझ मे यह नही आ रहा था कि ऐसा क्यो है ? तुम्हे याद है, तुमने अपनी डायरी मे लिखा है—मै यह तो जानता हू कैसे, लेकिन, क्यो, यह नही ?—जब तुमने क्यो लिखा बस तभी तुमने अपने पागलपन का प्रमाण दिया। तुमने गोल्डस्टीन की किताब पढ ली है। या कम से कम उसके कुछ भाग तो अवश्य ही पढ लिए है। क्या उसमे ऐसी कोई भी बात है जो तुम नही जानते ?

'तुमने भी उसे पढा है ?' विन्स्टन ने पूछा।

'मैने उसे लिखा है। मेरा मतलब है मैने उसके लिखने मे सहयोग दिया है। कोई भी पुस्तक व्यक्तिगत रूप से नही लिखी जा सकती है, यह तो तुम जानते ही हो।'

'क्या उसमें जो कुछ लिखा है, वह सच है ?' विन्स्टन ने पूछा।

'जहा तक वर्णनात्मक अश का सबध है, ठीक है। लेकिन उसमें जो कार्यक्रम रखा गया है, वह वाहियात है। ज्ञान का गुप्त सचय, ज्ञान का धीरे-धीरे विस्तार, अन्तत मज़दूर वर्ग की क्रान्ति और पार्टी की सत्ता को उलट देना। यह सब बेकार की बाते है। यह तो तुमने कल्पना कर ही ली होगी कि उस किताब मे क्या कार्यक्रम होगा। वह सारा कार्यक्रम वाहियात है। मजदूर कभी विद्रोह नही करेगे। हज़ार या लाख साल बाद भी नही। वे विद्रोह कर ही नही सकते। मुझे कारण बताने की जरूरत नही। तुम जानते हो। तुमने यदि कभी सशस्त्र विद्रोह के सपने देखे हो तो अब उनको छोड दो। पार्टी को सत्ता से हटाने का कोई उपाय नही है। पार्टी का शासन अमर है। इस विचार को मूलतत्व मानकर आगे सोचो।'

वह उसके बिस्तर के और नजदीक आ गया। फिर बोला, 'अमर है पार्टी, अमर है। अब हम कैसे और क्यो वाले सवालो को नही उठाएगे। यह तो तुम्हे ज्ञात ही है कि पार्टी अपनी सत्ता को किस प्रकार बनाए रखती है। अब बतलाओ कि हम सत्ता को क्यो अपनाए है ? हमारा क्या उद्देश्य है ? हम ताकत क्यो चाहते है ? बोलो।'

विन्स्टन चुप था।

वह फिर भी नही बोला। क्लान्त हो गया था। उत्साह, पागलो-से उत्साह की

चमक ओ'ब्रायन के चेहरे पर फिर आ गई थी । वह जानता था कि ओ'ब्रायन क्या कहेगा । वह कहेगा, पार्टी ताकत अपने लिए नही बल्कि बहुसख्यको के हित के लिए चाहती है । वह ताकत इसलिए चाहती है कि जनता के सदस्य कमजोर हैं । जो कमजोर हैं, कायर हैं, जो स्वतत्रता की रक्षा नही कर सकते, सत्य को देख नही सकते, वे शासित होने चाहिए । ऐसे लोगो के शासन की समुचित व्यवस्था उन लोगो द्वारा होनी ही चाहिए जो उनसे अधिक बलवान् है । आदमी के सामने दो लक्ष्य है स्वतत्रता और सुख । अधिकाश व्यक्तियो के लिए स्वतत्रता नही सुख जरूरी है । पार्टी सशक्तो के लिए है । उसके सदस्य अपने सुख को बलिदान करते है जिससे अन्य लोगो को सुख मिले । वे अत्याचार तथा शासन कार्य करते है जिससे अन्य लोगो का भला हो । अचानक उसके दिमाग मे यह आया कि जब ओ'ब्रायन यह बाते कहेगा तो विन्स्टन उन पर विश्वास करने लगेगा । ये बाते उसके मुह पर लिखी थी ओ'ब्रायन हर बात जानता है । विन्स्टन से हजार गुना अच्छी तरह ओ'ब्रायन को मालूम था कि दुनिया कैसी है । वह आप भी कैसी बुरी दशा मे रह रहा है । कैसी झूठी बाते गढ के तथा बर्बर कार्य करके पार्टी उन्हे उसी अवस्था में पडा रहने दे रही है । उसने वह सब कुछ समझ लिया था, तोल लिया था । किसी बात से कोई फर्क नही पड़ता था । लक्ष्य सिद्धि के लिए सब कुछ ठीक था । यदि कोई पागल खुद से भी अधिक बुद्धिमान हो तो क्या किया जा सकता है । वह दूसरे के तर्क तो सुन ले लेकिन अपना पागलपन न छोडे तो कोई क्या कर सकता है ?

'हमारे लाभ के लिए ही आप हम पर शासन कर रहे है ।' उसने क्षीण स्वर मे कहा, 'आप समझते है कि आप भी अपना शासन स्वय नही कर सकते और इसलिए··· ।'

दर्द के मारे विन्स्टन की चीख निकल गई । आरम्भ करते ही ओ'ब्रायन ने डायल का लिवर दबा दिया । सुई पैंतीस तक गई होगी ।

'बिल्कुल बेवकूफो का-सा उत्तर दिया है, विन्स्टन तुमने, बिल्कुल बेवकूफो-सा । तुम जैसे आदमी को इस प्रश्न का उत्तर देने की भाषा आनी चाहिए ।'

उसने लिवर छोड दिया और कहा

'अब मै तुम्हे बतलाता हू कि इस प्रश्न का उत्तर किस प्रकार दिया जाना चाहिए । उत्तर यह है । पार्टी अपने लिए सारी ताकत चाहती है । हम दूसरो की भलाई मे कोई दिलचस्पी नही रखते । हमे सत्ता अपने लिए चाहिए । हमे धन,

विलासिता, दीर्घजीवन या सुख कुछ भी नही चाहिए। हमे सत्ता, शक्ति, विशुद्ध शक्ति चाहिए। हम अन्य शासकवर्गो से इन अर्थो मे भिन्न है कि हम जानते है कि हम क्या कर रहे है। और सब वर्ग, वे भी जो हम जैसे लगते है, हमसे भिन्न है। हमारा विचार है कि वे सब कायर और पाखडी थे। जर्मन नाजी और रूसी कम्यूनिस्टो के हथकंडे हमसे अवश्य मिलते-जुलते थे लेकिन उनमे अपने लक्ष्य को पहचानने का साहस नही था। वे यह दिखलाते थे और शायद विश्वास भी करते थे कि उन्होने केवल कुछ समय के लिए ही ताकत अपने हाथ मे ली है। वह भी अनिच्छा से। ज़रा आगे चलकर एक मोड के बाद कोने मे स्वर्ग छिपा है वहा पहुचकर हर आदमी बराबरी का अधिकार पा सकेगा। हर आदमी स्वतत्र होगा। हम इन लोगो की तरह नही है। हम जानते है कि कोई कभी सत्ता को इस दृष्टि से नही हथियाता कि कुछ समय बाद वह उसे छोड देगा। सत्ता और शक्ति साधन नही है, साध्य है। क्रान्ति की रक्षा के लिए तानाशाही जरूरी नही है। दमन का उद्देश्य दमन है और यत्रणा का उद्देश्य यत्रणा है। क्या अब तुम्हारी समझ मे मेरी बात आ गई?'

विन्स्टन ओ'ब्रायन के चेहरे की क्लान्ति देखकर स्तब्ध रह गया। वह पहले भी इतना थका चेहरा देख चुका था। उसके चेहरे से दृढता टपकती थी। वह मासल था। उसमे क्रूरता थी। बुद्धिवादिता भी झलकती थी। उसका अपनी भावनाओ पर अद्भुत सयम था, जिसके सामने वह भी नत था। आखो के नीचे काले निशान थे। गालो की हड्डियो पर त्वचा थी। ओ'ब्रायन उसके ऊपर झुक गया। अपने चेहरे को विन्स्टन के चेहरे के और नज़दीक ले आया और कहने लगा:

'तुम सोच रहे हो, मेरा चेहरा क्लान्त है। उससे वृद्धता प्रकट होती है। तुम सोच रहे हो, मै सत्ता की बाते करता हू, लेकिन अपने शरीर को जर्जर होने से नही रोक पाता। क्या तुम यह नही समझते विन्स्टन, कि आदमी समाज का ठीक उसी प्रकार एक अग है जिस प्रकार शरीर का—कोष। कोष की क्लान्ति, शरीर की स्थित को ही प्रकट करती है। क्या नाखून काटने से तुम मर जाते हो?'

वह बिस्तर से हट गया और जेब मे हाथ डालकर इधर-उधर टहलने लगा।

'हम सत्ता के पुरोहित है,' ओ'ब्रायन कह रहा था, 'वास्तविक शक्ति तो

ईश्वर है। लेकिन इस समय तुम्हारा प्रयोजन केवल सत्ता या शक्ति से ही है। तुम्हारे लिए अब शक्ति का अर्थ भलीभाति समझ लेना आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि शक्ति सामूहिक चीज़ है। पार्टी का यह नारा तो तुम जानते ही हो कि दासता ही स्वतत्रता है। तुमने कभी यह भी सोचा है कि इसका उल्टा भी अर्थ हो सकता है। स्वतत्रता दासता है। अकेला आदमी, स्वतत्र आदमी, हमेशा हरा दिया जाता है। पराजय अनिवार्य है क्योकि हर आदमी की मृत्यु अनिवार्य है जो स्वय आदमी की सबसे बडी हार है। लेकिन यदि वह साहस करके अपना व्यक्तित्व पार्टी मे लय कर दे तो वह भी अमर हो जाएगा। पार्टी तो अनश्वर रहेगी ही। दूसरी बात यह है कि शक्ति का अर्थ है दूसरे व्यक्तियो पर प्रभाव होना। शरीर पर ही नही, बल्कि उनके मस्तिष्को पर भी पूरा काबू होना। भौतिक पदार्थो पर स्वामित्व होना महत्वपूर्ण नही है। हालाकि ससार के भौतिक पदार्थो पर हमारा पूर्ण स्वामित्व है ही।'

एक क्षण के लिए विन्स्टन डायल को भूल गया। उसने उठकर बैठने की पूरी ताकत से कोशिश की। परन्तु उठने की चेष्टा से उसके शरीर मे पीड़ा ही हुई। वह बैठ न सका।

'लेकिन आप सारे भौतिक पदार्थो पर पूर्ण स्वामित्व कैसे प्राप्त कर सकते है?' वह बोल पडा, 'आप गुरुत्वाकर्षण, जलवायु के नियमो तक तो नियत्रित कर नही सकते। इसके अलावा बीमारिया है, दर्द है और मृत्यु है ...।'

ओ'ब्रायन ने उसे हाथ के इशारे से चुप करा दिया। 'हमारा भौतिक पदार्थो पर भी पूरा स्वामित्व इसलिए है क्योकि हमारी मुट्ठी मे लोगो के मस्तिष्क है। वास्तविकता दिमाग में होती है, धीरे-धीरे सीख जाओगे, विन्स्टन। ऐसा कोई काम नही है जो हम न कर सकते हो। हम कुछ भी कर सकते है। मै चाहू तो इस फर्श पर साबुन के बुलबुले की तरह तैर सकता हू। लेकिन मै ऐसा नही चाहता क्योकि पार्टी की यह मर्ज़ी नही है। उन्नीसवी शताब्दी मे प्रकृति के नियमो के विषय में जो धारणाए थी, उनको एकदम छोड दो। हम प्रकृति के नियमो का निर्धारण करते है।'

'नही, आप इस ससार तक के स्वामी नही है। ईस्ट एशिया और यूरेशिया ऐसे देश है जिन पर आपका अधिकार नही है। उन्हे आप अभी तक नही जीत सके है।'

'कोई महत्व नही है, इनका। जब जरूरत होगी हम इन्हे जीत लेगे। यदि जीत भी ले तो हमारी ताकत मे क्या फर्क पडता है ? हम उनके अस्तित्व को अपने यहा के लोगो के लिए समाप्त कर सकते है। ओशनिया खुद एक दुनिया है।'

'लेकिन यह दुनिया स्वय मिट्टी के अलावा कुछ नही है। और आदमी छोटा-सा जीव है, आदमी असहाय है। उसको जन्मे कितने दिन हुए। करोडो वर्ष तक दुनिया मे एक भी आदमी नही था।'

'वाहियात। पृथ्वी भी इतनी ही प्राचीन है, जितने हम। ज्यादा दिन पुरानी कैसे हो सकती है ? बिना मानवीय चेतना के किसी चीज का कोई अस्तित्व नही रहता।'

'लेकिन चट्टानो मे मृत जीवो के ककाल मिले है, बडे-बडे सर्पो की अस्थिया मिली है। वे मनुष्य के पैदा होने के लाखो वर्ष पूर्व पृथ्वी पर थे।'

'विन्स्टन, तुमने उनमे से एक भी अस्थि देखी है ? नही। यह सब उन्नीसवी शताब्दी के जीवशास्त्रियो की कल्पना है। आदमी के पहले कुछ नही था और यदि आदमी का अन्त हो गया तो उसके बाद भी कुछ नही रहेगा। आदमी के बिना कुछ भी नही है।'

'लेकिन सारा ब्रह्माड आदमी से बाहर है। तारो को देखिए। बहुतेरे तारे करोडो प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। वे सदैव हमारी पहुच के बाहर रहेगे।'

'तारे क्या है ? प्रकाश पुज, जो कुछ कीलोमीटर दूर है। हम चाहे तो उन तक भी पहुच सकते है। हम उन्हे मिटा सकते है। पृथ्वी ब्रह्माड का केन्द्र है। सूर्य और तारे उसका चक्कर लगाते है।'

विन्स्टन ने एक और पीडा भरा प्रयत्न किया, जिससे उठ सके। लेकिन वह कुछ बोला नही। परन्तु ओ'ब्रायन इस तरह बोलता गया। जिस तरह उसने अपने मन की आपत्ति कह दी हो।

'कुछ मामलो मे यह बात अवश्य ही सत्य नही है। जब हम समुद्र मे यात्रा करते है तो मार्ग-निर्धारण के लिए या जब ग्रहण की भविष्यवाणी करते है उस समय यह सुविधाजनक होता है कि हम यह मान ले कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और सितारे लाखो-करोडो और अरबो मील दूर है। लेकिन इससे क्या ? क्या हम ज्योतिषशास्त्र के द्वैध सिद्धान्त नही बना सकते ? तारे पास भी हो सकते है और दूर भी ? क्या हमारे गणितज्ञ इतना भी नही कर सकते ? क्या

तुम द्वैध विचार के सिद्धान्त को भूल गए ?'

विन्स्टन बिस्तर में सिमट गया। वह जो कुछ भी कहता था उसका उसे मुहतोड जवाब मिलता था। फिर भी वह जानता था कि उसका खयाल, उसके विचार ही ठीक है। कोई भी चीज जो मनुष्य के दिमाग के बाहर है, उसका कोई अस्तित्व नही है। यह सिद्धान्त गलत है और गलत है तो उसको प्रमाणित करने का कोई तो रास्ता होगा। क्या यह त्रुटि पहले नही प्रमाणित हो चुकी ? इसके लिए तो कुछ नाम भी है। वह भूल रहा था। उसके चेहरे को देखकर ओ'ब्रायन फिर थोडा-सा मुस्कराया और बोला

'विन्स्टन, मै तुमसे कह चुका हू, अध्यात्मवाद में तुम तेज नही हो। जिस शब्द को तुम याद करने का प्रयत्न कर रहे हो, वह है—आत्मा ही ज्ञानवान है—का सिद्धान्त। परन्तु यह सिद्धान्त भिन्न है, उल्टी चीज है। यह सब पथभ्रष्टता है।' उसने अपना स्वर बदल दिया था। 'यथार्थ शक्ति, जिसको प्राप्त करने के लिए हम दिन-रात सतत प्रयत्न कर रहे है, वह भौतिक पदार्थों के स्वामित्व को प्राप्त करने की शक्ति नही है। अपितु वह शक्ति ऐसी है जिससे हम लोगो को मुट्ठी मे रख सके।' वह एक क्षण के लिए रुक गया और इस प्रकार प्रश्न पूछने लगा जैसे कोई अध्यापक किसी प्रतिभाशाली शिक्षार्थी से पूछता है. 'एक आदमी दूसरे पर अपनी शक्ति का प्रयोग किस प्रकार करता है, विन्स्टन ?'

विन्स्टन ने सोचा। इसके बाद बोला, 'उसे कष्ट देकर।'

'बिलकुल ठीक। दूसरे को कष्ट देकर आदमी अपनी शक्ति दूसरे पर प्रदर्शित करता है। आज्ञाकारिता ही पर्याप्त नही है। जब तक वह कष्ट न पाए, तब तक तुम्हें कैसे पता लगेगा कि वह तुम्हारी बात मान रहा है या अपनी ? शक्ति है—कष्ट पहुंचाना और अपमानित करना। शक्ति है—आदमी के दिमाग को चीरफाड देना और फिर दिमाग के उन टुकडो को अपने ढग से सजा लेना। तो अब तुम यह अनुभव कर रहे हो न कि हम किस प्रकार की दुनिया बना रहे है ? यह दुनिया पहले के सुखवादी विचारको की कल्पना से बिल्कुल उल्टी है, यह दुनिया है भय की, धोखे की और गद्दारी की, यंत्रणा की, दमन की और दलितो की। ज्यो-ज्यो यह बढती जाएगी त्यो-त्यो हमारी दुनिया और भी क्रूर होती जाएगी। हम प्रगति करेंगे तो अधिकाधिक पीडा देने की दिशा मे। पुरानी सभ्यताओ का दावा था कि उनकी नीव प्रेम तथा न्याय पर है। हमारी दुनिया की नीव घृणा

है। हमारी दुनिया मे भय, क्रोध, विजय और आत्मपतन के सिवा अन्य कोई मानवीय भावना शेष नही रहेगी। अन्य हर एक चीज़ को हम नष्ट कर देगे। हमने पुरानी आदते छोड दी है और क्रान्ति के पूर्व से ज़िदा है। हमने माता-पिता तथा बच्चो के बीच का सम्बन्ध भग कर दिया है। आदमी-आदमी का रिश्ता तोड दिया है। आदमी और औरत के बीच नाता खत्म कर दिया है। कोई भी व्यक्ति अपने मित्र, बच्चे या पत्नी पर विश्वास नही करता। भविष्य मे न पत्नी होगी और न मित्र। बच्चे माताओ से जन्म के बाद ले लिए जाएगे ठीक उसी तरह जैसे मुर्गी के अडे उठा लिए जाते है। यौन या काम-भावना समाप्त कर दी जाएगी। राशन कार्ड को जिस तरह तारीख डलवाकर नया कराया जाता है उसी तरह सन्तानोत्पत्ति भी वार्षिक क्रिया हो जाएगी। हम शिश्न को भी नष्ट कर देगे। हमारे स्नायुविद् आजकल इसी प्रकार का शोध कर रहे है। पार्टी-भक्ति के सिवा कोई बात शेष नही रह जाएगी। बडे भाई के सिवा कोई किसी से प्रेम नही करेगा। कोई हसेगा नही। हसी तभी आएगी जब आदमी अपने शत्रु को परास्त देखेगा। न कला रह जाएगी और न विज्ञान, न साहित्य। जब हम सर्वान्तर्यामी और सर्वशक्तिशाली होगे तो विज्ञान की क्या ज़रूरत ? खूबसूरती और बदसूरती मे कोई फर्क नही रह जाएगा। कोई जिज्ञासा नही रह जाएगी और जीवन की आवश्यकता भी नही रहेगी। सभी शारीरिक सुखो को नष्ट कर दिया जाएगा। परन्तु शक्ति का भय बराबर रहेगा—इस बात को मत भूलना, विन्स्टन, यह भय बराबर बढता जाएगा। हर क्षण विजय की खुशी होती रहेगी। असहाय शत्रु को अपनी टागो मे दबा देख हम हमेशा हर्षित होते रहेगे। भविष्य का चित्र यह है—'एक जूता हमेशा के लिए आदमी के मुह पर रखा हुआ है।'

ओ'ब्रायन रुक गया, जैसे वह विन्स्टन को बोलने का अवसर देना चाहता था। विन्स्टन बिस्तर मे और दब-सा गया। वह कुछ भी नही कह सकता था। उसका हृदय बर्फ की भाति जम गया था। ओ'ब्रायन का भाषण जारी था :

'और याद रखो, यह स्थिति शाश्वत रहेगी। मुह हमेशा कुचला जाता रहेगा। ईश्वरद्रोही, समाज का शत्रु, हमेशा रहेगा। इसे हमेशा हराया जाता रहेगा और बार-बार अपमानित किया जाता रहेगा। जो यातनाए तुमने,भोगी है, वे हमेशा जारी रहेगी और यातनाओ की मात्रा बढती ही जाएगी। षड्यत्र, गद्दारी, गिर-फ्तारिया, यत्रणा, फासिया और आदमियो का सहसा गायब हो जाना बराबर जारी

रहेगा। आतक और विजय की यह दुनिया होगी। पार्टी ज्यो-ज्यो शक्तिशाली होती जाएगी त्यो-त्यो निरकुश शासन बढता जाएगा। गोल्डस्टीन और उसकी बाते बराबर बनी रहेगी। हर दिन, हर क्षण, विरोधी हराए जाएगे, बदनाम किए जाएगे, उनकी हसी उडाई जाएगी, उन पर थूका जाएगा और फिर भी वे ज़िन्दा रहेगे। जो नाटक मैने सात साल तक तुम्हारे साथ खेला है, बार-बार खेला जाएगा, पीढिया गुजरती जाएगी और उनके साथ यह नाटक भी अधिकाधिक सूक्ष्म और गुप्त रूप से खेला जाता रहेगा। हमेशा कोई न कोई द्रोही हमसे दया की भिक्षा मांगता रहेगा और पीडा से तडपता रहेगा। उसमे ज़रा भी साहस नही रहेगा। उसे देखकर ठोकर मारने की तबियत होगी और वह स्वेच्छा से घिसटता हुआ हमारे कदमो को छूने के लिए बढेगा। यह दुनिया है जिसका हम निर्माण कर रहे है। ऐसी दुनिया जिसमे एक के बाद दूसरी विजय की जयमाला हमारे गले मे पडती जाएगी और हम अधिक से अधिक और पहले से अधिक शक्ति का प्रयोग करते जाएगे। तुम शायद स्वय अनुभव कर रहे हो कि किस प्रकार की दुनिया भविष्य मे होगी। लेकिन अन्त मे न केवल इस दुनिया के सबध मे तुम ज्ञान ही प्राप्त कर लोगे बल्कि तुम उसे स्वीकार करोगे, सिर-माथे लगाओगे, उसका स्वागत करोगे और उसके अंग बन जाओगे।'

विन्स्टन अब कुछ सभल गया था। उसने क्षीण स्वर से कहा, 'नहीं, तुम ऐसा नही कर सकते।'

'क्यो ?'

'उसमे जीवनतत्व ही नही होगा। वह अपने आप भरभरा कर गिर पड़ेगी। वह आत्महत्या कर लेगी।'

'वाहियात। तुम्हारा मतलब है कि घृणा प्रेम से बढ-चढकर है। क्यो ? यदि हो तो भी क्या फर्क पडता है ? और मान लो कि हम स्वय जल्दी से जल्दी मर जाने को प्रस्तुत हो ? मान लो कि हम मानव-जीवन पर इतना कार्यभार लाद दे कि हर आदमी तीस वर्ष की अवस्था मे पागल हो जाए। तो भी इससे क्या फर्क पडता है ? क्या तुम्हारी समझ मे यह बात नही आती कि व्यक्ति की मौत समाज की मौत नही है ? पार्टी शाश्वत है।'

यथापूर्व, विन्स्टन इस कण्ठ के सम्मुख पुन. असहाय हो गया था। दूसरे उसे भय था कि यदि वह बहस करता गया तो ओ'ब्रायन डायल का लिवर पुनः दबा

देगा। फिर भी उससे चुप नही रहा जा रहा था। धीरे-धीरे बिना किसी तर्क के सहारे, केवल ओ'ब्रायन के वक्तव्य से घबडाकर, विन्स्टन फिर बोला।

'मै नही जानता—न मै परवाह करता हू। बस इतना जानता हू कि आप अपने कार्य मे निश्चय ही असफल होगे। कोई आपको हराएगा। जीवन आपको परास्त करेगा।'

'विन्स्टन, हर स्तर पर जीवन हमारे नियत्रण मे है। हमारी मुट्ठी में है। शायद तुम सोच रहे हो कि मानव-स्वभाव नाम की कोई चीज़ है और वह हमारे खिलाफ एक न एक दिन सिर अवश्य उठाएगी। लेकिन तुम भूलते हो। मानव-स्वभाव के निर्माता भी तो हम ही है। या शायद तुम सोच रहे हो कि मजदूर या गुलाम एक न एक दिन हमारे खिलाफ बगावत कर देगे। यह बात अपने दिमाग से निकाल दो। वे पशुओ की तरह असहाय है। पार्टी ही मानवता है। और सब इसके बाहर है। इसलिए जो पार्टी से बाहर है, उनसे हमारा कोई प्रयोजन नही। उनकी हम फिक्र ही नही करते।'

'मै भी परवाह नही करता। लेकिन वे ही लोग एक दिन तुम्हे नीचा दिखलाएंगे। परास्त कर देगे। एक न एक दिन वे समझ जाएगे कि तुम्हारे क्या इरादे है। और जिस दिन उन्होने तुम्हारे इरादे समझ लिए, वे बस उसी दिन तुम्हारे टुकडे-टुकड़े करके रख देंगे।'

'क्या ऐसा होने का कोई प्रमाण तुम्हारे पास है ? या कोई कारण बता सकते हो, जिसकी वजह से ऐसा होना जरूरी है ?'

'कुछ नही। परन्तु जो कुछ मैने कहा है, अपने विश्वास के आधार पर कहा है। मै जानता हू, तुम हारोगे, पार्टी हारेगी। कोई ऐसी चीज़, आत्मा या सिद्धात इसी ब्रह्माण्ड में है, जिसे तुम जीत नही सकते।'

'क्या ईश्वर मे तुम्हारा विश्वास है, जो हराएगा ?'

'मै नही जानता। शायद मानव की आत्मा।'

'और तुम अपने को मानव समझते हो ?'

'हा।'

'अगर तुम मानव हो विन्स्टन, तो समझ लो तुम अतिम मानव हो। तुम्हारी जाति समाप्त हुई। हम तुम्हारे उत्तराधिकारी है। यह समझ लो कि तुम बिलकुल अकेले हो। तुम इतिहास में नही हो, तुम्हारा कोई अस्तित्व नही है।' ओ'ब्रायन

की बात कहने का ढग और कठोर और क्रुद्ध हो गया था, 'और तुम अपने आपको हमसे अधिक नैतिकता वाला समझते हो, हमें झूठा और निर्दय मानते हो ?'

'हा, मैं खुद को तुमसे ऊचा समझता हू ।' ओ'ब्रायन चुप हो गया । नही बोला । अन्य दो आवाजे बोल रही थी । विन्स्टन ने सुना उनमें से एक उसकी है । यह ओ'ब्रायन तथा उसकी बातचीत का टेप रिकर्ड था । यह बातचीत वह थी, जिस रात ओ'ब्रायन ने उसे ब्रदरहुड का सदस्य बनाया था । इसमें उसने सुना कि वह झूठ बोलने का, चोरी करने का, वेश्यावृत्ति को प्रोत्साहित करने का, यौन रोग फैलाने का तथा बच्चो के मुह पर तेजाब फेकने का वायदा कर रहा है । ओ'ब्रायन अधीरता से ऐसा इशारा कर रहा था जैसे यह टेप रिकर्ड बजाने की जरूरत ही नही थी । फिर उसने स्विच बद कर दिया । आवाजें रुक गईं ।

'बिस्तर से उठ पडो !' ओ'ब्रायन ने कहा ।

जिन पट्टियो से वह बधा था, वे खुल गईं । विन्स्टन धीरे से फर्श पर उतरा और लडखडाता हुआ खडा हो गया ।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुम अन्तिम मानव हो । तुम मानव की आत्मा के रक्षक हो । अब तुम स्वयं देखोगे कि तुम क्या हो । अपने कपडे उतार डालो ।'

विन्स्टन ने वह तनी खोल दी जिससे उसके कपडे बधे थे । उसे पता नही वे कब के फट चुके थे । उसे याद नही था कि गिरफ्तारी के बाद उसने कभी पूरे कपडे उतारे हो । वर्दी के नीचे कुछ पीले और फटे चिथडे थे—वे उसकी बनियान और अण्डरवियर के टुकडे थे । कपड़े उतारने के बाद उसने देखा कि कमरे के एक कोने मे तीन बडे शीशे रखे हैं । वह उनकी तरफ बढा । इसके बाद रुक गया । रोकते-रोकते उसके मुह से चीख निकल गई ।

'आगे बढ जाओ', ओ'ब्रायन ने कहा, 'दोनो बगल वाले शीशो के बीच में खड़े हो जाओ जिससे यह भी देख सको, कि तुम्हारी दाई-बाईं तरफ का क्या हाल है ।'

वह डर जाने की वजह से रुक गया था । झुकी कमर, सफेद रग का नर-ककाल उसकी तरफ बढा आ रहा था । उसकी शकल बडी भयानक थी । फिर भी वह जान गया कि यह शकल उसी की है । वह शीशो की तरफ और बढ गया । उसका चेहरा नीचे की तरफ हो गया था । इसका कारण यह था कि उसकी कमर झुक गई थी । उसके सामने ऐसी शकल थी जिसने बरसो से आदमी का चेहरा नही देखा था । वर्षों जेल मे गुजर गए थे । माथा झुका और काला पड गया था । और

सिर गजा हो गया था। नाक टेढी हो गई थी। गाल की हड्डिया टेढी-मेढी हो गई थी। मुह खिच गया था। निश्चय ही वह उसका चेहरा था। लेकिन उसका चेहरा उसके अन्त करण से भी अधिक बदल गया था। उस पर वे भाव प्रकट नही होते थे, जो वह सोचता था। वह थोडा-थोडा गजा भी हो गया था। पहले उसे लगा कि उसके सारे अग सफेद हो गए है। परन्तु उसकी खोपडी के बाल ही सफेद हो गए थे। हाथो और मुह को छोड़कर उसके शरीर पर सर्वत्र मैल भरा था। मैल के नीचे लाल घावो के निशान थे। टखने के नीचे नस वाला फोडा खूब फूल गया था। लाल हो गया था और उस पर से खाल उधड-उधडकर गिरने को थी। लेकिन सबसे भयानक बात यह थी कि उसके शरीर मे खून ही नही था। पसलियो का दायरा तग हो गया था। ठीक उसी तरह जिस तरह अस्थि-पजर का हो जाता है। पैर सूख गए थे। घुटने जाघो से अधिक मोटे दिखलाई पडते थे। वह समझ गया कि ओ'ब्रायन ने उससे बगल मे क्या देखने को कहा था। रीढ की हड्डी बुरी तरह टेढी हो गई थी। वह तो उसका टेढापन देखकर आश्चर्य मे पड़ गया। पतले कधे आगे की ओर बढकर झुक गए थे और छाती अन्दर की ओर धंस गई थी। गरदन सिर के बोझ से अन्दर झुकी जा रही थी। यदि वह किसी और की शकल होती तो वह कह देता कि यह कोई साठ साल का बुड्ढा आदमी है, जो किसी बहुत ही बुरे रोग मे फंसा है।

'कभी-कभी तुम मन ही मन सोचते हो', ओ'ब्रायन कह रहा था, 'कि मेरी शकल, अन्तरग पार्टी के सदस्य की शकल, से बुढापा और क्लान्ति टपकती है। अपने चेहरे के बारे मे तुम्हारा क्या खयाल है ?'

उसने विन्स्टन का कधा पकडकर घुमा दिया। अब ओ'ब्रायन का चेहरा उसके सामने था।

'अपनी हालत देखो।' उसने कहा, 'अपने शरीर पर जमे मैल को देखो। अपने गन्दे धूल भरे पजो को देखो। पैर के घृणास्पद फोडे को देखो। तुम जानते हो कि तुमसे भेड की तरह बदबू आ रही है, शायद तुम्हे अब अपने शरीर से बदबू आती ही नही। शरीर मे खून तो रह ही नही गया है। दीखता है ? एक हाथ से मै तुम्हारी पूरी गरदन पकड सकता हू। मै गाजर की तरह तुम्हारी गरदन उखाड-कर फेंक सकता हू। अब तक, जब से तुम गिरफ्तार किये गए हो, तुम्हारा वजन पच्चीस किलोग्राम घट गया है। तुम्हारे बाल मेरी मुट्ठी मे आते ही उखड जाते है।

देखो।' उसने थोडे-से बाल हाथ से पकडकर उखाड दिए। 'अपना मुह खोलो। नौ, दस, ग्यारह, दात रह गए है। जब तुम आए थे, तुम्हारे मुह मे कितने दात थे? जो रह गए है वे भी गिरे जा रहे है। देखो।'

उसने सामने के दात अपने अगूठे और उगली से पकड लिए। दर्द की एक लहर विन्स्टन के जबड़े मे दौड गई। ओ'ब्रायन ने एक दान उखाडकर जमीन पर फेंक दिया।

'तुम सड गए हो', ओ'ब्रायन कह रहा था, 'तुम टुकडे-टुकडे होकर गिर रहे हो। क्या हो तुम, कूडे का ढेर। अब घूम जाओ और फिर शीशे की तरफ देखो। क्या तुम्हे वह चीज अपने चेहरे मे दिखलाई पडती है? यही आखिरी आदमी है। यदि तुम मानव हो तो समझ लो यही मानवता है। अब अपने कपडे पहन लो।'

विन्स्टन ने धीरे-धीरे कपडे पहनने शुरू कर दिए। अभी तक उसने यह नही सोचा था कि वह कितना निर्बल और क्षीण हो गया है। केवल एक ही बात उसके दिमाग मे थी। तो इसका मतलब है कि उसे यहा उसकी कल्पना से अधिक समय गुजर गया। अपने नष्ट-भ्रष्ट शरीर का खयाल कर उसे अपने ऊपर तरस आने लगा। इसके पहले कि वह अपने आपको सभाल सके वह बिस्तर के बगल मे पडे एक स्टूल पर बैठ गया, और रोने लगा। वह अपनी बदसूरती, मर्यादाहीनता समझता था। वह मुट्ठी भर हड्डियो का ढाचा था जो उस तेज सफेद प्रकाश मे रो रहा था। ओ'ब्रायन ने उसके कधे पर हाथ रखा। उसमे दया थी।

'ऐसा हमेशा नही रहेगा', उसने कहा, 'तुम जब चाहो, हमसे बच सकते हो। हर बात तुम पर निर्भर करती है।'

'तुमने ऐसा किया है', विन्स्टन सिसकी भर रहा था, 'तुम्ही ने मेरी यह हालत की है।'

'नही, विन्स्टन। तुमने अपनी यह हालत खुद बना रखी है। तुमने जब पार्टी के विरुद्ध सोचा तभी तुमने यह स्थिति स्वीकार कर ली थी। यह सब पहले कदम मे ही निहित था। कोई भी ऐसी बात नही हुई जिसकी कल्पना तुमने पहले न कर रखी हो।'

वह कुछ रुका और फिर बोला

'हमने तुम्हे पीटा है, विन्स्टन। हमने तुम्हे तोड दिया है। तुमने देख लिया कि तुम्हारे शरीर की क्या हालत है। लेकिन तुम्हारा दिमाग अब भी उसी दशा

मे है। मै नही समझता कि तुममे अब भी अभिमान शेष रहा है। तुम्हे ठोकरें मारी गई है। हण्टर लगाए गए है और तुम्हारा अपमान किया गया है। तुम पीडा से चिल्लाए हो, दर्द से तडपते हुए फर्श पर अपनी उलटी तथा खून मे लोटे हो। तुमने रो-रोकर दया की भीख मागी है, तुमने हर एक के साथ गद्दारी की है। क्या तुम एक भी ऐसी बात सोच सकते हो, जो अपमानास्पद हो और तुमने न की हो ?'

विन्स्टन का रोना थम गया था। आसू अब भी झड रहे थे। उसने ओ'ब्रायन की ओर देखा।

'मैंने जूलिया को तो धोखा नही दिया।' विन्स्टन बोला।

ओ'ब्रायन ने कुछ सोचते हुए उसकी ओर देखा। 'नही', वह बोला, 'नही। तुमने यह बात बिलकुल सच कही। तुमने जूलिया को धोखा नही दिया।'

विन्स्टन का हृदय ओ'ब्रायन के प्रति श्रद्धा से फिर भर गया। चाहे कुछ हो, उसकी श्रद्धा ओ'ब्रायन के प्रति नही घटती थी। कितना बुद्धिमान है यह व्यक्ति। हर बात को तुरन्त समझ लेता है। कोई भी उससे कह देता कि तुमने जूलिया को भी धोखा दिया है। क्योकि ऐसी कौन-सी बात है जो यत्रणा देकर उससे नही उगलवा ली गई थी ? उसने सब कुछ बता दिया था। उसकी आदतो के बारे मे, उसके चरित्र, उसके बीते जीवन के बारे में—छोटी-छोटी बाते भी उससे कहलवा ली गई थी। उसने जो कहा, उत्तर मे जूलिया ने जो कहा वह सब बता दिया था। चोर बाजार के खाने की चीजो के संबध मे, कार्यभार के सबध मे, पार्टी के विरुद्ध निरर्थक षड्यत्र के संबध मे जो बाते हुई थी वे भी उसने बता दी थी। और फिर भी उसने जूलिया के साथ धोखा नही किया था। उसने उससे प्रेम करना नही छोडा था। ओ'ब्रायन ने बिना किसी सफाई के उसका असली मतलब समझ लिया था।

'बतलाओ', उसने कहा, 'मुझे कब गोली मारी जाएगी ?'

'काफी समय लग सकता है', ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुम्हारा मामला बडा कठिन है। लेकिन आशा मत छोडो। देर-सवेर यहा सबका इलाज हो जाता है। अन्त मे हम तुम्हे अवश्य ही गोली मार देगे।'

अब वह पहले से बहुत अच्छा था। यदि दिनो की बात की जा सके तो वह हर रोज तगडा होता जा रहा था।

कमरे मे धवल प्रकाश वैसा ही था। सू-सू की आवाज भी कोठरी मे वैसी ही आती जा रही थी। लेकिन वह अन्य लोगो की अपेक्षा आराम से था। लकडी के तख्त पर तकिया और गद्दा था। उसे नहलाया जाता था। टिन के टब में उसे अपने आप भी वे लोग उसे नहाने देते थे। नहाने के लिए गरम पानी भी दिया जाता था। उसे नए बनियान और अण्डरवियर तथा कपडे दिए गए थे। उसके टखने के फोडे को मरहम लगाकर पट्टी से बाध दिया गया था। जिससे उसे बडा आराम था। उसके बाकी दात भी उखाड दिए गए थे और नए नकली दात दे दिए गए थे।

सप्ताह गुजर गए, महीने गुजर गए। समय का कुछ हिसाब रखना भी सभव हो गया था। नियमित रूप से ठीक समय पर उसे खाना दिया जाता था। शायद चौबीस घण्टो में उसे तीन बार भोजन दिया जाता था। वह कभी सोचता था कि उसे रात मे खाने को दिया जाता है या दिन मे। खाना, आश्चर्य था, बडा अच्छा था। हर तीसरे खाने के साथ उसे गोश्त मिलता था। एक बार उसे सिगरेट का पैकेट भी दिया गया। उसके पास दियासलाई नही थी। लेकिन जो सिपाही खाना लेकर आते थे, वे बोलते बिलकुल नही थे। वे ही उसकी सिगरेट जला देते थे। पहले उसे सिगरेट पीने में कठिनाई हुई। लेकिन वह कोशिश करता रहा। वह पैकेट काफी समय चला। वह हर खाने के बाद आधी सिगरेट पीता था।

उसे एक सफेद स्लेट और पेंसिल भी दी गई थी। पहले उसने उसका कोई उपयोग नही किया। वह जागता होता तो भी निष्क्रिय पडा रहता। कभी तो वह खाना खाकर बिस्तर पर लेटता तो बिना हिले उस समय तक लेटा रहता जब तक अगले खाने का वक्त नही हो जाता। कभी वह सो जाता, कभी वह दिन मे सपने देखता। दिवास्वप्नो मे उसे आखे खोलना पसन्द नही आता। तेज रोशनी की ओर चेहरा करके उसकी सोने की आदत पड गई थी। इसमे कोई भी अन्तर नही पडता। उसे लम्बे-लम्बे सपने लगातार दिखलाई पडते थे। वह स्वर्णलोक मे पहुच जाता था। वह कभी धूप मे फैले खण्डहरो मे बैठा होता था। कभी मा

के साथ, कभी जूलिया के, तो कभी ओ'ब्रायन के साथ । वे कुछ करते नही थे। केवल धूप मे बैठे रहते और शान्ति से बातचीत करते । इसी तरह के विचार जागने पर उसके दिमाग मे होते थे । अब बुद्धिपूर्वक सोचने की उसकी शक्ति लुप्त हो गई थी । अब उसको पीडा भी नही थी । वह एकान्त से तग नही होता था । उसमे बातचीत करने की कोई इच्छा नही थी । केवल अकेला रहे । कोई मारे-पीटे नही, प्रश्न न पूछे, खाने को पेटभर मिले और साफ-सुथरा रह सके, वह इतने से ही पूर्ण सन्तुष्ट था ।

धीरे-धीरे उसे नीद कम आने लगी । परन्तु फिर भी उसका बिस्तर से उठने को जी नही करता । वह चुपचाप पडा रहता था । कभी अपनी बाहो पर हाथ फेर-कर बार-बार देखता कि उन पर मास चढ रहा है या नही । अन्त मे उसे निश्चय हो गया कि वह मोटा हो रहा है । घुटनो से जाघे अधिक मोटी हो गई थी । फिर उसने नियमित रूप से व्यायाम शुरू कर दिया । वह कुछ दिनो बाद तीन किलो-मीटर तक चल सकता है, यह कमरे मे टहलकर उसने अनुमान कर लिया था । उसके झुके हुए कधे सीधे हो गए थे । उसने और कठिन व्यायाम शुरू करने चाहे । लेकिन उसे पता लगा कि वह उन्हे नही कर सकता था । उसे लज्जा भी आई और आश्चर्य भी हुआ । वह ज्यादा दूर चल नही सकता था । वह एक हाथ की दूरी पर रखा स्टूल पकड नही सकता था । वह एक पैर पर खडा तक नही हो सकता था, क्योकि ऐसा करते ही वह गिर पडता था । वह पजो के बल बैठकर उठने की कोशिश करता तो उसकी जाघो मे बडा दर्द होता और बडी कोशिश के बाद वह खडा हो पाता । वह पेट के बल लेट जाता और हाथो के सहारे उठने की कोशिश करता तो वह अपना वजन सभाल नही सकता था । वह इच भर भी अपने आपको नही उठा सकता था । कुछ दिन के भोजन के बाद तथा कुछ और ताकत आ जाने पर सभव था वह यह भी करने लगे । वह सोचता था कि एक वक्त आएगा जब वह दौड सकेगा । उसे अब अपने शरीर पर गर्व होने लगा था । उसे विश्वास होता जाता था कि उसका चेहरा अब पहले जैसा होता जा रहा था । हा, सिर पर बाल जरूर नही रह गए थे । वह गजा था ।

उसकी मानसिक क्रियाशीलता मे वृद्धि हो रही थी । वह तख्त के बिस्तर पर दीवार के सहारे बैठ जाता और स्लेट अपने घुटने पर लेता । इस प्रकार वह अपने आपको पुन शिक्षा देने का प्रयत्न करता ।

उसने सीख लिया था, यह तो सब मानते थे। सच तो यह है कि उसने अपनी इच्छा के पूर्व ही शिक्षा पा ली थी। जिस समय से वह प्रेममत्रालय मे लाया गया था—और हा, जिस क्षण मे भी जब वह जूलिया के साथ उस कमरे में गिरफ्तार किया गया था और टेलीस्क्रीन की आज्ञाओ का असहाय की भाति पालन कर रहा था उस समय भी उसने यह अनुभव कर लिया था कि पार्टी की शक्ति से लोहा लेना कितना बचपना है। वह जान गया था कि विचार-पुलिस सात वर्ष से उसे देख रही थी ठीक उसी तरह जिस तरह दूरबीन से कोई सुपारी को देखता है। कोई भी ऐसा काम नही था, कोई भी ऐसा ज़ोर से बोला गया शब्द नही था, जो उनकी निगाह या कानो से छिपा रहा हो। उन्होने उसके हर विचार को जान लिया था। जो सफेद धूलकण उसने अपनी डायरी पर रख दिया था, वह भी डायरी पढने के बाद यथास्थान रख दिया गया था। उन्होने टेप रिकर्ड बजाकर दिखा दिए थे, तस्वीरे दिखा दी थी। कुछ चित्र जूलिया के साथ उसके थे। हा, वह भी! वह पार्टी से टक्कर नही ले सकता था। दूसरे, पार्टी का विचार ठीक था। शाश्वत और सामूहिक मस्तिष्क किस प्रकार गलती कर सकता है? ऐसे कौने-से भौतिक प्रतिमान हैं जिनसे कोई उनकी गलती पकड सकता था? मानसिक स्वस्थता आशिक है। यह मामला तो केवल यह सीख लेने का है कि वे क्या चाहते हैं। जो चाहे वही किया जाए। केवल···

उसके हाथ मे पेंसिल बड़ी मोटी और अजब-सी लग रही थी। वह उन विचारों को लिखने लगा जो उस समय उसके दिमाग मे आ रहे थे। उसने बडे-बडे शब्दो मे लिखा

'दासता ही स्वतत्रता है।'

इसके बाद बिना रुके उसने लिखा

'दो और दो पाच होते है।'

वह थोडा-सा रुक गया। उसका दिमाग किसी चीज़ से बच रहा था। इस-लिए वह एकाग्रतापूर्वक नही लिख पा रहा था। वह जानता था कि आगे क्या लिखेगा, परन्तु उसे याद नही आ रहा था। जब याद आया तो वह यह था और उसने इसको लिख भी दिया।

'ईश्वर ही शक्ति है।'

उसने हर बात स्वीकार कर ली थी। अतीत परिवर्तनीय था। अतीत कभी

बदला नही गया। ओशनिया का ईस्ट एशिया से युद्ध चल रहा था। हमेशा ही दोनो के बीच लडाई रही थी। जोन्स, आारोनसन और रदरफोर्ड पर जो अभियोग लगाए गए थे, वे सच थे। उसने ऐसी कोई तसवीर नही देखी जिससे उनकी निर्दोपिता सिद्ध होती हो। ऐसी तसवीर कभी थी ही नही। यह उसके अपने दिमाग की कल्पना मात्र थी। उसे भिन्न बाते याद थी। लेकिन वे गलत थी। वह अपने आपको धोखा देने की चाल थी। यह सब कितना आसान था। केवल आत्मसमर्पण कर दो और बाकी बाते स्वय हो जाएगी। यह एक ऐसी धारा मे तैरने के समान था कि आप चाहे कितना आगे तैरें, वह आपको पीछे ही घसीटेगी, आगे नही बढने देगी। और इसके बाद आप अकस्मात् धाराप्रवाह के अनुकूल हो जाएं और उसके साथ ही बहने लगें। अपने रुख को बदलने के सिवा और कुछ भी नही करना था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि आखिर उसने विद्रोह किया ही क्यो, हर चीज आसान थी केवल—' कुछ भी सच हो सकता था। प्रकृति के तथाकथित नियम भी वाहियात है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धान्त सच नही है। ओ'ब्रायन कहता था कि यदि वह चाहे तो साबुन के बुलबुले की तरह तैर सकता है। यदि वह भी सोचने लगे कि वह तैर रहा है और यह मान ले किं देख रहा है तो वह सचमुच तैरने लगेगा। तभी उसके दिमाग में खयाल आया, ऐसा हो नही सकता। हम केवल इसकी कल्पना मात्र ही करेंगे। परन्तु उसने यह विचार तुरन्त दबा दिया। विरोधाभास स्पष्ट था। इसका मतलब यह था कि कही न कही ऐसा ससार है, अन्दर या बाहर जहा यथार्थ बातें ही होती हैं। लेकिन ऐसी दुनिया कैसे हो सकती है? हमे अपने मस्तिष्क के अलावा अन्य किस चीज का ज्ञान है? लेकिन जो सब समझ जाए वही बात समझो, होती है। वही सत्य है।

शीघ्र ही उसने इस शका को अपने दिमाग से निकाल दिया। अब पुन इस शंका से उसे कोई खतरा नही था। उसने यह भी अनुभव किया कि उसके दिमाग मे यह शका उत्पन्न ही नही होनी चाहिए थी। जहा भी खतरनाक विचार आए दिमाग को सोचना एकदम बद कर देना चाहिए। यह प्रक्रिया स्वयमेव होनी चाहिए। नई भाषा मे इस प्रक्रिया का नाम अपराध रोकने की प्रक्रिया था।

वह इस प्रक्रिया का अभ्यास करने लगा। उने अपने सामने प्रस्ताव रखा कि पार्टी कहती है कि दुनिया चपटी है। पार्टी कहती है कि बर्फ पानी से भारी है। इसके बाद उसने कल्पना की कि इस कथन के विरुद्ध जो भी तर्क दिए जाएगे,

वह उनको समझेगा ही नही। यह आसान नही था। इसके लिए बडी तर्क शक्ति और साधन समझना अपेक्षित थी। गणित की ऐसी समस्याए जैसे दो और दो पाच होते है उसकी समझ से परे थी। इसमे मानसिक कलाबाजी की ज़रूरत थी। अपनी तर्क शक्ति के उचित और पार्टी के अनुकूल प्रयोग करने की आवश्यकता थी। बेवकूफी की भी जरूरत थी और बुद्धिमानी की भी। दोनो का पाना मुश्किल था।

इस बीच वह लगातार यह भी सोचता जा रहा था कि वे कब उसे गोली मारेंगे। ओ'ब्रायन ने कहा था, 'हर बात तुम पर निर्भर करती थी।' लेकिन वह जानता था कि ऐसा कोई कार्य नही है, जिसे वह जान-बूझकर करे और फिर उसकी वजह से मौत का दिन निकट ला सके। अब से दस मिनट बाद भी उसे गोली मारी जा सकती थी और दस साल बाद भी। वे उसे वर्षों जेल में एकान्त-वास करा सकते थे। वे श्रमशिविर मे भी भेज सकते थे। वे उसे कुछ समय के के लिए रिहा भी कर सकते थे। ऐसा कभी-कभी होता भी था। यह भी सभव है कि गोली मारे जाने के बाद गिरफ्तारी, मुकदमे, इकबाली बयान आदि का नाटक फिर नए सिरे से खेला जाए। इतना निश्चित था कि अनुमानित समय पर मौत कभी नही आएगी। एक परम्परा थी, जो किसी ने बतलाई नही थी, लेकिन हर एक को मालूम था कि वे हमेशा पीछे से गोली मारते थे, बिना चेतावनी के, उस समय जब आप बरामदे में चल रहे हो या एक कोठरी से दूसरी मे ले जाए जा रहे हो।

एक दिन—लेकिन यह कहना ठीक नही था। शायद आधी रात को, उसे अजीब स्वप्न दिखलाई पडा। वह एक बरामदे मे टहलता जा रहा था, गोली लगने का इन्तजार करते हुए। वह जान रहा था, कि उसे अगले ही क्षण गोली मारी जाने वाली है। हर चीज़ तय हो गई है। कोई सदेह नही, कोई तर्क नही, कोई पीडा नही और कोई भय नही था। उसका शरीर स्वस्थ था। वह खुशी-खुशी धूप मे टहल रहा था। वह प्रेममंत्रालय के बद बरामदे मे नही था। सडक कोई एक किलोमीटर चौड़ी थी। वह स्वर्णलोक मे था। वह एक मैदान में खरगोश के पैरो के निशान के साथ चल रहा था। उसके पैरो के नीचे मुलायम घास थी। इधर-उधर वृक्ष थे जो धीरे-धीरे हिल रहे थे। दूरी पर पेडो के झुरमुट मे कही तालाब छिपा था।

अकस्मात् वह जाग गया। उसकी कमर पसीने-पसीने हो गई थी। वह जोरो से चिल्ला रहा था

'जूलिया, जूलिया। प्यारी जूलिया।'

एक क्षण के लिए उसे ऐसा लगा कि जूलिया बिलकुल उसके सामने खडी है। वह केवल उसके समीप ही नही बल्कि उसे ऐसा लगा वह उसमे समाई हुई है। वह उसकी त्वचा मे थी। अकस्मात् जूलिया के लिए उसके हृदय मे ऐसा प्रेम उमड आया, जैसा उस समय भी नही उमडा था जब वे लोग साक्षात् आमने-सामने थे और स्वतत्र थे। उसे ऐसा भी लग रहा था कि वह कही न कही जीवित है और जूलिया को उसकी सहायता की आवश्यकता है।

वह बिस्तर पर पीठ के बल लेटा हुआ अपने को सभाल रहा था। उसने यह क्या किया? इस मूर्खता से उसने अपने जेल जीवन को कितना और बढा लिया?

अब अगले ही क्षण उसे जूतो की आहट सुनाई देगी। इस चिल्लाहट द्वारा जो अपराध बन पडा था, उसका दण्ड दिए बिना वे उसे नही छोडेगे। यदि उन्हे नही मालूम हुआ होगा तो अब मालूम पड जाएगा कि वही समझौता भग कर रहा है। वह पार्टी की आज्ञा का पालन कर रहा था। लेकिन वह पार्टी से अब भी घृणा करता था। पहले भी उसमे विद्रोही मस्तिष्क को पूर्ण आज्ञाकारिता के छद्मवेष मे छिपा रखा था। अब वह एक कदम और पीछे चला गया था। वह चाहता था कि दिखलाने के लिए वह आत्मसमर्पण कर दे किन्तु विद्रोह को अपने अन्तरमानस मे गुप्त ही रखे। वह जानता था कि वह गलती कर रहा है और गलती पर ही अडा रहना चाहता है। वे समझ जाएगे—ओ'ब्रायन भी इस बात को समझ लेगा।

अब सब कुछ फिर शुरू से होगा। उसने मुह पर हाथ फेरा और अपने नए नाक नक्शे को समझने की कोशिश की। गालो मे अब भी गहरे गड्ढे थे। गालो की हड्डिया निकली हुई थी। नाक करीब-करीब चपटी हो गई थी। इसके अलावा अब उसके सारे दात नकली थे। चेहरे को बिना देखें यह बडा कठिन था कि उस पर हृदय के भाव ही प्रकट न हो पाएं। और किसी भी दशा मे केवल बाह्य चेहरे के भावों पर ही नियत्रण रखना पर्याप्त नही था। वह पहली बार अनुभव कर रहा था कि यदि कोई बात गुप्त रखनी हो तो उसे अपने आपसे भी छिपाकर रखो। यह तो जानो कि वह है लेकिन उसे चेतन मस्तिष्क मे कभी न आने दो। आगे

से उसे ठीक बात सोचनी ही नही, उसे ठीक बात अनुभव भी करनी चाहिए और सही बात का ही सपना भी देखना चाहिए। उसे पार्टी के प्रति अपनी घृणा को अपने आप से, अर्थात् चेतन मस्तिष्क से बिलकुल अलग रखना चाहिए, जिससे वह उससे असबद्ध भी रह सके।

एक दिन वे उसे गोली मारने का फैसला कर लेगे। यह तो कोई नही कह सकता कि वह कौन-सा दिन होगा लेकिन कुछ सेकेड पहले यह भाप लेना कठिन न होगा। हमेशा पीछे से गोली मारी जाती है, बद बरामदे मे चलते समय। दस सेकेड भी काफी होगे। बस इतने समय मे ही उसके हृदय का विचार-जगत् बदल सकता। और तब अकस्मात्, निश्शब्द, बिना कदम रोके, बिना चेहरे का भाव बदले, अकस्मात् वह अपना छद्मवेश उतार फेंकेगा। उसकी घृणा प्रकट हो जाएगी। वह लपट की तरह जल उठेगा। उसी समय उसे गोली आकर लगेगी। और तब फिर बहुत विलम्ब हो चुकेगा। या यो कह लीजिए समय के पूर्व ही वह चल देगा। उसका दिमाग ठीक होने के पूर्व ही टुकडे-टुकडे हो चुका होगा। वे उसे ठीक नही कर पाएगे। उसके विद्रोही विचारो को कोई सजा नही दी जा सकेगी। वह स्वय कोई पश्चात्ताप नही कर पाएगा और सदैव के लिए उनके हाथ के बाहर चला जाएगा। अपनी पूर्णता मे वे स्वय छेद कर लेगे। उनसे घृणा करते हुए मरना ही उसके लिए स्वतत्रता थी।

उसने आखें बन्द कर रखी थी। यह बौद्धिक अनुशासन स्वीकार कर लेने से भी कठिन था। यह अपने आपको और नीचा गिराना था। वह स्वय अपने टुकडे आप कर रहा था। उसे गन्दी से गन्दी जगह मे घुसना था। सबसे ज्यादा भयानक और तकलीफदेह क्या चीज थी। वह बडे भाई की बात सोचने लगा। वह बडा-सा चेहरा लगातार पोस्टर मे दिखलाई पडता था, इसलिए वह उसे हमेशा एक मीटर बडा ही सोचने लगा था। भारी-भरकम मूछे, आखे जो आपके हर काम पर निगाह रखती थी, अपने आप उसके दिमाग मे घुसा जा रहा था। बडे भाई के प्रति उसके हृदय की भावनाए क्या थी?

बाहर, भारी जूतो वाले कदमो की आहट सुनाई दी। खनखनाकर लोहे का दरवाजा खुल गया। ओ'ब्रायन कोठरी में घुस आया। उसके पीछे वही मोम जैसे रग वाले चेहरे का अफसर था। काली वर्दीधारी सिपाही भी थे।

'खड हो जाओ,' ओ'ब्रायन ने कहा, 'यहा आओ।'

विन्स्टन उसके सामने खडा हो गया। ओ'ब्रायन ने अपने मजबूत हाथो से विन्स्टन के कधे पकड लिए और पास से देखने लगा। 'तुम मुझे धोखा देने की बात सोच रहे थे,' उसने कहा, 'तुम कितने बेवकूफ हो। सीधे खडे हो जाओ। और मुझे देखो।'

वह थोडा-सा रुका और फिर अपेक्षाकृत कोमल स्वर मे कहने लगा ·

'अब तुम सुधर रहे हो। मानसिक दृष्टि से अब तुममे बहुत कम दोष रह गया है। भावनात्मक दृष्टि से तुमने अभी प्रगति नही की है। बतलाओ बिना झूठ बोल, मुझे सच-सच बतलाओ विन्स्टन, क्या सोच रहे थे ? तुम जानते हो मै झूठ हमेशा पकड लेता हू। तुम बडे भाई के बारे मे क्या सोचते हो ?'

'मै घृणा करता हू, उनसे।'

'घृणा करते हो, ठीक। अब समय आ गया है कि तुम अन्तिम कदम उठाओ। बडे भाई से तुम्हे प्रेम करना ही चाहिए।'

उसने धीरे से धक्का देकर उसे काली वर्दीधारी सिपाहियो की तरफ कर दिया।

'कमरा नम्बर १०१', ओ'ब्रायन ने कहा।

(५)

वह हर अवस्था मे यह जान लेता था, या उसे लगता था कि वह जान गया है कि वह बिना खिडकी की इस इमारत मे किस जगह है। शायद प्रत्येक स्थान पर हवा के दबाव मे कुछ न कुछ फर्क होता था। जिन कोठरियो मे काली वर्दीधारी सिपाहियो ने उसे पीटा था, वे जमीन के नीचे थी। जिस कमरे मे ओ'ब्रायन ने उससे जिरह की थी वह ऊपर की छत के आसपास था। यह स्थान, जहा वह रखा गया था, जमीन के अन्दर काफी नीचे था। शायद यह सबसे नीचा कमरा था।

यह कोठरी, अब तक की जेल की उन सारी कोठरियो से बडी थी, जिनमे वह रखा गया था। लेकिन वह आसपास का वातावरण देख ही नही पाया। उसके ठीक सामने दो मेजे थी, जिन पर हरे मेजपोश बिछे थे। एक मेज तो उससे एक या दो मीटर की दूरी पर थी। दूसरी जरा दूर दरवाजे के पास थी। वह एक कुर्सी से बधा था। पट्टिया इतनी कसी थी कि वह हिल भी नही सकता था। सिर तक इधर-उधर नही कर सकता था। पीछे से एक पैड बधा था, जिसकी वजह से वह

केवल अपने सामने ही देख सकता था।

एक क्षण के लिए वह कमरे मे अकेला रह गया था। परन्तु कुछ ही क्षणों बाद ओ'ब्रायन दरवाज़ा खोलकर कमरे मे घुस आया।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'तुमने एक बार मुझसे पूछा था कि १०१ नम्बर के कमरे मे क्या है। मैने उत्तर दिया था कि तुम जानते हो।'

'सत्य यह है कि दुनिया मे यह कमरा सबसे भयानक जगह है।'

दरवाज़ा फिर खुला। अब की बार एक सिपाही घुसा। उसके हाथ में तार की जाली से बना छोटा-सा बक्स था। उसने उसे कुछ दूरी पर मेज़ पर रख दिया। ओ'ब्रायन इस तरह खडा था कि विन्स्टन देख नही पाया कि उस बक्स मे क्या है।

ओ'ब्रायन कह रहा था, 'दुनिया की भयानक वस्तु हर आदमी के लिए अलग-अलग होती है। कुछ लोगो को जिन्दा दफना दिए जाने से सबसे अधिक डर लगता है तो कुछ को आग में जिन्दा जला दिए जाने से। कुछ डूबने से भय खाते है तो कुछ अन्य को किसी प्रकार-विशेष से मरने मे भय लगता है। कभी-कभी लोगो को बड़ी मामूली बातो से ही मौत से भी अधिक डर लगता है।'

अब ओ'ब्रायन कुछ हट गया था। अब उसे मेज पर रखी चीज स्पष्ट दिखलाई पड रही थी। यह एक जाली थी जिसे ऊपर से पकडने के लिए तार था। यह जाली दो भागो मे बटी थी। हर खाने मे कोई जीव था। ये जीव चूहे थे।

'तुम्हे दुनिया में सबसे अधिक डर चूहो से लगता है,' ओ'ब्रायन ने कहा।

चूहेदानी देखते ही विन्स्टन डर के मारे काप गया था। लेकिन चूहो को देख-कर उसके पेट मे पानी ही पानी हो गया था।

'यह तुम नही कर सकते।' उसने फटती हुई आवाज़ से कहा, 'नही कर सकते। असम्भव है।'

'तुम्हे वह क्षण याद है', 'ओ'ब्रायन ने पूछा, 'कि जब तुम अपने सपनो मे बहुत अधिक डर जाते थे ? वह काली दीवार तुम्हारे सामने होती थी। दीवार के उस ओर कोई भयानक वस्तु होती थी लेकिन तुम उसे हटा नही सकते थे। दीवार के उस पार चहे होते थे।'

'ओ'ब्रायन,' विन्स्टन ने अपने आपको सभालते हुए कहा, 'तुम जानते हो यह सब आवश्यक नही है। अब तुम मुझसे क्या चाहते हो ?'

ओ'ब्रायन ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दिया। जब उसने बोलना शुरू किया तो उसका ढग विन्स्टन को स्कूल मास्टर जैसा लगा। उसने अपना सिर इस तरह ऊचा उठा लिया जैसे वह क्षितिज मे बैठी किसी सभा के सम्मुख भाषण दे रहा हो और जैसे वह सभा विन्स्टन के पीछे हो।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'अपने आप मे दर्द कुछ भी नही है। ऐसे भी मौके आए है, जब लोगो को मर्मान्तिक पीडा दी गई है लेकिन वे उसे सह गए है। लेकिन हर व्यक्ति के स्वभाव की कुछ या कोई एक ऐसी कमजोरी होती है, जिसे वह सह नही सकता। वह उसके बारे मे सोच भी नही सकता। इसमें साहस या कायरता का प्रश्न नही है। यदि आप ऊचे से नीचे गिर रहे हो और रास्ते मे दिखलाई पडी रस्सी को जान बचाने के लिए पकड ले तो वह कायरता नही होगी। यदि पानी मे देर तक डुबकी लगाने के बाद सतह पर आकर आप जी भर सास ले ले तो वह भी कायरता नही होगी। यह केवल अन्तर्प्रेरणा है। यही बात चूहो के साथ है। तुम उन्हे बरदाश्त नही कर सकते। तुम उनकी उपस्थिति झेल नही सकते। इसलिए तुमसे जो कुछ आशा की जाती है तुम वही करोगे।'

'लेकिन मुझसे क्या आशा की जाती है, मै क्या करू? क्या करूं, मै बिना जाने कैसे वह काम कर सकता हू, जो आप चाहते है?'

ओ'ब्रायन चूहेदानी को उठाकर पास ले आया। विन्स्टन के कानो तक खून दौड रहा था और उसे साय-साय की आवाज़ सुनाई दे रही थी। उसे लग रहा था कि वह एकदम अकेला बैठा है। मैदान है। धूप बिखरी है। उसके कानो मे दूर से आ रही आवाज़े पड रही है। अब चूहेदानी उससे दो मीटर की दूरी पर भी नही थी। उसमे बन्द चूहे काफी बडे-बडे थे। कुछ चूहे इतने बडे थे कि उनके दात भुथरा गए थे और रग सफेद के बजाय भूरा हो गया था।

ओ'ब्रायन पहले की तरह सिर उठाकर बोलता रहा, 'चूहा कुतरने वाला जानवर है और साथ ही बहुत-बहुत शरारती भी। तुम उसकी शरारतो की बाते जानते हो। तुमने वे बाते सुनी होगी जो गरीबों के क्वार्टरो में होती है। चूहो के भय से माताए अपने शिशुओ को जमीन पर पाच मिनट के लिए भी अकेला नही छोडती। चूहे उन्हे अकेला पा जाए तो अवश्य ही कुतर खाएगे। थोडे समय में ही वे हड्डी तक गहरा घाव कर देते है। और मास नोच ले जाते है। वे बीमारो और मरने वाले लोगो पर भी हमला कर देते है। उनमे यह जानने की बहुत अधिक

बुद्धि होती है कि कौन आदमी किस वक्त बिलकुल असहाय होता है।

चूहेदानी मे से चूहे चिचिया रहे थे। विन्स्टन को ऐसा लगा कि कही बहुत दूर से आवाज आ रही है। चहे आपस मे लड रहे थे। उसे गहरी कराहट और आह की आवाज सुनाई दी। उसे लगा कि यह आवाज़ भी कही बाहर से आ रही थी। चूहेदानी अब विन्स्टन से एक मीटर की दूरी पर रह गई थी।

ओ'ब्रायन ने चूहेदानी को उठा लिया था। उठाते ही उसने कोई खटका दबाया। विन्स्टन ने अपने आपको कुर्सी के बधनो से छुडाने की बेहद कोशिश की। लेकिन बेकार था। उसके शरीर का हर भाग यहा तक कि उसका सिर भी बड़ी सख्ती से बाधा गया था। ओ'ब्रायन चूहेदानी को और पास ले आया। अब चूहे-दानी एक मीटर से भी कम दूरी पर रह गई थी।

ओ'ब्रायन ने कहा, 'मैने अभी पहला खटका दबाया है। तुम शायद यह जानते ही हो कि यह चहेदानी किस प्रकार की है। इसका अगला भाग तुम्हारे चेहरे पर बिलकुल ठीक बैठ जाएगा। कही से सिर हटाने की जरा-सी भी जगह नही रह जाएगी। जब मै यह खटका दबाऊगा तो वह दरवाजा खुल जाएगा जिसके उस पार चूहे है। यह भूखे जानवर तुम पर बदूक की गोली की तरह टूट पडेगे। तुमने कभी चूहे को हवा मे छलाग मारते देखा है? वे तुम्हारे मुह पर उछलकर बैठ जाएगे। और कुतर-कुतरकर छेद कर देगे। कभी वे पहले आखो पर हमला करते है। और कभी वे गालो मे छेदकर जीभ को खा जाते है।

अब चूहेदानी और निकट आ गई थी। उसे तीखी चीख की आवाजे सुनाई पड रही थी। उसे लग रहा था कि वे आवाज़ें ऊपर हवा में से आ रही थी। लेकिन वह अपने आतक के विरुद्ध सघर्ष कर रहा था। सोचना, सोचना, सेकेण्ड के अंश तक, समय रहते सोचते रहना आवश्यक था। अकस्मात्, उन चूहो की गदी बदबू उसकी नाक मे घुस गई। उसे कै आने लगी। एक क्षण के लिए वह जानवरो की तरह चिल्ला रहा था। वह पागल हो गया था। सहसा, उसे एक ख्याल आया। एक ही उम्मीद बचने की थी। वह अपनी जगह किसी और को रखवा दे। उसके तथा चूहो के बीच किसी और आदमी का शरीर आ जाए।

चूहेदानी के नकाब की वजह से अब कमरे की और कोई चीज नही दिखलाई पड़ रही थी। तारो वाला दरवाज़ा कुछ अगुल दूर रह गया था। चूहे जानते थे कि उन्हे क्या मिलने वाला था। उनमें से एक लोहे के दरवाज़े के सहारे ऊपर चढ़-

कर बार-बार गिर रहे थे। एक मोटा चूहा तार के सहारे खडा हो गया था। वह बार-बार फुसकार-सी मार रहा था। विन्स्टन को उनके मुह के नीचे के बाल दिखलाई पड रहे थे। पीले और गन्दे दात भी दिखाई दे रहे थे। भय के कारण उसकी आखो के आगे अधेरा छा गया था। वह अधा हो गया था। वह असहाय था। उसका दिमाग खराब हो गया था।

अपने आसपास के वातावरण से बिलकुल अनभिज्ञ व्यक्ति की भाति ओ'ब्रायन कह रहा था, 'सम्राटो के युग मे चीन मे यह दड बडा सामान्य समझा जाता था।'

चूहेदानी उसके मुह पर आ गई थी। चूहेदानी के तार उसके गालो से लड रहे थे। और अब नही, कोई आशा नही थी। लेकिन फिर भी बचने की आशा, क्षीण आशा थी। शायद अब देर हो गई थी। बहुत देर हो गई थी। वह जानता था कि दुनिया मे एक ही आदमी है जिसे वह अपनी जगह सजा दिलवा सकता है। एक ही व्यक्ति है जो उसके तथा चूहो के बीच आ सकता है। वह बार-बार चिल्ला रहा था .

'मेरी जगह जूलिया को बुलाओ। मेरा नही उसका सिर फसाओ। मेरा सिर इसमे मत फसाओ। उसका चेहरा फाड़ डालो। उसकी हड्डिया तक कुतरवा दो। मुझे मत कुतरवाओ। जूलिया को बुलाओ। मुझे नही।'

वह पीछे खिसक रहा था। नीचे गिरा जा रहा था। वह चूहो से दूर हट गया था। वह अब भी कुर्सी से बधा था, लेकिन नीचे गिर रहा था। फर्श पार करके नीचे गिरा जा रहा था। वह ज़मीन के नीचे गिर रहा था, वह समुद्र मे नीचे चला जा रहा था। वह वायुमडल के पार, अन्तरिक्ष मे, नक्षत्रो के बीच से भागा जा रहा था। लेकिन वह चूहो से दूर-दूर होता चला जा रहा था। वह हजारो प्रकाश वर्ष की दूरी पर था, लेकिन ओ'ब्रायन अभी उसके पास खड़ा था। चूहेदानी की जाली के ठडे तार अब भी उसके गालो को स्पर्श कर रहे थे। तभी उसने किसी धातु की चीज के बने खटके के दबने की आवाज़ सुनी। वह जान गया था कि इस बार चूहेदानी का दरवाज़ा खुलने के लिए नही, बल्कि बन्द करने के लिए खटका दबाया गया है।

'अखरोट वृक्ष' वाला कॉफे बिल्कुल खाली हो गया था। एक खिडकी से तिरछी होकर डूबते सूरज की किरणे मेज पर पड रही थी। दिन के तीन (पद्रह) बजे थे। टेलीस्क्रीन के मधुर सगीत की आवाज आ रही थी।

विन्स्टन अपने रोज वाले कोने मे बैठा था। वह खाली गिलास को देख रहा था। वह बार-बार बडे भाई के पोस्टर वाले घूरते हुए चेहरे को निगाह उठाकर देख लेता था। नीचे लिखा था बड़े भाई तुम्हे देख रहे है। बिना बुलाए वेटर आकर उसका शराब का गिलास भर देता था और साथ ही दूसरी बोतल से शराब मे कुछ छिडक भी देता था। यह सैकरीन थी जिसमे लौग की खुशबू होती थी। यही इस कॉफे की विशेषता थी।

विन्स्टन टेलीस्क्रीन सुन रहा था। केवल सगीत आ रहा था। परन्तु संभावना थी कि शान्तिमत्रालय का विशेष बुलेटिन किसी भी समय आ जाए। अफ्रीका के मोर्चे से मिलने वाले समाचार बडे अशान्तिपूर्ण थे। उसे दिन में बार-बार उन समाचारो के कारण चिन्ता हो जाती थी। यूरेशियन सेना तेजी से आगे बढ रही थी। अब यूरेशिया से लडाई हो रही थी। (यूरेशिया और ओशनिया के बीच तो सदैव युद्ध रहा है।) यूरेशियन सेना दक्षिण मे आगे बढ रही थी। दोपहर के बुलेटिन मे क्षेत्र विशेष तो नही बतलाया गया था लेकिन सभव था कि यूरेशियन फौजे कागो नदी के मुहाने तक पहुच गई थी। ब्राजाविले और लिओ-पाल्डविले खतरे मे थे। नकशे मे देखने की कोई कोशिश नही कर रहा था कि उसका अभिप्राय क्या है? यह सेंट्रल अफ्रीका के ही हाथ से निकलने का सवाल नही था, बल्कि पूरी लडाई मे पहली बार समस्त ओशनिया खतरे मे था।

अकस्मात् उसके हृदय मे जो उत्तेजना और भय पैदा हुआ था वह थोडी देर बाद समाप्त हो गया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सोचना बद कर दिया था। इन दिनो वह किसी भी चीज के बारे मे कुछ क्षणो से अधिक सोच नही सकता था। उसने गिलास उठाया और एक घूट मे उसकी शराब समाप्त कर दी। हमेशा की तरह इस बार भी वह शराब पीने के बाद एकबारगी काप गया। लौग और सैकरीन से वैसे ही उसका जी घबडाता था, लेकिन उनसे भी शराब की तैलायध दूर नही होती थी। और इस शराब की बू उनसे इतनी अधिक मिलती थी।

वह उनका सपने मे भी नाम नही लेता था। जहा तक सम्भव होता था वह उनकी शकल की भी कल्पना नही करता था। अभी तक उसे लगता था कि वे उसके चेहरे के पास उछल रहे है और उनकी बदबू उसकी नाक मे घुसी जा रही है। उसने शराब काफी पी ली थी और उसे डकार आ रही थी। अपनी रिहाई के बाद से अब वह मोटा हो गया था। एक तरह से वह अब पहले से भी अधिक अच्छा हो गया था। नाक की खाल तथा गालो की हड्डियो की त्वचा पर लालिमा आ गई थी। सिर का गज तक लाल हो गया था। एक वेटर फिर बिना बुलाए शतरज और टाइम्स के ताजे अक ले आया। इसके बाद विन्स्टन का गिलास खाली देखकर उसने शराब फिर भर दी। आर्डर देने की जरूरत नही थी। वे उसकी आदत जानते थे। शतरज की बाजी हमेशा लगी रहती थी। कोने की मेज हमेशा उसके लिए सुरक्षित रहती थी। जब सारा होटल भरा होता था तब भी वह अकेला ही रहता था। उसके समीप कोई नही आता था। वह अपने शराब के गिलास तक नही गिनता था। कुछ दिनो बाद वे उसे बिल देते थे। लेकिन उसे हमेशा लगता था कि उससे पूरे ैसे नही लिए जाते थे। यदि वे ज्यादा भी लेते तो भी कोई फर्क नही पडता। उसके पास आजकल काफी पैसा रहता था। वह नौकरी भी कर रहा था। उसकी यह जगह पुरानी जगह से ऊची थी। पैसा भी पहले से अधिक मिलता था।

टेलीस्क्रीन से संगीत बद हो गया। अब कोई बोल रहा था। विन्स्टन ने अपना सिर उठाया। मोर्चे की खबरो का बुलेटिन नही था, समृद्धिमत्रालय द्वारा प्रसारित सक्षिप्त घोषणा थी। गत तिमाही बूट-फीतो का उत्पादन लक्ष्य से अट्ठानवे प्रतिशत अधिक हुआ था।

उसने शतरज की लगी बाजी देखी और खेलना शुरू किया। बाजी बडी चतुराई से लगाई गई थी। वजीर मर गया था। विन्स्टन ने बडे भाई के चित्र की तरफ देखा।

टेलीस्क्रीन से आने वाली आवाज रुक गई। किसी अन्य उद्घोषक ने गभीर स्वर से ऐलान किया 'पन्द्रह तीस पर बहुत ही महत्वपूर्ण घोषणा होने वाली है। आप उसे सुनने को तैयार रहे। पन्द्रह तीस पर बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार सुनाया जाएगा। तैयार रहे।' संगीत फिर टुनटुनाने लगा।

विन्स्टन का हृदय धडकने लगा। अवश्य ही इस बुलेटिन मे मोर्चे के समाचार

सुनाए जाएगे। उसे लग रहा था कि कोई बहुत ही खराब समाचार सुनाया जाने वाला है। अफ्रीका मे पराजय की आशका उसके दिमाग मे कई बार उत्पन्न हो चुकी थी। उसे लग रहा था कि यूरेशियन सेना ने ओशनिया की कभी विच्छिन्न न हुई सीमाओ को घेर लिया है और वे चीटियो की तरह घुसे आ रहे है। उनको घेरने और हरा देने की कोई तरकीब क्यो नही तलाश की गई ? पश्चिमी अफ्रीका के तट की रेखा उसके दिमाग में उभरी हुई थी। उसने सफेद मोहरो की तरफ से एक चाल चल दी। वही घर ठीक था। उसे लग रहा था कि काली सेनाएं दौडती आ रही है और उन्होने पीछे से सचार-साधन और सप्लाई लाइन काट दी है। समुद्र से भी आने-जाने का रास्ता नही रहा है। वह सोच रहा था कि वह सोचकर उनके विरुद्ध शक्तिसचय कर रहा है। लेकिन फिर भी कुछ कार्रवाई करनी जरूरी थी। यदि उनका सारे अफ्रीका पर कब्जा हो गया, यदि केप पर उन्होने पनडुब्बियो के तथा विमान-अड्डे बना लिए तो ओशनिया को वे दो भागो मे विभक्त कर देगे। इसका कुछ भी मतलब हो सकता था। पराजय, दुनिया का फिर बटवारा और पार्टी का सत्यानाश। अजब विचार थे। लेकिन ये उसकी सुषुप्त भावनाएं थी। पता नही उसकी कौन-सी भावनाए सबसे ज्यादा गहरी थी।

फिर दौरे का जोर घट गया। उसने मोहरे को यथास्थान रख दिया। लेकिन वह शतरज की समस्या का गम्भीरता से अध्ययन नही कर सका। उसके विचार फिर खो गए। उसने मेज पर जमी धूल पर उंगली से लिखा।

२+२=५

वह कहती थी, वे मन के अन्दर नही घुस सकते। लेकिन वे आदमी के अन्दर भी घुस सकते थे। ओ'ब्रायन का कहना था, यहा जो कुछ होता है, वह हमेशा के लिए होता है। यह सच था। कुछ ऐसी बाते हो जाती है, आप कुछ ऐसे काम कर बैठते है, जिनसे कभी नही सभल सकते। आपका हृदय कुचल दिया जाता है। जला दिया जाता है।

वह उससे मिला। वह जूलिया से बोला भी था। वह जान गया था कि अब वे उसके काम मे कोई दिलचस्पी नही लेते। यदि वे दोनो चाहते तो फिर भी मिल सकते थे। वास्तविकता यह थी कि उनकी मुलाकात सयोगवश हो गई थी। मार्च का बहुत ही ठडा दिन था। जमीन लोहे की तरह सख्त थी। इधर-उधर कुछ घास के सिवा फूल की एकाध कली तक कही नही थी। घास तक हवा के जोर से उखड़

गई थी। तभी पार्क मे वह मिली। वह तेजी से भागा आ रहा था। उसके हाथ ठडे थे, और ठड के मारे आखो से पानी निकल रहा था। तभी वह कोई १० मीटर की दूरी पर उसे दिखलाई पडी। उसे लगा कि वह विकृत हो गई है। कह नही सकता था कि कैसा परिवर्तन उसमे हुआ था। वे एक दूसरे के पास से बिना किसी प्रकार का सकेत किए निकल गए। इसके बाद वह घूमा और उसके पीछे-पीछे चल पडा। परन्तु उसकी चाल मे तेजी नही थी। वह जानता था कि कोई खतरा नही है। उनमे कोई भी दिलचस्पी नही लेगा। परन्तु वह बोली नही। वह घास पर तिरछी-तिरछी इस तरह चलने लगी मानो उससे पिण्ड छुडाना चाहती है। इसके बाद वह उदासीन हो गई और उसने विन्स्टन को अपनी बगल के बराबर आ जाने दिया। अब वे बिना पत्तियो वाली झाडियो के पास थे। इन झाडियो मे न तो आदमी छिप ही सकता था और न उनकी आड मे हवा से ही बच सकता था। वे रुक गए। जाडा बहुत तेज था। पेड की टहनियो से हवा सीटी बजाती तेजी से आ रही थी। उसने उसकी कमर अपनी बाहो मे लपेट ली। वहा कोई टेलीस्क्रीन नही था लेकिन छिपा माइक्रोफोन अवश्य होगा। लेकिन अब उसकी कोई चिन्ता नही थी। दूसरे उनको वैसे भी कोई देख सकता था। वे जमीन पर लेटकर जो चाहे कर सकते थे। लेकिन इसकी कल्पना करते ही उसका खून बर्फ की तरह जम गया। उसने बाहो मे कमर ले लिए जाने के बाद भी उसका कोई ख्याल नही किया। उसने अपने आपको छुडाने की भी कोई कोशिश नही की। वह समझ गया था कि उसमे क्या परिवर्तन आ गया है। उसका चेहरा सूजा हुआ था। उसके बालो के नीचे एक लम्बा घाव था। यह घाव माथे और कनपटी के बीच मे था। लेकिन यही एकमात्र परिवर्तन नही था। उसकी कमर पहले से अधिक स्थूल हो गई थी। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह अब सख्त भी हो गई है। एक बार उसने राकेट बम के गिरने से ढह गए मकान के नीचे से एक लाश निकाली थी। वह लाश भी पत्थर जैसी भारी लग रही थी। जूलिया का शरीर भी वैसा ही पत्थर-सा लग रहा था। उसकी त्वचा का वर्ण भी पहले से भिन्न हो गया था।

उसने उसका चुम्बन तक लेने का प्रयत्न नही किया। वे आपस मे बोले तक नही। जब वे लौटने लगे तो उसने मुडकर सीधे आखो मे आखें डालकर उसे पहली बार देखा—क्षण भर के लिए ही। परन्तु उस दृष्टि मे घोर घृणा और तिरस्कार का भाव था। पता नही, बीते अनुभवो के कारण ऐसा था या तेज हवा

के कारण उसकी आखो से निकलने वाले आसुओ की वजह से उसकी आखो में ऐसा भाव आ गया था। वे दोनो दो लोहे की कुर्सियो पर बैठ गए। वे बगल-बगल बैठे थे लेकिन बहुत समीप नही। वे सटकर नही बैठे। उसे लगा कि वह उससे बोलने वाली है। उसने अपना जूता जरा-सा हिलाया और फिर एक सूखी टहनी को, जो जमीन पर पडी थी कुचल कर टुकडे-टुकडे कर दिया। उसके पैर, विन्स्टन ने देखा, अधिक चौडे हो गए थे।

'मैंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है।' वह बोली, 'मैंने भी तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है', विन्स्टन ने प्रत्युत्तर मे कहा। उसने विन्स्टन पर एक घृणा-भरी दृष्टि डाली। फिर बोली, 'कभी-कभी वे ऐसी यातना देने की धमकी देते हैं कि बरबस मुह से निकल जाता है, यह यातना मुझे नही मेरे बजाय अमुक व्यक्ति को दो। बाद मे आप यह कल्पना भी कर सकते हैं कि वह तो एक बहाना था बचने का और आपने वैसा सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए कहा था और वस्तुतः आपका यह अभिप्राय नही था। लेकिन यह सच नही है। जिस समय वह यत्रणा दी जाने को होती है, उस समय आपका सचमुच वही अभिप्राय होता है जो आप कहते हैं। कारण यह है, कि बचने का और कोई रास्ता ही नही सूझता। और आप अपनी जान बचाने को किसी भी मूल्य पर राजी हो जाते हैं। आप चाहते हैं कि वह कष्ट किसी दूसरे आदमी को दिया जाए। आपको और किसी की चिन्ता होती ही नही। बस आदमी अपनी ही फिक्र करता है।'

'बस आदमी अपनी ही फिक्र करता है।' उसने भी प्रतिध्वनि की भाति बात दोहरा दी।

'इसके बाद फिर आपकी वह प्रेम भावना उस आदमी के प्रति नही रह जाती जिसका नाम उस समय आप ले देते हैं।'

'नही', वह बोला, 'उस व्यक्ति के प्रति फिर वह प्रेम भाव नही रह जाता।'

इसके अलावा कुछ और कहना शेष नही रहा था। तेज हवा ने उन दोनो को एक दूसरे के पास और सिमटाकर बैठा दिया। वहा चुपचाप बैठा रहना एकाएक उन्हे बडा अजीब-सा लगा। ठड इतनी ज्यादा थी कि वे वहा बैठ भी नही सकते थे। उसने अपनी ट्रेन के बारे मे कुछ कहा और उठ खडी हुई।

'हम फिर मिलेगे।' उसने कहा।

'हा, हमे फिर अवश्य मिलना चाहिए।' वह भी बोली।

वह कुछ अनिश्चयात्मक ढग से उसके पीछे कुछ कदम आगे तक गया। वे फिर नही बोले। उसने उससे पीछा छुडाने का प्रयत्न नही किया। लेकिन वह इतनी तेज चलने लगी कि उसका साथ चलना कठिन हो गया। उसने तय किया था कि वह रेलवे स्टेशन तक उसे पहुंचाने जाएगा, परन्तु उसे ठंड मे पीछे-पीछे जाना बेकार लगा। उसकी तीव्र इच्छा हो रही थी कि वह चेस्टनट कॉफे जाए, जूलिया का साथ छोड दे। पहले उसे वह कॉफे कभी आकर्षक नही लगा। उसे कोने की मेज, समाचारपत्र तथा शतरज के प्रति हृदय से चिढ हो गई थी। लेकिन इस समय उसे खयाल आया कि कम से कम वह कॉफे गरम तो होगा। दूसरे ही क्षण वह भीड मे मिलकर उससे अलग हो गया। उसने थोडा प्रयत्न उसे खोजने का अवश्य किया लेकिन वह मिली नही। वह पहले धीरे-धीरे चलने लगा। फिर पीछे की तरफ मुड गया और कॉफे की ओर चल पडा। कोई पचास मीटर आगे जाकर उसने फिर पीछे देखा। अब सडक पर भीड नही थी। लेकिन वह उसे पहचान नही सकता था। उन बहुत-से व्यक्तियो मे से जो जल्दी-जल्दी चले जा रहे थे, एक वह भी थी। उसका मोटा स्थूल बदन अब दूर से नही पहचाना जा सकता था।

'जिस समय यह होता है।' उसने कहा था, 'तब तुम सचमुच चाहते हो कि तुम्हारी जगह उसी व्यक्ति को कष्ट दिया जाए जिसका तुमने नाम लिया है।' और यह सच था। वह भी जूलिया को ही चूहो से कुतरवाना चाहता था।

टेलीस्क्रीन पर बज रहे सगीत का स्वर कुछ बदल गया था। और उसे यह गीत सुनाई पड़ा :

अखरोट के विशाल वृक्ष के नीचे,
मैंने तुम्हे बेच दिया और तुमने मुझे—

उसकी आखो मे आसू भर आए। पास से गुजरते हुए एक वेटर ने उसका गिलास खाली देखा। वह तुरन्त ही 'जिन' (शराब) की नई बोतल ले आया।

उसने भरा गिलास उठाया। उसे छीक आ गई। वह ज्यो-ज्यो यह शराब पीता जाता था त्यो-त्यों उसके मुह का स्वाद और बिगडता जाता था। लेकिन इसी के आधार पर तो वह जिन्दा था। हर रात वही शराब उसे बेहोशी मे डुबो देती थी। वह दिन मे ग्यारह के पूर्व कभी नही जागता था, लेकिन जब जागता था तो उसकी आखें चिपकी होती थी। मुह का स्वाद बेहद खराब होता था और उसे लगता था

कि उसकी कमर तो एकदम टूट ही गई है। वह शायद उठ भी न पाता यदि उसके पास एक बोतल और चाय का प्याला बगल मे न रखा होता। दोपहर तक वह बोतल हाथ मे लिए टेलीस्क्रीन का सगीत सुनता हुआ बिस्तर पर ही बैठा रहता। दिन मे तीन बजे से जब तक बन्द न हो जाए, उसका चेस्टनट कॉफे मे बैठे रहने का कार्यक्रम रहता था। वह क्या करता है, सकी किसी को परवाह नही थी। टेलीस्क्रीन की सीटी भी अब उसे जगाती नही थी। टेलीस्क्रीन से डाट फटकार भी नही की जाती थी। कभी-कभी शायद हफ्ते मे दो दिन वह सत्य मन्त्रालय जाकर थोड़ा-सा काम या काम करने का बहाना पूरा कर आता था। वह एक उपसमिति की उपसमिति का सदस्य था जो नई भाषा की डिक्शनरी के ग्यारहवे सस्करण मे उत्पन्न होने वाली कठिनाइयो को दूर करने के लिए नियुक्त की गई थी। ऐसी अनगिनत उपसमितिया थी। वे आजकल एक अतर्कालीन रिपोर्ट तैयार करने मे व्यस्त थी। विचाराधीन प्रश्न यह था कि अर्धविरामो को कोष्ठो मे या उनके बाहर लिखा जाए। इस उपसमिति मे चार और व्यक्ति थे। वे भी उसी की तरह थे। उनकी बैठके होती थी और वे तुरन्त समाप्त हो जाती थी, क्योकि कुछ काम नही है, इसका फैसला करने मे अधिक विलम्ब नही लगता था। लेकिन कभी-कभी वे बहुत उत्साहपूर्ण काम करने भी बैठ जाते थे। वे अपनी बैठक की कार्रवाई लिखते और लम्बे-लम्बे स्मृतिपत्र तैयार करते थे। ये कभी खत्म नही हो पाते थे। कभी उनकी बहस बडी उलझ जाती थी। तर्क बहुत कल्पनात्मक हो जाते थे। छोटी-छोटी परिभाषाओ पर बहस होने लगती थी। अप्रासगिक बाते उठ खडी होती थी। झगडा हो जाता था। और सब उच्च अधिकारियो तक अपील करने की धमकी देने लगते थे। परन्तु सहसा वे निर्जीव हो जाते। वे कुर्सियो पर बैठे-बैठे एक दूसरे का मुह देखने लगते थे। उनकी आखे बुझी-बुझी-सी हो जाती। वे इस तरह लुप्त हो जाते जिस तरह सवेरे मुर्गे की बाग के साथ भूत लापता हो जाता है।

क्षण भर के लिए टेलीस्क्रीन चुप हो गया था। विन्स्टन ने अपना सिर फिर उठाया। बुलेटिन। नही, केवल सगीत टुनटुना रहा था।

उसकी आखो में अफ्रीका का नकशा घूम रहा था। सेनाओ की प्रगति का चित्र उसके सामने था। एक काला तीर सीधा दक्षिण की ओर घुसा जा रहा था। एक सफेद तीर सीधा पूर्व की ओर बढ रहा था। पुन सभलने के लिए उसने

सामने वाले पोस्टर पर बने चेहरे को देखा। क्या यह सोचा भी जा सकता था कि दूसरा तीर का निशान है ही नही ?

उसकी उत्सुकता फिर बढ गई थी। उसने शराब का एक और घूट भर लिया। सफेद वजीर उठाकर अस्थायी चाल के रूप मे एक घर चल दिया। शह। लेकिन चाल ठीक नही थी। क्योकि—

बिना याद किए बात याद आ गई। उसे खयाल आया वह कमरे मे बैठा है। इसमे मोमबत्ती का प्रकाश है। एक बहुत बडा पलग है। यह फर्श पर बैठा है और जोर से गोटी हिला रहा है। इसके साथ ही जोरो से हस भी रहा है। उसकी मा उसके सामने बैठी है। वह भी हस रही है।

मा के लापता होने से कोई एक महीने पहले की यह बात थी। और यह उनकी मित्रता का क्षण था। वह अपनी भूख भूल जाता था और उसका मा के प्रति प्रेम जाग पडता था। उसे वह दिन अच्छी तरह याद था। बाहर खूब तेज पानी बरस रहा था। लेकिन कुछ ही देर बाद कमरे मे उसकी तबियत ऊब गई थी। कमरा पानी बरसने की और बर्फ गिरने की वजह से चारो तरफ से बद था।

विन्स्टन मचलने लगा, झुझलाने लगा। अधिकाधिक खाने की माग करने लगा। वह हर चीज को कमरे मे घूम-घूमकर तोडने लगा। पडोसी भी पूछने लगे कि क्या बात है। उसकी छोटी बहन डरकर रोने लगी थी। अन्त मे उसकी मा ने कहा, 'अब अच्छे बच्चे बन जाओ। मै तुम्हे एक बहुत ही प्यारा खिलौना लाकर दूगी। इसके बाद उसी बरसते पानी मे भीगती हुई वह बाजार गई और साप और सीढी वाला खेल लेकर आई। लेकिन उसका पट्ठा सीला हुआ था। बोर्ड सीधा नही था। पासा भी ठीक तरह से कटा न होने की वजह से ठीक नही पडता था। लेकिन मा ने जमीन पर मोमबत्ती रख ली और वे खेलने बैठ गए। शीघ्र ही वह खुशी से नाच रहा था, क्योकि हर बार उसे सीढी मिल जाती थी और वह बराबर ऊपर चढता जाता था। कभी-कभी साप निगल लेता तो वह नीचे आ जाता था। करीब-करीब वही जहा से वह चला था। वे आठ बार खेले। चार बार वह जीता और चार बार मा। उसकी छोटी बहन खेल तो नही समझती थी लेकिन और सबको हसता देख खुद भी हसने लगती थी। उस दिन तीसरे पहर वे सब बहुत खुश रहे। वे बचपन मे भी उतने ही खुश रहा

करते थे।

उसने इस स्मृति को अपने मस्तिष्क से हटा देने की, भुला देने की कोशिश की। अक्सर उसे मिथ्या स्मृतिया सताया करती थी। जब तक उनका कारण मालूम हो, परेशानी नही होती थी। कुछ बाते हुई थी, कुछ नही हुई थी, वह फिर शतरज की ओर मुह करके बैठ गया। उसने सफेद मोहरा उठाया। तभी उसके हाथ से आवाज़ करता हुआ वह गिर पडा। उसे लगा कि कोई पिन उसके शरीर मे चुभा दी गई है।

तेज बिगुल बजा। ुलेटिन था। विजय। बिगुल की आवाज़ हमेशा जीत की खुशी मे ही टेलीस्क्रीन पर बजती थी। कॉफे मे बिजली सी कौध गई। वेटर भी कान लगाकर सुनने लगे।

बिगुल की वजह से शोर बहुत बढ गया था। अभी उद्घोषक की आवाज सुनाई भी नही पडी थी कि वह बाहर खडे लोगो की हर्ष ध्वनि मे डूब गई। खबर आग की तरह चारो तरफ फैल गई थी। जो कुछ बतलाया जा रहा था उस सब की कल्पना उसने पहले ही कर रखी थी। समुद्र मे एक जहाजी बेडा चुपके से इकट्ठा हो गया और उसने दुश्मन पर पीछे से हमला करके उसे तहस-नहस कर दिया। उसे खबर के कुछ शब्द सुनाई पड रहे थे। महान् सामरिक चाल, सेना के विभिन्न अगो मे पूर्ण सहयोग, दुश्मन की फौज मे भगदड, पाच लाख कैदी—पूरा अफ्रीका मुट्ठी मे—पूरी जीत होने की शीघ्र ही सभावना। मानव इतिहास की सबसे बडी विजय।

मेज के नीचे विन्स्टन के पैर तडप रहे थे। वह अपनी कुर्सी से उठा तक नही था। लेकिन वह मानसिक रूप से बाहर भीड के साथ था। इतने जोर-जोर से हर्षध्वनि हो रही थी कि ऐसा लगता था, सब बहरे हो जाएगे। उसने फिर बडे भाई की तसवीर की ओर देखा। यही है वह भारी-भरकम पशु जो सारी दुनिया की छाती पर मूग दल रहा है। यही है वह दीवार जिससे एशिया के आक्रमण-कारी अपना सिर फोड-फोड़कर वापस लौट जाते है। वह सोच रहा था—दस मिनट पूर्व ही, केवल दस मिनट पूर्व उसे शका हो रही थी, पता नही मोर्चे से हार की खबर आएगी या जीत की। आह ! यूरेशियन सेना ही अकेली नष्ट नही हुई थी। कुछ और भी नष्ट हुआ था। प्रेम मत्रालय मे प्रवेश करने के पहले दिन बाद से उसमे बहुत परिवर्तन हो गया था लेकिन वह अतिम परिवर्तन अभी तक नही

हुआ था, जिससे सारे घाव भर जाते है।

टेलोस्क्रीन से अब भी बदियो की गिरफ्तारी, लूट तथा शत्रु के वध-ब्यौरे की बाते आ रही थी। लेकिन बाहर होने वाला शोर कम हो गया था। वेटर अपने-अपने काम मे लग गए थे। एक वेटर आकर उसका गिलास भरने लगा। लेकिन विन्स्टन अपने ही सपने में इतना डूबा था कि उसने इस तरफ कोई ध्यान नही दिया। वह प्रेम मत्रालय मे था। उसका प्रत्येक अपराध क्षमा कर दिया गया था। उसकी आत्मा हिम की भाति धवल थी। वह जनता के सामने था। अपने अपराध स्वीकार कर रहा था। हर एक पर आरोप लगा रहा था। उसके बाद उसे खयाल आया वह सफेद पत्थरो के फर्श पर चल रहा है। फर्श चारो ओर काटो वाले तारो से घिरा था। उसके पीछे बदूकधारी सिपाही है। जिस गोली के लिए वह तरस रहा था अब उसके मस्तिष्क मे पीछे से प्रवेश कर रही है।

उसने पोस्टर पर बनी भयानक शकल को फिर देखा। उन काली मूछो के नीचे कैसी मुस्कराहट छिपी है, इसे समझने मे उसे पूरे चालीस वर्ष लग गए। ओ निर्दय, अनावश्यक भ्रम, ओ कठोर, स्नेह पूर्ण हृदयो से स्वेच्छा से हट जाने वाले क्रूर व्यक्ति! उसकी आखो से दो बडे-बडे आसू निकल पडे और नाक के इधर-उधर बह निकले। उसके आसपास शराब की गध फैली हुई थी। लेकिन अब सब ठीक था। सब ठीक था। सघर्ष तो समाप्त हो ही चुका था। सब कुछ समाप्त हो गया था। उसने अपने आपको जीत लिया था। वह बडे भाई से प्रेम करने लगा था।